BAHN502CCT

तुलसीदास

बी.ए.
(पंचम सेमेस्टर के लिए)

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी
हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

© Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad

Course : Tulsidas

ISBN: 978-81-967513-4-0

First Edition: December, 2023

Publisher	:	Registrar, Maulana Azad National Urdu University
Edition	:	2023
Copies	:	500
Price	:	415/-
Copy Editing	:	Dr. Wajada Ishrat, MANUU, Hyderabad
		Dr. L. Anil, DDE, MANUU, Hyderabad
Cover Designing	:	Dr. Mohd. Akmal Khan, DDE, MANUU, Hyderabad
Printing	:	Print Time & Business Enterprises, Hyderabad

Tulsidas

For

B.A. Hindi

5th Semester

On behalf of the Registrar, Published by:

Directorate of Distance Education

Maulana Azad National Urdu University

Gachibowli, Hyderabad-500032 (TS), Bharat

*Director:*dir.dde@manuu.edu.in *Publication:* ddepublication@manuu.edu.in

Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in

© All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing from the publisher (registrar@manuu.edu.in)

संपादक

डॉ. आफताब आलम बेग
सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Editor

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar
DDE, MANUU

संपादक-मंडल
(Editorial Board)

प्रो. ऋषभदेव शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद
परामर्शी (हिंदी), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Prof. Rishabhadeo Sharma
Former Head, Higher Education and Research Centre, Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha, Hyderabad
Consultant (Hindi), DDE, MANUU

प्रो. श्याम राव राठोड़
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
अंग्रेज़ी और विदेशी भाषा वि.वि.,हैदराबाद

Prof. Shyamrao Rathod
Head, Department of Hindi
EFL University, Hyderabad

डॉ. गंगाधर वानोडे
क्षेत्रीय निदेशक
केंद्रीय हिंदी संस्थान, सिकंदराबाद, हैदराबाद

Dr. Gangadhar Wanode
Regional Director
Central Institute of Hindi
Hyderabad Centre, Secunderabad, Hyd

डॉ. आफताब आलम बेग
सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, DDE, MANUU

डॉ. वाजदा इशरत
अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (सं)
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. Wajada Ishrat
Guest Faculty/Assistant Professor (Cont.)
DDE, MANUU

डॉ. एल. अनिल
अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (सं)
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. L. Anil
Guest Faculty/Assistant Professor (Cont.)
DDE, MANUU

पाठ्यक्रम-समन्वयक

डॉ. आफ़ताब आलम बेग

सहायक कुल सचिव, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

लेखक **इकाई संख्या**

- **डॉ. एल.अनिल,** अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (सं) दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू 1
- **डॉ. मंजु शर्मा,** अध्यक्ष, हिंदी विभाग, चिरेक इंटरनेशनल, हैदराबाद 2
- **प्रो. गोपाल शर्मा,** पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग अरबा मींच विश्वविद्यालय, इथियोपिया(पूर्व अफ्रीका) 3
- **डॉ. शशिबाला,** पूर्व हिंदी अध्यापक, केंद्रीय विद्यालय, राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, हैदराबाद 4
- **डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा**, एसोसिएट प्रोफेसर, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास 5
- **डॉ. चंदन कुमारी,** संकाय सदस्य, डॉ. बीआर अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, अंबेडकरनगर (मध्य प्रदेश) 6
- **डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव,** सहायक आचार्या (हिंदी), बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ 7
- **श्रीमती पी.एल निलया रेड्डी**, हिंदी अध्यापक, हैदराबाद पब्लिक स्कूल, बेगमपेट, हैदराबाद 8
- **डॉ. वाजदा इशरत**, अतिथि प्राध्यापक/ असिस्टेंट प्रोफेसर(सं), दू. शि. नि. मानू. 9
- **डॉ. अबु होरैरा,** अतिथि प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मानू, हैदराबाद 10
- **डॉ. अविनाश,** असिस्टेंट प्रोफेसर (सी), हिंदी विभाग, डॉ. बीआर अंबेडकर सार्वत्रिक विश्वविद्यालय, हैदराबाद 11
- **डॉ. मोहम्मद आले अहमद,** सहायक आचार्य (हिंदी), मुमताज़ पीजी कॉलेज, लखनऊ 12
- **डॉ. सुपर्णा मुखर्जी**, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सेंट एन्स जूनियर एंड डिग्री कॉलेज फॉर गर्ल्स एंड वुमेन, मलकाजगिरी, हैदराबाद. 13

- **डॉ. सुषमा देवी**, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, भवन्स विवेकानंद कॉलेज, सैनिकपुरी, सिकंदराबाद 14
- **डॉ. आलोक कुमार पांडेय,** सहायक प्रोफेसर, त्रिपुरा केंद्रीय विश्वविद्यालय, अगरतला. 15
- **डॉ. कैलास बलिराम घाटे,** स्वतंत्र लेखक, भुवनेश्वर 16
- **डॉ. हसन युनुस पठान,** सहायक प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सेंट जोसेफ विश्वविद्यालय, बेंगलुरू 17
- **श्री धर्मेंद्र कुमार सिंह,** सहायक शिक्षक, यू एच एस भतखोरिया गर्ल्स, बनियाडीह, गोड्डा 18
- **प्रो. निर्मला एस. मौर्य,** पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर 19, 20
- **डॉ. डॉली,** सहायक प्रोफेसर (हिंदी), गुरु नानक महाविद्यालय, वेलाचेरी, चेन्नै 21
- **डॉ. अनिता पाटिल**, सहायक प्रोफेसर (हिंदी), गुरु नानक महाविद्यालय, वेलाचेरी, चेन्नै. 22
- **डॉ. शेख अफ़रोज फातेमा शेख हबीब**, एसोशिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मौलाना आज़ाद कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइंस एंड कॉमर्स, औरंगाबाद. 23, 24

विषयानुक्रमणिका

संदेश	:	कुलपति	8
संदेश	:	निदेशक	10
भूमिका	:	पाठ्यक्रम–समन्वयक	12

खंड इकाई /		विषय	पृष्ठ संख्या
खंड 1	**:**		
इकाई 1	:	तुलसीदास : एक परिचय	15
इकाई 2	:	रामचरितमानस – अयोध्याकांड : एक परिचय	26
इकाई 3	:	रामचरितमानस : अयोध्याकांड I : व्याख्या	40
इकाई 4	:	रामचरित मानस : अयोध्याकांड – II : व्याख्या	59
खंड 2	**:**		
इकाई 5	:	रामचरितमानस : अयोध्याकाण्ड – III : व्याख्या	78
इकाई 6	:	रामचरितमानस : अयोध्याकांड - IV : व्याख्या	103
इकाई 7	:	रामचरितमानस : अयोध्याकांड - V : व्याख्या	126
इकाई 8	:	रामचरितमानस : अयोध्याकांड - VI : व्याख्या	154
खंड 3	**:**		
इकाई 9	:	कवितावली : एक परिचय	178
इकाई 10	:	कवितावली : उत्तरकाण्ड – I : व्याख्या	187
इकाई 11	:	कवितावली : उत्तरकाण्ड – II : व्याख्या	200
इकाई 12	:	कवितावली : उत्तरकाण्ड – III : व्याख्या	212
खंड 4	**:**		
इकाई 13	:	गीतावली: बालकांड : एक परिचय	227
इकाई 14	:	गीतावली : बालकाण्ड – I : व्याख्या	242

इकाई 15	:	गीतावली : बालकांड – II : व्याख्या	257
इकाई 16	:	गीतावली : बालकाण्ड - III : व्याख्या	271
खंड 5			
इकाई 17	:	गीतावली : बालकाण्ड – IV : व्याख्या	283
इकाई 18	:	विनय पत्रिका : एक परिचय	295
इकाई 19	:	विनय पत्रिका – I : व्याख्या	312
इकाई 20	:	विनय पत्रिका – II : व्याख्या	331
खंड 6			
इकाई 21	:	विनय पत्रिका – III : व्याख्या	346
इकाई 22	:	विनय पत्रिका – IV : व्याख्या	359
इकाई 23	:	विनय-पत्रिका – V : व्याख्या	374
इकाई 24	:	विनय पत्रिका – VI : व्याख्या	386
		परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना	**396**

प्रूफ रीडर:

प्रथम : डॉ. वाजदा इशरत, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर(सं), दू. शि. नि., मानू

द्वितीय : डॉ. एल. अनिल, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (सं), दू. शि. नि., मानू

अंतिम : डॉ. आफताब आलम बेग, सहायक कुल सचिव, दू. शि. नि., मानू.

संदेश

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी की स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह NAAC मान्यता प्राप्त एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय का अधिदेश है: (1) उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार और विकास (2) उर्दू माध्यम से व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा (3) पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना, और (4) महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। यही वे बिंदु हैं जो इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग करते हैं और इसे एक अनूठी विशेषता प्रदान करते हैं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा के प्रावधान पर जोर दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार का एकमात्र उद्देश्य उर्दू भाषी समुदाय के लिए समकालीन ज्ञान और विषयों की पहुंच को सुविधाजनक बनाना है। लंबे समय से उर्दू में पाठ्यक्रम सामग्री का अभाव रहा है। इस लिए उर्दू भाषा में पुस्तकों की अनुपलब्धता चिंता का विषय रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण के अनुसार उर्दू विश्वविद्यालय मातृभाषा / घरेलू भाषा में पाठ्यक्रम सामग्री प्रदान करने की राष्ट्रीय प्रक्रिया का हिस्सा बनने का सौभाग्य मानता है। इसके अतिरिक्त उर्दू में पठन सामग्री की अनुपलब्धता के कारण उभरते क्षेत्रों में अद्यतन ज्ञान और जानकारी प्राप्त करने या मौजूदा क्षेत्रों में नए ज्ञान प्राप्त करने में उर्दू भाषी समुदाय सुविधाहीन रहा है। ज्ञान के उपरोक्त कार्य-क्षेत्र से संबंधित सामग्री की अनुपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति उदासीनता का वातावरण बनाया है जो उर्दू भाषी समुदाय की बौद्धिक क्षमताओं को मुख्य रूप से प्रभावित कर सकता है। ये वह चुनौतियां है जिनका सामना उर्दू विश्वविद्यालय कर रहा है। स्व-अध्ययन सामग्री का परिदृश्य भी बहुत अलग नहीं है। प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष के प्रारंभ में स्कूल/कॉलेज स्तर पर भी उर्दू में पाठ्य पुस्तकों की अनुपलब्धता पर चर्चा होती है। चूंकि उर्दू विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम केवल उर्दू है और यह विश्वविद्यालय लगभग सभी महत्वपूर्ण विषयों के पाठ्यक्रम प्रदान करता है, इसलिए इन सभी विषयों की पुस्तकों को उर्दू में तैयार करना विश्वविद्यालय की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय अपने दूरस्थ शिक्षा के छात्रों को स्व-अध्ययन सामग्री अथवा सेल्फ लर्निंग मैटेरियल (SLM) के रूप में पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराता है। वहीं उर्दू माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए भी यह सामग्री उपलब्ध है। अधिकाधिक लोग इससे लाभान्वित हो सकें, इसके लिए उर्दू में इलेक्ट्रॉनिक पाठ्य सामग्री अथवा eSLM विश्वविद्यालय की वेबसाइट से मुफ्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि संबंधित शिक्षकों की कड़ी मेहनत और लेखकों के पूर्ण सहयोग के कारण पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य उच्च-स्तर पर प्रारंभ हो चुका है। दूरस्थ शिक्षा के छात्रों

की सुविधा के लिए, स्व-अध्ययन सामग्री की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए सर्वोपरि है। मुझे विश्वास है कि हम अपनी स्व-शिक्षण सामग्री के माध्यम से एक बड़े उर्दू भाषी समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होंगे और इस विश्वविद्यालय के अधिदेश को पूरा कर सकेंगे।

एक ऐसे समय जब हमारा विश्वविद्यालय अपनी स्थापना की 25वीं वर्षगांठ मना रहा है, मुझे इस बात का उल्लेख करते हुए हर्ष हो रहा है कि विश्वविद्यालय का दूरस्थ शिक्षा निदेशालय कम समय में स्व-अध्ययन सामग्री तथा पुस्तकें तैयार कर विद्यार्थियों को पहुंचा रहा है। देश के कोने कोने में छात्र विभिन्न दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों से लाभान्वित हो रहे हैं। यद्यपि पिछले दो वर्षों के दौरान कोविड-19 की विनाशकारी स्थिति के कारण प्रशासनिक मामले और संचारचलन भी काफी कठिन रहे हैं लेकिन विश्वविद्यालय द्वारा दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए सर्वोत्तम प्रयास किया जा रहा है। मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस विश्वविद्यालय का अंग बनने के लिए ह्रदय से बधाई देता हूं और यह विश्वास दिलाता हूँ कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके के लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन

कुलपति

संदेश

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को पूरी दुनिया में अत्यधिक कारगर और लाभप्रद शिक्षा प्रणाली की हैसियत से स्वीकार किया जा चुका है और इस शिक्षा प्रणाली से बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी ने भी अपनी स्थापना के आरंभिक दिनों से ही उर्दू तबके की शिक्षा की स्थिति को महसूस करते हुए इस शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी का बाकायदा प्रारम्भ 1998 में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली और ट्रांसलेशन डिविजन से हुआ था और इस के बाद 2004 में बाकायदा पारंपरिक शिक्षा का आगाज़ हुआ। पारंपरिक शिक्षा के विभिन्न विभाग स्थापित किए गए। नए स्थापित विभागों और ट्रांसलेशन डिविजन में नियुक्तियाँ हुईं। उस वक़्त के शिक्षा प्रेमियों के भरपूर सहयोग से स्व-अधिगम सामग्री को अनुवाद व लेखन के द्वारा तैयार कराया गया।

पिछले कई वर्षों से यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) इस बात पर ज़ोर देता रहा है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था को पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था से लगभग जोड़कर दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के मयार को बुलंद किया जाय। चूंकि मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी दूरस्थ शिक्षा और पारंपरिक शिक्षा का विश्वविद्यालय है, अतः इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) के दिशा निर्देशों के मुताबिक दूरस्थ शिक्षा प्रणाली और पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम को जोड़कर और गुणवततापूर्ण करके स्व-अधिगम सामग्री को पुनः क्रमवार यू.जी. और पी.जी. के विद्यार्थियों के लिए क्रमशः 6 खंड-24 इकाइयों और 4 खंड – 16 इकाइयों पर आधारित नए तर्ज़ की रूपरेखा पर तैयार कराया जा रहा है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय यू.जी., पी.जी., बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्सेज पर आधारित कुल 15 पाठ्यक्रम चला रहा है। बहुत जल्द ही तकनीकी हुनर पर आधारित पाठ्यक्रम शुरू किए जाएंगे। अधिगमकर्ताओं की सरलता के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बंगलुरु, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पटना, रांची और श्रीनगर) और 5 उपक्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह और अमरावती) का एक बहुत बड़ा नेटवर्क तैयार किया है। इन केन्द्रों के अंतर्गत एक साथ 155 अधिगम सहायक केंद्र (लर्निंग सपोर्ट सेंटर) काम कर रहे हैं। जो अधिगमकर्ताओं को शैक्षिक और प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध कराते हैं। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय (डी. डी. ई.) ने अपनी शैक्षिक और व्यवस्था से संबन्धित कार्यों में आई.सी.टी. का इस्तेमाल शुरू कर दिया है। इसके अलावा अपने सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश सिर्फ ऑनलाइन तरीके से ही दे रहा है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की वेबसाइट पर अधिगमकर्ता को स्व-अधिगम सामग्री की सॉफ्ट कॉपियाँ भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसके अतिरिक्त शीघ्र ही ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग का लिंक भी वैबसाइट पर उपलब्ध कराया जाएगा। इसके साथ-साथ अध्ययन व अधिगम के बीच एसएमएस (SMS) की सुविधा उपलब्ध की जा रही है। जिसके द्वारा अधिगमकर्ताओं को पाठ्यक्रमों के विभिन्न पहलुओं जैसे- कोर्स के रजिस्ट्रेशन, दत्तकार्य, काउंसलिंग, परीक्षा के बारे में सूचित किया जाता है।

आशा है कि देश में शैक्षिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई उर्दू आबादी को मुख्यधारा में शामिल करने में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की भी मुख्य भूमिका होगी।

प्रो. मो. रज़ाउल्लाह ख़ान

निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

भूमिका

'तुलसीदास' शीर्षक यह पुस्तक मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के बी.ए (हिंदी) पंचम सत्र के दूरस्थ शिक्षा माध्यम के छात्रों के लिए तैयार की गई है। इसकी संपूर्ण योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशों के अनुसार नियमित माध्यम के पाठ्यक्रम के अनुरूप रखी गई है।

जैसा कि पुस्तक के शीर्षक से ही स्पष्ट है, इसमें शामिल पाठसामग्री मध्यकालीन भक्त कवि 'तुलसीदास' पर केंद्रित है, जिसका उद्देश्य छात्रों को तुलसीदास और उनके साहित्य का गहन परिचय देना है। इस स्वाध्याय सामग्री के अध्ययन से वे भक्तिकालीन सगुण काव्य में तुलसीदास के महत्व, उनकी भक्ति भावना और काव्यकला तथा विशेष रूप से उनके आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम राम के उदात्त चरित्र से परिचित हो सकेंगे।

"तुलसीदास का महत्व बताने के लिए अनेक विद्वानों ने अनेक प्रकार की तुलानात्मक उक्तियों का सहारा लिया है। नाभादास ने इन्हें 'कलिकाल का वाल्मीकि' कहा था, स्मिथ ने इन्हें 'मुग़लकाल का सबसे महान व्यक्ति' माना था, ग्रियर्सन ने इन्हें 'बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक' कहा था और यह तो बहुत बार कहा है कि उनकी रामायण उत्तर भारत की बाइबिल है। इन सारी उक्तियों का तात्पर्य यही है कि तुलसीदास असाधारण शक्तिशाली कवि, लोकनायक और महात्मा थे।" (द्विवेदी, हजारीप्रसाद: हिन्दी साहित्य - उद्भव और विकास: 1952) यही कारण है कि इस युगनिर्माता कवि का चयन विशेष अध्ययन के लिए किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में कुल 24 इकाइयाँ हैं जिन्हें 6 खंडों में क्रमिक रूप में संयोजित किया गया है। पहला और दूसरा खंड तुलसीदास के व्यक्तित्व और कृतित्व के परिचय तथा उनके महाकाव्य 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकांड' के निर्धारित अंशों की व्याख्या को समर्पित हैं। खंड 3 में तुलसी कृत 'कवितावली' का परिचय और उसके 'उत्तरकांड' के निर्धारित अंशों की व्याख्या शामिल है। इसी प्रकार, चौथे खंड में उनकी रचना 'गीतावली' के 'बालकांड' का परिचय देते हुए उसके निर्धारित अंशों की व्याख्या दी गई है। खंड 5 और 6 'विनय पत्रिका' पर केंद्रित हैं। इनमें 'विनय पत्रिका' का परिचय देते हुए उसके निर्धारित अंशों की व्याख्या की गई है। इस प्रकार यह सामग्री तुलसीदास की प्रतिनिधि रचनाओं के गहन अध्ययन के माध्यम से छात्रों को तुलसी के युगबोध, भक्तिभाव, मूल्यबोध और सौंदर्यबोध से परिचित कराने के प्रयोजन से तैयार की गई है। साथ ही, इससे छात्रों को मध्यकालीन काव्यभाषा के दोनों महत्वपूर्ण रूपों - अवधी और ब्रजभाषा - के सौंदर्य से भी परिचित होने का अवसर मिलेगा। इस

पाठसामग्री के अध्ययन से छात्रों के बौद्धिक, नैतिक और भाषिक स्तर का विकास भी होगा। प्रस्तुत पुस्तक की सारी सामग्री को छात्रों की सुविधा के लिए सरल, सहज और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

इस समस्त पाठसामग्री को तैयार करने में हमें जिन विद्वान इकाई लेखकों, ग्रंथों और ग्रंथकारों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञ हैं।

डॉ. आफ़ताब आलम बेगम
पाठ्यक्रम समन्वयक

तुलसीदास

इकाई 1 : तुलसीदास : एक परिचय

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 मूल पाठ : तुलसीदास : एक परिचय
1.3.1 जीवन परिचय
1.3.2 रचना संसार
1.3.3 कलापक्ष एवं भावपक्ष
1.3.4 समाज सुधारक रूप
1.3.5 हिंदी साहित्य में तुलसीदास का स्थान
1.4 पाठ सार
1.5 पाठ की उपलब्धियाँ
1.6 शब्द संपदा
1.7 परीक्षार्थ प्रश्न
1.8 पठनीय पुस्तकें

1.1 : प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में मध्यकाल को दो भागों में विभाजित किया गया है - पूर्वमध्यकाल और उत्तरमध्यकाल। पूर्वमध्यकाल को भक्तिकाल कहा गया है। डॉ. गियर्सन ने भक्तिकाल को स्वर्ण युग कहा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काल को दो भागों में विभक्त किया है जैसे निर्गुण और सगुण। निर्गुण में फिर से दो भागों में विभाजित किया है – 1. ज्ञानाश्रय या ज्ञानमार्गी काव्य और 2. प्रेमाश्रय या प्रेममार्गी काव्य। इसी तरह से सगुण को दो भागों में विभाजित किया है 1. रामभक्ति काव्यधारा और 2. कृष्ण काव्यधारा। रामभक्ति काव्य धारा में ही राम का चरित्र-चित्रण नहीं किया बल्कि प्रत्येक युग में राम से संबंधी प्रत्येक युग में रामचरित काव्य रचा गया है।

तुलसीदास रामभक्ति काव्य धारा के प्रमुख कवि है। उनकी रामचरितमानस रचना बहुत प्रसिद्ध रचना है। उसमें मर्यादा पुरुष राम का जीवन चरित्र लिखा है। जिससे एक आदर्श समाज की स्थापना की कल्पना की गयी है। तुलसीदास के काव्य रचना में समाज कल्याण की बात की गयी है। उनके काव्य में समन्वय की बात की गयी है उन्हें लोक नायक कवि भी कहा गया है। तुलसीदास ने अवधी और ब्रज भाषा में अपनी रचनाएँ रची हैं। उनका स्थान महान कवियों में से एक हैं।

1.2 : उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने से आप –

- तुलसीदास का जीवन और व्यक्तित्व से परिचित हो सकेंगे।
- तुलसीदास के रचना संसार से परिचित हो सकेंगे।
- तुलसीदास के काव्यबोध से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी साहित्य में तुलसीदास के उनका स्थान के बारे में जान सकेंगे ।

1.3 : मूल पाठ: तुलसीदास : एक परिचय

1.3.1 तुलसीदास का जीवन परिचय –

तुलसीदास के जीवन के बारे में बाबा वेणीमाधव दास कृत 'गोसाई चरित' एवं गोसाई चरित, रघुवरदास कृत 'तुलसी चरित' और नाभादास कृत भक्तमाल में उल्लेख किया है। तुलसीदास के जन्म को लेकर विद्वानों में मतभेद है। गोसाई चरित एवं तुलसीचरित में तुलसीदास का जन्म संवत् 1554 दिया है। वेणीमाधव दास की पुस्तक में तो श्रवण शुक्ला सप्तमी तिथि दी हुई है। संवत् ग्रहण करने से गोस्वामी तुलसीदास की आयु 126-127वर्ष की होती है। 'शिव सिंह सरोज' में तुलसीदास का जन्म संवत् 1583दिया है।

मिर्जापुर के रामभक्त एवं रामायणी पंडित राम गुलाम द्विवेदी ने जनश्रुति के अनुसार तुलसी का जन्म संवत् 1589 मानते हैं। सर्वसामान्य के आधार पर तुलसीदास जन्म संवत् 1589 (1532 ई.) अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

गोसाई चरित और तुलसी चरित के आधार पर तुलसीदास का जन्म स्थान राजापुर बताया गया है। इसी स्थान को शिवसिंह सेंगर, आचार्य शुक्ल और रामगुलाम द्विवेदी की मान्यता प्राप्त है। लाला सीताराम, गौरीशंकर हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामनरेश त्रिपाठी तथा डॉ. रामदत्त भारद्वाज ने सोरों को तुलसीदास का जन्म मानते हैं।

"मैं पुनि निज गुरु सन सुनी, कथा सो सुकर खेत।"

तुलसीदास के इस उक्ति के अनुसार सुकर खेत का अभिप्राय सोरों मानते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है सूकर खेत को भ्रम से सोरो समझ लिया है। 'सुकर छेत्र' गोंडा जिले में सरयू नदी के किनारे एक पवित्र तीर्थ स्थान है। उपर्युक्त के अनुसार सर्वमान्य जन्म स्थान राजपुर को ही मानते हैं।

सर्वमान्य एवं दो चरितों के आधार पर तुलसीदास सरयूपारी ब्राह्मण माने जाते हैं। इसे ही पंडित रामगुलाम ने समर्थन किया है।

"तुलसी परासर गोत दुबे पतिऔजा के"

गोस्वामी तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। तुलसीदास ने विनयपत्रिका में कहा-

"जनक जननी तज्यो जनमि, करम बिनु विधिहु सृज्यो अवडेरे" तथा

"तनुजन्यो कुटिल कीट ज्यों, तज्यों मातु पिता हूँ।"

इन पंक्तियों के अनुसार माता-पिता ने अपने संतान को त्याग दिया है। तुलसी का बाल्यकाल संघर्षमयी रहा है।

तुलसी का पालन पोषण पांच साल तक दासी मुनिया ने किया लेकिन बह भी ज्यादा दिन नहीं रही। दासी मुनिया की मृत्यु के बाद बालक तुलसीदास भटकते-भटकते बाबा नरहरिदास से संपर्क हुआ। बाबा नरहरिदास ने तुलसी को अनाथ बालक समझकर उसे अपने साथ रखकर उसे शिक्षा–दीक्षा दी। जनश्रुतियों के अनुसार तुलसीदास ने रामकथा भी पहले बाबा नरहरिदास से ही सुनी है। बादमें तुलसी ने कशी में रहकर विद्वान महात्मा शेष सनातन जी से वेद, वेदांग, दर्शन, इतिहास, पूरण का ज्ञान प्राप्त किया।

तुलसीदास के संबंध में यह भी जनमानस प्रसिद्ध है कि अपनी युवा अवस्था में पत्नी के प्रेम में बीना बुलाएँ वे ससुराल पहुँच गए। उनकी पत्नी रत्नावली से उन्हें धिक्कार एवं फटकार मिली।

लाज न लागत आपकों, दौरे आयहु साथ।
धिक-धिक ऐसे प्रेम को, कहा कहौ मैं नाथ।।
अस्थिचर्ममय देह मम, तामे जैसी प्रीति।
तैसी जो श्रीराम महँ, होति न तौ भवभीति।।

इसी फटकार से तुलसीदास का जीवन ही बदल गया। पत्नी के प्रेरणा से ही महान राम भक्त बन गए और एक अछे कवि भी हुए हैं।

तुलसीदास की मृत्यु काशी में संवत् 1680 (सन् 1623) में हुआ। तुलसीदास के मृत्यु के संबंध में जन सामान्य दोहा कहा जाता है।

संवत् सोरह सै असी, असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर।।

बोध प्रश्न

- तुलसीदास की जन्मतिथि के बारे में क्या मान्यताएँ प्रचलित हैं?
- तुलसी के जन्मस्थान के रूप में किस स्थान को सर्वाधिक मान्यता प्राप्त है?

1.3.2 रचना संसार

तुलसीदास ने पत्नी के डांटने पर विरक्त होकर वह घर त्यागकर साहित्य सृजन की ओर उन्मुख हुए वे काशी में आकर ज्ञान प्राप्त किए और राम भक्ति में तलीन हो गए। तुलसीदास लोकनायक थे वे लोगों के हितकारी थे। अपनी रचनाओं में लोकहित को ध्यान में रखते हुए किए हैं। तुलसीदास की रचनाएँ हिंदी नागरी प्रचारणी सभा के अनुसार 12 ग्रंथों को प्रमाणिक माना है। वे निम्न प्रकार से हैं –

अवधी भाषा में रचित कृतियाँ –

रामचरित मानस, रामलला नहछु, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामाज्ञा प्रश्न।

ब्रज भाषा में रचित कृतियाँ –

गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका, कृष्ण गीतावली, कवितावली और वैराग्य संदीपनी

1. रामचरितमानस

इस ग्रन्थ का रचनाकाल 1574ई. है। यह अयोध्या में प्रारम्भ करके अंतिम भाग काशी में समाप्त किया है। यह कृति अवधी भाषा में रचित है। रामचरितमानस का महाकाव्य में स्थान माना जाता है। यह कृति सात कांडों में विभाजित है। जैसे – बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धकाण्ड, सुंदरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड आदि। इसे पूर्ण करने में दो वर्ष सात महीने और छब्बीस दिन का समय लगा है। इस कृति के बारे में जनमान्यता है कि तुलसीदास ने सर्वप्रथम रामचरितमानस का पाठ सबसे पहले रसखान को सुनाया।

तुलसीदास ने रामचरितमानस में मर्यादा पुरुषोत्तम राम का वर्णन किया है। इसमें छंद का प्रयोग किया गया है। छंद विधान में चौपाई, दोहा, सोरठा, रोला छप्पय, हरिगीतिका, त्रिभंगी, अनुष्टुम, इंद्रजा, त्रोटक और भुजंगप्रयात है। इस ग्रन्थ के माध्यम से तुलसीदास ने आम जनता को आदर्श समाज की स्थापना का संदेश देते हैं।

2. रामलला नहछु

यह एक छोटी सी रचना है, जिसमें 20 छंद हैं। इसमें तुलसीदास ने राम विवाह के अवसर का गीत को उल्लेख किया है। राम विवाह में आई हुई प्रजनन की स्त्रियों का हावभाव का सुंदर वर्णन है। तुलसीदास ने इसे लोक गीत के रूप में गाए जाने के लिए 'सोहर' शैली में की थी। इसकी भाषा अवधी है।

3. बरवै रामायण

इस ग्रन्थ का समय सवंत् 1669 है। इसमें 69 बरवै छंद एवं सात काण्ड के माध्यम से रामचरितमानस की पूरी कथा है। यह समय-समय पर रचे गए बरवै छंदों का संग्रह मात्र हैं। यह रचना रहीम के कहने पर की थी। इसे लघु काव्यकृति कहा गया है।

4. पार्वती मंगल

इस का रचनाकाल सवंत् 1643 है। इसमें 164छंद है। इस ग्रंथ में शिव-पार्वती के विवाह का वर्णन है। यह एक खंड काव्य है। यह मंगल काव्य है जिसे मांगलिक अवसरों पर स्त्रियों द्वारा गाया जाता है। इसका प्रमुख उद्देश्य शिव-पार्वती विवाह का वर्णन करना है। इस कृति का आधार कुमार संभव माना जाता है। इसमें विभिन्न रसों, छंदों, अलंकारों का सार्थक प्रयोग हुआ है।

5. जानकी मंगल

इसका रचना काल सवंत् 1643 है। इसमें राम-सीता का विवाह का वर्णन है। इस ग्रंथ में 192 छंदों एवं 24 हरिगीतिका छंदों सहित कुल 216 छंद है। यह छंद गेय है। इसकी भाषा अवधी है।

6. रामाज्ञ प्रश्न

इसे सात सर्गों में लिखा गया है। जिसमें प्रत्येक सर्ग में सात सप्तक और प्रत्येक सप्तक में सात दोहे हैं। इस प्रकार से कुल दोहे 343 हैं। यह रामकथा पर आधारित है। इसमें सीता की धरती प्रवेश कथा वर्णित है। इसकी भाषा अवधी है। यह मुक्तक काव्य है।

बोध प्रश्न –

- तुलसीदास ने अवधी भाषा में कौनसी रचनाएँ की ?
- रामचरितमानस में कितने खंड हैं ?

7. गीतावली

इसमें रामकथा संबंधित पदावली है। इसे गीतिकाव्य शैली में रचा गया है। इसमें 328 पद हैं। गीतावली का प्रारंभ राम के जन्मोत्सव से होता है। इसमें भी कथ्य के आधारों पर सात काण्डों में विभाजित किया गया है। इसमें 21 रागों को प्रस्तुत किया है।

8. दोहावली

समय-समय पर लिखे गए दोहों का संग्रह है। इसका काल सवंत् 1626 से लेकर सवंत् 1680 तक माना जाता है। इसमें कुल 573 दोहे हैं। यह मुक्तक काव्य की सफलता देखी जा सकती है। इसमें प्रेम, भक्ति, धर्म, नीति, विवेक, अचार-विचार, शास्त्रामत, राम –महिमा आदि विषम का समावेश हैं। इसकी भाषा ब्रज रही है।

9. विनयपत्रिका

तुलसीदास के कृतियों में विनयपत्रिका का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें कुल 279 पद हैं। यह तुलसीदास के अध्यात्मिक जीवन को दर्शाता है। राम के चरणों में भेजी गई गीतात्मक अर्जी के रूप में मानते हैं। तुलसीदास भक्त के रूप में मुखरित हुए हैं। जिस प्रकार तुलसी को जानने के लिए रामचरितमानस समझा जाता है उसी प्रकार से विनयपत्रिका को भी समझा जाता है।

10. कृष्ण गीतावली

इस रचना का समय सवंत् 1643 और 1650 के बीच माना जाता है। यह पदों का संग्रह है। इसे वृन्दावन की यात्रा के अवसर पर की गई है। इसमें वात्सल्य एवं शृंगार दोनों रसों का प्राधान्य है। कृष्ण गीतावली में सूरदास के भ्रमरगीत शैली का अनुकरण करते हुए 61 पदों मेमिन पूरी कृष्ण के बाल लीला का वर्णन किया है। इसकी भाषा ब्रज है।

11. कवितावली

इसमें तुलसीदास के जीवन एवं उनके युग को समझने के लिए महत्वपूर्ण रचना है। कवितावली में राम कथा संबंधी पदावली है। यह ग्रंथ सात काण्डों में विभाजित है। कवितावली में राम के शौर्य का वर्णन एवं हनुमान द्वारा लंका दहन का वर्णन है। वीर, रौद्र और भयानक रस का प्रयोग है। इसमें काशी में फैली महामारी का भी वर्णन है। यह रचना कवित्त सवैया शैली में लिखी गई है। यह मुक्तक काव्य है।

12. वैराग्य संदीपनी

यह एक छोटी से रचना है। इसमें 62 छंद है। इसमें शांत रस प्रमुख है। निर्गुण और सगुण की एकता को दर्शाया है। वैराग्य संदीपनी में तीन प्रकार के छंद है। दोहा, सोरठा और चौपाई।

बोध प्रश्न

- तुलसी की कुछ प्रमुख रचनाओं के नाम बताइए।
- 'विनय पत्रिका' का प्रमुख रस क्या है?

1.3.3 कलापक्ष एवं भावपक्ष

कलापक्ष -

तुलसीदास काव्य कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण कवि है। वे अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करने में अद्वितीय है। तुलसीदास के दृष्टि में वही कला सफल कला थी, जो सौंदर्य युक्त होने के साथ-साथ सब के लिए हितकारी भी हो। उनके काव्य में सभी प्रकार की शैलियों का प्रयोग हुआ है। तुलसीदास ने महाकाव्य, खंड काव्य, मुक्तक काव्य, गीति काव्य की रचना की है। उनके काव्यों में अनेक छंद का भी प्रयोग हुआ है। जैसे – सवैया, छप्पय, दोहा, चौपाई, कवित्त, बरवै आदि। तुलसीदास ने अपनी प्रतिभा के अनुसार छंदों का प्रयोग किया है। वे लोकप्रचलित छंदों का प्रयोग अपने काव्य में किया है। आचार्य रामचंद शुक्ल कहते हैं कि "तुलसीदास जी के रचनाविधान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा के बल से सबके सौंदर्य की पराकाष्ठा अपनी दिव्य वाणी में दिखाकर साहित्य क्षेत्र में प्रथम पद के अधिकारी हुए।" तुलसीदास ने अपने काव्य में अलंकारों का भी प्रयोग हुआ है वे अनुप्रास, यमक, वक्रोक्ति, उपमा, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, विभावना और विशेषोक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

तुलसीदास ने जनमानस की भाषा में काव्य की रचनाएँ की हैं। उनका अवधी और ब्रजभाषा पर अधिकार था। वे दोनों भाषाओं में भी रचनाएँ की है जैसे- महाकाव्य 'रामचरितमानस' की भाषा अवधी थी तो विनयपत्रिका, गीतावली और कवितावली की रचना ब्रज भाषा में की। विनयपत्रिका भक्ति का अखंड सागर है तो श्री रामचरितमानस ज्ञान और भक्ति का अनुपम सेतु है। शिवकुमार मिश्र कहते हैं कि "अपनी रचनाओं में वे चार रूपों में अपने दर्शन देते हैं- व्यक्ति के रूप में, कवि के रूप में, भक्त के रूप में और लोक- व्यवस्थापक के रूप में।"(हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिवृत- शिवकुमार मिश्र। पृ. 58)

भावपक्ष -

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के सगुण कव्याधारा प्रमुख कवि तुलसीदास राम के अनन्य भक्त थे। वे सगुण एवं निर्गुण में विश्वास रखते थे। उनके इष्ट देव राम ही है। लेकिन राम के अलावा भी ईश्वर की भक्ति में भी विश्वास रखते थे। तुलसीदास की विचारधारा आदर्श समाज की कल्पना की थी। उनमें मानव जीवन के सभी आदर्श गुण विद्यमान है। तुलसीदास ने मर्यादा पुरुष राम के जीवन में उन्होंने पिता-पुत्र, भाई-भाई, गुरु-शिष्य, पति-पत्नी, राजा-प्रजा आदि

संबंधों का आदर्श प्रस्तुत किया है। तुलसीदास ने धर्म के क्षेत्र में ज्ञान, भक्ति और कर्म का पालन का समन्वय तथा सामाजिक क्षेत्र में चतुर्थ वर्णाश्रम का समन्वय का बहुत ही सुंदर पद्धति से वर्णन किया है।

बोध प्रश्न –

- तुलसीदास की काव्य शैलियाँ कौनसी हैं ?
- तुलसीदास के काव्य में कौनसा भाव है ?

1.3.4 समाज सुधारक रूप

तुलसीदास का समय मुगलों का शासन था। इस समय बड़े-बड़े सूबों में बंटा हुआ था। और अपने-अपने सूबों में पृथक-पृथक राजा थे इनके ऊपर कोई दूसरा अधिकारी नहीं थे। यहाँ किले के स्वामित्व किसी सरदार या बड़े घराने के हाथों में था। यह सामंतवादी और विलासती का समय रहा है। इस समय हिन्दू धर्म में जातिभेद बहुत कठोर नियम था। इस समय में सामंतावादों का बोल-बाला था। दलित या निम्न वर्गों के स्त्री-पुरुषों पर शोषण हो रहा था। इसी काल में जन्म आधारित जाति को अधिक महत्त्व था। हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि "जन्म से ही नीच माने जाने वाले लोगों में यदि कुछ भी स्वाधीन विचार उत्पन्न हुआ करता, तो वे इस कठोर बंधन की विषम वेदना से विचलित हो जाते और साधु बन जाते थे।"(हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास – हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ। 125)

समाज में कुप्रथाएँ जन्म ले रही थी हिन्दू धर्म में व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर दिया गया था। ऐसे समय में सामाजिक एकता को एक सूत्र में पिरोने के लिए महामानव गोस्वामी तुलसीदास प्रकट हुए हैं। इन्होंने युग की प्रताड़ना को झेलते हुए सभी तरह के संघर्षों का अनुभव किया था। तुलसीदास ने अपनी रचना रामचरितमानस के माध्यम से एक आदर्श समाज की कल्पना की। और समाज को नया रूप दिया जिसका विवेचन उन्होंने राम-राज्य की परिकल्पना से किया।

वरनाश्रम निज-निज धरम, निरत वेड पथ लोग।

चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नहिं भय सोक न रोग।।

बोध प्रश्न –

- तुलसीदास ने किस राज्य की कल्पना की है?

1.3.5 हिंदी साहित्य में तुलसीदास का स्थान

तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के महत्वपूर्ण कवि हैं। वे ऐसे कवि थे कि उनमें आध्यात्मिक के साथ-साथ सामाजिक चेतना भी प्रबल थी। वे कवि होते हुए भी एक अछे मानवतावादी साधारण व्यक्ति थे। उन्होंने बचपन से ही दरिद्रता को देखा है। तुलसीदास ने अपने बचपन में संघर्ष को झेला है। इसी जीवन संघर्ष से वे निखर पड़े हैं। वे एक आदर्श राम

राज्य की कल्पना करते हैं। उनके साहित्य में अपने समय और समाज का यथार्थ चित्रण किया है। जनता को दरिद्रता, कष्टों का चित्रण सजग भाव से करते हैं जैसे –

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि

बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।

तुलसीदास की भक्ति भावना दास्य भाव की थी। उनके राम गरीबनिवाज के हैं। तुलसीदास ने कलि काल से मुक्ति के लिए राम से निवेदन करते हैं, तथा साथ ही अपने को हीन, मलिन, दीन कहते हैं। और वे कहते हैं कि इस सांसारिक मोह माया से मुक्त कर दें। उनका काव्य मनोरंजन का मात्र नहीं बल्कि उनके काव्य से समाज में परिवर्तन या जागरुक लाने का कार्य करता है। उनका काव्य साधन के रूप में समाज को दिशा निर्देश करता है। तुलसीदास किसी धर्म या किसी जाति को फटकार नहीं लगाया बल्कि प्रेम भाव से अपना उपदेश समाज के सामने प्रस्तुत किया है। वे एक समन्वय एवं लोक नायक कवि रूप ख्याति प्राप्त किए हैं।

बोध प्रश्न –

- हिंदी साहित्य में तुलसीदास का स्थान बताइए।

1.4 : पाठ सार

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। उन्होंने रामभक्ति आधारित अपनी काव्य रचनाएँ की है। वे लोकनायक हैं उनके साहित्य में आम जनता के जीवन शैली से संबंधित है। डॉ. गियर्सन ने बुद्धदेव के बाद ही तुलसीदास को लोकनायक मानते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें समन्वयकारी कवि मानते हैं। तुलसीदास की जीवनी वेणीमाधव दास द्वारा कृत 'गोसाई चरित', रघुवरदास कृत 'तुलसीदास चरित' और नाभादास द्वारा कृत 'भक्तमाल' आदि ग्रंथों में मिलती हैं। तुलसीदास के जन्म को लेकर अनेक विद्वानों में मतभेद हैं लेकिन सर्वसामान्य मान्यता यह है कि उनका जन्म सवंत् 1589 (सन् 1532 ई.) में हुआ। तुलसीदास के जन्म स्थान को लेकर भी विद्वानों में मतभेद हैं लेकिन सर्वमान्यता राजापुर को माना जाता है। तुलसीदास पंडित घराने से आते हैं उनके पिता का नाम आतमराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। माता पिता के त्याग से तुलसी दास को शैशव अवस्था से ही जीवन संघर्ष करना पड़ा। उनका पालन-पोषण एक दासी मुनिया द्वारा पाँच वर्ष तक किया बाद में उसकी भी मृत्यु के बाद दर-दर भटकते हुए गुरु नरहरी दास से भेंट होती है। नरहरिदास से ही वे रामकथा सुनी है। बादमें काशी जाकर ज्ञान प्राप्त किया है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार तुलसीदास के बारह (12) ग्रंथों को प्रमाणित मानते हैं वे निम्न प्रकार से हैं - अवधी भाषा में रचित कृतियाँ – रामचरित मानस, रामलला नहछु, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामाज्ञा प्रश्न आदि। ब्रज भाषा में रचित कृतियाँ - गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका, कृष्ण गीतावली, कवितावली और वैराग्य संदीपनी आदि हैं। तुलसीदास की ख्याति के रूप में रामचरितमानस की रचना मानते हैं। इसमें बालकाण्ड,

अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धकाण्ड, सुंदरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड आदि। इस ग्रन्थ के माध्यम से तुलसीदास ने आम जनता को आदर्श समाज की स्थापना का संदेश देते हैं। दोहावली में प्रेम, भक्ति, धर्म, नीति, विवेक, अचार-विचार, शास्त्रामत, राम –महिमा आदि विषम का समावेश हैं। विनयपत्रिका तुलसीदास के अध्यात्मिक जीवन को दर्शाता है। राम के चरणों में भेजी गई गीतात्मक अर्जी के रूप में मानते हैं। कवितावली में राम के शौर्य का वर्णन एवं हनुमान द्वारा लंका दहन का वर्णन है। तुलसीदास के काव्य की भाषा ब्रज और अवधी रही है। वे अपने काव्य में सवैया, छप्पय, दोहा, चोपाई, कवित्त और बरवै छंद का प्रयोग किया है। उनकी रचना की शैली महाकाव्य, खंडकाव्य, गीतकाव्य, मुक्तक काव्य और प्रबंध काव्य में रही है। वे अलंकार का भी अपने काव्य में प्रयोग किया है।

तुलसीदास का समय सामंतवादी प्रवृति से प्रभावित था। साधारण जनता सामंतवाद से शोषित थी। इसी समय धार्मिकता का भी प्रभाव दिखायी देता है। मुगल शासन का राज था। हिन्दू धर्म में ऊँच-नीच की भावना थी। निम्न कहे जाने वाली जाति एवं स्त्री शोषित रहें है। सम्प्रदायों में भिन्नता थी। ऐसी अन्य कुप्रथाएँ का खंडन करते हुए तुलसीदास ने अपनी रचना के माध्यम से समाज में समन्वय लाने की बात करते हैं। प्रजा की रक्षा के लिए राजा में विश्वास रखते हैं इसलिए वे एक आदर्श मर्यादा पुरुष राम का राम राज्य की कल्पना करते हैं। तुलसीदास लोक के हित में सोचने वाली कवि हैं इसलिए उन्हें लोकनायक कवि भी कहा जाता है।

1.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

प्रस्तुत पाठ के अध्ययन से –

1. हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि गोस्वामी तुलसीदास के जीवन चरित्र का ज्ञान प्राप्त हुआ।
2. गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं से परिचित होने का अवसर प्राप्त हुआ।
3. तुलसीदास के काव्य की रचना शैली एवं छंद के प्रयोग बारे में जानकारी प्राप्त हुई।
4. तुलसीदास के काव्य के कलापक्ष एवं भाव पक्ष का परिचिय प्राप्त हुआ।
5. तुलसीदास की सामजिक चेतना की जानकारी प्राप्त हुई।
6. हिंदी साहित्य में तुलसीदास के स्थान के बारे में जानकारी मिली ।

1.6 : शब्द संपदा

1. जनश्रुति -	वह बात जिसे लोग परंपरा से सुनते चले आ रहे हों
2. युक्तिसंगत -	तर्कसंगत, युक्तिपूर्ण, तर्क के अनुकूल
3. संघर्षमय -	संघर्ष से भरा
4. दीक्षा -	उपदेश, सीख, गुरु से मंत्र लेने की क्रिया

5. जनमानस - जनता का मन, आम व्यक्ति की धारणा
6. लोकहित - जनता की भलाई
7. लोकनायक - लोक का नायक, जन सामान्य का नेता
8. लोकभाषा - जन सामान्य की भाषा, लोक की भाषा
9. वैराग्य - सांसारिक बंधनों से विमुखता
10. शौर्य - शूर होने की अवस्था, शूरता
11. कल्पना - सोचना, मान लेना, मन की वह शक्ति जो अप्रत्यक्ष विषयों का रूप, चित्र उसके सामने ला देती है।
12. समन्वय - सम्मिलित होने की क्रिया या भाव
13. सामंतवादी - सामंतवाद से संबंधित, सामंतवाद का समर्थक
14. आध्यात्मिक - परमात्मा या आत्मा से संबंध रखने वाला, अध्यात्म या धर्म संबंधी

1.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. तुलसीदास के जीवन परिचय पर प्रकाश डालिए।
2. तुलसीदास के काव्य संसार का विवरण दीजिए।
3. तुलसीदास की प्रमुख कृतियों पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. तुलसीदास की काव्य कला एवं भाव पक्ष पर प्रकाश डालिए।
2. तुलसीदास के समाज सुधारक रूप पर प्रकाश डालिए।
3. हिंदी साहित्य में तुलसीदास के स्थान एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. 'रामचरितमानस' की भाषा है- ( )

(अ) अवधी (आ) संस्कृत (इ) ब्रज (ई) इनमें से कोई नहीं

2. तुलसीदास द्वारा रचित प्रामाणिक ग्रंथों की संख्या है- ( )

(अ) 10 (आ) 12 (इ) 13 (ई) 6

3. तुलसीदास के माता का नाम क्या था ? ( )

(अ) तुलसी (आ) कमला (इ) रत्नावली (ई) हुलसी

4. तुलसीदास के पत्नी का नाम क्या था ? ( )

(अ) तुलसी (आ) कमला (इ) रत्नावली (ई) हुलसी

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

1. कवितावली .... भाषा में है।
2. तुलसीदास ने दोहावली की रचना .... के लिए की थी।
3. रामचरितमानस .... कांडों में विभाजित है।
4. कवितावली में रामकथा .... कांडों में वर्णित है।
5. 'विनय पत्रिका' का प्रमुख रस ...... है।

III. सुमेल कीजिए-

1. तुलसी के गुरु	(अ) आत्माराम दुबे
2. तुलसी की भक्ति	(आ) अवधी
3. गीतावली	(इ) दास्य
4. रामचरित मानस	(ई) ब्रजभाषा
5. तुलसी के पिता	(उ) नरहरिदास

1.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र और हरदयाल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल
3. हिंदी साहित्य उद्भव और विकास : हजारीप्रसाद द्विवेदी
4. प्राचीन कवि : विश्वम्भर 'मानव'
5. तुलसीदास और उनका युग : डॉ. राजपति दीक्षित

इकाई 2 : रामचरितमानस – अयोध्याकांड : एक परिचय

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 मूल पाठ - अयोध्याकांड: एक परिचय

2.3.1 रामराज्याभिषेक की तैयारी और कैकेयी के वरदान

2.3.2 वनपथ में राम और चित्रकूट में पर्णकुटी

2.3.3 राम के प्रस्थान के बाद अयोध्या का घटना चक्र

2.3.4 भरत की चित्रकूट यात्रा

2.3.5 चित्रकूट में सभा

2.3.6 भरत की विदाई

2.4 पाठ सार

2.5 पाठ की उपलब्धियाँ

2.6 शब्द संपदा

2.7 परीक्षार्थ प्रश्न

2.8 पठनीय पुस्तकें

2.1 : प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप जान चुके हैं कि तुलसीदास भक्तिकाल के प्रमुख कवि हैं। तुलसीदास जी अग्रणी हैं। वे भक्तिकाल के सगुण काव्य धारा की रामभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनकी प्रमुख रचनाओं में हनुमानबाहुक, गीतावली, रामाज्ञा प्रश्न, दोहावली, बरबै रामायण, कृष्ण गीतावली, वैराग्य संदीपनी, कवितावली, रामलला नहछू, जानकी मंगल, रामचरितमानस विनय पत्रिका उल्लेखनीय हैं। रामचरितमानस उनके द्वारा रचित कालजयी महाकाव्य है। जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र के सहारे पारिवारिक आदर्श, जीवन मूल्यों, भारतीय संस्कृति और नैतिकता के आदर्शों अंकन किया गया है।

रामचरितमानस में कर्तव्यपरायणता, शिष्टाचार, सदाचार, कर्मण्यता, निष्कपटता, कृतज्ञता, सत्य, न्यायप्रियता, क्षमा आदि जीवन मूल्यों का निरूपण अत्यंत सुंदर और सहज रूप में हुआ है। इस महाकाव्य में ‘रामचरितमानस’ में सात कांड(सर्ग) हैं। 1.बालकांड, 2.

अयोध्याकांड, 3. अरण्यकांड, 4. किष्किन्धाकाण्ड, 5. सुंदरकांड, 6. लंकाकांड और 7. उत्तरकांड। प्रस्तुत इकाई में आप इनमें से दूसरे कांड अर्थात अयोध्याकांड का अध्ययन करेंगे।

'अयोध्याकांड' रामचरितमानस का द्वितीय सर्ग है। यह कांड रामचरित की आगामी घटमनाओं का मुख्य आधार है। इसके अंतर्गत चित्रकूट की सभा एक विशेष घटना है जिसमें मानवता, व्यवहार कुशलता, स्नेह-शील, नीति, त्याग आदि का सुंदर रूप प्रकट हुआ है।

2.2 : उद्देश्य

1. प्रिय छात्रो ! इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप अयोध्याकांड की विषयवस्तु से अवगत हो सकेंगे।

2. राम के पिता दशरथ की सत्यनिष्ठा और पुत्रवत्सलता से परिचित हो सकेंगे।

3. सीता और लक्ष्मण की राम के प्रति निष्ठा को समझ सकेंगे।

4. राम की कर्तव्य निष्ठा और भरत की निश्छलता से परिचित हो सकेंगे।

राम के उदात्त चरित्र के विभिन्न पहलुओं को उनके आचरण के माध्यम से आत्मसात कर सकेंगे।

2.3 : मूल पाठ : अयोध्याकांड: एक परिचय

2.3.1 रामराज्याभिषेक की तैयारी और कैकेयी के वरदान

राम और सीता के विवाह के उपरांत एक दिन राजा दशरथ ने अपनी वृद्धावस्था का ध्यान आने पर अपने बड़े पुत्र राम के राज्याभिषेक का निर्णय लिया। यह समाचार सुनकर पूरी अयोध्या में खुशी की लहर दौड़ गई। परंतु इससे देवताओं की व्याकुलता बढ़ने लगी कि यदि राम राजा बन जाते हैं तो वे अयोध्या के ही होकर रह जाएंगे तथा रावण सहित समस्त राक्षसों के नाश का बड़ा कार्य रुक जाएगा। जिसके लिए राम का अवतार हुआ है वह अधूरा रह जाएगा। इसलिए देवताओं ने सरस्वती जी से प्रार्थना की कि कुछ ऐसा करें जिससे श्री राम का राज्याभिषेक रुके तथा वे अयोध्या त्याग कर वन गमन करें।

सरस्वती ने कैकेयी की दासी मंथरा को अपयश की पिटारी बनाकर उसकी बुद्धि फेर दी। अवधपुरी में राज्याभिषेक की तैयारियाँ देखकर। मंथरा उदास होकर कैकेयी के पास गई। उससे राम के राज्याभिषेक का समाचार सुनकर भरत की माता कैकेयी बहुत खुश हुईं। इस पर उनकी दासी मंथरा ने कैकेयी के कान भरने शुरू किए कि रामचन्द्र जा बनेंगे तो कौशल्या राजमाता बनेंगी। यह सुनकर कैकेयी चिंता में पड़ गईं कि क्या मुझे कौशल्या की चाकरी करनी पड़ेगी ? अत: मंथरा की बातों में आ गई और उसकी सलाह मानकर कोप भवन में चली गई। जिसका अर्थ था कि वह अपने पति राजा दशरथ से रुष्ट हैं।

प्रिय छात्रों! आपको यह जानना रोचक लगेगा कि एक बार राजा दशरथ जब युद्ध में शत्रुओं से घिरे हुए थे तो अचानक उनके रथ के पहिए की कील निकल गई थी। उस युद्ध में महारानी कैकेयी भी साथ थीं। उन्होंने कील से रथ का पहिया निकलते देखा तो उसके स्थान पर अपनी उँगली घुसा दी थी। इस तरह उन्होंने महाराज दशरथ की रक्षा कर ली। इसके लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हुए राजा दशरथ ने उन्हें दो वरदान माँगने के लिए कहा। रानी कैकेयी ने कहा कि अभी मुझे किसी वरदान की आवश्यकता नहीं है। कभी होगी तो माँग लूँगी। मंथरा ने कैकेयी को उन वरदानों की याद दिलाई और कहा कि राम की सौगंध दिलाने के बाद ही वे राजा दशरथ से ये दो वरदान माँगे कि 1.राजतिलक राम का नहीं बल्कि भरत का हो। 2. राम को चौदह वर्ष का वनवास दिया जाए।

राजा दशरथ को जब यह समाचार प्राप्त हुआ, तब वे कैकेयी को मनाने के लिए कोप भवन पहुँचे। दशरथ रानी की ऐसी दशा देखकर डर गए और रूठने का कारण पूछा। कैकई ने कहा कि आप मेरा भी मनोरथ पूरा करें। पहले आप राम की सौगंध कि, जो मैं जो मांगूँगी आप उसे पूरा करेंगे। राजा दशरथ ने रानी की बात मानी और सौगंध ली। रघुकुल रीत सदा चली आई प्राण जाए पर वचन न जाई। तब रानी कैकई ने दो वर माँगे। राम को चौदह वर्ष का वनवास और भरत को राजगद्दी। यह सुनते ही राजा मूर्छित हो गए। राजा दशरथ ने कहा कि हे प्रिये! मेरे लिए दोनों पुत्र भरत और राम एक समान हैं।

राम को राज्य का कोई लोभ नहीं है तथा भरत पर उनका बड़ा ही स्नेह है। मैंने ही अपने मन में बड़े-छोटे का विचार करके बड़े भाई का राजतिलक करना चाहा था। लेकिन रानी अपनी बात पर अड़ी रही तथा प्रात:काल मंत्री सुमंत्र के हाथों राम को बुला भेजा। राम ने सुमंत्र को आते देखा तो पिता के समान समझकर उनका आदर किया। सुमंत्र ने राम को राजा की आज्ञा सुनाई तथा दोनों महल की ओर चल पड़े।

राम स्वभाव से कोमल हैं। उन्होंने मीठे वचनों से माता कैकेयी से पूछा कि हे माता, पिताजी के दुख का कारण बताइए जिससे उसका निवारण किया जा सके। कैकेयी ने कहा कि राजा का तुम पर अनन्य स्नेह है मैंने अपने दो वरदान माँगे थे वचनों का विवरण जानकार राम ने कहा, हे माता! वही पुत्र बड़भागी होता है जो पिता-माता की आज्ञा का पालन करे। वन में जाना भी मेरे हित में ही होगा। इसमें पिताजी की आज्ञा और आपकी सम्मति है तो नि: संदेह मेरे लिए कल्याणकारी होगा। प्राणप्रिय भरत को राज्य मिले इससे बढ़कर हर्ष क्या हो सकता है। आज विधाता सब प्रकार से मेरे अनुकूल है। इस छोटी सी बात के लिए ही पिताजी को इतना भारी दुःख हो, इस बात पर विश्वास नहीं होता।

कैकेयी ने बड़ी चतुराई से कहा कि हे पुत्र ! तुम तो माता-पिता और भाइयों को सुख देने वाले हो। हे राम! तुम जो कुछ कह रहे हो, सब सत्य है। तुम पिता-माता के वचनों के लिए

तत्पर रहते हो। मैं तुम्हारी बलिहारी जाती हूँ, तुम पिता को समझाकर वही करो, जिससे बुढ़ापे में इनका अपयश न हो।

शोकग्रस्त राजा कुछ कह नहीं पा रहे थे। वे बार-बार राम को हृदय से लगाते और ईश्वर से प्रार्थना करते कि राम वन को न जाएँ। पिता को प्रेमवश दुखी देखकर राम कहते हैं हे पिताजी! इस मंगल के समय सोच करना छोड़ दीजिए और प्रसन्न होकर मुझे आज्ञा दीजिए। आपकी आज्ञा का पालन कर मैं जल्दी ही लौट आऊँगा। आप प्रसन्न होकर आज्ञा दें। मैं माता से विदा माँग आता हूँ।

राम माता कौशल्या के पास गए। उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर आनंद के साथ माता के चरणों में सिर नवाया। और अत्यंत कोमल वाणी में कहा- हे माता! पिताजी ने मुझे वन का राज्य दिया है, जो मेरे लिए कल्याणकारी है। आप भी प्रसन्न मन से मुझे आज्ञा दीजिए। जिससे मेरी वन यात्रा में मंगलमय हो। सरल स्वभाव वाली कौशल्या माता ने धीरज धरकर कहा- हे पुत्र मैं बलिहारी जाती हूँ। पिता की आज्ञा का पालन करना ही पुत्र का सबसे बड़ा धर्म है। यदि केवल पिताजी की ही आज्ञा, हो तो माता को पिता से बड़ी जानकर वन को मत जाओ, किंतु यदि पिता-माता दोनों ने वन जाने को कहा हो, तो वन तुम्हारे लिए सैकड़ों अयोध्या के समान है। उसी समय यह वनवास का समाचार सुनकर सीताजी अकुला उठीं और सास के पास जाकर उनके चरणकमलों की वंदना कर सिर नीचा करके बैठ गईं।

सास ने आशीर्वाद दिया। व्याकुल सीताजी के सुंदर नेत्रों से जलधारा बह रही थी। उनकी यह दशा देखकर राम की माता कौसल्याजी बोलीं- हे तात! सुनो, सीता अत्यन्त ही सुकुमारी हैं तथा सास, ससुर और कुटुंब सभी को प्यारी है। सीता ने कभी कठोर धरती पर पैर नहीं रखा। वही सीता अब तुम्हारे साथ वन चलना चाहती है। उसके लिए तुम्हारा क्या आदेश है? यदि सीता घर में रहें तो हमें बहुत सहारा होगा।

उस पर राम ने सीता से घर पर रह कर सास ससुर की सेवा करने को कहा। तो सीता ने विनम्रता पूर्वक कहा हे प्राणनाथ! आपके बिना स्वर्ग भी मेरे लिए नरक के समान है। अत: मुझे अपने साथ वन में चलने की अनुमति दीजिए। काफी तर्क के बाद राम को कहना पड़ा कि सोच छोड़कर मेरे साथ वन को चलो। आज विषाद करने का अवसर नहीं है। तुरंत वनगमन की तैयारी करो। इसी बीच लक्ष्मण को भी सब घटनाओं का पता चल जाता है। उन्हें भी राम ने पहले तो यही कहा कि "हे भाई! मेरी सीख सुनो और माता-पिता के चरणों की सेवा करो। भरत और शत्रुघ्न घर पर नहीं हैं, महाराज वृद्ध हैं और उन्हें मेरे वियोग का दुःख है। अतः तुम यहीं रहो और सबको सांत्वना देते रहो। "लेकिन लक्ष्मण राम के साथ वन में जाने की जिद पर अड़े रहे। अंतत: राम को उन्हें भी साथ चलने की अनुमति देनी पड़ी।

लक्ष्मण हर्षित मन से अपनी माता सुमित्राजी के पास आए और आदर से माता के चरणों में मस्तक नवाया। माता ने पुत्र की उदासी का कारण पूछा। लक्ष्मणजी ने सब कथा विस्तार से कह सुनाई। माता सुमित्रा यह सुनकर सहम गईं। फिर धैर्य धारण कर स्वभाव से ही सबका हित चाहने वाली सुमित्राजी कोमल वाणी से बोलीं- हे पुत्र ! भाभी जानकी तुम्हारी माता हैं और सब प्रकार से स्नेह करने वाले भाई राम तुम्हारे पिता समान हैं। जहाँ राम का निवास हो, वहीं अयोध्या है। इसलिए यदि सीता-राम वन जाते हैं, तो अयोध्या में तुम्हारा क्या काम ? इसके पश्चात राम सीता और लक्ष्मण के साथ पिता से विद लेने गए। राम के आने की सूचना देते हुए मंत्री ने राजा को उठाकर बैठाया। सीता सहित दोनों पुत्रों को वनगमन की तैयारी में देखकर राजा दशरथ बहुत व्याकुल हो उठे। वियोग में दुखी राजा से कुछ नहीं कहा गया। राजा ने सीता से प्रिय वचन कहे कि वन में बहुत कष्ट हैं। यहाँ सास-ससुर माता-पिता समान हैं। इस तरह सुख का कारण बताया किंतु सीता को यह बातें अच्छी नहीं लगी। चारों ओर शोक से उत्पन्न हुआ भयानक सन्ताप छा गया। तब रघुकुल के वीर राम ने अत्यन्त प्रेम से चरणों में सिर झुकाया और विदा माँगी।

तब वन का सब साज-सामान सजाकर राम ने पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण सहित, वन गमन के लिए प्रस्थान किया। अयोध्या से निकलते ही राम श्रृंगवेरपुर पहुँचे। वहाँ के शासक निषादराज गुह ने यह खबर पाई तो आनंदित होकर वह स्वागत के लिए उपस्थित हो गया। और अपने नगर में रहने का अनुरोध करने लगा। लेकिन राम ने कहा कि पिताजी ने मुझे चौदह वर्ष वनवास की आज्ञा दी है। मुनियों का व्रत और वेष धारण कर मुनियों के योग्य आहार करते हुए वन में ही बसना है, गाँव के भीतर निवास करना उचित नहीं है। तब गुह ने कुश और कोमल पत्तों की सुंदर शय्या सजाकर बिछा दी और फल-मूल और पानी रख दिया. अगले दिन सवेरा होने राम ने सुमंत्र जी से कहा कि अब आप वापस लौट जाएं तथा वहाँ पहुँच कर पिताजी से विनती करें कि वे हमारी किसी बात की चिंता न करें। सीता ने भी कहा कि पति के साथ रहने पर वन मेरे लिए सुखदायी होगा। अतः सास और ससुर से विनती कीजिएगा कि वे मेरी चिंता न करे, मैं वन में सुखी हूँ।

बोध प्रश्न

- कैकेयी ने दशरथ से क्या दो वरदान माँगे ?
- दशरथ ने सुमंत्र को क्या सीख देकर राम के साथ भेजा ?

2.3.2 वनपथ में राम और चित्रकूट में पर्णकुटी

राम ने जबरदस्ती सुमंत्र को लौटाया और गंगा नदी के तट पर आए। राम ने केवट से नाव माँगी, पर वह कहने लगा आपकी चरण धूलि के बारे में सब लोग कहते हैं कि वह मनुष्य बना देने वाली कोई जड़ी है। जिसके छूते ही पत्थर की शिला सुंदर स्त्री हो गई थी। (प्रिय छात्रों! केवट का इशारा अहल्या उद्धार की घटना की ओर जाता है कि गौतम ऋषि की पत्नी

अहल्या शापवश पत्थर की मूर्ति बन गई थीं। राम के स्पर्श से वह मूर्ति पुन: जीवित हो उठी थी।) मेरी नाव भी मुनि की स्त्री हो जाएगी। तो मैं लुट जाऊँगा, मेरी रोजी मारी जाएगी।

यदि आप गंगा पार जाना चाहते हैं तो मुझे पहले अपने चरणकमल पखारने दीजिए। राम से अनुमति लेकर केवट ने उनके चरण पखारे और अपनी नाव से गंगा पार कराई। सीता ने उतराई के रूप में उसे अपनी रत्न जड़ित अँगूठी देनी चाही, लेकिन केवट ने नहीं ली। आगे चलते समय गुह भी साथ-साथ चलने लगा ताकि उनके लिए पर्णकुटी बना सके। अगले दिन वे लोग प्रयाग पहुँचे। वहाँ उन्होंने मुनि भरद्वाज जी के दर्शन किए।

यमुना के किनारे पर रहने वाले स्त्री-पुरुष सब अपना-अपना काम भूलकर दौड़े और लक्ष्मण, राम और सीता का सौंदर्य देखकर अपने भाग्य की बड़ाई करने लगे। पिता की आज्ञा पाकर ये वन को चले हैं, ऐसा सुनकर सब लोग दुखी हुए कि रानी और राजा ने अच्छा नहीं किया। गुह को अनेक तरह से घर लौट जाने के लिए समझाया। उनकी आज्ञा से उसने अपने घर को गमन किया। फिर सीता, राम और लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर यमुना नदी को प्रणाम किया और प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़े। मार्ग में उन्हें वनवासियों ने कहा कि भारी जंगल और बड़े-बड़े पहाड़ों का दुर्गम रास्ता है। आपके साथ सुकुमारी स्त्री है। हाथी और सिंहों से भरा यह भयानक वन देखा तक नहीं जाता। यदि आज्ञा हो तो हम साथ चलें। आप जहाँ तक जाएँगे, वहाँ तक पहुँचाकर, फिर हम लौट आएंगे। किंतु राम ने कोमल विनययुक्त वचन कहकर उन्हें लौटा दिया।

सुंदर वन, तालाब और पर्वतों को देखते हुए राम आगे ऋषि वाल्मीकि जी के आश्रम में पहुँचे। राम ने उनसे पूछा हे मुनिराज वह स्थान बतलाइए जहाँ मैं लक्ष्मण और सीता सहित जाऊँ और वहाँ सुंदर पत्तों और घास की कुटी बनाकर कुछ समय निवास करूँ। राम की सहज ही सरल वाणी सुनकर ज्ञानी मुनि वाल्मीकि ने याद दिलाया कि देवताओं के कार्य के लिए भगवान विष्णु ही राम के रूप में मानव हैं। अत: ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ वे निवास न करते हों। वे तो सर्वव्यापी हैं। ज्ञान और भक्ति के परिपूर्ण गूढ़ वार्ता के बाद ऋषि वाल्मीकि ने सुझाव दिया कि आप चित्रकूट पर्वत पर निवास कीजिए। राम चित्रकूट में आ बसे।

बोध प्रश्न-

- केवट ने किस शर्त पर राम को गंगा पार करवाई ?
- वाल्मीकि ने राम को कहाँ रहने का सुझाव दिया ?

.3.3 राम के प्रस्थान के बाद अयोध्या का घटना चक्र

दूसरी ओर राम को वन में छोड़कर सुमंत्र वापस अयोध्या पहुँचे। राजा दशरथ ने सुमंत्र से पूछा हे सखा! राम, लक्ष्मण और सीता को मुझे दिखा दो। सुमंत्र ने राम का यह संदेश कह सुनाया कि सुमंत्र कहने लगे राम का संदेशा है। हे तात! पिताजी से मेरा प्रणाम कहना। विनती करना कि आप मेरी चिंता न कीजिए। आपकी कृपा और पुण्य से वन में हमारा

कुशल-मंगल होगा। और तुम वही प्रयत्न करना, जिसमें कोसलपति पिताजी कुशल रहें। राजा दशरथ ने पुत्र वियोग में अपने प्राण त्याग दिए। चारों ओर दुख पसर गया।

मुनि वशिष्ठ ने दोनों भाइयों भरत और शत्रुघ्न को बुलवा भेजा, जो ननिहाल गए हुए थे। गुरुजी की आज्ञा सुनते ही वे चल पड़े। एक-एक क्षण वर्ष के समान बीत रहा था। नगर में प्रवेश करते समय अपशकुन होने। इससे भरत के मन में पीड़ा होने लगी। पुत्र को आते सुनकर कैकेयी हर्षित हुई। वह आरती सजाकर दौड़ी और दरवाजे पर ही मिलकर भरत-शत्रुघ्न को महल में ले आई। भरत ने सारे परिवार को दुःखी देखा। भरत ने पूछा पिताजी कहाँ हैं? मेरी सब माताएँ कहाँ हैं? सीताजी और मेरे प्यारे भाई राम-लक्ष्मण कहाँ हैं? कैकेयी कहने लगी हे तात! राजा देवलोक को पधार गए हैं। भरत यह सुनते ही विषाद के मारे तड़प उठे। फिर धीरज धरकर वे सम्हलकर उठे और बोले- माता! पिता के मरने का कारण तो बताओ। पुत्र का वचन सुनकर कैकेयी ने अपनी सब करनी शुरू से अंत तक प्रसन्न मन से सुना दी। पुत्र को व्याकुल देखकर कैकेयी समझाने लगी। हे पुत्र राजा सोच करने योग्य नहीं हैं। उन्होंने पुण्य और यश कमाकर इन्द्रलोक को चले गए। विचार सोच छोड़ दो और समाज सहित नगर का राज्य करो। राजकुमार भरत यह सुनकर बहुत ही सहम गए। और कैकेयी को भला बुरा कहने लगे। फिर दोनों भाई भरत और शत्रुघ्न माता कौसल्या के पास गए। ल्या मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ीं। यह देखते ही भरत बड़े व्याकुल हो गए। फिर बोले माता! पिताजी कहाँ हैं? उन्हें दिखा दें। सीताजी तथा मेरे दोनों भाई श्री राम-लक्ष्मण कहाँ हैं? पिताजी स्वर्ग में हैं और श्री रामजी वन में हैं। केतु के समान केवल मैं ही इन सब अनर्थों का कारण हूँ। इस पर सरल स्वभाव वाली माता ने बड़े प्रेम से भरतजी समझाया।

हे पुत्र तुम अब धीरज धरो। बुरा समय जानकर शोक त्याग दो। पिता की आज्ञा से राम ने वल्कल पहन लिए। उनके हृदय में न विषाद था, न हर्ष! उनका मुख प्रसन्न था। सीता और लक्ष्मण भी साथ हो लिए। कौसल्याजी ने कहा भरत तुम तो मन, वचन से सदा राम के प्यारे हो। अत: स्वयं को दोषी न मानो।

बोध प्रश्न

- भरत के अयोध्या पहुँचने पर कैकेयी ने क्या कहा ?
- राम के वन गमन पर भरत की दशा बताइए ।

2.3.4 भरत की चित्रकूट यात्रा

इसके पश्चात गुरु विशिष्ठ के निर्देशन में भारत ने अपने पिता महाराज दशरथ का विधिवत अंतिम संस्कार किया। वशिष्ठ ने कहा हे भरत! तुम्हारे पिता जैसा राजा तो न हुआ, न है और न अब होने का ही है। हे पुत्र ! कहो, उनकी बड़ाई कोई किस प्रकार करेगा, जिनके श्री

राम, लक्ष्मण, तुम और शत्रुघ्न-सरीखे पुत्र हैं। राजा को वचन प्रिय थे, प्राण प्रिय नहीं थे, इसलिए हे तात! राजा की आज्ञा का पालन करो, इसमें तुम्हारी भलाई है।

कौसल्याजी भी कहने लगीं - हे पुत्र! गुरुजी की आज्ञा का आदर करना चाहिए। गुरु की आज्ञा के अनुसार कार्य करो और प्रजा का पालन कर कुटुम्बियों का दुःख हरो। यह सुनकर भरतजी व्याकुल हो गए। उनका दुख बढ़ गया।

इस पर भरत हाथ जोड़कर उत्तर देने लगे। गुरुजी ने मुझे सुंदर उपदेश दिया। प्रजा, मंत्री आदि सभी को यही सम्मत है। माता ने भी उचित समझकर ही आज्ञा दी है और मैं भी अवश्य उसको सिर चढ़ाकर वैसा ही करना चाहता हूँ। अब आप लोग मेरी विनती सुन लीजिए मेरा कल्याण तो राम की चाकरी में है, सो उसे माता की कुटिलता ने छीन लिया।

मेरे समान पापी कौन होगा, जिसके कारण भाभी सीता और भैया राम का वनवास हुआ? मेरे हृदय में तो बस, एक ही दावानल धधक रहा है कि मेरे कारण सीता-राम दुःखी हुए। जीवन का उत्तम लाभ तो लक्ष्मण ने पाया, जिन्होंने सब कुछ तजकर राम के चरणों में मन लगाया। मेरी व्यथा सुनिए राम के चरणों के दर्शन किए बिना मेरे जी की जलन न जाएगी। प्रातः काल राम के पास चल दूँगा। राम मुझे शरण में आया हुआ देखकर सब अपराध क्षमा करके मुझ पर कृपा करेंगे। आप सब लोग भी इसी में मेरा कल्याण मानकर आज्ञा और आशीर्वाद दीजिए, जिसमें मेरी विनती सुनकर राम लौट आवें। आपने बहुत अच्छी सलाह दी है। शोक समुद्र में डूबते हुए सब लोगों को आपने सहारा दिया। यह सुनकर सभी चलने की तैयारी करने लगे।

बोध प्रश्न

- भरत ने राम वन गमन का जिम्मेदार किसे समझा ?
- राज संभालने की बात पर भरत ने क्या निश्चय किया ?

घर-घर लोग अनेकों प्रकार की सवारियाँ सजाने लगे। हृदय में हर्ष है कि सबेरे चलना है। भरतजी ने घर जाकर विचार किया कि नगर घोड़े, हाथी, महल-खजाना आदि सेवक वही है, जो स्वामी का हित करे, चाहे कोई करोड़ों दोष क्यों न जो जिस योग्य था, उसे उसी काम पर नियुक्त कर दिया। सब व्यवस्था करके भरत माता कौसल्याजी के पास गए। उनकी इच्छा अनुसार भरतजी ने सब माताओं को दुःखी जानकर उनके लिए पालकियों की व्यवस्था की। ऐसी सुंदर पालकियों पर चढ़-चढ़कर सब रानियाँ चलीं तिलक का सब सामान ले चलो। वन में ही मुनि वशिष्ठजी राम को राज्य देंगे, जल्दी चलो।

सीता-राम वन में हैं, मन में ऐसा विचार करके शत्रुघ्न सहित भरत पैदल ही चले जा रहे हैं। उनका स्नेह देखकर लोग प्रेम में मग्न हो गए। माता कौसल्याजी भरत के पास जाकर बोलीं तुम रथ पर चढ़ जाओ। नहीं तो सारा परिवार दुःखी हो जाएगा। माता की आज्ञा मान दोनों

भाई रथ पर चढ़कर चलने लगे। सब श्रृंगवेरपुर के समीप जा पहुँचे। निषादराज ने जब समाचार सुना, भरत वन जा रहे हैं, तो सोचने लगा मन में कुछ कपट भाव अवश्य है। ऐसा विचारकर गुह ने कहा मैं स्वामी के काम के लिए युद्ध करूँगा। अपने साथियों को सावधान कर दिया किंतु एक बूढ़े ने कहा भरत का शील स्वभाव बिना समझे कार्य करना उचित नहीं है। इस प्रकार भरत मार्ग में चले जा रहे हैं।। समाज सहित भरत उत्साहित हैं कि राम मिलेंगे। सीताजी को स्वप्न आया कि समाज सहित भरतजी यहाँ आए हैं। भाई के वियोग की अग्नि से उनका शरीर संतप्त है। राम पुनः सोचने लगे कि भरत के आने का क्या कारण है? लक्ष्मण भरत के आगमन से क्रोधित हो गए। भरत कुसमय देखकर और यह जानकर कि रामजी वनवास में अकेले हैं। भरत को सेना समेत और छोटे भाई सहित मैदान में पछाड़ूँगा। आकाशवाणी हुई- हे तात! तुम्हारे प्रताप और प्रभाव को कौन जान सकता है? परन्तु कोई भी काम हो, उसे अनुचित-उचित समझ किया जाना चाहिए। राम और सीताजी ने लक्ष्मण से कहा हे वत्स ! राज्य का मद सबसे कठिन मद है। परंतु हे भाई! भरत को राजमद कभी नहीं हो सकता। भरत के समान भाई संसार में नहीं है। भरतजी के गुण, शील और स्वभाव को कहते-कहते राम प्रेमसमुद्र में मग्न हो गए।

भरत ने सारे समाज के साथ पवित्र मंदाकिनी में स्नान किया। फिर माता, गुरु और मंत्री की आज्ञा माँगकर निषादराज और शत्रुघ्न को साथ लेकर भरत वहाँ चले जहाँ सीता और राम थे। वे कहते हैं कि राम चाहे अपना सेवक मानकर मेरा सम्मान करें या तिरस्कार करें किंतु मुझे तो राम की ही शरण है।

गुरुजी की आज्ञा मानकर तो राम अवश्य ही अयोध्या को लौट चलेंगे, परन्तु मुनि वशिष्ठजी तो राम की रुचि जानकर ही कुछ कहेंगे।। माता कौसल्याजी के कहने से भी रघुनाथ लौट सकते हैं, पर भला, राम को जन्म देने वाली माता क्या कभी हठ करेगी? भरत प्रातःकाल स्नान करके और राम को सिर नवाकर बैठे ही थे कि ऋषि वशिष्ठजी ने उनको बुलवा भेजा। सभी राम के पास पहुंचे।

बोध प्रश्न

- भरत के वन गमन का समाचार पाकर गुह ने क्या सोचा ?
- लक्ष्मण के रोष करने पर राम ने भरत के बारे में क्या कहा ?

2.3.5 चित्रकूट में सभा

भरतजी गुरु की आज्ञा पाकर बैठ गए। उसी समय ब्राह्मण, महाजन, मंत्री आदि सभी सभासद आकर जुट गए। -श्रेष्ठ मुनि वशिष्ठजी समयोचित वचन बोले- हे सभासदो! भरत! सुनो। राम सत्य प्रतिज्ञ हैं और मर्यादा के रक्षक हैं। राम का अवतार ही जगत के कल्याण के लिए हुआ है। राम का राज्याभिषेक सबके लिए सुखदायक है। मंगल और आनंद का मूल यही एक मार्ग है। राम अयोध्या किस प्रकार चलें? विचारकर कहो तुम दोनों भाई वन जाओ और लक्ष्मण, सीता और राम को लौटा दिया जाए। ये सुंदर वचन सुनकर दोनों भाई भरत और शत्रुघ्न हर्षित हो

गए। मेरे लिए इससे बढ़कर और कोई सुख नहीं है। श्रेष्ठ मुनि देश, काल और अवसर के अनुसार विचार करके वचन बोले- हे सर्वज्ञ! राम! आप सबके हृदय के भीतर बसते हैं और सबके भले-बुरे भाव को जानते हैं, जिसमें पुरवासियों का, माताओं का और भरत का हित हो, वही उपाय बतलाइए।

पहले भरत की विनती आदरपूर्वक सुन लीजिए, फिर उस पर विचार कीजिए। भरत कहते हैं मैं ही इन सारे अनर्थों की जड़ हूँ। अत्यन्त व्याकुल तथा दुःख, प्रेम, विनय और नीति में सनी हुई भरत की श्रेष्ठ वाणी सुनकर सब लोग शोक मग्न हो गए, सारी सभा में विषाद छा गया। हे भरत! तुम्हारा नाम स्मरण करते ही सब पाप, अज्ञान मिट जाएँगे तथा इस लोक में सुंदर यश और परलोक में सुख प्राप्त होगा। तुम संकोच त्याग दो, जो कुछ कहो, मैं आज वही करूँ। सत्य प्रतिज्ञ रघुकुल श्रेष्ठ राम का यह वचन सुनकर सारा समाज सुखी हो गया। भरतजी हाथ जोड़कर बोले। आप मेरी एक विनती सुनकर, फिर जैसा उचित हो वैसा ही कीजिए। रामजी राजा हों, जानकीजी रानी हों तथा राजधानी अयोध्या आनंद की सीमा होकर। गुरु, समाज और भाइयों समेत राम का राज्य अवधपुरी में हो और राम के राजा रहते ही हम लोग अयोध्या में गति पाएं।

उस समय सब लोग प्रेम में मग्न हैं। जनकजी को आते हुए सुनकर राम सभा सहित आदरपूर्वक उठ खड़े हुए। सीता की माता सुनयनाजी ने कहा जो अत्यन्त कोमल और निर्दोष हैं उन पर विपत्ति पर विपत्ति ढहा रहा है। कौसल्याजी ने दुःख भरे हृदय से कहा राम, लक्ष्मण और सीता वन में जाएँ, इसका परिणाम तो अच्छा ही होगा, बुरा नहीं। मुझे तो भरत की चिन्ता हे सखी! मैंने कभी राम की सौगंध नहीं की, सो आज राम की शपथ करके सत्य भाव से कहती हूँ मैं भरत को सदा कुल का दीपक जानती हूँ। जो जिस योग्य था, उससे उसी प्रकार मिलीं। जानकी को तपस्विनी के वेष में देखकर सभी शोक से अत्यन्त व्याकुल हो गए जनकजी ने प्राणों से प्रिय जानकी को हृदय से लगा। उन्होंने कहा बेटी! तूने दोनों कुल पवित्र कर दिए। है।पिता जनकजी ने तो स्नेह से सच्ची सुंदर वाणी कही, परन्तु अपनी बड़ाई सुनकर सीताजी मानो संकोच में समा गईं। पिता-माता ने उन्हें फिर हृदय से लगा लिया और हितभरी सुंदर सीख और आशीष दिया।

गुरुजी ने राम के शील और स्नेह से युक्त स्वभाव से ही सुंदर वचन राजा जनकजी को सुनाए और कहा हे महाराज! अब वही कीजिए, जिसमें सबका हित हो। हे तात राम! मेरा मत तो यह है कि तुम जैसी आज्ञा दो, वैसा ही सब करें! यह सुनकर दोनों हाथ जोड़कर राम सत्य, सरल और कोमल वाणी बोले-आपकी और महाराज की जो आज्ञा होगी, वह सबको शिरोधार्य होगी।

भरत ने धीरज धरकर, सबको प्रणाम किया और बोले मोहवश आप के और पिताजी के वचनों का उल्लंघन कर समाज बटोरकर यहाँ आया हूँ। कृपालु आपने सभी प्रकार से मेरा भला ही माना। मुझे आप क्षमा करें। ऐसा कहते हुए उनके नेत्रों में जल भर आया। उन्होंने राम के चरण पकड़ लिए। राम ने भरत को अपने पास बैठाया। और समझाया कि हे भाई ! तुम वही करो और मुझसे भी कराओ तथा सूर्यकुल के रक्षक बनो। इससे भरतजी को परम संतोष हुआ। मन का विषाद मिट गया। उन्होंने फिर प्रणाम किया और हाथ जोड़कर कहने लगे हे अब जैसी आज्ञा हो, उसी को मैं आदरपूर्वक करूँ!

बोध प्रश्न

- सभा में भरत ने क्या इच्छा जताई ?

2.3.6 भरत की बिदाई

भरत की विनती सुनकर राम ने कहा तुम्हारी, मेरी, परिवार की, घर की और वन की सारी चिंता गुरु वशिष्ठजी और महाराज जनकजी को है। हमारे सिर पर जब गुरुजी, मुनि विश्वामित्रजी और मिथिलापति जनकजी हैं, तब हमें और तुम्हें स्वप्न नें भी क्लेश नहीं है। सबेरे स्नान करके के बाद भरतजी, ब्राह्मण, राजा जनक और सारा समाज आ जुटा। इधर भरत का शील और उधर गुरुजनों, मंत्रियों तथा समाज की उपस्थिति! यह देखकर राम संकोच तथा स्नेह के वशीभूत हो गए। अंततः राम ने कृपा कर भरत को अपनी खड़ाऊँ दे दी जिसे भरत ने उन्हें आदरपूर्वक सिर पर धारण कर लिया। तब राम ने उन्हें हृदय से लगा लिया।

राम की आज्ञा को सिर पर रख भरत-शत्रुघ्न दोनों भाई चले। मुनि, तपस्वी और वनदेवता सबका बार-बार सम्मान करके विनती की फिर सीता के चरणों की धूलि को सिर पर धारण करके प्रेमसहित चले। राम ने यथायोग्य प्रणाम कर विदा किया। भरत पादुकाओं से आज्ञा माँगकर राज-काज करते हैं।

बोध प्रश्न

- राम ने भरत को क्या समझाया ?

2.4 : पाठ सार

अयोध्याकाण्ड : गोस्वामी तुलसीदास कृत श्री रामचरितमानस का दूसरा काण्ड है। राम के विवाह के कुछ समय पश्चात् राजा दशरथ ने राम का राज्याभिषेक करना चाहा। इस पर देवता लोगों को चिंता हुई कि राम को राज्य मिल जाने पर रावण का वध असम्भव हो जाएगा। व्याकुल होकर उन्होंने देवी सरस्वती से उपाय करने की प्रार्थना की। सरस्वती जी कैकेयी की दासी मंथरा की बुद्धि फेर दी। मन्थरा की सलाह से कैकेयी कोप भवन में चली गई। उसने राजा दशरथ से अपने वरदान माँगे कि भरत को राजा बनाया जाये और राम को चौदह वर्षों के लिए वनवास में भेज दिया जाए। इस पर राम सीता और लक्ष्मण भी वन चले गए।। श्रृंगवेरपुर में निषादराज गुह ने तीनों की बहुत सेवा की और केवट ने तीनों को गंगा नदी के पार उतारा |

प्रयाग पहुँच कर राम ने भरद्वाज मुनि से भेंट की। वहाँ से राम यमुना स्नान करते हुए वाल्मीकि ऋषि के आश्रम पहुँचे। वाल्मीकि से हुई मन्त्रणा के अनुसार राम, सीता और लक्ष्मण चित्रकूट में निवास करने लगे।

अयोध्या में पुत्र के वियोग के कारण दशरथ जी का स्वर्गवास हो गया। मुनि वशिष्ठ ने भरत और शत्रुघ्न को उनके ननिहाल से बुलवा लिया। वापस आने पर भरत ने अपनी माता कैकेयी की, उसकी कुटिलता के लिए, बहुत भर्त्सना की और स्वयं को राम वन का उत्तरदायी समझ बहुत दुख पाया। गुरुजनों के आज्ञानुसार दशरथ की अन्त्येष्टि क्रिया की। भरत ने अयोध्या के राज्य को अस्वीकार कर दिया और राम को मना कर वापस लाने के लिए समस्त परिवारजनों के साथ चित्रकूट चले गये। कैकेयी को भी अपने किये पर अत्यंत पश्चाताप हुआ। सीता के माता-पिता सुनयना एवं जनक भी चित्रकूट पहुँचे। भरत तथा अन्य सभी लोगों ने राम के वापस अयोध्या जाकर राज्य करने का प्रस्ताव रखा। किंतु श्री राम ने, पिता की आज्ञा पालन करने और रघुवंश की रीति निभाने हेतु इसे मना कर दिया।

भरत सभी स्नेही जनों के साथ राम की पादुका को शिरोधार्य कर अयोध्या लौट आए। उन्होंने राम की पादुका को राज सिंहासन पर विराजित कर नन्दिग्राम में कुटिया बनाकर तपस्वी की तरह रहने लगे तथा राम पादुकाओं से आज्ञा लेकर राजकाज करने लगे।

2.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

1. 'अयोध्याकांड' गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य रामचरितमानस का दूसरा सर्ग है।
2. अयोध्याकांड में पारिवारिक मूल्यों को महत्व दिया गया है। जो स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक है।
3. अयोध्याकांड में राम की पितृभक्ति का मर्मस्पर्शी निरूपण हुआ है।
4. अयोध्याकांड पाठकों को कर्तव्य का पालन करने की शिक्षा देता है।

5 राम कथा का राम-भरत संवाद कर्तव्यनिष्ठा, समर्पण और त्याग की शिक्षा देता है।

6. अयोध्याकांड में वचन प्रतिबद्धता तथा नैतिक मूल्यों का महत्व दिखाया गया है।

2.6 : शब्द संपदा

1. बड़भागी - भाग्यशाली
2. राज्याभिषेक - राजा का राजगद्दी पर बैठना (राजा बनना)
3. अरण्य - वन, जंगल
4. शिष्टाचार - सभ्य व्यवहार
5. निष्कपट - कपट रहित

6. बलिहारी - न्योछावर होना
7. पर्णकुटी - पत्तों से बनी कुटिया
8. दुर्गम - जहाँ पहुँचना कठिन हो
9. सर्वव्यापी - जो सब जगह हो
10. गूढ़ - छिपा हुआ (गुप्त)
11. मूर्छित - बेहोश
12. दावानल - दावाग्नि, जंगल में लगी आग
13. कृतार्थ - इच्छा पूरी होना (सब काम हो जाना)
14. कालजयी - शाश्वत (जो हमेशा प्रासंगिक हो)

2.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

(खंड अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. रामचरितमानस के अयोध्याकांड की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।
2. राम के वनवास की सूचना मिलने पर कौशल्या,सीता और लक्ष्मण की प्रतिक्रियाओं का वर्णन कीजिए।
3. राम के प्रस्थान के बाद अयोध्या के घटना चक्र का वर्णन कीजिए।

(खंड ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. राम के राज्याभिषेक की घोषणा से लेकर कैकेयी के कोपभवन में जाने तक की घटनाओं का विवरण दीजिए।
2. राम और कैकेयी के वार्तालाप को अपने शब्दों में लिखिए।
3. राम और केवट के वार्तालाप को अपने शब्दों में लिखिए।
4. भरत की चित्रकूट यात्रा का वर्णन कीजिए।
5.भरत के अयोध्या से चित्रकूट पहुँचने के मार्ग की घटनाओं का वर्णन कीजिए।
6. चित्रकूट की सभा में भरत और राम के वार्तालाप को अपने शब्दों में लिखिए।

I. बहुविकल्पीय प्रश्न ।

1. राम का अवतार किसके नाश के लिए हुआ था ?

(क) कंस ख) मेघनाद ग) रावण घ) महराव

2. रानी कैकेयी ने राजा दशरथ को किसकी सौगंध लेने के लिए कहा।

(क) भगवान शंकर ख) राम ग) माता पार्वती घ) गंगा माता

3. दशरथ के मंत्री का नाम क्या था ?

(क) निषादराज ख) वशिष्ट ग) सुमंत्र घ) कौटिल्य

4. निषादराज गुह कहाँ के शासक थे ?

(क) अयोध्या ख) काशी ग) चित्रकूट घ)शृंगवेरपुर

5. राम को चित्रकूट पर निवास करने का सुझाव किसने दिया ?

(क) भरद्वाज ख) निषादराज ग) सुमंत्र घ) वाल्मीकि

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. सरस्वती ने ------------------ को अपयश की पिटारी बना दिया।
2. मंथरा की सलाह मानकर कैकेयी --------------- में चली गई।
3. प्राण जाये पर ---------------- न जाये।
4. राम ने सीता को घर पर रहकर ------------ की सेवा करने को कहा।
5. राम ने कृपा करके अपनी --------------- दे दी।

III. सुमेलित कीजिए।

1) कैकयी की दासी	अ) प्रयाग
2) निषादराज गुह	आ) सुनयना
3) सीता की माँ	इ) ऋगवेरपुर
4) राम की भरद्वाज मुनि की भेंट	ई) मंथरा

2.8 पठनीय पुस्तकें

1. रामचरितमानस,तुलसीदास
2. हिंदी साहित्य का इतिहास रामचंद्र शुक्ल

इकाई 3 : रामचरितमानस : अयोध्याकांड - I : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

2.9 प्रस्तावना

2.10 उद्देश्य

2.11 मूल पाठ : रामचरितमानस : अयोध्याकांड – I : व्याख्या

3.3.1. सीता-राम संवाद

3.3.2 श्री राम-कौसल्या-सीता संवाद

3.3.3 सीता-कौसल्या संवाद

3.3.4 श्री राम-लक्ष्मण संवाद

3.3.5 श्री लक्ष्मण-सुमित्रा संवाद

3.3.6 नगर दशा वर्णन

3.3.7 श्री रामजी, लक्ष्मणजी, सीताजी का महाराज दशरथ के पास विदा माँगने जाना, दशरथजी का सीताजी को समझाना

3.3.8 श्री राम-सीता-लक्ष्मण का वन गमन और नगर निवासियों को सोए छोड़कर आगे बढ़ना

2.12 पाठ सार

2.13 पाठ की उपलब्धियाँ

2.14 शब्द संपदा

2.15 परीक्षार्थी प्रश्न

2.16 पठनीय पुस्तकें

3.1 : प्रस्तावना

हिंदी के भक्तिकाल की सगुण धारा के राम भक्त कवि गोस्वामी तुलसी दास हैं। 'रामचरितमानस' कवि तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य है। इसमें सात काण्ड या खंड हैं।पहला काण्ड बालकाण्ड है जिसमें राम जन्म और उसके बाद ही कथा दी गई है। इसलिए इसे बालकाण्ड कहते हैं क्योंकि इसमें राम के बचपन को दिखाया गया है। इसके बाद दूसरा काण्ड अयोध्याकाण्ड है जिसमें राम के बड़े हो जाने पर उनके युवक रूप में की गई लीलाओं का वर्णन मिलता है। अयोध्याकाण्ड की शुरुआत तब होती है जब राम का सीता जी से विवाह हो जाता है। उसके बाद अयोध्या वापस आने से (जब तें रामु ब्याहि घर आए)कथा शुरू होती है। और इस काण्ड में तब तक की बात होती है जब भरत राम की चरण पादुका लेकर अयोध्या आ जाते हैं। इस काण्ड को राम चरित मानस की 'हृदय स्थली' (केंद्र बिन्दु)कहा जाता है। इस इकाई में आप अयोध्याकाण्ड के दोहा संख्या 67 से 86 तक का पाठ करेंगे। इन दोहों के बीच की चौपाइयों का

पाठ भी इसमें शामिल है। इन काव्य पंक्तियों की व्याख्या और विशेषताओं को मद्दे नजर रखते हुए कथा का आनंद लेना तभी मुमकिन होगा जब आप अर्थ पर ध्यान देंगे। रामायण की कथा में अर्थ और भावार्थ का बड़ा ख्याल रखते हैं। तभी तो इनकी खासियतों पर आपका ध्यान केंद्रित होगा।

यह भी देखते चलना होगा कि दोहा संख्या 67 में राम कथा का प्रसंग सीता और राम की बातचीत से शुरू होता है। राम को उनके पिता राजा दशरथ ने चौदह बरस का वनवास दिया है। राम का राजतिलक नहीं होता। राम वन जा रहें हैं तो सीता भी साथ जाने की जिद करती हैं।

3.2 : उद्देश्य

इस इकाई के पाठ के बाद आप:

1. गोस्वामी तुलसीदास की 'रामचरित मानस' के अयोध्याकाण्ड केनिर्धारित अंश की व्याख्या कर सकेंगे।
2. राम वन गमन से पहले राम, लक्ष्मण, सीता, दशरथ, कौशल्या, सुमित्रा के संवाद का ज्ञान प्राप्त कर सकेंग।
3. दोहा-चौपाई छंद में रचित कविता की काव्य-गत विशेषताओं का बोध कर सकेंगे।
4. भारतीय गृहस्थ जीवन के आदर्श की शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे।

3.3 मूल पाठ : रामचरितमानस : अयोध्याकांड - I : व्याख्या

3.3.1. सीता-राम संवाद

मोहि मग चलत न होइहि हारी। छिनु छिनु चरन सरोज निहारी।।
सबहि भाँति पिय सेवा करिहौं। मारग जनित सकल श्रम हरिहौं।।
पाय पखारी बैठि तरु छाहीं। करिहउँ बाउ मुदित मन माहीं।।
श्रम कन सहित स्याम तनु देखें। कहँ दुख समउ प्रानपति पेखें।।
सम महि तृन तरुपल्लव डासी। पाग पलोटिहि सब निसि दासी।।
बारबार मृदु मूरति जोही। लागहि तात बयारि न मोही।
को प्रभु सँग मोहि चितवनिहारा। सिंघबुधुहि जिमि ससक सिआरा।।
मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू। तुम्हहि उचित तप मो कहुँ भोगू।।
ऐसेउ बचन कठोर सुनि जौं न हृदउ बिलगान।
तौ प्रभु बिषम बियोग दुख सहिहहिं पावँर प्रान॥67॥
अस कहि सीय बिकल भइ भारी। बचन बियोगु न सकी सँभारी॥
देखि दसा रघुपति जियँ जाना। हठि राखें नहिं राखिहि प्राना॥1॥
कहेउ कृपाल भानुकुलनाथा। परिहरि सोचु चलहु बन साथा॥
नहिं बिषाद कर अवसरु आजू। बेगि करहु बन गवन समाजू॥2॥

शब्दार्थ : पामर (पावँर) = दुष्ट, नीच, धोखेबाज, परिहरि = त्यागकर, छोड़कर

व्याख्या : श्री राम पिता के आदेश का पालन करने के लिए वन जा रहे हैं। राम वन गमन की सुनकर सीता जी भी उनके साथ जाने की जिद करती हैं। 'वन में बड़ा कष्ट है' कहकर राम उन्हें समझाते हैं। सीता जी कहती हैं कि यदि वे सुकुमारी हैं तो राम भी वन जाने के लायक कहाँ हैं? सीता जी कहती हैं कि ऐसे कठोर वचन सुनकर भी जब उनका हृदय न फटा तो मालूम होता है कि ये पामर (दुष्ट) प्राण राम के वियोग का भीषण दुःख सहेंगे। ऐसा कहकर सीताजी बहुत ही व्याकुल हो गईं। वे वचन के वियोग को भी न संभाल सकीं। शरीर से वियोग की बात तो अलग रही, वचन से भी वियोग की बात सुनकर वे अत्यन्त विकल हो गईं। उनकी यह दशा देखकर राम ने अपने जी में जान लिया कि हठपूर्वक इन्हें यहाँ रखने से ये प्राणों को न रखेंगी। तब सूर्यकुल के स्वामी कृपालु राम ने कहा कि सोच-विचार छोड़कर वे भी उनके साथ वन को चलें।आज दुखी होने का समय नहीं है। तुरंत वनगमन की तैयारी की जाए।

बोध प्रश्न:

- राम के वन जाने के समाचार सुनकर सीता ने उनसे क्या कहती हैं?
- राम सीता को अपने साथ वन ले जाने के लिए क्यों मान गए?

3 .3.2 श्री राम-कौसल्या-सीता संवाद

कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई। लगे मातु पद आसिष पाई॥
बेगि प्रजा दुख मेटब आई। जननी निठुर बिसरि जनि जाई॥3॥
फिरिहि दसा बिधि बहुरि कि मोरी। देखिहउँ नयन मनोहर जोरी।
सुदिन सुघरी तात कब होइहि। जननी जिअत बदन बिधु जोइहि॥4॥
बहुरि बच्छ कहि लालु कहि रघुपति रघुबर तात।
कबहिं बोलाइ लगाइ हियँ हरषि निरखिहउँ गात॥68॥
लखि सनेह कातरि महतारी। बचनु न आव बिकल भइ भारी॥
राम प्रबोधु कीन्ह बिधि नाना। समउ सनेहु न जाइ बखाना॥1॥

शब्दार्थ : महतारी= माता, प्रबोधु = समझाना

व्याख्या : राम अपनी पत्नी सीता जी को समझाने के बाद अब अपनी माता जी का आशीर्वाद लेते हैं। माता का दुख देखा उनसे नहीं जाता। राम ने प्रिय वचन कहकर प्यारी सीताजी को समझाया। फिर माता के चरणों में प्रणाम करके आशीर्वाद प्राप्त किया। इस पर उनकी माता ने कहा, "बेटा! जल्दी वापस लौटकर प्रजा के दुःख को मिटाना और यह निठुर माता तुम्हें भूल न जाए। हे विधाता! क्या मेरी दशा भी फिर पलटेगी? क्या अपने नेत्रों से मैं इस मनोहर जोड़ी को फिर देख पाऊँगी? हे पुत्र! वह सुंदर दिन और शुभ घड़ी कब होगी जब तुम्हारी जननी जीते जी तुम्हारा चाँद सा मुखड़ा फिर देखेगी! हे तात! 'वत्स' कहकर, 'लाल' कहकर, 'रघुपति' कहकर, 'रघुवर' कहकर, मैं फिर कब तुम्हें बुलाकर हृदय से लगाऊँगी और खुशी-खुशी तुम्हें देखूँगी!" यह

देखकर कि माता प्रेम के मारे अधीर हो गई हैं और इतनी अधिक व्याकुल हैं कि मुँह से वचन नहीं निकलता। राम ने अनेक प्रकार से उन्हें समझाया। वह समय और उस प्रेम का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता।

शब्दार्थ : अधीर= परेशान

बोध प्रश्न

- राम के वन गमन का समाचार सुनकर उनकी माता कौशल्या को कैसा महसूस हुआ?

3.3.3 सीता-कौशल्या संवाद

तब जानकी सासु पग लागी। सुनिअ माय मैं परम अभागी॥
सेवा समय दैअँ बनु दीन्हा। मोर मनोरथु सफल न कीन्हा॥2॥
तजब छोभु जनि छाड़िअ छोहू। करमु कठिन कछु दोसु न मोहू॥
सुनिसिय बचन सासु अकुलानी। दसा कवनि बिधि कहौं बखानी॥3॥
बारहिं बार लाइ उर लीन्ही। धरि धीरजु सिख आसिष दीन्ही॥
अचल होउ अहिवातु तुम्हारा। जब लगि गंग जमुन जल धारा॥4॥
सीतहि सासु आसीस सिख दीन्हि अनेक प्रकार।
चली नाइ पद पदुम सिरु अति हित बारहिं बार॥69॥

व्याख्या : ये काव्य पंक्तियाँ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' से ली गई हैं। इस संवाद में सीता अपनी सास कौशल्या से आशीष प्राप्त करती हैं। इसके बाद फिर वे सास के पाँव लगीं और बोलीं, "हे माता! सुनिए, मैं बड़ी ही अभागिनी हूँ। आपकी सेवा करने के समय विधाता ने मुझे वनवास दे दिया। मेरा मनोरथ सफल न किया। आप दुख का त्याग कर दें, परन्तु मेहरबानी न छोड़िएगा। कर्म की गति कठिन है, मेरा भी इसमें कुछ दोष नहीं है। "सीता के वचन सुनकर सास बहुत व्याकुल हो गईं। उनकी दशा को कवि तुलसीदास भी शब्दों में बयान करने में खुद को लाचार पाते हैं। यह सुनकर सास ने सीता को बार-बार हृदय से लगाया और धीरज धरकर शिक्षा दी और आशीर्वाद दिया कि जब तक गंगाजी और यमुनाजी में जल की धारा बहे, तब तक तुम्हारा सुहाग अचल रहे। सीता को सास ने अनेकों प्रकार से आशीर्वाद और शिक्षाएँ दीं और वे (सीता) बड़े ही प्रेम से बार-बार चरणकमलों में सिर नवाकर वहाँ से चलीं।

बोध प्रश्न

- माता कौशल्या ने सीता जी के वन जाते समय उन्हें क्या सीख दी?

3.3.4 श्री राम-लक्ष्मण संवाद

समाचार जब लछिमन पाए। ब्याकुल बिलख बदन उठि धाए॥
कंप पुलक तन नयन सनीरा। गहे चरन अति प्रेम अधीरा॥1॥
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े। मीनु दीन जनु जल तें काढ़े॥
सोचु हृदयँ बिधि का होनिहारा। सबु सुखु सुकृतु सिरान हमारा॥2॥
मो कहुँ काह कहब रघुनाथा। रखिहहिं भवन कि लेहहिं साथा॥
राम बिलोकि बंधु कर जोरें। देह गेहसब सन तृनु तोरें॥3॥
बोले बचनु राम नय नागर। सील सनेह सरल सुख सागर॥
तात प्रेम बस जनि कदराहू। समुझि हृदयँ परिनाम उछाहू॥4॥
मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरि करहिं सुभायँ।
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनमु जग जायँ॥70॥
अस जियँ जानि सुनहु सिख भाई। करहु मातु पितु पद सेवकाई॥
भवन भरतु रिपुसूदनु नाहीं। राउ बृद्ध मम दुखु मन माहीं॥1॥
मैं बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथा। होइ सबहि बिधि अवध अनाथा॥
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू। सब कहुँ परइ दुसह दुख भारू॥2॥
रहहु करहु सब कर परितोषू। नतरु तात होइहि बड़ दोषू॥
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृपु अवसि नरक अधिकारी॥3॥
रहहु तात असि नीति बिचारी। सुनत लखनु भए ब्याकुल भारी॥
सिअरें बचन सूखि गए कैसें। परसत तुहिन तामरसु जैसें॥4॥
उतरु न आवत प्रेम बस गहे चरन अकुलाइ।
नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु त काह बसाइ॥71॥
दीन्हि मोहि सिख नीकि गोसाईं। लागि अगम अपनी कदराईं॥
नरबर धीर धरम धुर धारी। निगम नीति कहुँ ते अधिकारी॥1॥
मैं सिसु प्रभु सनेहँ प्रतिपाला। मंदरु मेरु कि लेहिं मराला॥
गुर पितु मातु न जानउँ काहू। कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू॥2॥
जहँ लगि जगत सनेह सगाई। प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई॥
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी। दीनबंधु उर अंतरजामी॥3॥
धरम नीति उपदेसिअ ताही। कीरति भूति सुगति प्रिय जाही॥
मन क्रम बचन चरन रत होई। कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई॥4॥
करुनासिंधु सुबंधु के सुनि मृदु बचन बिनीत।
समुझाए उर लाइ प्रभु जानि सनेहँ सभीत॥72॥

मागहु बिदा मातु सन जाई। आवहु बेगि चलहु बन भाई॥
मुदित भए सुनि रघुबर बानी। भयउ लाभ बड़ गइ बड़ि हानी॥1॥

व्याख्या : ये काव्य पंक्तियाँ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' से ली गई हैं। इन काव्य पंक्तियों में कवि ने राम-लक्ष्मण के बीच हुई बातचीत पेश की है। छोटा भाई अपने बड़े भाई के साथ वन जाना चाहता है और इसके लिए विनती करता है। जब लक्ष्मण ने समाचार पाए, तब वे व्याकुल होकर उदास मुँह उठ दौड़े। उनका शरीर काँप रहा था,रोमांच हो रहा था, नेत्र आँसुओं से भरे थे। प्रेम से अत्यन्त अधीर होकर उन्होंने राम के चरण पकड़ लिए। वे कुछ कह नहीं सकते थे,खड़े-खड़े देख रहे थे। ऐसे दीन और लाचार हो रहे थे मानो जल से निकाले जाने पर मछली दीन होकर तड़प रही हो। हृदय में यह सोच था, "हे विधाता! क्या होने वाला है? क्या हमारा सब सुख और पुण्य पूरा हो गया? मुझको श्री रघुनाथजी क्या कहेंगे? घर पर रखेंगे या साथ ले चलेंगे?" यह दशा देखकर राम ने भाई लक्ष्मण को हाथ जोड़े और शरीर तथा घर सभी से नाता तोड़े हुए अपने सामने खड़े देखा। तब नीति में निपुण और शील, स्नेह, सरलता और सुख के समुद्र राम बोले, "हे तात! परिणाम में होने वाले आनंद को हृदय में समझकर तुम प्रेमवश परेशान मत होओ। जो लोग माता, पिता, गुरु और स्वामी की शिक्षा को स्वाभाविक ही सिर चढ़ाकर उसका पालन करते हैं, उन्होंने ही जन्म लेने का लाभ पाया है, नहीं तो दुनिया में पैदा होना ही बेकार है। हे भाई! हृदय में ऐसा जानकर मेरी सीख सुनो और माता-पिता के चरणों की सेवा करो। भरत और शत्रुघ्न घर पर नहीं हैं, महाराज बूढ़े हो चले हैं और उनके मन में मेरा दुःख है। इस अवस्था में मैं तुमको साथ लेकर वन जाऊँ तो अयोध्या सभी प्रकार से अनाथ हो जाएगी। गुरु, पिता, माता, प्रजा और परिवार सभी पर दुःख का भारी बोझ आ पड़ेगा। पड़ेगा। इसलिए तुम यहीं रहो और सबको संभालते रहो। नहीं तो हे भाई ! बड़ा नुकसान होगा। जिसके राज्य में प्यारी प्रजा दुःखी रहती है, वह राजा अवश्य ही नरक का अधिकारी होता है। हे भाई ! ऐसी नीति विचारकर तुम घर रह जाओ"।

यह सुनते ही लक्ष्मण बहुत ही व्याकुल हो गए। इन ठंडी बातों से वे ऐसे सूख गए, जैसे पाले के छूने से कमल सूख जाता है! प्रेमवश लक्ष्मण से कुछ पहले तो कुछ जवाब देते नहीं बनता। फिर उन्होंने व्याकुल होकर राम के चरण पकड़ लिए और कहा, "हे नाथ! मैं दास हूँ और आप स्वामी हैं, अतः आप मुझे छोड़ ही दें तो मेरा क्या वश है?हे स्वामी! आपने मुझे सीख तो बड़ी अच्छी दी है, पर मुझे अपनी कायरता से वह मुझे बड़ी मुश्किल (पहुँच के बाहर) लगी। शास्त्र और नीति के तो वे ही श्रेष्ठ पुरुष अधिकारी हैं, जो धीर हैं और धर्म की धुरी को धारण करने वाले हैं। मैं तो प्रभु (आप) के स्नेह में पला हुआ छोटा बच्चा हूँ! कहीं हंस भी मंदराचल या

सुमेरु पर्वत को उठा सकते हैं! हे नाथ! स्वभाव से ही कहता हूँ, आप विश्वास करें, मैं आपको छोड़कर गुरु, पिता, माता किसी को भी नहीं जानता। जगत में जहाँ तक स्नेह का संबंध, प्रेम और विश्वास है, जिनको स्वयं वेद ने गाया है- हे स्वामी! हे दीनबन्धु! हे सबके हृदय के अंदर की जानने वाले! मेरे तो वे सब कुछ केवल आप ही हैं। धर्म और नीति का उपदेश तो उसको करना चाहिए, जिसे कीर्ति, विभूति (ऐश्वर्य) या सद्गति प्यारी हो, किन्तु जो मन, वचन और कर्म से आपके चरणों में ही प्रेम रखता हो, हे कृपासिन्धु! क्या वह भी त्यागने के योग्य है?

दया के समुद्र श्री रामचन्द्रजी ने भले भाई के कोमल और नम्रतायुक्त वचन सुनकर और उन्हें स्नेह के कारण डरे हुए जानकर, हृदय से लगाकर समझायाऔर कहा, "हे भाई! जाकर माता से विदा माँग आओ और जल्दी वन को चलो! रघुकुल में श्रेष्ठ राम की वाणी सुनकर लक्ष्मण खुश हो गए। बड़ी हानि दूर हो गई और बड़ा लाभ हुआ।"

बोध प्रश्न

- राम वन गमन से पहले उनके भाई लक्ष्मण ने साथ चलने के लिए क्या वजह पेश की?

3.3.5 श्री लक्ष्मण-सुमित्रा संवाद

हरषित हृदयँ मातु पहिं आए। मनहुँ अंध फिरि लोचन पाए॥
जाइ जननि पग नायउ माथा। मनु रघुनंदन जानकि साथा॥2॥
पूँछे मातु मलिन मन देखी। लखन कही सब कथा बिसेषी।
गई सहमि सुनि बचन कठोरा। मृगी देखि दव जनु चहुँ ओरा॥3॥
लखन लखेउ भा अनरथ आजू। एहिं सनेह सब करब अकाजू॥
मागत बिदा सभय सकुचाहीं। जाइ संग बिधि कहिहि कि नाहीं॥4॥
समुझि सुमित्राँ राम सिय रूपु सुसीलु सुभाउ।
नृप सनेहु लखि धुनेउ सिरु पापिनि दीन्ह कुदाउ॥73॥
धीरजु धरेउ कुअवसर जानी। सहज सुहृद बोली मृदु बानी॥
तात तुम्हारि मातु बैदेही। पिता रामु सब भाँति सनेही॥1॥
अवध तहाँ जहँ राम निवासू। तहँइँ दिवसु जहँ भानु प्रकासू॥
जौं पै सीय रामु बन जाहीं। अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं॥2॥
गुर पितु मातु बंधु सुर साईं। सेइअहिं सकल प्रान की नाईं॥
रामु प्रानप्रिय जीवन जी के। स्वारथ रहित सखा सबही के॥3॥
पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें। सब मानिअहिं राम के नातें॥
अस जियँ जानि संग बन जाहू। लेहु तात जग जीवन लाहू॥4॥
भूरि भाग भाजनु भयहु मोहि समेत बलि जाउँ।

जौं तुम्हरें मन छाड़ि छलु कीन्ह राम पद ठाउँ॥74॥
पुत्रवती जुबती जग सोई। रघुपति भगतु जासु सुतु होई॥
नतरु बाँझ भलि बादि बिआनी। राम बिमुख सुत तें हित जानी॥1॥
तुम्हरेहिं भाग रामु बन जाहीं। दूसर हेतु तात कछु नाहीं॥
सकल सुकृत कर बड़ फलु एहू। राम सीय पद सहज सनेहू॥2॥
रागु रोषु इरिषा मदु मोहू। जनि सपनेहुँ इन्ह के बस होहू॥
सकल प्रकार बिकार बिहाई। मन क्रम बचन करेहु सेवकाई॥3॥
तुम्ह कहुँ बन सब भाँति सुपासू। सँग पितु मातु रामु सिय जासू॥
जेहिं न रामु बन लहहिं कलेसू। सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू॥4॥
उपदेसु यहु जेहिं तात तुम्हरे राम सिय सुख पावहीं।
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं॥
तुलसी प्रभुहि सिख देइ आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई।
रति होउ अबिरल अमल सिय रघुबीर पद नित-नित नई॥
मातु चरन सिरु नाइ चले तुरत संकित हृदयँ।
बागुर बिषम तोराइ मनहुँ भाग मृगु भाग बस॥75॥

व्याख्या : ये काव्य पंक्तियाँ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' से ली गई हैं। राम चंद्र जी से वन जाने की आज्ञा लेकर लक्ष्मण जी अपनी माता सुमित्रा के पास उनकी अनुमति लेने गए। लक्ष्मण जी हर्षित हृदय से माता सुमित्राजी के पास आए, मानो अंधा फिर से नेत्र पा गया हो। उन्होंने जाकर माता के चरणों में मस्तक नवाया, किन्तु उनका मन रघुकुल को आनंद देने वाले राम और जानकी के साथ था। माता ने उदास मन देखकर उनसे उसका कारण पूछा। लक्ष्मण ने सब कथा विस्तार से कह सुनाई। सुमित्रा अपने बेटे के उन कठोर वचनों को सुनकर ऐसी सहम गईं जैसे हिरनी चारों ओर वन में आग लगी देखकर सहम जाती है। लक्ष्मण ने देखा कि आज (अब) अनर्थ हुआ चाहता है। ये स्नेह वश उनका काम बिगाड़ देंगी! इसलिए वे विदा माँगते हुए डर के मारे सकुचाते हैं (और मन ही मन सोचते हैं) कि हे विधाता! माता साथ जाने को कहेंगी या नहीं।

सुमित्रा ने राम और सीता के रूप, सुंदर शील और स्वभाव को समझकर और उन पर राजा का प्रेम देखकर अपना सिर धुना (पीटा) और कहा कि पापिनी कैकेयी ने बुरी तरह घात लगाया। परन्तु बुरा वक्त जानकर सब्र किया और स्वभाव से ही हित चाहने वाली सुमित्रा कोमल वाणी से बोलीं, हे पुत्र! जानकीजी तुम्हारी माता हैं और सब प्रकार से स्नेह करने वाले रामचन्द्र तुम्हारे पिता हैं! जहाँ श्री रामजी का निवास हो वहीं अयोध्या है। जहाँ सूर्य का प्रकाश हो वहीं दिन है। यदि निश्चय ही सीता-राम वन को जाते हैं, तो अयोध्या में तुम्हारा कुछ भी

काम नहीं है। गुरु, पिता, माता, भाई, देवता और स्वामी, इन सबकी सेवा प्राण के समान करनी चाहिए। फिर राम तो प्राणों के भी प्रिय हैं, हृदय के भी जीवन हैं और सभी के स्वार्थरहित सखा हैं। जगत में जहाँ तक पूजनीय और परम प्रिय लोग हैं, वे सब रामजी के नाते से ही (पूजनीय और परम प्रिय) मानने योग्य हैं। हृदय में ऐसा जानकर, हे पुत्र ! उनके साथ वन जाओ और जगत में जीने का लाभ उठाओ! मैं बलिहारी जाती हूँ, (हे पुत्र!) मेरे समेत तुम बड़े ही सौभाग्य के पात्र हुए, जो तुम्हारे चित्त ने छल छोड़कर श्री राम के चरणों में स्थान प्राप्त किया है। संसार में वही युवती स्त्री पुत्रवती है, जिसका पुत्र श्री रघुनाथजी का भक्त हो। नहीं तो जो राम से विमुख पुत्र से अपना हित जानती है, वह तो बाँझ ही अच्छी। पशु की भाँति उसका ब्याना (पुत्र प्रसव करना) व्यर्थ ही है। तुम्हारे ही भाग्य से श्री रामजी वन को जा रहे हैं। हे पुत्र ! दूसरा कोई कारण नहीं है। सम्पूर्ण पुण्यों का सबसे बड़ा फल यही है कि सीताराम के चरणों में स्वाभाविक प्रेम हो। राग, रोष, ईर्षा, मद और मोह- इनके वश स्वप्न में भी मत होना। सब प्रकार के विकारों का त्याग कर मन, वचन और कर्म से सीताराम की सेवा करना। तुमको वन में सब प्रकार से आराम है, जिसके साथ राम और सीता रूप पिता-माता हैं। हे पुत्र! तुम वही करना जिससे रामचन्द्र वन में क्लेश न पावें, मेरा यही उपदेश है। हे पुत्र! मेरा यही उपदेश है (अर्थात तुम वही करना), जिससे वन में तुम्हारे कारण राम और सीता सुख पावें और पिता, माता, प्रिय परिवार तथा नगर के सुखों की याद भूल जाएँ।

तुलसीदासजी कहते हैं कि सुमित्रा ने इस प्रकार हमारे प्रभु (श्री लक्ष्मणजी) को शिक्षा देकर (वन जाने की) आज्ञा दी और फिर यह आशीर्वाद दिया कि श्री सीताजी और श्री रघुवीरजी के चरणों में उनका निर्मल (निष्काम और अनन्य) एवं प्रगाढ़ प्रेम नित-नित नया हो! माता के चरणों में सिर नवाकर, हृदय में डरते हुए (कि अब भी कोई विघ्न न आ जाए) लक्ष्मण तुरंत इस तरह चल दिए जैसे सौभाग्यवश कोई हिरन कठिन फंदे को तुड़ाकर भाग निकला हो। लक्ष्मणजी वहाँ गए जहाँ श्री जानकीनाथजी थे और वे अपने प्रिय भाई राम का साथ पाकर मन में बड़े ही प्रसन्न हुए। श्री रामजी और सीताजी के सुंदर चरणों की वंदना करके वे उनके साथ चले और राजभवन में आए।

बोध प्रश्न

- लक्ष्मण ने अपनी पत्नी सुमित्रा को वन जाने से पहले कैसे समझाया?

3.3.6 नगर दशा वर्णन

गए लखनु जहँ जानकिनाथू। भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू॥
बंदि राम सिय चरन सुहाए। चले संग नृपमंदिर आए॥1॥
कहहिं परसपर पुर नर नारी। भलि बनाइ बिधि बात बिगारी॥
तन कृस मन दुखु बदन मलीने। बिकल मनहुँ माखी मधु छीने॥2॥

कर मीजहिं सिरु धुनि पछिताहीं। जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं॥
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा। बरनि न जाइ बिषादु अपारा॥3॥

व्याख्या : ये काव्य पंक्तियाँ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' से ली गई हैं। राम वन गमन की खबर सुनकर अयोध्या ने नर-नारी बहुत दुखी हैं। नगर के स्त्री-पुरुष आपस में कह रहे हैं कि विधाता ने खूब बनाकर बात बिगाड़ी! उनके शरीर दुबले, मन दुःखी और मुख उदास हो रहे हैं। वे ऐसे व्याकुल हैं, जैसे शहद छीन लिए जाने पर शहद की मक्खियाँ व्याकुल हों। सब हाथ मल रहे हैं और सिर धुनकर (पीटकर) पछता रहे हैं। मानो बिना पंख के पक्षी व्याकुल हो रहे हों। राजद्वार पर बड़ी भीड़ हो रही है। अपार विषाद का वर्णन नहीं किया जा सकता।

बोध प्रश्न

- राम वन गमन की खबर सुनकर अयोध्या के लोगों ने क्या सोचा और कहा?

3.3.7 श्री रामजी, लक्ष्मणजी, सीताजी का महाराज दशरथ के पास विदा माँगने जाना, दशरथजी का सीताजी को समझाना

सचिवँ उठाइ राउ बैठारे। कहि प्रिय बचन रामु पगु धारे॥
सिय समेत दोउ तनय निहारी। ब्याकुल भयउ भूमिपति भारी॥4॥
सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ।
बारहिं बार सनेह बस राउ लेइ उर लाइ॥76॥
सकइ न बोलि बिकल नरनाहू। सोक जनित उर दारुन दाहू॥
नाइ सीसु पद अति अनुरागा। उठि रघुबीर बिदा तब मागा॥1॥
पितु असीस आयसु मोहि दीजै। हरष समय बिसमउ कत कीजै॥
तात किएँ प्रिय प्रेम प्रमादू। जसु जग जाइ होइ अपबादू॥2॥
सुनि सनेह बस उठि नरनाहाँ। बैठारे रघुपति गहि बाहाँ॥
सुनहु तात तुम्ह कहुँ मुनि कहहीं। रामु चराचर नायक अहहीं॥3॥
सुभ अरु असुभ करम अनुहारी। ईसु देइ फलु हृदयँ बिचारी॥
करइ जो करम पाव फल सोई। निगम नीति असि कह सबु कोई॥4॥
***औरु करै अपराधु कोउ और पाव फल भोगु।**
अति बिचित्र भगवंत गति को जग जानै जोगु॥77॥
रायँ राम राखन हित लागी। बहुत उपाय किए छलु त्यागी॥
लखी राम रुख रहत न जाने। धरम धुरंधर धीर सयाने॥1॥
तब नृप सीय लाइ उर लीन्ही। अति हित बहुत भाँति सिख दीन्ही॥
कहि बन के दुख दुसह सुनाए। सासु ससुर पितु सुख समुझाए॥2॥
सिय मनु राम चरन अनुरागा। घरुन सुगमु बनु बिषमु न लागा॥
औरउ सबहिं सीय समुझाई। कहि कहि बिपिन बिपति अधिकाई॥3॥
सचिव नारि गुर नारि सयानी। सहित सनेह कहहिं मृदु बानी॥

तुम्ह कहुँ तौ न दीन्ह बनबासू। करहु जो कहहिं ससुर गुर सासू॥4॥
सिख सीतलि हित मधुर मृदु सुनि सीतहि न सोहानि।
सरद चंद चंदिनि लगत जनु चकई अकुलानि॥78॥
सीय सकुच बस उतरु न देई। सो सुनि तमकि उठी कैकेई॥
मुनि पट भूषन भाजन आनी। आगें धरि बोली मृदु बानी॥1॥
नृपहि प्रानप्रिय तुम्ह रघुबीरा। सील सनेह न छाड़िहि भीरा॥
सुकृतु सुजसु परलोकु नसाऊ। तुम्हहि जान बन कहिहि न काऊ॥2॥
अस बिचारि सोइ करहु जो भावा। राम जननि सिख सुनि सुखु पावा॥
भूपहि बचन बानसम लागे। करहिं न प्रान पयान अभागे॥3॥
लोग बिकल मुरुछित नरनाहू। काह करिअ कछु सूझ न काहू॥
रामु तुरत मुनि बेषु बनाई। चले जनक जननिहि सिरु नाई॥4॥

व्याख्या : राम, लक्ष्मण, सीता मिलकर महाराज दशरथ के पास विदा माँगने जाते हैं तब दशरथ सीता को समझाते हैं कि वन जाने की उन्हें कोई जरूरत क्यों नहीं है। 'राम पधारे हैं', ये प्रिय वचन कहकर मंत्री ने राजा को उठाकर बैठाया। सीता सहित दोनों पुत्रों को (वन के लिए तैयार) देखकर राजा बहुत व्याकुल हुए। सीता सहित दोनों सुंदर पुत्रों को देख-देखकर राजा अकुलाते हैं और स्नेह वश बारंबार उन्हें हृदय से लगा लेते हैं। राजा व्याकुल हैं, बोल नहीं सकते। हृदय में शोक से उत्पन्न हुआ भयानक सन्ताप है। तब रघुकुल के वीर राम ने अत्यन्त प्रेम से चरणों में सिर नवाकर उठकर विदा माँगी, "हे पिताजी! मुझे आशीर्वाद और आज्ञा दीजिए। हर्ष के समय आप शोक क्यों कर रहे हैं? हे तात! प्रिय के प्रेमवश प्रमाद (कर्तव्यकर्म में कमी) करने से जगत में यश जाता रहेगा और निंदा होगी। यह सुनकर स्नेहवश राजा ने उठकर राम की बाँह पकड़कर उन्हें बैठा लिया और कहा- हे तात! सुनो, तुम्हारे लिए मुनि लोग कहते हैं कि राम चराचर के स्वामी हैं। शुभ और अशुभ कर्मों के अनुसार ईश्वर हृदय में विचारकर फल देता है, जो कर्म करता है, वही फल पाता है। ऐसी वेद की नीति है, यह सब कोई कहते हैं। किन्तु इस अवसर पर तो इसके विपरीत हो रहा है,) अपराध तो कोई और ही करे और उसके फल का भोग कोई और ही पावे। भगवान की लीला बड़ी ही विचित्र है, उसे जानने योग्य जगत में कौन है? राजा ने इस प्रकार राम को वहीं रखने के लिए छल छोड़कर बहुत से उपाय किए, पर जब उन्होंने धर्मधुरंधर, धीर और बुद्धिमान राम का रुख देख लिया और वे रहते हुए न जान पड़े। तब राजा ने सीता को हृदय से लगा लिया और बड़े प्रेम से बहुत प्रकार की शिक्षा दी। वन के बहुत से दुःख कहकर सुनाए। फिर सास, ससुर तथा पिता के (पास रहने के) सुखों को समझाया। परन्तु सीता का मन राम के चरणों में लगा था, इसलिए उन्हें घर अच्छा नहीं लगा और न वन भयानक लगा। फिर और सब लोगों ने भी वन में विपत्तियों की अधिकता बता-बताकर सीता को

समझाया। मंत्री सुमंत्र की पत्नी और गुरु वशिष्ठ की स्त्री अरुंधती तथा और भी चतुर स्त्रियाँ स्नेह के साथ कोमल वाणी से कहती हैं कि तुमको तो (राजा ने) वनवास दिया नहीं है, इसलिए जो ससुर, गुरु और सास कहें, तुम तो वही करो। यह शीतल, हितकारी, मधुर और कोमल सीख सुनने पर सीताजी को अच्छी नहीं लगी। (वे इस प्रकार व्याकुल हो गईं) मानो शरद ऋतु के चन्द्रमा की चाँदनी लगते ही चकई व्याकुल हो उठी हो। सीता संकोचवश उत्तर नहीं देतीं। इन बातों को सुनकर कैकेयी तमककर उठी। उसने मुनियों के वस्त्र, आभूषण (माला, मेखला आदि) और बर्तन (कमण्डलु आदि) लाकर राम के आगे रख दिए और कोमल वाणी से कहा, "हे रघुवीर! राजा को तुम प्राणों के समान प्रिय हो। भीरु (प्रेमवश दुर्बल हृदय के) राजा शील और स्नेह नहीं छोड़ेंगे! पुण्य, सुंदर यश और परलोक चाहे नष्ट हे जाए, पर तुम्हें वन जाने को वे कभी न कहेंगे। ऐसा विचारकर जो तुम्हें अच्छा लगे वही करो"। माता की सीख सुनकर राम ने (बड़ा) सुख पाया, परन्तु राजा को ये वचन बाण के समान लगे। (वे सोचने लगे) अब भी अभागे प्राण (क्यों) नहीं निकलते! राजा मूर्छित हो गए, लोग व्याकुल हैं। किसी को कुछ सूझ नहीं पड़ता कि क्या करें। राम तुरंत मुनि का वेष बनाकर और माता-पिता को सिर नवाकर चल दिए।

बोध प्रश्न

- सीता जी को समझाने के लिए राजा दशरथ ने क्या कहा?
- कैकेयी ने तमककर राम से क्या कहा?

3.3.8 श्री राम-सीता-लक्ष्मण का वन गमन और नगर निवासियों को सोए छोड़कर आगे बढ़ना

सजि बन साजु समाजु सबु बनिता बंधु समेत।
बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत॥79॥
निकसि बसिष्ठ द्वार भए ठाढ़े। देखे लोग बिरह दव दाढ़े॥
कहि प्रिय बचन सकल समुझाए। बिप्र बृंद रघुबीर बोलाए॥1॥
गुर सन कहि बरषासन दीन्हे। आदर दान बिनय बस कीन्हे॥
जाचक दान मान संतोषे। मीत पुनीत प्रेम परितोषे॥2॥
दासीं दास बोलाइ बहोरी। गुरहि सौंपि बोले कर जोरी॥
सब कै सार सँभार गोसाईं। करबि जनक जननी की नाईं॥3॥
बारहिं बार जोरि जुग पानी। कहत रामु सब सन मृदु बानी॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी। जेहि तें रहै भुआल सुखारी॥4॥
मातु सकल मोरे बिरहँ जेहिं न होहिं दुख दीन।
सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सब पुर जन परम प्रबीन॥80॥
एहि बिधि राम सबहि समुझावा। गुर पद पदुम हरषि सिरु नावा॥
गनपति गौरि गिरीसु मनाई। चले असीस पाइ रघुराई॥1॥
राम चलत अति भयउ बिषादू। सुनि न जाइ पुर आरत नादू॥
कुसगुन लंक अवध अति सोकू। हरष बिषाद बिबस सुरलोकू॥2॥

गइ मुरुछा तब भूपति जागे। बोलि सुमंत्रु कहन अस लागे॥
रामु चले बन प्रान न जाहीं। केहि सुख लागि रहत तन माहीं॥3॥
एहि तें कवन ब्यथा बलवाना। जो दुखु पाइ तजहिं तनु प्राना॥
पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू। लै रथु संग सखा तुम्ह जाहू॥4॥
सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि।
रथ चढ़ाइ देखराइ बनु फिरेहु गएँ दिन चारि॥81॥
जौं नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई। सत्यसंध दृढ़ब्रत रघुराई॥
तौ तुम्ह बिनय करेहु कर जोरी। फेरिअ प्रभु मिथिलेसकिसोरी॥1॥
जब सिय कानन देखि डेराई। कहेहु मोरि सिख अवसरु पाई॥
सासु ससुर अस कहेउ सँदेसू। पुत्रि फिरिअ बन बहुत कलेसू॥2॥
पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी। रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी॥
एहि बिधि करेहु उपाय कदंबा। फिरइ त होइ प्रान अवलंबा॥3॥
नाहिं त मोर मरनु परिनामा। कछु न बसाइ भएँ बिधि बामा॥
अस कहि मुरुछि परा महि राऊ। रामु लखनु सिय आनि देखाऊ॥4॥
पाइ रजायसु नाइ सिरु रथु अति बेग बनाइ।
गयउ जहाँ बाहेर नगर सीय सहित दोउ भाइ॥82॥
तब सुमंत्र नृप बचन सुनाए। करि बिनती रथ रामु चढ़ाए॥
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई। चले हृदयँ अवधहि सिरु नाई॥1॥
चलत रामु लखि अवध अनाथा। बिकल लोग सब लागे साथा॥
कृपासिंधु बहुबिधि समुझावहिं। फिरहिं प्रेम बस पुनि फिरि आवहिं॥2॥
लागति अवध भयावनि भारी। मानहुँ कालराति अँधिआरी॥
घोर जंतु सम पुर नर नारी। डरपहिं एकहि एक निहारी॥3॥
घर मसान परिजन जनु भूता। सुत हित मीत मनहुँ जमदूता॥
बागन्ह बिटप बेलि कुम्हिलाहीं। सरित सरोवर देखि न जाहीं॥4॥
हय गय कोटिन्ह केलिमृग पुरपसु चातक मोर।
पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर॥83॥
राम बियोग बिकल सब ठाढ़े। जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े॥
नगरु सफल बनु गहबर भारी। खग मृग बिपुल सकल नर नारी॥1॥
बिधि कैकई किरातिनि कीन्ही। जेहिं दव दुसह दसहुँ दिसि दीन्ही॥
सहि न सके रघुबर बिरहागी। चले लोग सब ब्याकुल भागी॥2॥
सबहिं बिचारु कीन्ह मन माहीं। राम लखन सिय बिनु सुखु नाहीं॥
जहाँ रामु तहँ सबुइ समाजू। बिनु रघुबीर अवध नहिं काजू॥3॥
चले साथ अस मंत्रु दृढ़ाई। सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई॥
राम चरन पंकज प्रिय जिन्हही। बिषय भोग बस करहिं कि तिन्हही॥4॥
बालक बृद्ध बिहाइ गृहँ लगे लोग सब साथ।

तमसा तीर निवासु किय प्रथम दिवस रघुनाथ॥84॥
रघुपति प्रजा प्रेमबस देखी। सदय हृदयँ दुखु भयउ बिसेषी॥
करुनामय रघुनाथ गोसाँई। बेगि पाइअहिं पीर पराई॥1॥
कहि सप्रेम मृदु बचन सुहाए। बहुबिधि राम लोग समुझाए॥
किए धरम उपदेस घनेरे। लोग प्रेम बस फिरहिं न फेरे॥2॥
सीलु सनेहु छाड़ि नहिं जाई। असमंजस बस भे रघुराई॥
लोग सोग श्रम बस गए सोई। कछुक देवमायाँ मति मोई॥3॥
जबहिं जाम जुग जामिनि बीती। राम सचिव सन कहेउ सप्रीती॥
खोज मारि रथु हाँकहु ताता। आन उपायँ बनिहि नहिं बाता॥4॥
राम लखन सिय जान चढ़ि संभु चरन सिरु नाइ।
सचिवँ चलायउ तुरत रथु इत उत खोज दुराइ॥85॥
जागे सकल लोग भएँ भोरू। गे रघुनाथ भयउ अति सोरू॥
रथ कर खोज कतहुँ नहिं पावहिं। राम राम कहि चहुँ दिसि धावहिं॥1॥
मनहुँ बारिनिधि बूड़ जहाजू। भयउ बिकल बड़ बनिक समाजू॥
एकहि एक देहिं उपदेसू। तजे राम हम जानि कलेसू॥2॥
निंदहिं आपु सराहहिं मीना। धिग जीवनु रघुबीर बिहीना॥
जौं पै प्रिय बियोगु बिधि कीन्हा। तौ कस मरनु न मागें दीन्हा॥3॥
एहि बिधि करत प्रलाप कलापा। आए अवध भरे परितापा॥
बिषम बियोगु न जाइ बखाना। अवधि आस सब राखहिं प्राना॥4॥
राम दरस हित नेम ब्रत लगे करन नर नारि।
मनहुँ कोक कोकी कमल दीन बिहीन तमारि॥86॥

व्याख्या : वन का सब साज-सामान सजकर (वन के लिए आवश्यक वस्तुओं को साथ लेकर) राम की पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण सहित, ब्राह्मण और गुरु के चरणों की वंदना करके सबको अचेत करके चले। राजमहल से निकलकर राम वशिष्ठजी के दरवाजे पर जा खड़े हुए और देखा कि सब लोग विरह की अग्नि में जल रहे हैं। उन्होंने प्रिय वचन कहकर सबको समझाया, फिर राम ने ब्राह्मणों की मंडली को बुलाया। गुरु से कहकर उन सबको वर्षाशन (वर्षभर का भोजन) दिए और आदर, दान तथा विनय से उन्हें वश में कर लिया। फिर गरीबों को दान और मान देकर संतुष्ट किया तथा मित्रों को पवित्र प्रेम से प्रसन्न किया। फिर दास-दासियों को बुलाकर उन्हें गुरु को सौंपकर, हाथ जोड़कर बोले- हे गुसाईं! इन सबकी माता-पिता के समान सार-संभार (देख-रेख) करते रहिएगा। राम बार-बार दोनों हाथ जोड़कर सबसे कोमल वाणी कहते हैं कि मेरा सब प्रकार से हितकारी मित्र वही होगा, जिसकी वजह से महाराज सुखी रहें। हे परम चतुर पुरवासी सज्जनों! आप लोग सब वही उपाए कीजिएगा, जिससे मेरी सब माताएँ मेरे विरह के दुःख से दुःखी न हों। इस प्रकार राम ने सबको समझाया और हर्षित होकर गुरुजी के चरणकमलों में सिर

नवाया। फिर गणेशजी, पार्वतीजी और कैलासपति महादेवजी को मनाकर तथा आशीर्वाद पाकर राम चले। राम के चलते ही बड़ा भारी विषाद हो गया। नगर का आर्तनाद (हाहाकर) सुना नहीं जाता। लंका में बुरे शकुन होने लगे, अयोध्या में अत्यन्त शोक छा गया और देवलोक में सब हर्ष और विषाद दोनों के वश में गए। (हर्ष इस बात का था कि अब राक्षसों का नाश होगा और विषाद अयोध्यावासियों के शोक के कारण था)। मूर्छा दूर हुई, तब राजा जागे और सुमंत्र को बुलाकर ऐसा कहने लगे- राम वन को चले गए, पर मेरे प्राण नहीं जा रहे हैं। न जाने ये किस सुख के लिए शरीर में टिक रहे हैं। इससे अधिक बलवती और कौन सी व्यथा होगी, जिस दुःख को पाकर प्राण शरीर को छोड़ेंगे। फिर धीरज धरकर राजा ने कहा- हे सखा! तुम रथ लेकर राम के साथ जाओ। अत्यन्त सुकुमार दोनों कुमारों को और सुकुमारी जानकी को रथ में चढ़ाकर, वन दिखलाकर चार दिन के बाद लौट आना। यदि धैर्यवान दोनों भाई न लौटें- क्योंकि राम प्रण के सच्चे और दृढ़ता से नियम का पालन करने वाले हैं- तो तुम हाथ जोड़कर विनती करना कि हे प्रभो! सीता को तो लौटा दीजिए। जब सीता वन को देखकर डरें, तब मौका पाकर मेरी यह सीख उनसे कहना कि तुम्हारे सास और ससुर ने ऐसा संदेश कहा है कि हे पुत्री! तुम लौट चलो, वन में बहुत क्लेश हैं। कभी पिता के घर, कभी ससुराल, जहाँ तुम्हारी इच्छा हो, वहीं रहना। इस प्रकार तुम बहुत से उपाय करना। यदि सीताजी लौट आईं तो मेरे प्राणों को सहारा हो जाएगा। नहीं तो अंत में मेरा मरण ही होगा। विधाता के विपरीत होने पर कुछ वश नहीं चलता। हा! राम, लक्ष्मण और सीता को लाकर दिखाओ। ऐसा कहकर राजा मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। सुमंत्र राजा की आज्ञा पाकर, सिर नवाकर और बहुत जल्दी रथ जुड़वाकर वहाँ गए, जहाँ नगर के बाहर सीताजी सहित दोनों भाई थे। तब (वहाँ पहुँचकर) सुमंत्र ने राजा के वचन राम को सुनाए और विनती करके उनको रथ पर चढ़ाया। सीता सहित दोनों भाई रथ पर चढ़कर हृदय में अयोध्या को सिर नवाकर चले। राम को जाते हुए और अयोध्या को अनाथ (होते हुए) देखकर सब लोग व्याकुल होकर उनके साथ हो लिए। कृपा के समुद्र राम उन्हें बहुत तरह से समझाते हैं, तो वे (अयोध्या की ओर) लौट जाते हैं, परन्तु प्रेमवश फिर लौट आते हैं। अयोध्यापुरी बड़ी डरावनी लग रही है, मानो अंधकारमयी कालरात्रि ही हो। नगर के नर-नारी भयानक जन्तुओं के समान एक-दूसरे को देखकर डर रहे हैं। घर, श्मशान, कुटुम्बी भूत-प्रेत और पुत्र, हितैषी और मित्र मानो यमराज के दूत हैं। बगीचों में वृक्ष और बेलें कुम्हला रही हैं। नदी और तालाब ऐसे भयानक लगते हैं कि उनकी ओर देखा भी न जाता है। करोड़ों घोड़े, हाथी, खेलने के लिए पाले हुए हिरन, नगर के (गाय, बैल, बकरी आदि) पशु, पपीहे, मोर, कोयल, चकवे, तोते, मैना, सारस, हंस और चकोर श्री रामजी के वियोग में सभी व्याकुल हुए। जहाँ-तहाँ

(ऐसे चुपचाप स्थिर होकर) खड़े हैं, मानो तसवीरों में लिखकर बनाए हुए हैं। नगर मानो फलों से परिपूर्ण बड़ा भारी सघन वन था। नगर निवासी सब स्त्री-पुरुष बहुत से पशु-पक्षी थे। (अर्थात अवधपुरी अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों फलों को देने वाली नगरी थी और सब स्त्री-पुरुष सुख से उन फलों को प्राप्त करते थे।)। विधाता ने कैकेयी को भीलनी बनाया, जिसने दसों दिशाओं में दुःसह दावाग्नि (भयानक आग) लगा दी। राम के विरह की इस अग्नि को लोग सह न सके। सब लोग व्याकुल होकर भाग चले। सबने मन में विचार कर लिया कि राम, लक्ष्मण और सीता के बिना सुख नहीं है। जहाँ राम रहेंगे, वहीं सारा समाज रहेगा। राम के बिना अयोध्या में हम लोगों का कुछ काम नहीं है। ऐसा विचार दृढ़ करके देवताओं को भी दुर्लभ सुखों से पूर्ण घरों को छोड़कर सब राम के साथ चले पड़े। जिनको रामजी के चरणकमल प्यारे हैं, उन्हें क्या कभी विषय भोग वश में कर सकते हैं। बच्चों और बूढ़ों को घरों में छोड़कर सब लोग साथ हो लिए। पहले दिन श्री रघुनाथजी ने तमसा नदी के तीर पर निवास किया। प्रजा को प्रेमवश देखकर श्री रघुनाथजी के दयालु हृदय में बड़ा दुःख हुआ। प्रभु श्री रघुनाथजी करुणामय हैं। पराई पीड़ा को वे तुरंत पा जाते हैं (अर्थात दूसरे का दुःख देखकर वे तुरंत स्वयं दुःखित हो जाते हैं। प्रेमयुक्त कोमल और सुंदर वचन कहकर श्री रामजी ने बहुत प्रकार से लोगों को समझाया और बहुतेरे धर्म संबंधी उपदेश दिए, परन्तु प्रेमवश लोग लौटाए लौटते नहीं। शील और स्नेह छोड़ा नहीं जाता। श्री रघुनाथजी असमंजस के अधीन हो गए (दुविधा में पड़ गए)। शोक और परिश्रम (थकावट) के मारे लोग सो गए और कुछ देवताओं की माया से भी उनकी बुद्धि मोहित हो गई। जब दो पहर बीत गई, तब राम ने प्रेमपूर्वक मंत्री सुमंत्र से कहा- हे तात! रथ के खोज मारकर (अर्थात पहियों के चिह्नों से दिशा का पता न चले इस प्रकार) रथ को हाँकिए। और किसी उपाय से बात नहीं बनेगी। शंकरजी के चरणों में सिर नवाकर राम, लक्ष्मण और सीता रथ पर सवार हुए। मंत्री ने तुरंत ही रथ को इधर-उधर खोज छिपाकर चला दिया। सबेरा होते ही सब लोग जागे, तो बड़ा शोर मचा कि राम चले गए। कहीं रथ का खोज नहीं पाते, सब 'हा राम! हा राम!' पुकारते हुए चारों ओर दौड़ रहे हैं। मानो समुद्र में जहाज डूब गया हो, जिससे व्यापारियों का समुदाय बहुत ही व्याकुल हो उठा हो। वे एक-दूसरे को उपदेश देते हैं कि राम ने, हम लोगों को क्लेश होगा, यह जानकर छोड़ दिया है। वे लोग अपनी निंदा करते हैं और मछलियों की सराहना करते हैं। (कहते हैं-) राम के बिना हमारे जीने को धिक्कार है। विधाता ने यदि प्यारे का वियोग ही रचा, तो फिर उसने माँगने पर मृत्यु क्यों नहीं दी! इस प्रकार बहुत से प्रलाप करते हुए वे संताप से भरे हुए अयोध्याजी में आए। उन लोगों के विषम वियोग की दशा का वर्णन नहीं किया जा सकता। (चौदह साल की) अवधि की आशा से ही वे प्राणों को रख रहे हैं। सब स्त्री-पुरुष राम के दर्शन के लिए नियम और व्रत करने लगे और ऐसे दुःखी हो गए जैसे चकवा, चकवी और कमल सूर्य के बिना दीन हो जाते हैं॥

बोध प्रश्न:

- राम के साथ वन में और कौन-कौन गए थे और क्यों?
- राम नगर वासियों को सोते हुए क्यों छोड़ गए?

काव्यगत विशेषताएं:

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस में अयोध्याकाण्ड का बहुत अधिक महत्व है। काव्य में रसात्मक वृत्ति का निर्वाह अच्छा गुण माना गया है। अयोध्याकाण्ड में कई रसों का आनंद मिलता है। अयोध्याकाण्ड में करुण रस की धारा अयोध्या और चित्रकूट में फैली हुई दिखाई देती है। रौद्र रस की झांकी चित्रकूट में लक्ष्मण के वचनों में दिखती है। श्रृंगार रस के दोनों पक्ष (वियोग और संयोग) अयोध्याकाण्ड में देखे जा सकते हैं।

3.4 : पाठ सार

तुलसीदास के द्वारा लिखी गई 'राम चरित मानस' में राम की कथा है। अयोध्या के राजा दशरथ के चार पुत्र थे। राम इनमें सबसे बड़े थे। रामचरितमानस के सात भाग, अंश या काण्ड हैं। इन सात भागों में से दूसरा है अयोध्याकाण्ड। इस काण्ड या सोपान में राम के राजा बनने की तैयारी से शुरुआत होती है। इस पाठ में प्रसंग की शुरुआत होती है राम जी की पत्नी सीता जी का अपने पति राम से वन में साथ ले जाने की जिद करना। और जब श्री राम शृंगवेरपुर पहुँच जाते हैं तब वहाँ निषाद राज उनकी सेवा करते हैं। यहाँ तक इस पाठ में प्रसंग है। कुल प्रसंग ये हैं: सीता-राम संवाद, श्री राम-कौसल्या-सीता संवाद,सीता-कौशल्या संवाद,श्री राम-लक्ष्मण संवाद,श्री लक्ष्मण-सुमित्रा संवाद, नगर दशा वर्णन और श्री रामजी, लक्ष्मणजी, सीताजी का महाराज दशरथ के पास विदा माँगने जाना, दशरथजी का सीताजी को समझाना, श्री राम-सीता-लक्ष्मण का वन गमन और नगर निवासियों को सोए छोड़कर आगे बढ़ना।

3.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं ।

- गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस' के अयोध्याकाण्ड के निर्धारित अंश की व्याख्या की गई. चलता है। अयोध्याकांड रामचरित मानस के सात कांडों में से दूसरा है।
- यहाँ राम वन गमन से पहले राम, लक्ष्मण, सीता, दशरथ, कौशल्या, सुमित्रा के आपस में संवाद का पता चलता है।
- कवि तुलसी ने दोहा-चौपाई शैली में बड़ी सुंदर कविता रची है। इसका पता चलता है।
- भारतीय गृहस्थ जीवन के आदर्श की शिक्षा मिलती है।
- हिंदी भाषा की एक बोली 'अवधी' की कविता से परिचय होता है।

3.6 : शब्द संपदा

चौपाई - चौपाई हिन्दी का अपना छन्द है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस का बहुत अच्छा इस्तेमाल किया है। उदाहरण :
मोहि मग चलत न होइहि हारी। छिनु छिनु चरन सरोज निहारी।।

अर्धाली - चौपाई की एक लाइन में दो हिस्से होते हैं, हर हिस्से को अर्धाली (आधी चौपाई) कहते हैं। उदाहरण : मोहि मग चलत न होइहि हारी।

दोहा - यह दो लाइन का छंद होता है इसमें चार चरण माने जाते हैं | इसके विषम चरणों प्रथम तथा तृतीय में 13-13 मात्राएँ और सम चरणों द्वितीय तथा चतुर्थ में 11-11 मात्राएँ होती हैं। उदाहरण-

ऐसेउ बचन कठोर सुनि, जौं न हृदउ बिलगान।
तौ प्रभु बिषम बियोग दुख, सहिहहिं पावँर प्रान।।

3.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड –(अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए|

1. रामचरित मानस में अयोध्याकाण्ड की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. सीता ने राम से कहा, “मैं सुकुमारी नाथ बन जोगू...” इस तरह वे अपने पति से क्या कहना चाहती हैं? समझाकर लिखिए।
3. ‘राम वन गमन’ की खबर सुनकर अयोध्या वासियों के दिल पर क्या असर हुआ और क्यों?
4. सुमंत्र कौन थे? उन्हें दशरथ ने क्या काम दिया था?
5. ‘कुसगुन लंक अवध अति सोकू’ अर्धाली पढ़कर समझाइए कि किस समाचार से यह हुआ और क्यों?

खंड –(ब)

लघु प्रश्न

1. राजा दशरथ ने राम को चौदह वर्ष के लिए वन जाने को कहा था, फिर सीता और लक्ष्मण उनके साथ क्यों जाना चाहते थे?
2. राम के वन जाने पर दशरथ की जो हालत हुई,उसे अपने शब्दों में लिखिए।
3. क्या राम एक आदर्श पुत्र हैं ? यदि हाँ तो क्यों?
4. अयोध्याकाण्ड में लक्ष्मण के किस गुण के आप मुरीद हो जाते हैं?

5. पुत्र के रूप में राम के आदर्श का बखान अपने शब्दों में कीजिए।
6. केकैयी ने ऐसा क्या किया जो उसे 'पापिनी' कहा गया है?
7. राम चरित मानस के अयोध्याकाण्ड में उनके लिए अनेक विशेषण दिए हैं, चार विशेषणों को लिखकर बताइए कि कवि ने इन्हें क्यों दिया है?

खंड- (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. किसने कहा ? " मैं सुकुमारी नाथ बन जोगू"

क) सुमित्रा ने   ख) सीता ने   ग) कौशल्या ने   घ) सुमंत्र ने

2. छंद का प्रकार पहचानिए:

राम लखन सिय जान चढ़ि संभु चरन सिरु नाइ।
सचिवँ चलायउ तुरत रथु इत उत खोज दुराइ॥

क) अर्धाली ख) दोहा   ग) सोरठा   घ) चौपाई

3. अरुंधती किसकी पत्नी हैं?

क) वशिष्ठ की   ख) सुमंत्र की   ग) भूपति की घ) इनमें से किसी की नहीं

4. राम किसके कहने से वन गए?

क) माता के   ख) पिता के   ग) गुरु के   घ) इन सबके

I. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

1. ______________________ को राम चरित मानस की 'हृदय स्थली' कहा जाता है।
2. ________________ में काव्य का भाव पक्ष व कला पक्ष देखा जाता है।
3. जिस ____________ के राज में प्रजा दुःखी रहती है, वह नरक का अधिकारी होता है।
4. चौपाई की एक लाइन में दो हिस्से होते हैं, हर हिस्से को _____________ कहते हैं।
5. काव्य के पढ़ने, सुनने से जो आनन्द आता है, उसे ________________ कहते हैं।

II. सुमेल कीजिए

अर्धालियों को इस तरह मिलाइए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए

1) गनपति गौरि गिरीसु मनाई।   क) भयउ लाभ बड़ गइ बड़ि हानी॥
2) कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई।   ख) दीनबंधु उर अंतरजामी॥
बेगि प्रजा दुख मेटब आई।   लगे मातु पद आसिष पाई॥
3) मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी   ग)जननी निठुर बिसरि जनि जाई॥
मुदित भए सुनि रघुबर बानी।   चले असीस पाइ रघुराई।।

3.8 : पठनीय पुस्तकें

राम चरित मानस (वृहद संस्करण) : तुलसीदास, गीताप्रेस गोरखपुर

इकाई 4 : रामचरितमानस : अयोध्याकांड – II : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 मूलपाठ : रामचरितमानस : अयोध्याकांड – II : व्याख्या

4.3.1 श्री राम का श्रृंगवेरपुर पहुँचना, निषाद के द्वारा सेवा

4.3.2 लक्ष्मण-निषाद संवाद, श्री राम-सीता से सुमन्त्र का संवाद, सुमंत्र का लौटना

4.3.3 केवट का प्रेम

4.3.4 गंगा पार जाना

4.3.5 प्रयाग पहुँचना, भरद्वाज संवाद, यमुनातीर निवासियों का प्रेम

4.4 पाठ सार

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

4.6 शब्द संपदा

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

4.1 : प्रस्तावना

राम चरित मानस (रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड से ली गई इस इकाई के पाठ की और चलते ही आप राम के वन गमन के प्रसंग पर जा पहुचते हैं। अपने पिता राजा दशरथ की आज्ञा से राम चौदह वर्ष के वनवास के लिए निकल पड़े। उनके साथ उनकी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण भी थे। पिता ने सोचा था कि उनका बेटा राम जंगल की सैर करके कुछ दिन में वापस आ जाएगा। पर राम अपने वचन के पक्के थे। सुमंत्र के समझाने पर भी वे न माने। आगे बढ़ गए। प्रयागराज में गंगा नदी पार की। केवट ने उनको पार उतारा। निषाद राज उनको अपने घर ले जाना चाहते थे पर राम ने उनकी बात न मानी। उन्हें वन में ही अपना सारा वक्त जो बिताना था। इस इकाई में कथा वहाँ से शुरू होती है जब राम अयोध्यावासियों को रात के वक्त सोता हुआ छोड़कर मंत्री सुमंत्र के साथ रथ में निकल आते हैं। अयोध्या में सुबह हुई तो लोग दुखी हो गए। और राम शृंगवेरपुर जा पहुंचे। आप जानते ही हैं कि इस महाकाव्य की रचना अवधी भाषा में हुई थी और रस छंद अलंकार का प्रयोग इसकी सुंदरता को बढ़ाता है।

4.2 : उद्देश्य

इस इकाई के पाठ से आप

1. गोस्वामी तुलसीदास की 'रामचरित मानस' के अयोध्याकाण्ड के एक अंश का पाठ कर सकेंगे।

2. राम के वन में पहुँचने के बाद राम का शृंगवेरपुर पहुंचना, निषाद के द्वारा सेवा, लक्ष्मण निषाद संवाद, राम-सीता-सुमंत्र संवाद, प्रयाग पहुंचना, भरद्वाज संवाद और प्रयाग निवासियों का राम के लिए प्रेम आदि प्रसंगों का पता चलेगा।

3. दोहा-चौपाई-सोरठा और छंद में रचित कविता की काव्य-गत विशेषताओं का बोध कर सकेंगे।

4. राम, सीता, और लक्ष्मण के जीवन से कुछ सीख ले सकेंगे।

5. जीवन जीने की कला सीख सकेंगे।

4.3 : मूल पाठ : रामचरितमानस : अयोध्याकांड – II : व्याख्या

4.3.1 श्री राम का श्रृंगवेरपुर पहुँचना, निषाद के द्वारा सेवा

सीता सचिव सहित दोउ भाई। सृंगबेरपुर पहुँचे जाई॥
उतरे राम देवसरि देखी। कीन्ह दंडवत हरषु बिसेषी॥1॥
लखन सचिवँ सियँ किए प्रनामा। सबहि सहित सुखु पायउ रामा॥
गंग सकल मुद मंगल मूला। सब सुख करनि हरनि सब सूला॥2॥
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा। रामु बिलोकहिं गंग तरंगा॥
सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई। बिबुध नदी महिमा अधिकाई॥3॥
मज्जनु कीन्ह पंथ श्रम गयऊ। सुचि जलु पिअत मुदित मन भयऊ॥
सुमिरत जाहि मिटइ श्रम भारू। तेहि श्रम यह लौकिक ब्यवहारू॥4॥
सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुल केतु।
चरितकरत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु॥87॥
यह सुधि गुहँ निषाद जब पाई। मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई॥
लिए फल मूल भेंट भरि भारा। मिलन चलेउ हियँ हरषु अपारा॥1॥
करि दंडवत भेंट धरि आगें। प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागें॥
सहज सनेह बिबस रघुराई। पूँछी कुसल निकट बैठाई॥2॥
नाथ कुसल पद पंकज देखें। भयउँ भागभाजन जन लेखें॥
देव धरनि धनु धामु तुम्हारा। मैं जनु नीचु सहित परिवारा॥3॥
कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ। थापिय जनु सबु लोगु सिहाऊ॥
कहेहु सत्य सबु सखा सुजाना। मोहि दीन्ह पितु आयसु आना॥4॥
बरष चारिदस बासु बन मुनि ब्रत बेषु अहारु।

ग्राम बासु नहिं उचित सुनि गुहहि भयउ दुखु भारु॥88॥
राम लखन सिय रूप निहारी। कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन्ह पठए बन बालक ऐसे॥1॥
एक कहहिं भल भूपति कीन्हा। लोयन लाहु हमहि बिधि दीन्हा॥
तब निषादपति उर अनुमाना। तरु सिंसुपा मनोहर जाना॥2॥
लै रघुनाथहिं ठाउँ देखावा। कहेउ राम सब भाँति सुहावा॥
पुरजन करि जोहारु घर आए। रघुबर संध्या करन सिधाए॥3॥
गुहँ सँवारि साँथरी डसाई। कुस किसलयमय मृदुल सुहाई॥
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी। दोना भरि भरि राखेसि पानी॥4॥
सिय सुमंत्र भ्राता सहित कंद मूल फल खाइ।
सयन कीन्ह रघुबंसमनि पाय पलोटत भाइ॥89॥
उठे लखनु प्रभु सोवत जानी। कहि सचिवहि सोवन मृदु बानी॥
कछुक दूरि सजि बान सरासन। जागन लगे बैठि बीरासन॥1॥
गुहँ बोलाइ पाहरू प्रतीती। ठावँ ठावँ राखे अति प्रीती॥
आपु लखन पहिं बैठेउ जाई। कटि भाथी सर चाप चढ़ाई॥2॥
सोवत प्रभुहि निहारि निषादू। भयउ प्रेम बस हृदयँ बिषादू॥
तनु पुलकित जलु लोचन बहई। बचन सप्रेम लखन सन कहई॥3॥
भूपति भवन सुभायँ सुहावा। सुरपति सदनु न पटतर पावा॥
मनिमय रचित चारु चौबारे। जनु रतिपति निज हाथ सँवारे॥4॥
सुचि सुबिचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुबास।
पलँग मंजु मनि दीप जहँ सब बिधि सकल सुपास॥90॥
बिबिध बसन उपधान तुराईं। छीर फेन मृदु बिसद सुहाईं॥
तहँ सिय रामु सयन निसि करहीं। निज छबि रति मनोज मदु हरहीं॥1॥
ते सिय रामु साथरीं सोए। श्रमित बसन बिनु जाहिं न जोए॥
मातु पिता परिजन पुरबासी। सखा सुसील दास अरु दासी॥2॥
जोगवहिं जिन्हहि प्रान की नाईं। महि सोवत तेइ राम गोसाईं॥
पिता जनक जग बिदित प्रभाऊ। ससुर सुरेस सखा रघुराऊ॥3॥
रामचंदु पति सो बैदेही। सोवत महि बिधि बाम न केही॥
सिय रघुबीर कि कानन जोगू। करम प्रधान सत्य कह लोगू॥4॥
कैकयनंदिनि मंदमति कठिन कुटिलपन कीन्ह।

जेहिं रघुनंदन जानकिहि सुख अवसर दुखु दीन्ह॥91॥
भइ दिनकर कुल बिटप कुठारी। कुमति कीन्ह सब बिस्व दुखारी॥
भयउ बिषादु निषादहि भारी। राम सीय महि सयन निहारी॥1॥

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियाँ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरित मानस' के अयोध्याकाण्ड से ली गई हैं। यहाँ राम कथा का वह प्रसंग है जब राम वन में अपने भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ घूम रहे हैं। उनके बारे में निषाद राज गुह को पता चलता है। श्री राम का श्रृंगवेरपुर पहुँचना, निषाद के द्वारा सेवा का यह प्रसंग है।

सीता और मंत्री के साथ दोनों भाई श्रृंगवेरपुर जा पहुँचे। वहाँ गंगाजी को देखकर राम रथ से उतर पड़े और बड़ी खुशी से उन्होंने नमस्कार किया। लक्ष्मण, सुमंत्र और सीता ने भी प्रणाम किया। सबके साथ राम ने सुख पाया। गंगाजी समस्त आनंद-मंगलों की जड़ हैं। वे सब सुखों को करने वाली और सब दुखों को हरने वाली हैं। अनेक कहानियाँ सुनाते हुए राम गंगाजी की लहरों को देख रहे हैं। उन्होंने मंत्री को, छोटे भाई लक्ष्मण को और प्रिय-पत्नी सीता को देवताओं की नदी गंगाजी के बड़े गुण सुनाए। इसके बाद सब नहाए, जिससे रास्ते की सारी थकावट दूर हो गई और पवित्र जल पीते ही मन प्रसन्न हो गया। जिनके याद करने से (बार-बार जन्म ने और मरने का) महान कष्ट मिट जाता है, उनको थकान होना- यह केवल लौकिक व्यवहार (नरलीला) है।

(शुद्ध प्रकृतिजन्य त्रिगुणों से रहित, मायातीत दिव्य मंगलविग्रह, सच्चिदानंद-कन्द स्वरूप सूर्य कुल के ध्वजा रूप) भगवान राम आम आदमियों की तरह ऐसे काम करते हैं, जो संसार रूपी समुद्र के पार उतरने के लिए पुल के समान हैं। जब निषादराज गुह ने यह खबर पाई, तब खुश होकर उसने अपने प्रियजनों और भाई-बंधुओं को बुला लिया और भेंट देने के लिए फल, मूल (कन्द) लेकर और उन्हें भारों (बहँगियों) में भरकर मिलने के लिए चला। उसके दिल में खुशी का समंदर दौड़ रहा था। नमस्कार करके भेंट सामने रखकर वह बहुत प्रेम से प्रभु को देखने लगा। राम ने सच्चे प्रेम के बस में होकर उसे अपने पास बैठाकर हालचाल पूछा। निषादराज ने उत्तर दिया- हे नाथ! आपके दर्शन से ही भलाई है।) आज मैं भाग्यवान पुरुषों की गिनती में आ गया। हे देव! यह पृथ्वी, धन और घर सब आपका है। मैं तो परिवार सहित आपका सेवक हूँ। अब कृपा करके मेरे नगर (श्रृंगवेरपुर) में पधारिए और मेरी इज्जत बढ़ाइए, जिससे सब लोग मुझे अच्छा कहें। राम ने कहा- हे मित्र! तुमने जो कुछ कहा सब सच है, परन्तु पिताजी ने मुझको और ही कहा है। मुझे चौदह वर्ष तक मुनियों का व्रत और वेष धारण कर और मुनियों के योग्य आहार करते हुए वन में ही बसना है, गाँव के भीतर जाकर रहना ठीक नहीं है। यह सुनकर गुह को बड़ा दुःख हुआ।

राम, लक्ष्मण और सीता के रूप को देखकर गाँव के स्त्री-पुरुष प्रेम के साथ चर्चा करते हैं। (कोई कहती है-) हे सखी! कहो तो, वे माता-पिता कैसे हैं, जिन्होंने ऐसे (सुंदर सुकुमार) बालकों को वन में भेज दिया है। कोई एक कहते हैं- राजा ने अच्छा ही किया, इसी बहाने हमें भी भगवान (ब्रह्मा) ने कुछ खास देखने का मौका (नेत्रों का लाभ) दिया। तब निषाद राज ने हृदय में अनुमान किया, तो अशोक के पेड़ के नीचे उनके ठहरने के लिए ठीक समझा। उसने राम को ले जाकर वह स्थान दिखाया। राम ने देखकर कहा कि यह सब प्रकार से सुंदर है। (पुरवासी) लोग जोहार (वंदना) करके अपने-अपने घर लौटे और राम पूजा-पाठ(संध्या) करने चले गये। गुह ने इसी बीच कुश और पत्तों की कोमल और सुंदर सेज सजाकर बिछा दी और मीठे और कोमल देख-देखकर बर्तनों में भर-भरकर फल-मूल और पीने के लिए पानी रख दिया। अपने हाथ से फल भर-भरकर रख दिए। सीता, सुमंत्र और भाई लक्ष्मण सबने कन्द-मूल-फल खाए। इसके बाद राम आराम करने लगे। लक्ष्मण उनके पैर दबाने लगे।

फिर राम को सोते जानकर लक्ष्मण उठे। कोमल वाणी से मंत्री सुमंत्र को सोने के लिए कहा। व खुद वहाँ से कुछ दूर पर धनुष-बाण से सजकर, वीरासन में बैठकर पहरा देने लगे। गुह ने भरोसेमंद पहरेदारों को बुलाकर अत्यन्त प्रेम से जगह-जगह तैनात कर दिया। वे खुद कमर में तरकस बाँधकर तथा धनुष पर बाण चढ़ाकर लक्ष्मणजी के पास जा बैठे। राम को जमीन पर सोते देखकर प्रेम वश निषाद राज को दुख हुआ। वे रोने लगे। वे प्रेम से लक्ष्मण से बोले, "महाराज दशरथ का महल सुंदर है, इन्द्र के महल जैसा सुंदर है। सब प्रकार का पूरा आराम है। जहाँ (ओढ़ने-बिछाने के) अनेकों वस्त्र, तकिए और गद्दे हैं, जो दूध के झाग के समान कोमल, निर्मल (उज्ज्वल) और सुंदर हैं, वहाँ (उन चौबारों में) सीता और राम रात को सोया करते थे। वही सीता और राम आज घास-फूस की चादर पर थके हुए बिना कपड़े के ही सोए हैं। ऐसी हालत में वे देखे नहीं जाते। माता, पिता, कुटुम्बी, पुरवासी (प्रजा), मित्र, अच्छे शील-स्वभाव के दास और सब की देखभाल करने वाले वही राम आज पृथ्वी पर सो रहे हैं। जिनके पिता जनक हैं, जो सारी दुनिया में मशहूर हैं, जिनके ससुर दशरथ हैं और पति राम हैं, वही सीता आज जमीन पर सो रही हैं। वक्त वक्त की बात है! सीता और राम क्या वन में आने के लायक हैं? लोग सच कहते हैं कि कर्म (भाग्य) ही प्रधान है। कैकयराज की लड़की नीच बुद्धि कैकेयी ने बड़ी बेरहमी की। उसने राम और सीता को सुख के समय दुःख दे दिया। उस कैकेयी ने सारी दुनिया को दुःखी कर दिया। राम-सीता को जमीन पर सोते हुए देखकर निषाद को बड़ा दुःख हुआ।

बोध प्रश्न

- सुमंत्र का राम के साथ वन आने की क्या वजह थी?
- निषादराज कौन हैं और वे राम को वन में देखकर क्यों दुखी हुए?

- निषाद राज की पेशकश क्या थी, राम ने क्यों इंकार कर दिया?
- कैकेयी ने क्या बुराई की जो सारी दुनिया दुखी हो गई?

4.3.2 लक्ष्मण-निषाद संवाद, श्री राम-सीता से सुमन्त्र का संवाद, सुमंत्र का लौटना

बोले लखन मधुर मृदु बानी। ग्यान बिराग भगति रस सानी॥
काहु न कोउ सुख दुख कर दाता। निज कृत करम भोग सबु भ्राता॥2॥
जोग बियोग भोग भल मंदा। हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा॥
जनमु मरनु जहँ लगि जग जालू। संपति बिपति करमु अरु कालू॥3॥
दरनि धामु धनु पुर परिवारू। सरगु नरकु जहँ लगि ब्यवहारू॥
देखिअ सुनिअ गुनिअ मन माहीं। मोह मूल परमारथु नाहीं॥4॥
सपनें होइ भिखारि नृपु रंकु नाकपति होइ।
जागें लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंच जियँ जोइ॥92॥
अस बिचारि नहिं कीजिअ रोसू। काहुहि बादि न देइअ दोसू॥
मोह निसाँ सबु सोवनिहारा। देखिअ सपन अनेक प्रकारा॥1॥
एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी। परमारथी प्रपंच बियोगी॥
जानिअ तबहिं जीव जग जागा। जब सब बिषय बिलास बिरागा॥2॥
होइ बिबेकु मोह भ्रम भागा। तब रघुनाथ चरन अनुरागा॥
सखा परम परमारथु एहू। मन क्रम बचन राम पद नेहू॥3॥
राम ब्रह्म परमारथ रूपा। अबिगत अलख अनादि अनूपा॥
सकल बिकार रहित गतभेदा। कहि नित नेति निरूपहिं बेदा॥4॥
भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जग जाल॥93॥
सखा समुझि अस परिहरि मोहू। सिय रघुबीर चरन रत होहू॥
कहत राम गुन भा भिनुसारा। जागे जग मंगल सुखदारा॥1॥
सकल सौच करि राम नहावा। सुचि सुजान बट छीर मगावा॥
अनुज सहित सिर जटा बनाए। देखि सुमंत्र नयन जल छाए॥
हृदयँ दाहु अति बदन मलीना। कह कर जोर बचन अति दीना॥
नाथ कहेउ अस कोसलनाथा। लै रथु जाहु राम कें साथा॥3॥
बनु देखाइ सुरसरि अन्हवाई। आनेहु फेरि बेगि दोउ भाई॥
लखनु रामु सिय आनेहु फेरी। संसय सकल सँकोच निबेरी॥4॥
नृप अस कहेउ गोसाइँ जस कहइ करौं बलि सोइ।
करि बिनती पायन्ह परेउ दीन्ह बाल जिमि रोइ॥94॥

तात कृपा करि कीजिअ सोई। जातें अवध अनाथ न होई॥
मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा। तात धरम मतु तुम्ह सबु सोधा॥1॥
सिबि दधीच हरिचंद नरेसा। सहे धरम हित कोटि कलेसा॥
रंतिदेव बलि भूप सुजाना। धरमु धरेउ सहि संकट नाना॥2॥
धरमु न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना॥
मैं सोइ धरमु सुलभ करि पावा। तजें तिहूँ पुर अपजसु छावा॥3॥
संभावित कहुँ अपजस लाहू। मरन कोटि सम दारुन दाहू॥
तुम्ह सन तात बहुत का कहउँ। दिएँ उतरु फिरि पातकु लहऊँ॥4॥ :
पितु पद गहि कहि कोटि नति बिनय करब कर जोरि।
चिंता कवनिहु बात कै तात करिअ जनि मोरि॥95॥
तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरें। बिनती करउँ तात कर जोरें॥
सब बिधि सोइ करतब्य तुम्हारें। दुख न पाव पितु सोच हमारें॥1॥
सुनि रघुनाथ सचिव संबादू। भयउ सपरिजन बिकल निषादू॥
पुनि कछु लखन कही कटु बानी। प्रभु बरजे बड़ अनुचित जानी॥2॥
सकुचि राम निज सपथ देवाई। लखन सँदेसु कहिअ जनि जाई॥
कह सुमंत्रु पुनि भूप सँदेसू। सहि न सकिहि सिय बिपिन कलेसू॥3॥
जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया। होइ रघुबरहि तुम्हहि करनीया॥
नतरु निपट अवलंब बिहीना। मैं न जिअब जिमि जल बिनु मीना॥4॥
मइकें ससुरें सकल सुख जबहिं जहाँ मनु मान।
तहँ तब रहिहि सुखेन सिय जब लगि बिपति बिहान॥96॥ :
बिनती भूप कीन्ह जेहि भाँती। आरति प्रीति न सो कहि जाती॥
पितु सँदेसु सुनि कृपानिधाना। सियहि दीन्ह सिख कोटि बिधाना॥1॥
सासु ससुर गुर प्रिय परिवारू। फिरहु त सब कर मिटै खभारू॥
सुनि पति बचन कहति बैदेही। सुनहु प्रानपति परम सनेही॥2॥
प्रभु करुनामय परम बिबेकी। तनु तजि रहति छाँह किमि छेंकी॥
प्रभा जाइ कहँ भानु बिहाई। कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई॥3॥
पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई। कहति सचिव सन गिरा सुहाई॥
तुम्ह पितु ससुर सरिस हितकारी। उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी॥4॥:
आरति बस सनमुख भइउँ बिलगु न मानब तात।
आरजसुत पद कमल बिनु बादि जहाँ लगि नात॥97॥ :
पितु बैभव बिलास मैं डीठा। नृप मनि मुकुट मिलित पद पीठा॥

सुखनिधान अस पितु गृह मोरें। पिय बिहीन मन भाव न भोरें॥1।।
ससुर चक्कवइ कोसल राऊ। भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ॥
आगें होइ जेहि सुरपति लेई। अरध सिंघासन आसनु देई॥2॥
ससुरु एतादृस अवध निवासू। प्रिय परिवारु मातु सम सासू॥
बिनु रघुपति पद पदुम परागा। मोहि केउ सपनेहुँ सुखद न लागा॥3॥
अगम पंथ बनभूमि पहारा। करि केहरि सर सरित अपारा॥
कोल किरात कुरंग बिहंगा। मोहि सब सुखद प्रानपति संगा॥4॥
सासु ससुर सन मोरि हुँति बिनय करबि परि पायँ।
मोर सोचु जनि करिअ कछु मैं बन सुखी सुभायँ॥98॥
प्राननाथ प्रिय देवर साथा। बीर धुरीन धरें धनु भाथा॥
नहिं मग श्रमु भ्रमु दुख मन मोरें। मोहि लगि सोचु करिअ जनि भोरें॥1॥
सुनि सुमंत्रु सिय सीतलि बानी। भयउ बिकल जनु फनि मनि हानी॥
नयन सूझ नहिं सुनइ न काना। कहि न सकइ कछु अति अकुलाना॥2॥
राम प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती। तदपि होति नहिं सीतलि छाती॥
जतन अनेक साथ हित कीन्हे। उचित उतर रघुनंदन दीन्हे॥3॥
मेटि जाइ नहिं राम रजाई। कठिन करम गति कछु न बसाई॥
राम लखन सिय पद सिरु नाई। फिरेउ बनिक जिमि मूर गवाँई॥4॥
रथु हाँकेउ हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिं।
देखि निषाद बिषाद बस धुनहिं सीस पछिताहिं॥99॥

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियाँ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरित मानस' के अयोध्याकाण्ड से ली गई हैं। तब लक्ष्मणजी ज्ञान, वैराग्य और भक्ति के रस से सनी हुई मीठी और कोमल वाणी बोले- हे भाई! कोई किसी को सुख-दुःख का देने वाला नहीं है। सब अपने ही किए हुए कर्मों का फल भोगते हैं। संयोग (मिलना), वियोग (बिछुड़ना), भले-बुरे भोग, शत्रु, मित्र और उदासीन- ये सभी भ्रम के फंदे हैं। जन्म-मृत्यु, सम्पत्ति-विपत्ति, कर्म और काल- जहाँ तक जगत के जंजाल हैं। धरती, घर, धन, नगर, परिवार, स्वर्ग और नरक आदि जहाँ तक व्यवहार हैं, जो देखने, सुनने और मन के अंदर विचारने में आते हैं, इन सबकी जड़ मोह (अज्ञान) ही है। जैसे सपने में राजा भिखारी हो जाए या कंगाल स्वर्ग का मालिक इन्द्र हो जाए, तो जागने पर नफ़ा नुकसान कुछ भी नहीं है, वैसे ही इसको देखना चाहिए। यह सोचकर गुस्सा नहीं करना चाहिए और न किसी को बेकार दोष ही देना चाहिए। सब लोग मोह रूपी रात्रि में सोने वाले हैं और सोते हुए उन्हें

अनेकों प्रकार के स्वप्न दिखाई देते हैं। इस जगत रूपी रात्रि में योगी लोग जागते हैं, जो परमार्थी हैं और प्रपंच (मायिक जगत) से छूटे हुए हैं। जगत में जीव को जागा हुआ तभी जानना चाहिए, जब सम्पूर्ण भोग-विलासों से वैराग्य हो जाए। विवेक होने पर मोह रूपी भ्रम भाग जाता है, तब (अज्ञान का नाश होने पर) राम के चरणों में प्रेम होता है। हे मित्र ! मन, वचन और कर्म से राम के चरणों में प्रेम होना, यही सर्वश्रेष्ठ परमार्थ (पुरुषार्थ) है। राम परमार्थस्वरूप (परमवस्तु) परब्रह्म हैं। वे अविगत (जानने में न आने वाले) अलख (स्थूल दृष्टि से देखने में न आने वाले), अनादि (आदिरहित), अनुपम (उपमारहित) सब विकारों से रहित और भेद शून्य हैं, वेद जिनका नित्य 'नेति-नेति' कहकर निरूपण करते हैं। वही कृपालु राम भक्त, भूमि, ब्राह्मण, गो और देवताओं के हित के लिए मनुष्य शरीर धारण करके लीलाएँ करते हैं, जिनके सुनने से जगत के जंजाल मिट जाते हैं। हे मित्र ! ऐसा समझ, मोह को छोड़कर सीताराम के चरणों में प्रेम करो। इस प्रकार राम के गुण कहते-कहते सबेरा हो गया! तब दुनिया का भला करने वाले और उसे सुख देने वाले राम जागे। शौच के सब कार्य करके (नित्य) पवित्र और सुजान राम ने स्नान किया। फिर बड़ का दूध मँगाया और छोटे भाई लक्ष्मण सहित उस दूध से सिर पर जटाएँ बनाईं। यह देखकर सुमंत्र की आंखे भर आईं। उनका दिल दुखने लगा। वे उदास हो गए। वे हाथ जोड़कर बोले- हे नाथ! मुझे दशरथजी ने ऐसी आज्ञा दी थी कि तुम रथ लेकर राम के साथ जाओ। वन दिखाकर, गंगा स्नान कराकर दोनों भाइयों को तुरंत लौटा लाना। शक और संकोच को दूर करके लक्ष्मण, राम, सीता को वापस ले आना। महाराज दशरथ ने ऐसा कहा था, अब राम जैसा कहें, मैं वही करूँ। इस प्रकार से विनती करके वे राम के चरणों में गिर पड़े और बालक की तरह रो दिए।हे तात ! कृपा करके वही कीजिए जिससे अयोध्या बेआसरा न हो। " राम ने मंत्री सुमंत्र को समझाया कि हे तात ! आपने तो धर्म के सभी सिद्धांतों को छान डाला है।शिबि, दधीचि और राजा हरिश्चन्द्र ने धर्म के लिए करोड़ों (अनेकों) कष्ट सहे थे। बुद्धिमान राजा रन्तिदेव और बलि बहुत से संकट सहकर भी धर्म को पकड़े रहे (उन्होंने धर्म नहीं छोड़ा)। वेद, शास्त्र और पुराणों मंो कहा गया है कि सत्य के समान दूसरा धर्म नहीं है। मैंने उस धर्म को आसानी से पा लिया है। इस (सत्य रूपी) धर्म को छोड़ने से तीनों लोकों में बदनामी होगी। किसी के लिए भी बदनामी मौत जैसी है। हे तात! मैं आप से अधिक क्या कहूँ! लौटकर जवाब देने में भी पाप लगेगा। आप जाकर पिताजी के चरण पकड़कर करोड़ों नमस्कार के साथ ही हाथ जोड़कर बिनती करिएगा कि हे तात! आप मेरी किसी बात की चिन्ता न करें।

आप भी पिताजी के समान मेरे बड़े हैं। हे तात! मैं हाथ जोड़कर आप से विनती करता हूँ कि आपका भी सब प्रकार से वही कर्तव्य है, जिसमें पिताजी हम लोगों के सोच में दुःख न पावें।

राम और सुमंत्र की यह बातचीत सुनकर निषादराज और सब लोग बहुत दुखी हुए। फिर लक्ष्मण ने कुछ कड़वी बात भी कही। राम ने अपने भाई से कहा कि वे किसी को बुरा भला न कहें। राम ने सकुचाकर, अपनी कसम दिलाकर सुमंत्र से कहा कि आप जाकर लक्ष्मण का यह बयान न कहिएगा। सुमंत्र ने फिर राजा का संदेश कहा कि सीता वन के दुख और परेशानी न सह सकेंगी। इसलिए जिस तरह हो सीता को अयोध्या को लौट आवें, तुमको और श्री रामचन्द्र को वही उपाय करना चाहिए। नहीं तो मैं बिल्कुल ही बिना सहारे का होकर वैसे ही नहीं जीऊँगा जैसे बिना जल के मछली नहीं जी सकती। सीता के मायके (पिता के घर) और ससुराल में सब सुख हैं। जब तक यह परेशानी खत्म नहीं होती, तब तक वे जब जहाँ जी चाहें, वहीं सुख से रहेंगी। राजा ने जिस तरह (जिस दीनता और प्रेम से) विनती की है, वह दीनता और प्रेम कहा नहीं जा सकता। राम ने पिता का संदेश सुनकर सीता को करोड़ों (अनेकों) प्रकार से सीख दी। उन्होंने कहा- तुम घर लौट जाओ, सास, ससुर, गुरु, प्रियजन एवं कुटुम्बी सबकी चिन्ता मिट जाएगी। पति की बात सुनकर सीता कहती हैं- हे प्राणपति! हे प्रभो! आप करुणामय और परम ज्ञानी हैं। (कृपा करके विचार तो कीजिए) शरीर को छोड़कर छाया अलग कैसे रह सकती है? सूरज की रोशनी सूरज को छोड़कर कहाँ जा सकती है? और चाँदनी चन्द्रमा को छोड़कर कहाँ जा सकती है? सीता मंत्री से कहने लगीं- आप मेरे पिताजी और ससुरजी के समान मेरा भला सोचने वाले हैं। आपको मैं बदले में जवाब दूँ, यह ठीक न होगा। किन्तु हे तात! मैं दुखी होकर ही आपके सामने आई हूँ, आप बुरा न मानिएगा। राम जी के बिना सारी दुनिया में जहाँ तक रिश्ते-नाते हैं, सभी मेरे लिए बेकार हैं। मैंने अपने पिताजी की शानोशौकत देखी है, ऐसे पिता का घर भी पति के बिना मेरे मन को भूलकर भी नहीं भाता।

मेरे ससुर कोसलराज चक्रवर्ती सम्राट हैं, ऐसे ससुर, के महल में रहना, और माता के समान सासुएँ- ये कोई भी राम काए कदमों की धूल के सामने बेकार हैं। राम जी के बिना मुझे सपने में भी कोई अच्छा नहीं लगता। घने रास्ते, जंगली धरती, पहाड़, हाथी, शेर, गहरे तालाब और नदियाँ, कोल, भील, हिरन और पक्षी- राम के साथ रहते ये सभी मुझे सुख देने वाले होंगे। इसलिए सास और ससुर के पाँव पड़कर, मेरी ओर से विनती कीजिएगा कि वे मेरा कुछ भी सोच न करें, मैं वन में सुखी हूँ। वीर पति और प्यारे देवर साथ हैं। इससे मुझे न रास्ते की थकावट है, न हिचक है और न मेरे मन में कोई दुःख ही है। आप मेरे लिए भूलकर भी सोचना। सुमंत्र सीता की बात सुनकर ऐसे बेचैन हो गए जैसे साँप मणि खो जाने पर होता है। आँखों से कुछ सूझता नहीं, कानों से सुनाई नहीं देता। वे बहुत परेशान हो गए, कुछ कह नहीं सकते। राम ने उनको खूब समझाया। तो भी उन्हें चैन न आया। साथ चलने के लिए मंत्री ने अनेकों पेशकश

की। पर राम ने उनके हर परेशानी का जवाब दिया। राम की बात टाली नहीं जा सकती। कर्म की गति कठिन है, उस पर कुछ भी वश नहीं चलता। राम, लक्ष्मण और सीता के चरणों में सिर नवाकर सुमंत्र इस तरह लौटे जैसे कोई व्यापारी अपना मूलधन (पूँजी) गँवाकर लौटे। सुमंत्र ने रथ को हाँका, घोड़े राम की ओर देख-देखकर हिनहिनाते हैं। यह देखकर निषाद लोग विषाद (दुख) के वश होकर सिर धुन-धुनकर (पीट-पीटकर) पछताते हैं। खूब दुखी होते हैं।

बोध प्रश्न

- राम और लक्ष्मण ने अपने बालों में बड़ का दूध क्यों लगाया?
- लक्ष्मण ने सुमंत्र को क्यों और कैसे समझाया?
- राम ने सुमंत्र को क्या कहकर समझाया?

4.3.3 केवट का प्रेम

जासु बियोग बिकल पसु ऐसें। प्रजा मातु पितु जिइहहिं कैसें॥
बरबस राम सुमंत्रु पठाए। सुरसरि तीर आपु तब आए॥1॥
मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना॥
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई॥2॥
छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई॥
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई॥3॥
एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू। नहिं जानउँ कछु अउर कबारू॥
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू॥4॥

व्याख्या : जिनके वियोग में पशु इस प्रकार व्याकुल हैं, उनके वियोग में प्रजा, माता और पिता कैसे जीते रहेंगे? श्री रामचन्द्रजी ने जबर्दस्ती सुमंत्र को लौटाया। तब आप गंगाजी के तीर पर आए। श्री राम ने केवट से नाव माँगी, पर वह लाता नहीं। वह कहने लगा- मैंने तुम्हारा मर्म (भेद) जान लिया। तुम्हारे चरण कमलों की धूल के लिए सब लोग कहते हैं कि वह मनुष्य बना देने वाली कोई जड़ी है। जिसके छूते ही पत्थर की शिला सुंदरी स्त्री हो गई (मेरी नाव तो काठ की है)। काठ पत्थर से कठोर तो होता नहीं। मेरी नाव भी मुनि की स्त्री हो जाएगी और इस प्रकार मेरी नाव उड़ जाएगी, मैं लुट जाऊँगा (अथवा रास्ता रुक जाएगा, जिससे आप पार न हो सकेंगे और मेरी रोजी मारी जाएगी) (मेरी कमाने-खाने की राह ही मारी जाएगी)। मैं तो इसी नाव से सारे परिवार का पालन-पोषण करता हूँ। दूसरा कोई धंधा नहीं जानता। हे प्रभु! यदि तुम अवश्य ही पार जाना चाहते हो तो मुझे पहले अपने चरणकमल पखारने (धो लेने) के लिए कह दो। हे नाथ! मैं चरण कमल धोकर आप लोगों को नाव पर चढ़ा लूँगा, मैं आपसे कुछ उतराई नहीं चाहता। हे राम! मुझे आपकी दुहाई और दशरथजी की सौगंध है, मैं सब सच-सच कहता हूँ। लक्ष्मण भले ही मुझे तीर मारें, पर जब तक मैं पैरों को पखार न लूँगा, तब तक हे तुलसीदास के नाथ! हे कृपालु! मैं पार नहीं उतारूँगा।

बोध प्रश्न

- केवट कौन हैं और राम को नदी पार कराने की उनकी शर्त क्या है?

4.3.4 गंगा पार जाना

पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि राम राउरि आन दसरथसपथ सब साची कहौं॥
बरु तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं॥
सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन॥
कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई॥
बेगि आनु जलपाय पखारू। होत बिलंबु उतारहि पारू॥1॥
जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा॥
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा। जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा॥2॥
पद नख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभु बचन मोहँ मति करषी॥
केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेइ आवा॥3॥
अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा॥
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं। एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं॥4॥
पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार॥101॥

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता। सीय रामुगुह लखन समेता॥
केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा॥1॥
पिय हिय की सिय जाननिहारी। मनि मुदरी मन मुदित उतारी॥
कहेउ कृपाल लेहि उतराई। केवट चरन गहे अकुलाई॥2॥
नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा॥
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी। आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी॥3॥
अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें। दीन दयाल अनुग्रह तोरें॥
फिरती बार मोहि जो देबा। सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा॥4॥
बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ।
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ॥102॥

तब मज्जनु करि रघुकुलनाथा। पूजि पारथिव नायउ माथा॥
सियँ सुरसरिहि कहेउ कर जोरी। मातु मनोरथ पुरउबि मोरी॥1॥
पति देवर सँग कुसल बहोरी। आइ करौं जेहिं पूजा तोरी॥
सुनि सिय बिनय प्रेम रस सानी। भइ तब बिमल बारि बर बानी॥2॥
सुनु रघुबीर प्रिया बैदेही। तब प्रभाउ जग बिदित न केही॥
लोकप होहिं बिलोकत तोरें। तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरें॥3॥
तुम्ह जो हमहि बड़ि बिनय सुनाई। कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बड़ाई॥
तदपि देबि मैं देबि असीसा। सफल होन हित निज बागीसा॥4॥
प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ।
पूजिहि सब मनकामना सुजसु रहिहि जग छाइ॥103॥
गंग बचन सुनि मंगल मूला। मुदित सीय सुरसरि अनुकूला॥
तब प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू। सुनत सूख मुखु भा उर दाहू॥1॥
दीन बचन गुह कह कर जोरी। बिनय सुनहु रघुकुलमनि मोरी॥
नाथ साथ रहि पंथु देखाई। करि दिन चारि चरन सेवकाई॥2॥
जेहिं बन जाइ रहब रघुराई। परनकुटी मैं करबि सुहाई॥
तब मोहि कहँ जसि देब रजाई। सोइ करिहउँ रघुबीर दोहाई॥3॥
सहज सनेह राम लखि तासू। संग लीन्ह गुह हृदयँ हुलासू॥
पुनि गुहँ ग्याति बोलि सब लीन्हे। करि परितोषु बिदा तब कीन्हे॥4॥

व्याख्या : केवट के प्रेम में लपेटे हुए अटपटे वचन सुनकर करुणाधाम राम, सीता और लक्ष्मण की ओर देखकर हँसे। कृपा के समुद्र राम केवट से मुस्कुराकर बोले," भाई! तू वही कर जिससे तेरी नाव न जाए। जल्दी पानी ला और मेरे पैर धो ले। देर हो रही है, पार उतार दे। एक बार जिनका नाम स्मरण करते ही मनुष्य अपार भवसागर के पार उतर जाते हैं और जिन्होंने (वामनावतार में) जगत को तीन पग से भी छोटा कर दिया था (दो ही पग में त्रिलोकी को नाप लिया था), वही कृपालु राम (गंगाजी से पार उतारने के लिए) केवट से विनती और गुजारिश कर रहे हैं! राम की बात सुनकर गंगाजी की सोच में पड़ गईं। (कि ये साक्षात भगवान होकर भी पार उतारने के लिए केवट से विनती कैसे कर रहे हैं), परन्तु (समीप आने पर अपनी उत्पत्ति के स्थान) गंगा जी ने जब राम के पैरों के नाखूनों (पदनखों) को देखा तो उन्हें पहचानकर गंगाजी खुश हो गईं। (वे समझ गईं कि भगवान नरलीला कर रहे हैं, इससे उनका मोह नष्ट हो गया और इन चरणों का स्पर्श प्राप्त करके मैं धन्य होऊँगी, यह विचारकर वे हर्षित हो गईं।) केवट राम की आज्ञा पाकर कठौते में भरकर जल ले आया। अत्यन्त आनंद और प्रेम में उमंगकर वह भगवान के

पैर धोने लगा। सब देवता फूल बरसाने लगे कि इसके समान खुशनसीब कोई नहीं है। चरणों को धोकर और सारे परिवार सहित स्वयं उस जल (चरणोदक) को पीकर पहले (उस महान पुण्य के द्वारा) अपने पितरों को भवसागर से पार कर फिर खुशी-खुशी राम को गंगा के पार ले गया। निषादराज और लक्ष्मण सहित सीता और राम (नाव से) उतरकर गंगा की रेत (बालू) में खड़े हो गए। तब केवट ने उतरकर नमस्कार किया। (उसको दण्डवत करते देखकर) राम को हिचकिचाहट हुई कि इसको कुछ पैसा तो दिया ही नहीं। पति के दिल की बात जानने वाली सीता ने खुश होकर पर भरे मन से अपनी बेशकीमती अँगूठी (अँगुली से) उतारी। कृपालु राम ने केवट से कहा, "नाव की उतराई की मजदूरी लो। केवट ने हैरान होकर राम से कहा- हे नाथ! आज मैंने क्या नहीं पाया! मेरे दोष, दुःख और दरिद्रता की आग आज बुझ गई है। मैंने बहुत समय तक मजदूरी की। भगवान ने आज बहुत अच्छी भरपूर मजदूरी दे दी है। हे नाथ! हे दीनदयाल! आपकी कृपा से अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। लौटती बार आप मुझे जो कुछ देंगे, वह मैं खुशी-खुशी ले लूँगा"। राम, लक्ष्मणऔर सीता ने बहुत कोशिश की, पर केवट ने कुछ नहीं लिया। तब राम ने उसे भक्ति का वरदान देकर उसे विदा किया। फिर राम ने स्नान करके पूजा की और शिवजी को सिर नवाया। सीता ने हाथ जोड़कर गंगाजी से कहा- हे माता! मेरा मनोरथ (मन्नत) पूरा कीजिएगा। जिससे मैं पति और देवर के साथ कुशलतापूर्वक लौट आकर तुम्हारी पूजा करूँ। सीता की प्रेम रस में सनी हुई विनती सुनकर तब गंगाजी के निर्मल जल में से आवाज आई, "हे सीता! सुनो, तुम्हारा असर दुनिया में किसे नहीं मालूम है? तुम्हारे (कृपा दृष्टि से) देखते ही लोग लोकपाल हो जाते हैं। सब सिद्धियाँ हाथ जोड़े तुम्हारी सेवा करती हैं। तुमने जो मुझको बड़ी विनती सुनाई, यह तो मुझ पर कृपा की और मुझे बड़ाई दी है। तो भी हे देवी! मैं तुम्हें आशीर्वाद (दुआ) दूँगी। तुम अपने पति और देवर सहित कुशलपूर्वक अयोध्या लौटोगी। तुम्हारी सारी मनःकामनाएँ पूरी होंगी और तुम्हारा सुंदर यश जगतभर में छा जाएगा। गंगाजी के वचन सुनकर सीताजी खुश हुईं। तब राम ने निषादराज गुह से कहा कि भैया! अब तुम घर जाओ! यह सुनते ही उसका मुँह सूख गया और हृदय में दुख उत्पन्न हो गया। गुह हाथ जोड़कर दीन वचन बोला- हे रघुकुल शिरोमणि! मेरी विनती सुनिए। मैं नाथ (आप) के साथ रहकर, रास्ता दिखाकर, चार (कुछ) दिन चरणों की सेवा करके। हे रघुराज! जिस वन में आप जाकर रहेंगे, वहाँ मैं सुंदर पर्णकुटी (पत्तों की कुटिया) बना दूँगा। तब मुझे आप जैसी आज्ञा देंगे, मुझे रघुवीर (आप) की दुहाई है, मैं वैसा ही करूँगा। उसके स्वाभाविक प्रेम को देखकर श्री रामचन्द्रजी ने उसको साथ ले लिया, इससे गुह के हृदय में बड़ा आनंद हुआ। फिर गुह (निषादराज) ने अपनी जाति के लोगों को बुला लिया और उनका संतोष कराके तब उनको विदा किया।

बोध प्रश्न

- केवट की शर्त को राम ने कैसे पूरा किया?
- राम ने केवट को गंगा पार जाने पर क्या उतराई दी?

- गंगाजी ने सीता को क्या आशीर्वाद दिया ?
- निषादराज को राम ने अपने साथ क्यों ले लिया?

4.3.5 प्रयाग पहुँचना, भरद्वाज संवाद, यमुनातीर निवासियों का प्रेम

तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ।
सखा अनुज सिय सहित बन गवनु कीन्ह रघुनाथ॥104॥
तेहि दिन भयउ बिटप तर बासू। लखन सखाँ सब कीन्ह सुपासू॥
प्रात प्रातकृत करि रघुराई। तीरथराजु दीख प्रभु जाई॥1॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी। माधव सरिस मीतु हितकारी॥
चारि पदारथ भरा भँडारू। पुन्य प्रदेस देस अति चारू॥2॥
छेत्रु अगम गढ़ु गाढ़ सुहावा। सपनेहुँ नहिं प्रतिपच्छिन्ह पावा॥
सेन सकल तीरथ बर बीरा। कलुष अनीक दलन रनधीरा॥3॥
संगमु सिंहासनु सुठि सोहा। छत्रु अखयबटु मुनि मनु मोहा॥
चवँर जमुन अरु गंग तरंगा। देखि होहिं दुख दारिद भंगा॥4॥
सेवहिं सुकृती साधु सुचि पावहिं सब मनकाम।
बंदी बेद पुरान गन कहहिं बिमल गुन ग्राम॥105॥
को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ। कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा। सुख सागर रघुबर सुखु पावा॥1॥
कहि सिय लखनहि सखहि सुनाई। श्री मुख तीरथराज बड़ाई॥
करि प्रनामु देखत बन बागा। कहत महातम अति अनुरागा॥2॥
एहि बिधि आइ बिलोकी बेनी। सुमिरत सकल सुमंगल देनी॥
मुदित नहाइ कीन्हि सिव सेवा। पूजि जथाबिधि तीरथ देवा॥3॥
तब प्रभु भरद्वाज पहिं आए। करत दंडवत मुनि उर लाए॥
मुनि मन मोद न कछु कहि जाई। ब्रह्मानंद रासि जनु पाई॥4॥
दीन्हि असीस मुनीस उर अति अनंदु अस जानि।
लोचन गोचर सुकृत फल मनहुँ किए बिधि आनि॥106॥

शब्दार्थ : त्रिवेणी = वह स्थान जहाँ तीन नदियाँ आकर मिलती हों। तीन नदियों (गंगा, यमुना और सरस्वती) का मिलन-स्थल; संगम, प्रयाग • तीन नाड़ियों (इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना) का मिलन-स्थल।

व्याख्या : तब राम गणेशजी और शिवजी को याद करते हुए और गंगाजी को मस्तक नवाकर मित्र निषादराज, छोटे भाई लक्ष्मण और सीता के साथ जंगल (वन)की ओर चले। उस दिन पेड़ के नीचे निवास हुआ। लक्ष्मण और सखा गुह ने (विश्राम की) आराम का सारा इंतजाम किया। सुबह सवेरे नहा-धोकर राम ने प्रयाग राज तीर्थ के दर्शन किए। उस राजा का सत्य मंत्री है, श्रद्धा प्यारी स्त्री है और श्री वेणीमाधवजी सरीखे हितकारी मित्र हैं। चार पदार्थों (धर्म, अर्थ, काम और

मोक्ष) से भंडार भरा है और वह पुण्यमय प्रांत ही उस राजा का सुंदर देश है। प्रयाग क्षेत्र ही दुर्गम, मजबूत और सुंदर गढ़ (किला) है, जिसको स्वप्न में भी (पाप रूपी) शत्रु नहीं पा सके हैं। संपूर्ण तीर्थ ही उसके श्रेष्ठ वीर सैनिक हैं, जो पाप की सेना को कुचल डालने वाले और बड़े रणधीर हैं।गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम ही उसका अत्यन्त सुशोभित सिंहासन है। अक्षयवट छत्र है, जो मुनियों के भी मन को मोहित कर लेता है। यमुनाजी और गंगाजी की तरंगें उसके (श्याम और श्वेत) चँवर हैं, जिनको देखकर ही दुःख और दरिद्रता नष्ट हो जाती है।पुण्यात्मा, पवित्र साधु उसकी सेवा करते हैं और सब मनोरथ पाते हैं। वेद और पुराणों के समूह भाट हैं, जो उसके निर्मल गुणगणों का बखान करते हैं। पापों के समूह रूपी हाथी के मारने के लिए सिंह रूप प्रयागराज का प्रभाव (महत्व-माहात्म्य) कौन कह सकता है। ऐसे सुहावने तीर्थराज का दर्शन कर राम ने भी सुख पाया। उन्होंने सीता, लक्ष्मण और सखा गुह को तीर्थराज की महिमा कहकर सुनाई। फिर प्रणाम करके, वन और बगीचों को देखते हुए और बड़े प्रेम से माहात्म्य कहते हुए। इस प्रकार श्री राम ने आकर त्रिवेणी का दर्शन किया, जो स्मरण करने से ही सब सुंदर मंगलों को देने वाली है। फिर आनंदपूर्वक (त्रिवेणी में) स्नान करके शिवजी की सेवा (पूजा) की और विधिपूर्वक तीर्थ देवताओं का पूजन किया। स्नान, पूजन आदि सब करके) तब राम भरद्वाज के पास आए। उन्हें दण्डवत करते हुए ही मुनि ने हृदय से लगा लिया। मुनि के मन का आनंद कुछ कहा नहीं जाता। मानो उन्हें ब्रह्मानन्द की राशि मिल गई हो। मुनीश्वर भरद्वाजजी ने आशीर्वाद दिया। उनके हृदय में ऐसा जानकर अत्यन्त आनंद हुआ कि आज विधाता ने (श्री सीताजी और लक्ष्मणजी सहित प्रभु श्री रामचन्द्रजी के दर्शन कराकर) मानो हमारे सम्पूर्ण पुण्यों के फल को लाकर आँखों के सामने कर दिया।

बोध प्रश्न

- राम 'प्रयागराज' नगर को कैसे देखते हैं?
- प्रयागराज का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
- त्रिवेणी क्या है?
- प्रयागराज में राम सबसे पहले किससे मिले?

4.4 : पाठ सार

इस इकाई में 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड के दोहा संख्या 87 से 106 तक की कथा है। राम अपने भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ चौदह वर्ष के वनवास पर अयोध्या छोड़ कर आए। वे अपने पिता की आज्ञा का पालन करने आए थे। राजा दशरथ ने उनके साथ अपने मंत्री सुमंत्र को भेजा था। सुमंत्र राम को समझा बुझा कर वापस लौट चलने को कह रहे थे। पर राम ने इंकार कर दिया। वे शृंगवेरपुर पहुंचे। जहां उन्होंने गंगा जी में स्नान किया। जब निषाद राज गुह को राम के आने की खबर मिली तो वे अपने परिवार और मित्रों के साथ दौड़े-

दौड़े आए। गुह ने उनके ठहरने का इंतजाम किया। फल फूल और जल का इंतजाम किया क्योंकि राम ने उनके साथ उनके गाँव जाने से मना कर दिया। रात को राजकुमार राम और जनक दुलारी सीता पत्तों की सेज पर सोए। लक्ष्मण को माता कैकयी पर बहुत गुस्सा आया क्योंकि उनकी वजह से ही राम को इतनी परेशानी हुई थी। पर राम ने अपने भाई को बड़े प्रेम से समझाया। राम ने कहा यह सब कर्मों का फल है। सुबह राम ने बड का दूध मँगवाया और राम लक्ष्मण दोनों भाइयों ने उस दूध को अपने बालों में लगाया। इसे देखकर सुमंत्र बहुत दुखी हुए क्योंकि वे समझ गए कि राम अब उनके साथ वापस अयोध्या जाने वाले नहीं। फिर भी उन्होंने राम को समझाने की खूब कोशिश की। निषाद राज को भी दुख हुआ। राम ने सीता से वापस जाने को कहा, पर वे न मानी। राम की आज्ञा मेटी नहीं जा सकती थी। इसलिए सुमंत्र दुखी मन से अयोध्या लौट गए। तब राम गंगा के किनारे आ गए। वहाँ पहले तो नाव लेकर केवट आया ही नहीं क्योंकि उसे डर था कि कही उसकी लकड़ी की नाव राम के छूते ही आसमान में न उड़ जाए। फिर उसने एक शर्त रखी कि राम के वह पहले चरण पानी से धोकर उनकी धूल साफ करेगा। राम केवट की अटपटी बातों को सुन कर हँस पड़े। केवट ने राम के पैर धोकर उन्हें अपनी नाव से गंगा पार करवा दी। राम के पास उस वक्त कोई पैसा तो था नहीं, इसलिए सीता ने अपनी अंगूठी केवट को उतराई के रूप में देनी चाही। पर केवट ने उतराई नहीं ली। राम ने गंगा के पार जाकर शिव जी की पूजा की। सीता ने गंगा जी से मन्नत मांगी। गंगा जी ने भी आशीर्वाद दिया। एक रात वहीं विश्राम करने के बाद राम ने सब तीर्थों के राजा प्रयागराज के दर्शन किये और वहाँ ऋषि भरद्वाज के पास गए। ऋषि ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

4.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के पाठ से निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं -

1. गोस्वामी तुलसीदास रचित 'रामचरित मानस' के अयोध्याकाण्ड के निर्धारित अंश की व्याख्या की गई।

2. राम के वन में पहुँचने के बाद राम का शृंगवेरपुर पहुंचना, निषाद के द्वारा सेवा, लक्ष्मण निषाद संवाद, राम-सीता-सुमंत्र संवाद, प्रयाग पहुंचना, भरद्वाज संवाद और प्रयाग निवासियों का राम के लिए प्रेम आदि प्रसंगों की जानकारी प्राप्त हुई।

3. दोहा-चौपाई-सोरठा और छंद में रचित कविता की काव्य-गत विशेषताओं का बोध प्राप्त किया।

4. राम, सीता, और लक्ष्मण के जीवन से सीख मिली कि हमारा व्यवहार अपने परिवार के लोगों से कैसा होना चाहिए। सुमंत्र जैसे मंत्री या सलाहकार, लक्ष्मण जैसे भाई, सीता जैसी स्त्री, निषादराज जैसे मित्र और केवट जैसे सेवक अपने आप में आदर्श हैं। इनके जीवन से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

4.6 : शब्द संपदा

1. प्रवास – आवास, निवास
2. ब्रह्मानन्द - ब्रह्म के अनुभव या ज्ञान से मिलने वाली खुशी .
3. भामिनी – स्त्री
4. आवभगत – खातिरदारी
5. अलंकार - काव्य की शोभा बढ़ानेवाले तत्वों को अलंकार कहते है। अलंकार के मुख्य दो भेद है- शब्दालंकार और अर्थालंकार। जहाँ शब्दों में चमत्कार आ जाता है वहाँ शब्दालंकार तथा जहां अर्थ के कारण रमणीयता आ जाती है उसे अर्थालंकार कहते है। उदाहरण के लिए 'भगत भूमि भूसुर सुरभि' में शब्दालंकार है जिसे अनुप्रास अलंकार कहते हैं।

4.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड –(अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए|

1. निषाद राज कौन थे? उन्होंने राम की किस तरह आवभगत की?
2. निषाद राज ने "करम प्रधान सत्य कह लोगू" क्यों कहा?
3. निषादराज को लक्ष्मण ने क्या कहकर समझाया?
4. जब सीता से वापस अयोध्या लौटने को कहा गया तो सीता ने क्या उत्तर दिया और क्यों?
5. "फिरेउ बनिक जिमि मूर गवांई' उक्ति की संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।
6. " छुअत सिला भई नारि सुहाई' इस अर्धाली में छिपी कहानी को अपने शब्दों में लिखिए।

खंड –(ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 250 शब्दों में दीजिए:

1. राम ने अपने बालों में बड का दूध क्यों लगाया? वे इससे सुमंत्र को क्या संकेत देते हैं ?
2. सीता ने अपनी अंगूठी राम को दी जिससे वे केवट को उतराई दे सकें। इस प्रसंग से पत्नी के रूप में सीता के चरित्र की किस विशेषता का पता चलता है?
3. तीर्थराज प्रयाग की महिमा का राम ने किस तरह वर्णन किया?
4. गंगाजी ने सीता को क्या आशीर्वाद दिया?
5. राम के वन-प्रवास के पहले दिन का बखान अपने शब्दों में कीजिए।
6. "धरम न दूसर सत्य समाना" का क्या अर्थ है? क्या आप इससे सहमत हैं?

खंड- (स)

III. सही विकल्प चुनिए।

1. ‘सखा अनुज सिय सहित बन’ में अनुज कौन हैं?
   क) राम ख) सुमंत्र ग) लक्ष्मण घ) निषादराज
2. “कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना’ इस पंक्ति में ‘मैं’ कौन है?
   क) निषादराज ख) केवट ग) सुमंत्र घ) सीता
3. इनमें से क्या विशेषण राम के लिए नहीं है?
   क) कृपासिंधु ख) करुनाऐन ग) भूप घ) रघुनाथ
4. इनमें से कौनसा नाम सीता का नहीं?
   क) वैदेही ख) जानकी ग) भामिनी घ) सिया
5. ‘जोहारू’ का क्या अर्थ है?
   क) वंदना (ख) नमस्कार (ग) अभिवादन घ) इनमें से सभी
6. रामचरित मानस की भाषा क्या है?
   क) अवधि ख) अवधी ग) खड़ी बोली घ) इनमें से कोई नहीं

IV. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1.सीता और मंत्री सहित दोनों भाई ____________ पहुंचे।

2. “सब अपने की किये हुए कर्मों का फल भोगते हैं।”___________ने निषाद राज से कहा।

3. सपनें होइ भिखारि नृपु ________________________________।

4. सिबि दधीच हरिचंद नरेसा ______________________________।

5. पापों के समूह रूपी हाथी के मारने के लिए सिंह रूप ______________का प्रभाव कौन कह सकता है?

6. “ संगमु सिंहासन सुठि सोहा’ अर्धाली में _______________ अलंकार है।

V. सुमेल कीजिए :

क)	**ख)**
1. गंगा	अ) भरद्वाज
2. प्रयाग	आ) त्रिवेणी
3. संगम	इ) गंगा
4. भूप	ई) सुरसरि
5. देवसरि	उ) दशरथ
6. ऋषि	ऊ) तीर्थराज

4.8 : पठनीय पुस्तकें

राम चरित मानस : गोस्वामी तुलसी दास, गीताप्रेस गोरखपुर

इकाई 5 : रामचरितमानस : अयोध्याकाण्ड – III : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 मूल पाठ : रामचरितमानस : अयोध्याकाण्ड – III : व्याख्या
5.3.1 अध्येय दोहों का सामान्य परिचय
5.3.2 अध्येय दोहे
5.3.3 विस्तृत व्याख्या
5.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन
5.4 पाठ सार
5.5 पाठ की उपलब्धियाँ
5.6 शब्द संपदा
5.7 परीक्षार्थ प्रश्न
5.8 पठनीय पुस्तकें

5.1 : प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाव्य के सगुण धारा के महत्वपूर्ण कवि हैं। उनके आराध्य देव हैं श्री राम। उनकी भक्ति पद्धति की प्रमुख विशेषता है सर्वांगपूर्णता। उनकी भक्ति में जीवन के किसी भी पक्ष की उपेक्षा नहीं दिखाई देती। तुलसी की कविता केवल भक्ति को ही उद्घाटित नहीं करती, बल्कि तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों को भी उजागर करती है। ब्रज और अवधी दोनों पर तुलसी का समान अधिकार है। हिंदी साहित्य में तुलसी ही रामकाव्य परंपरा में हिंदी के पहले कवि माने जाते हैं। तुलसी का राम केवल अवतारी पुरुष नहीं, बल्कि भारतीय जीवन संस्कृति का मूल आदर्श है। 'रामचरितमानस' को उन्होंने अवधी भाषा में रचा है। यह रामकथा जनता के बीच लोकप्रिया हो चुका है। इस इकाई में आप 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड के निर्धारित पदों का अध्ययन करेंगे।

5.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के आयोध्याकाण्ड की कथा के निर्धारित अंश का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- 'रामचरितमानस' के निर्धारित अंशों की स प्रसंग व्याख्या कर सकेंगे।

- 'रामचरितमानस' के निर्धारित अंशों में निहित भक्ति-भाव को समझ सकेंगे।
- 'अध्येय पाठांश की काव्यगत विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
- 'रामचरितमानस' के पदों में निहित भाव-सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे।

5.3 : मूल पाठ : रामचरितमानस : अयोध्याकाण्ड – III : व्याख्या

लोक जीवन में तुलसीदास की कीर्ति का आधार है 'रामचरितमानस'। इसकी रचना 1574 ई. में अयोध्या में आरंभ हुई तथा इसका अंतिम भाग काशी में पूरा हुआ। यह साथ कांडों का प्रबंध काव्य है (सप्त प्रबंध सुभग सोपाना) - बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुंदरकाण्ड, लंकाकाण्ड (युद्धकाण्ड) और उत्तरकाण्ड। इसे मानव जीवन का महाकाव्य भी कहा जा सकता है। इसमें धर्म, नीति, दर्शन, भक्ति आदि का समावेश है। तुलसी का मुख्य उद्देश्य है राम को लोक नायक के रूप में चित्रित करना तथा उसके लोकरक्षक चरित्र को उद्घाटित करना। यदि 'रामचारितमानस' भक्ति का हृदय हो तो 'आयोध्याकाण्ड' मानस का हृदय है।

छात्रो! अब हम निर्धारित दोहों का अध्ययन करेंगे।

5.3.1 अध्येय दोहों का सामान्य परिचय

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड में श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारी, वन गमन, श्रीराम-भरत मिलाप तक के घटनाओं का चित्रण है। वस्तुतः राम का निर्वासन ही अयोध्याकाण्ड की कथावस्तु का मूल आधार है। इसका प्रारंभ कवि हर्ष और विषाद के द्वंद्वात्मक प्रसंगों से करते हैं। यह स्थिति नाटकीयता की सृष्टि में सहायक सिद्ध होती है। इस काण्ड के पूर्वार्ध में कवि करुणा के निर्माण में संलग्न दिखाई देते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि अयोध्याकाण्ड की कथावस्तु का मूल मन्तव्य करुणा की सृष्टि है। यहाँ करुण रस केंद्रीय आधार है। अयोध्यावासियों के विषाद को अत्यंत सजीव रूप से चित्रित किया गया है। मानसकार ने प्रतीक विधान, रूपक, सादृश्य विधान, कल्पना विधान, व्यंजना आदि का सुंदर संमयोजन किया है।

छात्रो! अयोध्याकाण्ड की संपूर्ण कथा को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है - राम कथा और भरत कथा। अध्येय दोहे राम कथा पर आधारित हैं। वृद्ध पिता दशरथ राम की राज्याभिषेक के लिए स्वीकृति देते हैं। गुरु की आज्ञा है तथा परिजनों एवं नगर वासियों का अगाध प्रेम है। इस उल्लासपूर्ण राज्याभिषेक के वातावरण को देवगण अपने षड्यंत्र से कष्टकारी बना देते हैं। मंथरा के दांव-पेंच तथा कैकेयी की कुमंत्रणा के कारण सारा वातावरण विषाद से भर जाता है। श्रीराम के वनगमन से अयोध्या नागरी असह्य दुख से पीड़ित होती है।

अध्येय दोहों में राम के व्यक्तित्व, रूप-सौंदर्य आदि का चित्रण है। मानवीय संबंध, सामाजिक तथा नैतिक आदर्शों की प्रतिष्ठा इन पदों में देखा जा सकता है। अतः यह कह सकते हैं कि आयोध्याकाण्ड में सामाजिक और पारिवारिक जीवन का श्रेष्ठ चित्रण हुआ है।

बोध प्रश्न

- 'रामचरितमानस' के आयोध्याकाण्ड में किन घटनाओं का चित्रण है?
- आयोध्याकाण्ड की कथावस्तु का मूल मन्तव्य क्या है?
- आयोध्याकाण्ड की कथा का केंद्रीय रस क्या है?

5.3.2 अध्येय दोहे

कुसल प्रस्न करि आसन दीन्हे। पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे॥
कंद मूल फल अंकुर नीके। दिए आनि मुनि मनहुँ अमी के॥
सीय लखन जन सहित सुहाए। अति रुचि राम मूल फल खाए॥
भए बिगतश्रम रामु सुखारे। भरद्वाज मृदु बचन उचारे॥
आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जप जोग बिरागू॥
सफल सकल सुभ साधन साजू। राम तुम्हहि अवलोकत आजू॥
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी। तुम्हरें दरस आस सब पूजी॥
अब करि कृपा देहु बर एहू। निज पद सरसिज सहज सनेहू॥

दोहा - करम बचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार।
तब लगि सुखु सपनेहुँ नहीं किएँ कोटि उपचार॥107॥

- सुनि मुनि बचन रामु सकुचाने। भाव भगति आनंद अघाने॥
तब रघुबर मुनि सुजसु सुहावा। कोटि भाँति कहि सबहि सुनावा॥
सो बड़ सो सब गुन गन गेहू। जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू॥
मुनि रघुबीर परसपर नवहीं। बचन अगोचर सुखु अनुभवहीं॥
यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी। बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी॥
भरद्वाज आश्रम सब आए। देखन दसरथ सुअन सुहाए॥
राम प्रनाम कीन्ह सब काहू। मुदित भए लहि लोयन लाहू॥
देहिं असीस परम सुखु पाई। फिरे सराहत सुंदरताई॥

दोहा - राम कीन्ह बिश्राम निसि प्रात प्रयाग नहाइ।
चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहि सिरु नाइ॥108॥

- राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं। नाथ कहिअ हम केहि मग जाहीं॥
मुनि मन बिहसि राम सन कहहीं। सुगम सकल मग तुम्ह कहुँ अहहीं॥
साथ लागि मुनि सिष्य बोलाए। सुनि मन मुदित पचासक आए॥
सबन्हि राम पर प्रेम अपारा। सकल कहहिं मगु दीख हमारा॥
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे। जिन्ह बहु जनम सुकृत सब कीन्हे॥
करि प्रनामु रिषि आयसु पाई। प्रमुदित हृदयँ चले रघुराई॥
ग्राम निकट जब निकसहिं जाई। देखहिं दरसु नारि नर धाई॥

होहिं सनाथ जनम फलु पाई। फिरहिं दुखित मनु संग पठाई॥

दोहा - बिदा किए बटु बिनय करि फिरे पाइ मन काम।
उतरि नहाए जमुन जल जो सरीर सम स्याम॥109॥

- सुनत तीरबासी नर नारी। धाए निज निज काज बिसारी॥
लखन राम सिय सुंदरताई। देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई॥
अति लालसा बसहिं मन माहीं। नाउँ गाउँ बूझत सकुचाहीं॥
जे तिन्ह महुँ बयबिरिध सयाने। तिन्ह करि जुगुति रामु पहिचाने॥
सकल कथा तिन्ह सबहि सुनाई। बनहि चले पितु आयसु पाई॥
सुनि सबिषाद सकल पछिताहीं। रानी रायँ कीन्ह भल नाहीं॥
तेहि अवसर एक तापसु आवा। तेजपुंज लघुबयस सुहावा॥
कवि अलखित गति बेषु बिरागी। मन क्रम बचन राम अनुरागी॥

दोहा - सजल नयन तन पुलकि निज इष्टदेउ पहिचानि।
परेउ दंड जिमि धरनितल दसा न जाइ बखानि॥110॥

- राम सप्रेम पुलकि उर लावा। परम रंक जनु पारसु पावा॥
मनहुँ प्रेमु परमारथु दोऊ। मिलत धरे तन कह सबु कोऊ॥
बहुरि लखन पायन्ह सोइ लागा। लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा॥
पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा। जननि जानि सिसु दीन्हि असीसा॥
कीन्ह निषाद दंडवत तेही। मिलेउ मुदित लखि राम सनेही॥
पिअत नयन पुट रूपु पियूषा। मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन्ह पठए बन बालक ऐसे॥
राम लखन सिय रूपु निहारी। होहिं सनेह बिकल नर नारी॥

दोहा - तब रघुबीर अनेक बिधि सखहि सिखावनु दीन्ह।
राम रजायसु सीस धरि भवन गवनु तेइँ कीन्ह॥111॥

- पुनि सियँ राम लखन कर जोरी। जमुनहि कीन्ह प्रनामु बहोरी॥
चले ससीय मुदित दोउ भाई। रबितनुजा कइ करत बड़ाई॥
पथिक अनेक मिलहिं मग जाता। कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता॥
राज लखन सब अंग तुम्हारें। देखि सोचु अति हृदय हमारें॥
मारग चलहु पयादेहि पाएँ। ज्योतिषु झूठ हमारें भाएँ॥
अगमु पंथ गिरि कानन भारी। तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी॥
करि केहरि बन जाइ न जोई। हम सँग चलहिं जो आयसु होई॥
जाब जहाँ लगि तहँ पहुँचाई। फिरब बहोरि तुम्हहि सिरु नाई॥

दोहा - एहि बिधि पूँछहिं प्रेम बस पुलक गात जलु नैन।
कृपासिंधु फेरहि तिन्हहि कहि बिनीत मृदु बैन॥112॥

- जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं। तिन्हहि नाग सुर नगर सिहाहीं॥
केहि सुकृतीं केहि घरीं बसाए। धन्य पुन्यमय परम सुहाए॥
जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं। तिन्ह समान अमरावति नाहीं॥
पुन्यपुंज मग निकट निवासी। तिन्हहि सराहहिं सुरपुरबासी॥
जे भरि नयन बिलोकहिं रामहि। सीता लखन सहित घनस्यामहि॥
जे सर सरित राम अवगाहहिं। तिन्हहि देव सर सरित सराहहिं॥
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई। करहिं कलपतरु तासु बड़ाई॥
परसि राम पद पदुम परागा। मानति भूमि भूरि निज भागा॥

दोहा - छाँह करहिं घन बिबुधगन बरषहिं सुमन सिहाहिं।
देखत गिरि बन बिहग मृग रामु चले मग जाहिं॥113॥

- सीता लखन सहित रघुराई। गाँव निकट जब निकसहिं जाई॥
सुनि सब बाल बृद्ध नर नारी। चलहिं तुरत गृह काजु बिसारी॥
राम लखन सिय रूप निहारी। पाइ नयन फलु होहिं सुखारी॥
सजल बिलोचन पुलक सरीरा। सब भए मगन देखि दोउ बीरा॥
बरनि न जाइ दसा तिन्ह केरी। लहि जनु रंकन्ह सुरमनि ढेरी॥
एकन्ह एक बोलि सिख देहीं। लोचन लाहु लेहु छन एहीं॥
रामहि देखि एक अनुरागे। चितवत चले जाहिं सँग लागे॥
एक नयन मग छबि उर आनी। होहिं सिथिल तन मन बर बानी॥

दोहा - एक देखि बट छाँह भलि डासि मृदुल तृन पात।
कहहिं गवाँइअ छिनुकु श्रमु गवनब अबहिं कि प्रात॥114॥

- एक कलस भरि आनहिं पानी। अँचइअ नाथ कहहिं मृदु बानी॥
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी। राम कृपाल सुसील बिसेषी॥
जानी श्रमित सीय मन माहीं। घरिक बिलंबु कीन्ह बट छाहीं॥
मुदित नारि नर देखहिं सोभा। रूप अनूप नयन मनु लोभा॥
एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा। रामचंद्र मुख चंद चकोरा॥
तरुन तमाल बरन तनु सोहा। देखत कोटि मदन मनु मोहा॥
दामिनि बरन लखन सुठि नीके। नख सिख सुभग भावते जी के॥
मुनिपट कटिन्ह कसें तूनीरा। सोहहिं कर कमलनि धनु तीरा॥

दोहा - जटा मुकुट सीसनि सुभग उर भुज नयन बिसाल।

सरद परब बिधु बदन बर लसत स्वेद कन जाल॥115॥

- बरनि न जाइ मनोहर जोरी। सोभा बहुत थोरि मति मोरी॥
राम लखन सिय सुंदरताई। सब चितवहिं चित मन मति लाई॥
थके नारि नर प्रेम पिआसे। मनहुँ मृगी मृग देखि दिआ से॥
सीय समीप ग्रामतिय जाहीं। पूँछत अति सनेहँ सकुचाहीं॥
बार बार सब लागहिं पाएँ। कहहिं बचन मृदु सरल सुभाएँ॥
राजकुमारि बिनय हम करहीं। तिय सुभायँ कछु पूँछत डरहीं।
स्वामिनि अबिनय छमबि हमारी। बिलगु न मानब जानि गवाँरी॥
राजकुअँर दोउ सहज सलोने। इन्ह तें लही दुति मरकत सोने॥

दोहा - स्यामल गौर किसोर बर सुंदर सुषमा ऐन।
सरद सर्बरीनाथ मुखु सरद सरोरुह नैन॥116॥

- कोटि मनोज लजावनिहारे। सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे॥
सुनि सनेहमय मंजुल बानी। सकुची सिय मन महुँ मुसुकानी॥
तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी। दुहुँ सकोच सकुचित बरबरनी॥
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी। बोली मधुर बचन पिकबयनी॥
सहज सुभाय सुभग तन गोरे। नामु लखनु लघु देवर मोरे॥
बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी। पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी॥
खंजन मंजु तिरीछे नयननि। निज पति कहेउ तिन्हहि सियँ सयननि॥
भईं मुदित सब ग्रामबधूटीं। रंकन्ह राय रासि जनु लूटीं॥

दोहा - अति सप्रेम सिय पायँ परि बहुबिधि देहिं असीस।
सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जब लगि महि अहि सीस॥117॥

- पारबती सम पतिप्रिय होहू। देबि न हम पर छाड़ब छोहू॥
पुनि पुनि बिनय करिअ कर जोरी। जौं एहि मारग फिरिअ बहोरी॥
दरसनु देब जानि निज दासी। लखीं सीयँ सब प्रेम पिआसी॥
मधुर बचन कहि कहि परितोषीं। जनु कुमुदिनीं कौमुदीं पोषीं॥
तबहिं लखन रघुबर रुख जानी। पूँछेउ मगु लोगन्हि मृदु बानी॥
सुनत नारि नर भए दुखारी। पुलकित गात बिलोचन बारी॥
मिटा मोदु मन भए मलीने। बिधि निधि दीन्ह लेत जनु छीने॥
समुझि करम गति धीरजु कीन्हा। सोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा॥

दोहा - लखन जानकी सहित तब गवनु कीन्ह रघुनाथ।
फेरे सब प्रिय बचन कहि लिए लाइ मन साथ॥118॥

- फिरत नारि नर अति पछिताहीं। दैअहि दोषु देहिं मन माहीं॥
सहित बिषाद परसपर कहहीं। बिधि करतब उलटे सब अहहीं॥
निपट निरंकुस निठुर निसंकू। जेहिं ससि कीन्ह सरुज सकलंकू॥
रूख कलपतरु सागरु खारा। तेहिं पठए बन राजकुमारा॥
जौं पे इन्हहि दीन्ह बनबासू। कीन्ह बादि बिधि भोग बिलासू॥
ए बिचरहिं मग बिनु पदत्राना। रचे बादि बिधि बाहन नाना॥
ए महि परहिं डासि कुस पाता। सुभग सेज कत सृजत बिधाता॥
तरुबर बास इन्हहि बिधि दीन्हा। धवल धाम रचि रचि श्रमु कीन्हा॥

दोहा - जौं ए मुनि पट धर जटिल सुंदर सुठि सुकुमार।
बिबिध भाँति भूषन बसन बादि किए करतार॥119॥

- जौं ए कंद मूल फल खाहीं। बादि सुधादि असन जग माहीं॥
एक कहहिं ए सहज सुहाए। आपु प्रगट भए बिधि न बनाए॥
जहँ लगि बेद कही बिधि करनी। श्रवन नयन मन गोचर बरनी॥
देखहु खोजि भुअन दस चारी। कहँ अस पुरुष कहाँ असि नारी॥
इन्हहि देखि बिधि मनु अनुरागा। पटतर जोग बनावै लागा॥
कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आए। तेहिं इरिषा बन आनि दुराए॥
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं। आपुहि परम धन्य करि मानहिं॥
ते पुनि पुन्यपुंज हम लेखे। जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे॥

दोहा - एहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय लेहिं नयन भरि नीर।
किमि चलिहहिं मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर॥120॥

- नारि सनेह बिकल बस होहीं। चकईं साँझ समय जनु सोहीं॥
मृदु पद कमल कठिन मगु जानी। गहबरि हृदयँ कहहिं बर बानी॥
परसत मृदुल चरन अरुनारे। सकुचति महि जिमि हृदय हमारे॥
जौं जगदीस इन्हहि बनु दीन्हा। कस न सुमनमय मारगु कीन्हा॥
जौं मागा पाइअ बिधि पाहीं। ए रखिअहिं सखि आँखिन्ह माहीं॥
जे नर नारि न अवसर आए। तिन्ह सिय रामु न देखन पाए॥
सुनि सुरूप बूझहिं अकुलाई। अब लगि गए कहाँ लगि भाई॥
समरथ धाइ बिलोकहिं जाई। प्रमुदित फिरहिं जनमफलु पाई॥

दोहा - अबला बालक बृद्ध जन कर मीजहिं पछिताहिं॥
होहिं प्रेमबस लोग इमि रामु जहाँ जहँ जाहिं॥121॥

- गाँव गाँव अस होइ अनंदू। देखि भानुकुल कैरव चंदू॥
जे कछु समाचार सुनि पावहिं। ते नृप रानिहि दोसु लगावहिं॥

कहहिं एक अति भल नरनाहू। दीन्ह हमहि जोइ लोचन लाहू॥
कहहिं परस्पर लोग लोगाईं। बातें सरल सनेह सुहाईं॥
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाए। धन्य सो नगरु जहाँ तें आए॥
धन्य सो देसु सैलु बन गाऊँ। जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ॥
सुख पायउ बिरंचि रचि तेही। ए जेहि के सब भाँति सनेही॥
राम लखन पथि कथा सुहाई। रही सकल मग कानन छाई॥

दोहा - एहि बिधि रघुकुल कमल रबि मग लोगन्ह सुख देत।
जाहिं चले देखत बिपिन सिय सौमित्रि समेत॥122॥

- आगे रामु लखनु बने पाछें। तापस बेष बिराजत काछें॥
उभय बीच सिय सोहति कैसे। ब्रह्म जीव बिच माया जैसे॥
बहुरि कहउँ छबि जसि मन बसई। जनु मधु मदन मध्य रति लसई॥
उपमा बहुरि कहउँ जियँ जोही। जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही॥
प्रभु पद रेख बीच बिच सीता। धरति चरन मग चलति सभीता॥
सीय राम पद अंक बराएँ। लखन चलहिं मगु दाहिन लाएँ॥
राम लखन सिय प्रीति सुहाई। बचन अगोचर किमि कहि जाई॥
खग मृग मगन देखि छबि होहीं। लिए चोरि चित राम बटोहीं॥

दोहा - जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सिय समेत दोउ भाइ।
भव मगु अगमु अनंदु तेइ बिनु श्रम रहे सिराइ॥123॥

- अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ। बसहुँ लखनु सिय रामु बटाऊ॥
राम धाम पथ पाइहि सोई। जो पथ पाव कबहुँ मुनि कोई॥
तब रघुबीर श्रमित सिय जानी। देखि निकट बटु सीतल पानी॥
तहँ बसि कंद मूल फल खाई। प्रात नहाइ चले रघुराई॥
देखत बन सर सैल सुहाए। बालमीकि आश्रम प्रभु आए॥
राम दीख मुनि बासु सुहावन। सुंदर गिरि काननु जलु पावन॥
सरनि सरोज बिटप बन फूले। गुंजत मंजु मधुप रस भूले॥
खग मृग बिपुल कोलाहल करहीं। बिरहित बैर मुदित मन चरहीं॥

दोहा - सुचि सुंदर आश्रमु निरखि हरषे राजिवनेन।
सुनि रघुबर आगमनु मुनि आगें आयउ लेन॥124॥

- मुनि कहुँ राम दंडवत कीन्हा। आसिरबादु बिप्रबर दीन्हा॥
देखि राम छबि नयन जुड़ाने। करि सनमानु आश्रमहिं आने॥
मुनिबर अतिथि प्रानप्रिय पाए। कंद मूल फल मधुर मगाए॥
सिय सौमित्रि राम फल खाए। तब मुनि आश्रम दिए सुहाए॥

बालमीकि मन आनँदु भारी। मंगल मूरति नयन निहारी॥
तब कर कमल जोरि रघुराई। बोले बचन श्रवन सुखदाई॥
तुम्ह त्रिकाल दरसी मुनिनाथा। बिस्व बदर जिमि तुम्हरें हाथा॥
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी। जेहि जेहि भाँति दीन्ह बनु रानी॥

दोहा - तात बचन पुनि मातु हित भाइ भरत अस राउ।
मो कहुँ दरस तुम्हार प्रभु सबु मम पुन्य प्रभाउ॥125॥

- देखि पाय मुनिराय तुम्हारे। भए सुकृत सब सुफल हमारे॥
अब जहँ राउर आयसु होई। मुनि उदबेगु न पावै कोई॥
मुनि तापस जिन्ह तें दुखु लहहीं। ते नरेस बिनु पावक दहहीं॥
मंगल मूल बिप्र परितोषू। दहइ कोटि कुल भूसुर रोषू॥
अस जियँ जानि कहिअ सोइ ठाऊँ। सिय सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ॥
तहँ रचि रुचिर परन तृन साला। बासु करौ कछु काल कृपाला॥
सहज सरल सुनि रघुबर बानी। साधु साधु बोले मुनि ग्यानी॥
कस न कहहु अस रघुकुलकेतू। तुम्ह पालक संतत श्रुति सेतू॥

छंद - श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी।
जो सृजति जगु पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की॥
जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी।
सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी॥

सोरठा - राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर।
अबिगत अकथ अपार नेति नित निगम कह॥126॥

(ग) विस्तृत व्याख्या

कुसल प्रस्न करि आसन दीन्हे। .... सुखु सपनेहुँ नहीं किएँ कोटि उपचार॥107॥

शब्दार्थ : कुसल = कुशल, प्रस्न = प्रश्न, दीन्हे = दिए, अमी = अमृत, मृदु बचन = कोमल वचन, अवलोकन = देखना, छलु = छल, निगम = वेदों से चलने वाली परंपरा।

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग : प्रयाग में मुनि भरद्वाज और श्रीराम का मिलन। उक्त प्रसंग में श्रीराम से मुनि भरद्वाज कहते हैं कि प्रभु के दर्शन को छोड़कर इस संसार में कुछ भी सुखदायक नहीं है।

व्याख्या : प्रयाग में यमुना के दर्शन के बाद सीता, लक्ष्मण और सेवक गुह सहित श्रीराम मुनि भरद्वाज के आश्रम पहुँचते हैं। उन्हें देखकर मुनिराज अत्यंत प्रसन्न हो जाते हैं। कुशल-क्षेम पूछने के बाद मुनि भरद्वाज उनको बैठने के लिए आसन देते हैं। प्रेम सहित पूजन करके उन्हें संतुष्ट कर

देते हैं। स्वादिष्ट कंद, मूल, फल और अंकुर लाकर देते हैं मानो अमृत के ही बनो हों। सीता, लक्ष्मण और सेवक गुह सहित श्रीराम उन स्वादिष्ट कंद-मूल और फलों को रुचि से खाते हैं। थकावट दूर होने से श्रीराम अत्यंत सुख का अनुभव करते हैं। तब मुनि भरद्वाज श्रीराम से मृदु वाणी में कहते हैं - हे राम! आज आपका दर्शन करते ही मेरी तपस्या, तीर्थाटन और त्याग सफल हो गए। आज मेरा जप, योग और वैराग्य भी सफल हुए, संपूर्ण शुभ साधन एवं साज-सज्जा भी सफल हो गए।

हे प्रभु! आपके के दर्शन को छोड़कर इस जीवन में लाभ और सुख की सीमा दूसरी कुछ भी नहीं है। प्रभु के दर्शन से मेरी सब आशाएँ पूर्ण हो चुकी हैं। अब कृपा करके यह वरदान दीजिए कि आपके चरण कमलों में मेरा स्वाभाविक प्रेम हो।

जब तक कर्म, वचन और मन से छल छोड़कर मनुष्य आपका दास नहीं हो जाता, तब तक करोड़ों उपाय करने पर भी सपने में भी वह सुख नहीं पा सकता।

विशेष : मुनि भरद्वाज ने श्रीराम से 'निज पद सरसिज सहज सनेहू' का आशीर्वाद माँगकर उदात्त भावना को सिद्ध किया है।

बोध प्रश्न

- मुनि भरद्वाज श्रीराम से क्या कहते हैं?
- मुनि भरद्वाज श्रीराम से क्या वरदान माँगते हैं?

सुनि मुनि बचन रामु सकुचाने। .... जन मुदित मुनिहि सिरु नाइ॥108॥

शब्दार्थ : बचन = वचन, भगति = भक्ति, अगोचर = अनिवर्चनीय, सुअन = सुंदर पुत्र, बटु = ब्रह्मचारी, मुदित = प्रसन्न

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग : प्रयाग में मुनि भरद्वाज और श्रीराम का मिलन होता है। उक्त **प्रसंग** में श्रीराम और मुनि भरद्वाज का परस्पर विनम्रतापूर्ण व्यवहार द्रष्टव्य है।

व्याख्या : मुनि भरद्वाज के वचनों को सुनकर, उनकी भक्ति-भाव के कारण श्रीरामचंद्र जी आनंद से तृप्त होकर सकुचाते हैं। उसके बाद वे मुनि का सुंदर सुयश अनेक प्रकार से कहकर सब को सुनाते हैं। वे कहते हैं - हे मुनीश्वर! जिसको आप आदर दें वही बड़ा है और वही सब गुण समूहों का भंडार है। इस प्रकार श्रीराम जी और मुनि भरद्वाज एक-दूसरे के प्रति विनम्र हो रहे थे और अनिवर्चनीय सुख का अनुभव कर रहे थे। श्रीराम, लक्ष्मण और सीता जी के आने की खबर पाकर प्रयाग के निवासी, ब्रह्मचारी, तपस्वी, मुनि, सिद्ध और उदासी सब के सब दशरथ के सुंदर पुत्रों को देखने की इच्छा से भरद्वाज मुनि के आश्रम पहुँचते हैं।

श्रीराम ने सब को प्रणाम किया। नेत्रों का लाभ पाकर अर्थात श्रीराम का दर्शन पाकर सब लोग आनंदित हुए। इतना अपार सुख पाकर श्रीरामचंद्र जी आशीर्वाद देने लगे। श्रीराम के सौंदर्य की सराहना करते हुए सब लौट गए। उनके लौटने के बाद श्रीराम ने रात को वहीं विश्राम

किया तथा प्रातःकाल प्रयाग स्नान करके अत्यंत प्रसन्नता के साथ मुनि को सिर नवाकर सीता, लक्ष्मण और गुह के साथ चल पड़े।

विशेष : श्रीराम और मुनि भरद्वाज के बीच शिष्टाचार का प्रदर्शन देखा जा सकता है। सभी लोगों का श्रीराम के दर्शन हेतु आना प्रकारांतर से सहानुभूति को दर्शाता है।

बोध प्रश्न

- श्रीराम ने किसको बड़ा माना है?
- श्रीराम ने मुनि भरद्वाज से क्या कहा?
- श्रीराम को देखने के लिए सब लोगों का आना क्या दर्शाता है?

राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं .... नहाए जमुन जल जो सरीर सम स्याम॥109॥

शब्दार्थ : मग = मार्ग, बिहसी = हँसी, सिस्य = शिष्य, मुदित = प्रफुल्लित, बटु = ब्रह्मचारी, सुकृत= पुण्य, धाई = दौड़कर

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग : प्रयाग में मुनि भरद्वाज और श्रीराम का मिलन होता है। उक्त चौपाई में भरद्वाज आश्रम से विदा लेने का **प्रसंग** निहित है।

व्याख्या : चलते समय बड़े प्रेम से श्रीराम ने मुनि से कहा - हे नाथ! बताइए हम किस रास्ते से जाएँ। मुनि मन-ही-मन हँसकर श्रीराम जी से कहते हैं कि आपके लिए तो सभी मार्ग सुगम हैं। फिर मुनि ने उनके साथ चलने के लिए शिष्यों को बुलाया। श्रीराम के साथ जाने की बात सुनकर मन-ही-मन खुश होकर पचास शिष्य तक आ गए। सभी का श्रीराम जी पर अपार प्रेम है। सभी कहते हैं कि मार्ग उनका देखा हुआ है। अर्थात वे सब उस मार्ग से भलीभाँति परिचित हैं। यह सब देखकर उनमें से मुनि ने चार ब्रह्मचारियों को चुनकर श्रीराम के साथ भेजा जिन्होंने बहुत जन्मों तक सब पुण्य किए थे। श्रीरघुनाथ जी प्रणाम करके और ऋषि की आज्ञा पाकर हृदय में बड़े ही आनंदित होकर चल पड़े।

जब वे किसी गाँव के पास होकर निकलते हैं तब स्त्री-पुरुष दौड़कर उनके रूप-सौंदर्य को देखने लगते हैं। जन्म का फल पाकर वे सदा के अनाथ सनाथ हो जाते हैं और मानो अपने मन को नाथ के साथ भेजकर दुखी होकर लौट आते हैं।

उसके पश्चात श्रीराम विनती करके चारों ब्रह्मचारियों को विदा करते हैं। ब्रह्मचारी मनचाही अनुनय भक्ति पाकर लौट जाते हैं। यमुना जी के पार उतरकर सब यमुना जी के जल में स्नान करते हैं जो श्रीरामचंद्र जी के शरीर के समान ही श्याम रंग की थी।

विशेष : मुनि भरद्वाज अपने चार शिष्यों को श्रीराम के मार्गदर्शन हेतु भेजते हैं। मार्गदर्शन का **प्रसंग**।

बोध प्रश्न

- मुनि भरद्वाज अपने शिष्यों को श्रीराम के साथ क्यों भेजते हैं?

सुनत तीरबासी नर नारी। ...... दसा न जाइ बखानि। 110 ॥

शब्दार्थ : सुनत = सुनकर, तीरबासी = किनारे रहने वाले, बयबिरिध = वयोवृद्ध, आयसु = आज्ञा, तापसु = तपस्वी

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : यमुना नदी के किनारे रहने वाले स्त्री-पुरुष यह सुनकर कि शृंगेरपुर के राजा निषाद के साथ दो परम सुंदर सुकुमार नवयुवक और एक परम सुंदरी आ रही हैं, अपना-अपना काम भूलकर दौड़ पड़े तथा लक्ष्मण, राम और सीता का सौंदर्य देखकर अपने भाग्य की बड़ाई करने लगे। उनके मन में उन सुंदर व्यक्तियों के बारे में जानने की इच्छा भर गई। पर वे उनका नाम और गाँव के बारे में पूछने में सकुचाते हैं। वयोवृद्ध और चतुर लोगों ने युक्ति से श्रीरामचंद्र को पहचान लिया। उन्होंने सब कथा सब लोगों को सुनाई कि पिताजी की आज्ञा पाकर ये वन को चले हैं। यह सुनकर सब लोग दुखी होकर कहते रहें कि रानी और राजा ने अच्छा नहीं किया। उसी अवसर पर वहाँ एक तपस्वी आए, जो तेज का पुंज, छोटी अवस्था का और सुंदर था। उसकी गति कवि नहीं जानते। वह संन्यास के वेश में था और मन, वचन तथा कर्म से श्रीराम जी का प्रेमी था। अपने इष्ट देव को पहचानकर उसकी आँखों में अश्रु भर आया और शरीर पुलकित हो उठा। वह दंड की भाँति पृथ्वी पर गिर पड़ा, उसकी प्रेम विह्वल दशा का शब्दों में वर्णन करना कठिन है।

विशेष : यमुना नदी के तट की ओर लगकर चित्रकूट के लिए जा रहे सुंदर युवक और सुंदर युवती के देखने व उनके बारे में जानने की लोक सहज जिज्ञासा का प्रदर्शन।

बोध प्रश्न

- यमुना नदी के किनारे रहने वाले अपना काम छोड़कर क्यों भागने लगे?
- वयोवृद्ध और चतुर लोगों ने श्रीराम को कैसे पहचाना?

राम सप्रेम पुलकि उर लावा। .... सीस धरि भवन गवनु तेइँ कीन्ह॥ 111 ॥

शब्दार्थ : उर = हृदय, रंक = दरिद्र/ गरीब, धूरि = धूलि, सीसा = सिर पर, असीसा = आशीर्वाद, बिकल= व्याकुल, गवनु = घर को

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : श्रीरामचंद्र जी ने प्रेमपूर्वक पुलकित होकर उसको (तपस्वी को) हृदय से लगा लिया। उसे इतना आनंद हुआ मानो कोई महादरिद्र अर्थात गरीब को पारस मिल गया हो। देखने वाले सब कहने लगे कि मानो प्रेम और परमार्थ दोनों शरीर धारण करके मिल रहे हैं। फिर वह लक्ष्मण जी के चरणों को छुआ। वे प्रेम से भर उठे और उनको ऊपर उठाया। फिर उसने सीता जी की चरण धूलि को अपने सिर पर धरण किया। माता सीता भी उसको अपना छोटा बच्चा जानकर आशीर्वाद दिया।

फिर निषाद राज ने उसको दंडवत की। श्रीरामचंद्र जी का प्रेम जानकार वह उस (निषाद) से आनंदित होकर मिला। तपस्वी अपने नेत्रों से श्रीराम जी की सौंदर्य-सुधा का पान करने लगे। वे ऐसा आनंदित हुए कि मानो कोई भूखा व्यक्ति स्वादिष्ट भोजन पाकर आनंदित हो जाता है। तो इधर गाँव की स्त्रियाँ कह रही हैं कि हे सखी! कहो तो, वे माता-पिता कैसे हैं जिन्होंने ऐसे सुंदर-सुकुमार बालकों को वन में भेज दिया है। श्रीराम जी, लक्ष्मण जी और सीता जी के रूप को देखकर सब स्त्री-पुरुष स्नेह से व्याकुल हो उठे। तब श्रीराम जी ने सखा गुह को अनेक तरह से समझाया घर वापस लौटने के लिए। श्रीरामचंद्र जी की आज्ञा को सर्वोपरि मानकर वह अपने घर की ओर लौट पड़े।

विशेष : मानवीय संबंधों का चित्रण है।

बोध प्रश्न

- कवि ने उक्त प्रसंग में मानवीय संबंधों का चित्रण कैसे किया?

पुनि सियँ राम लखन कर जोरी। ..... फेरहि तिन्हहि कहि बिनीत मृदु बैन॥112॥

शब्दार्थ : सियँ = सीता, जोरी = जोड़कर, रबितनुजा = सूर्य कन्या/ यमुना, पथिक = यात्री, मग= रास्ता, भ्राता = भाई, कानन = जंगल, करि = हाथी, केहरि = सिम्ह, आयसु = आज्ञा, जलु = अश्रु

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : फिर सीता जी, श्रीराम और लक्ष्मण जी ने हाथ जोड़कर पुनः प्रणाम किया और सूर्यकन्या यमुना जी की बड़ाई करते हुए सीता जी सहित दोनों भाई प्रसन्नतापूर्वक आगे चले। रास्ते में यात्रियों से भेंट हुई। वे दोनों भाइयों को देखकर उनसे प्रेमपूर्वक कहते हैं कि तुम्हारे सब अंगों में राजचिह्न देखकर हम हृदय से सोचने लगे हैं। ऐसे राजचिह्नों के होते हुए भी तुम लोग रास्ते में पैदल ही चल रहे हो। इससे हमारी समझ में यह आ रहा है कि ज्योतिष-शास्त्र झूठा है। यह भयंकर जंगल और पहाड़ों का दुर्गम रास्ता है, जिस पर तुम्हारे साथ सुकुमारी स्त्री भी चल रही है। हाथी और सिम्हों से भरा यह भयानक जंगल देखा तक नहीं जाता। यदि आज्ञा हो तो हम साथ चलें। आप जहाँ तक जाएँगे वहाँ तक पहुँचाकर, फिर आपको प्रणाम करके हम लौट आएँगे। इस प्रकार वे यात्री प्रफुल्ल होकर सजल नेत्रों से प्रेमपूर्वक पूछते हैं। किंतु कृपानिधि श्रीराम जी कोमल विनय युक्त वचन कहकर उन्हें लौटा देते हैं।

विशेष : लोक जीवन की सहज जिज्ञासा।

बोध प्रश्न

- 'रबितनुजा कइ करत बड़ाई' में 'रबितनुजा' का अर्थ है?
- लोग ज्योतिष-शास्त्र को क्यों झूठा मानते हैं?

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं। ...... बिहग मृग रामु चले मग जाहिं॥113॥

शब्दार्थ : पुर = शहर, सुर = देवता, सुरपुर = स्वर्ग, तरु = वृक्ष, पद पदुम = चरण कमल, घन= बादल, सुमन = फूल, गिरि = पर्वत, मृग = पशु-पक्षी, सिहाहिं = स्पृहा करना/ सिहाना/ ललचाना

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : जो गाँव और शहर रास्ते में बसे हैं, नागों और देवताओं के नगर उनको देखकर प्रशंसापूर्वक ईर्ष्या करते और ललचाते हुए कहते हैं कि किस पुण्यवान ने किस शुभ घड़ी में इनको बसाया था, जो आज ये इतने धन्य और पुण्यमय तथा परम सुंदर हो रहे हैं। जहाँ-जहाँ श्रीराम जी के चरण चले जाते हैं, अमरावती (इंद्र पुरी) भी उनके समान नहीं है। रास्ते के समीप बसने वाले भी पुण्यात्मा हैं। स्वर्ग में रहने वाले देवता भी उनकी सराहना करते हैं। जो सजल नेत्रों से सीता जी और लक्ष्मण जी सहित घनश्याम (श्रीराम) के दर्शन करते हैं, जिन तालाबों और नदियों में श्रीराम जी स्नान कर लेते हैं, देवसरोवर और देवनदियाँ भी उनकी बड़ाई करती हैं। जिस वृक्ष के नीचे श्रीराम जी जा बैठते हैं, कल्पवृक्ष भी उसकी बड़ाई करते हैं। अर्थात श्रीराम जी के चरणकमलों की रज (धूल) का स्पर्श करके पृथ्वी अपने आपको धन्य मानती है। रास्ते में बादल छाया करते हैं और देवता फूल बरसाते हैं तथा ललचाते हैं। पर्वत, वन और पशु-पक्षियों को देखते हुए श्रीराम जी रास्ते में चले जा रहे हैं।

विशेष : सामान्य काव्य की दृष्टि से इस तरह का वर्णन अतिशयोक्ति के अंतर्गत आता है, लेकिन यहाँ श्रीराम के माहात्म्य को यथार्थ रूप से समझने वाले व्यक्ति के लिए यह वास्तविकता है। अतिशयोक्ति अलंकार।

बोध प्रश्न

- 'जहँ जहँ राम चरन चलि जाहिं। तिन्ह समान अमरावति नाहिं॥' - इस उक्ति का क्या अर्थ है?

सीता लखन सहित रघुराई। .... छिनुकु श्रमु गवनब अबहिं कि प्रात॥114॥

शब्दार्थ : रघुराई = रघुनाथ/ श्रीराम, निकसहिं = निकलते हैं, बृद्ध = वृद्ध, गृह = घर, सरीरा = शरीर, बरनि = वर्णन, लोचन = नेत्र, उर = हृदय, सिथिल = शिथिल, तृन = घास, पात = पत्ते

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : सीता जी और लक्ष्मण जी सहित श्रीराम जी जब किसी गाँव के पास से निकलते हैं तब उनका आना सुनते ही बालक, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभी अपने घर और काम-काज भूलकर तुरंत उन्हें देखने के लिए चल देते हैं। वे श्रीराम, लक्ष्मण और सीता जी का रूप-सौंदर्य देखकर, नेत्रों का फल पाकर अत्यंत संतुष्ट होते हैं। अर्थात दर्शन मात्र से वे अपार संतुष्टि का अनुभव करते हैं। दोनों भाइयों को देखकर सब के सब प्रेमानंद में डूब जाते हैं। उनके नेत्र सजल हो गए और शरीर खुशी से पुलकित हो उठा। उनकी उस स्थिति का वर्णन करना कठिन है। ऐसा लग रहा था,

मानो गरीब व्यक्ति चिंतामणि की ढेरी पा ली हो। वे एक-एक को पुकारकर सीख देते हैं कि इसी क्षण नेत्रों का लाभ ले लो।

कोई श्रीराम को देखकर ऐसे प्रेम में भर गए हैं कि वे उन्हें देखते हुए उनके साथ चले जा रहे थे। कोई नेत्र मार्ग से उनकी छवि को हृदय में लाकर तन, मन और वचन से शिथिल हो जाते हैं। अर्थात उनके शरीर, मन और वाणी का व्यवहार बंद हो जाता है। वे स्तब्ध हो जाते हैं। कोई सुंदर छाया देखकर वहाँ नरम घास और पत्ते बिछाकर कहते हैं कि क्षण भर यहाँ बैठकर विश्राम कर लीजिए और थकावट मिटा लीजिए। थकावट दूर होने के बाद चाहे तुरंत चले जाइएगा या फिर सबेरे।

विशेष : राम के सौंदर्य और कोमलता की विविध रूपों में व्यंजना।

बोध प्रश्न

- कवि ने क्यों कहा कि गरीबों ने चिंतामणि की ढेरी पा ली हो?

एक कलस भरि आनहिं पानी। .... बिधु बदन बर लसत स्वेद कन जाल॥115॥

शब्दार्थ : कलस = घड़ा, दामिनी = बिजली, स्वेद कन = पसीना

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : कोई घड़ा भरकर पानी ले आते हैं और कोमल वाणी से कहते हैं - हे नाथ! आचमन तो कर लीजिए। उनके प्यारे वचन सुनकर और उनका अत्यंत प्रेम देखकर दयालु और परम सुशील श्रीरामचंद्र जी ने मन में सीता जी को थकी हुई जानकर घड़ी भर वट की छाया में विश्राम किया। स्त्री-पुरुष आनंदित होकर देखते रहें। अनुपम रूप ने उनके नेत्र और मन को लुभा लिया है। सब लोग बिना पलक झपकाए एकटक श्रीराम जी के मुखचंद्र को चकोर की तरह तन्मय होकर देखते हुए चारों ओर सुशोभित हो रहे थे। श्रीराम जी के कोमल तमाल वृक्ष के रंग का शरीर अर्थात श्याम रंग का शरीर अत्यंत शोभा युक्त है, जिसे देखते ही करोड़ों कामदेवों के मन मोहित हो जाते हैं। बिजली के रंग के लक्ष्मण बहुत ही भले मालूम होते हैं। वे नख से शिख तक अर्थात नीचे से ऊपर तक सुंदर हैं, और मन को बहुत भाते हैं। दोनों मुनियों की तरह वल्कल वस्त्र पहने हुए हैं और कमर में तरकश कसे हुए हैं। कमल के समान हाथों में धनुष-बाण शोभित हो रहे हैं। उनके सिरों पर जटाओं के मुकुट हैं। वक्ष स्थल, भुजा और नेत्र विशाल हैं। शरद पूर्णिमा के समान सुंदर मुखों पर पसीने की बूँदों का समूह शोभित हो रहा है।

विशेष : रूप चित्रण का अनुपम उदाहरण।

बोध प्रश्न

- उक्त **प्रसंग** के आधार आप अपने शब्दों में श्रीराम के रूप सौंदर्य का चित्रण कीजिए।

बरनि न जाइ मनोहर जोरी। .... सरद सर्बरीनाथ मुखु सरद सरोरुह नैन॥116॥

शब्दार्थ : बरनि = वर्णन, सोभा = शोभा, मति = बुद्धि, पिआसे = प्यासे, दिआ = दीपक, बिनय= विनती, सुबायँ = स्वभाव, किसोर = किशोर

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग : उक्त प्रसंग में गाँव की स्त्रियाँ श्रीराम और लक्ष्मण की सुंदरता का वर्णन करते हैं।

व्याख्या : उस मनोहर जोड़ी का वर्णन नहीं किया जा सकता, क्योंकि उनकी शोभा बहुत अधिक है और मेरी बुद्धि थोड़ी है। श्रीराम जी, लक्ष्मण जी और सीता जी की सुंदरता को सब लोग मन, चित्त और बुद्धि तीनों लगाकर देख रहे हैं। प्रेम के प्यासे गाँव के स्त्री-पुरुष उनके सौंदर्य-माधुर्य की छटा देखकर ऐसे स्तब्ध रह गए जैसे दीपक को देखकर हिरन और हिरनी निस्तब्ध रह जाते हैं। गाँव की स्त्रियाँ सीता जी के पास जाती हैं, परंतु अत्यंत स्नेह के कारण पूछने में सकुचाती हैं। सब के सब बार-बर उनके पाँव लगती हैं और सहज ही सीधे-सादे कोमल वचन कहती हैं - हे राजकुमारी! हम आपसे निवेदन करना चाहती हैं, परंतु स्त्री-स्वभाव के कारण पूछने हुए डर रहे हैं। हे स्वामिनी! हमारे इस उद्दंड व्यवहार को क्षमा कीजिए। हमें गँवारी जानकर बुरा न मानिएगा। ये दोनों राजकुमार स्वभाव से परम सुंदर हैं। लगता है कि मरकतमणि (पन्ने) और सोने ने कांति इन्हीं से पाई हैं। श्याम और गोरे वर्ण है। सुंदर किशोर अवस्था है। दोनों ही परम सुंदर और शोभा के धाम हैं। शरद पूर्णिमा के चंद्रमा के समान इनके मुख और शरद ऋतु के कमल के समान इनकी आँखें हैं।

विशेष : शिष्टतापूर्वक, आदर भाव से, संकोच तथा लज्जा के साथ सांकेतिक रूप में सीता से उनके पति के विषय में जानकारी प्राप्त करना। इस हेतु लोकचेतना तथा रचनात्मक सौंदर्य को कसौटियों के रूप में अपनाया गया।

बोध प्रश्न

- गाँव के स्त्री-पुरुष क्यों स्तब्ध हो गए?
- स्त्रियाँ क्यों कहती हैं कि मरकतमणि और सोना ने दोनों राजकुमार से ही कांति पाई?

कोटि मनोज लजावनिहारे। ...... तुम्ह जब लगि महि अहि सीस॥117॥

शब्दार्थ : पिक = कोकिल, बधूटीं = युवती

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : हे सुमुखी! कहो तो अपनी सुंदरता से करोड़ों कमादेवों को लजाने वाले ये तुम्हारे कौन हैं? उनकी ऐसी प्रेममयी सुंदर वाणी सुनकर सीता जी सकुचा गईं और मन ही मन मुस्कुराईं। गोरे रंग वाली सीता जी उनको देखकर संकोचवश पृथ्वी की ओर देखती हैं, क्योंकि यदि नहीं कहेंगी तो गाँव की स्त्रियों को बुरा लग सकता है और बताने के लिए शर्म आ रही है। हिरन के बच्चे के समान नेत्रवाली और कोकिल की सी वाणीवाली सीता जी सकुचाकर प्रेम सहित मीठे स्वर में बोले उठीं - ये जो सहज स्वभाव, सुंदर और गोरे शरीर के हैं, उनका नाम लक्ष्मण हैं और ये मेरे छोटे देवर हैं। फिर सीता जी ने लज्जावश अपने चंद्र के समान मुख को आँचल में ढककर प्रियतम श्रीराम जी की ओर निहारकर भौंहें टेढ़ा करके, खंजन पक्षी से सुंदर नेत्रों को तिरछी करके इशारे से उन्हें कहा कि ये मेरे पति हैं। यह जानकार गाँव की सब युवतियाँ इस प्रकार आनंदित हुईं मानो कंगालों ने धन की राशियाँ लूट ली हैं। वे अत्यंत प्रेम से सीता जी के पैर

पढ़कर बहुत प्रकार से आशीष देती हैं। शुभकामना करती हैं कि जब तक सिर पर यह पृथ्वी रहे तब तक वह सदा सुहागिन बनी रहे।

विशेष : प्रश्नोत्तर शैली। लज्जा, संकोच, मर्यादा और शालीनता से प्रश्न पूछा गया। उत्तर भी रोचक ढंग से भाव विलास और चेष्टाओं के द्वारा दिया गया है।

बोध प्रश्न

- सीता किस प्रकार श्रीराम और लक्ष्मण के बारे में ग्रामीण स्त्रियों को जानकारी देती हैं?

पारबती सम पतिप्रिय होहू। .... प्रिय बचन कहि लिए लाइ मन साथ॥118॥

शब्दार्थ : छोहू = छोड़ना, पुनि पुनि = बार-बार, कर = हाथ, मारग = मार्ग/रास्ता, दरसनु = दर्शन, मलीने = उदासी, बिधि = विधाता, गवनु = गमन

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : स्त्रियाँ आशीर्वाद देती हैं - पार्वती जी के समान अपने पति की प्यारी होओ। हे देवी! हम पर कृपा दृष्टि बनाए रखना। हम बार-बार हाथ जोड़कर आपसे विनती करते हैं कि आप फिर इसी रास्ते लौटें। और हमें अपनी दासी समझकर दर्शन देने की कृपा करें। सीता जी ने उन सब को प्रेम से देखा और मधुर वचन कहकर उन्हें अच्छी तरह से संतुष्ट किया। ऐसा लग रहा था, मानो चाँदनी ने कुमुदिनियों को खिलाकर पुष्ट कर दिया हो। उसी समय श्रीराम जी का मन्तव्य जानकर लक्ष्मण जी ने कोमल वाणी से लोगों से रास्ता पूछा। यह सुनते ही स्त्री-पुरुष दुखी हो गए। उनके शरीर पुलकित हो उठा और मन में अजीब उदासी छा जाने के कारण नेत्र सजल हो गए। उनका आनंद क्षण भर में मिट गया। मन अत्यंत उदास हो गया। उन्हें ऐसा लग रहा था, मानो विधाता ने एक ही पल में दी हुई संपत्ति को छीन लिया हो। कर्म की गति समझकर उन्होंने धैर्य धारण किया तथा अच्छी तरह निर्णय करके सुगम मार्ग बतला दिया। तब लक्ष्मण और सीता जी के साथ श्रीराम आगे बढ़े और सब लोगों को मीठे वचन कहकर लौट जाने के लिए कहा, लेकिन उनके मन को अपने साथ ही लगा लिया।

विशेष : ग्राम वधुओं की आसक्ति का चित्रण।

बोध प्रश्न

- ग्रामवासियों का मन अत्यंत उदास क्यों हो गया?

फिरत नारि नर अति पछिताहीं। ...... भूषन बसन बादि किए करतार॥119॥

शब्दार्थ : निरंकुस = निरंकुश/स्वतंत्र, निसंकू = निडर, ससि = चंद्रमा, सागरु = सागर, बन = वन, बनबासू = वनवास, पदत्राना = जूते, कुस = कुश, धवल = उज्ज्वल, भूषन = गहना, बसन = वस्त्र

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : श्रीराम जी, सीता जी और लक्ष्मण जी से मिलकर लौटते हुए स्त्री-पुरुष बहुत ही पछताते हैं और मन-ही-मन देवी-देवताओं को दोष देते हैं। परस्पर बड़े विषाद के साथ कहते हैं

कि विधाता के सभी काम उलटे ही होते हैं। विधाता बिल्कुल निरंकुश, निर्दय और निडर है। उसने चाँद को रोगी (यहाँ चाँद को रोगी इसलिए कहा गया है क्योंकि वह 15-15 दिनों में घटता है और बढ़ता है) और कलंकी बना दिया है। कल्पवृक्ष को पेड़ और समुद्र को खारा बना दिया। उसी ने इन राजकुमारों को वन में भेजा है। जब विधाता ने इनको वनवास दिया है, तब उसने भोग-विलास व्यर्थ ही बनाए। जब कुश और पत्ते बिछाकर इस जमीन पर ही पेड़ रहते हैं, तब विधाता ने सुंदर सेज किस लिए बनाए हैं? विधाता ने इनको बड़े-बड़े पेड़ों के नीचे रहने के लिए बना है, तो उज्ज्वल महलों की बनाना व्यर्थ ही तो है! ये सुंदर और अत्यंत सुकुमार होकर मुनियों की तरह वल्कल वस्त्र पहनकर जटा धरण करते हैं तो विधाता को तरह-तरह के गहने और कपड़े बनाने की आवश्यकता ही नहीं थी। ये सब व्यर्थ ही तो हैं।

विशेष : ग्रामीण जनता की मनोव्यथा का चित्रण है। करुण भाव का निर्माण।

बोध प्रश्न

- ग्रामीण जनता अपनी मनोव्यथा को किस प्रकार व्यक्त किया?

जौं ए कंद मूल फल खाहीं। ...... मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर॥120॥

शब्दार्थ : खाहीं = खाते हैं, सुधादि = अमृत आदि, भुअन = भुवन, इरिषा = ईर्ष्या

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : यदि ये कंद, मूल, फल खाते हैं तो जगत में अमृत तुल्य भोजन व्यर्थ है। कोई एक कहते हैं, ये स्वभाव से ही सहज ही सुशोभित हैं। ये स्वयं ही अपने आप प्रकट हुए हैं, विधाता के द्वारा बनाए गए नहीं। जहाँ तक वेदों ने विधाता की कृत्यों का उल्लेख किया है, उसका कानों, नेत्रों और मन के द्वारा वर्णन किया जाता है। चौदह भुवनों की खोज करके देखो। इस प्रकार के पुरुष और स्त्री कहाँ मिलेंगे! इन्हें देखकर विधाता का मन मुग्ध हो गया, तब वह भी इनकी समता के योग्य रचना करने लगा। अत्यधिक परिश्रम किया, किंतु पूरे नहीं उतरे। इसी ईर्ष्या के मारे उसने इनको जंगल में लाकर छिपा दिया है। कोई एक कहते हैं, हम बहुत कुछ नहीं जानते। हाँ, अपने आपको परम धन्य अवश्य मानते हैं। हमारी समझ में वे बड़े पुण्यवान हैं जो इनको देखा है, जो देख रहे हैं और जो देखेंगे।

इस प्रकार प्रिय वचन कह-कहकर सब आँखों में अश्रु भर लेते हैं और कहते हैं कि ये अत्यंत सुकुमार शरीरवाले दुर्गम (जटिल) मार्ग में कैसे चलेंगे?

विशेष : करुण भाव।

नारि सनेह बिकल बस होहीं। .... प्रेमबस लोग इमि रामु जहाँ जहँ जाहिं॥121॥

शब्दार्थ : साँझ = संध्या, गहबरि = व्याकुल, महि = पृथ्वी, बनु = वन, सुरूप = सौंदर्य, अकुलाई = व्याकुल, समरथ = समर्थ

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : स्त्रियाँ स्नेह से वशीभूत होकर विकल हो रही हैं। मानो संध्या समय चक्रवाकी अर्थात वियोग की पीड़ा से सोह रही हो - दुखी हो रही हो। श्रीराम के चरण-कमलों को कोमल तथा मार्ग को कठोर समझ कर वे व्याकुल हृदय से मृदु वाणी में कहती हैं - इनके कोमल तथा अरुण वर्ण अर्थात लाल-लाल चरणों का स्पर्श किए जाने पर पृथ्वी वैसे ही सकुचा जाती है जैसे हमारे हृदय। यदि ईश्वर ने इन्हें वनवास ही दिया, तो सारे रास्ते को पुण्यमय क्यों नहीं बना दिया? यदि ब्रह्मा से माँगने पर मिले तो हे सखी! इन्हें अपनी आँखों में रखें। जो स्त्री-पुरुष इस अवसर पर नहीं आए, वे सीता राम को देख नहीं पाए। उनके सुंदर रूप के बारे में सुनकर व्याकुल होकर पूछते हैं कि हे भाई! अब वे कहाँ तक पहुँचे होंगे? और जो समर्थ हैं वे दौड़ते हुए जाकर उनके दर्शन कर लेते हैं और अपने जन्म का परम फल पाकर प्रफुल्लित भाव से लौट आते हैं। अबलाएँ (स्त्रियाँ), बालक एवं वृद्ध जन जो समर्थ नहीं हैं, हाथ मलते हैं और पछताते हैं। इस प्रकार श्रीराम जहाँ-जहाँ जाते हैं, लोग प्रेम से वशीभूत हो जाते हैं।

विशेष : ग्रामीणों की आकांक्षा का सुंदर चित्रण।

बोध प्रश्न

- समर्थ व्यक्तियाँ दौड़कर क्यों जाते हैं?

गाँव गाँव अस होइ अनंदू। ..... जाहिं चले देखत बिपिन सिय सौमित्रि समेत॥122॥

शब्दार्थ : नृप = राजा, दोसु = दोष, भल = अच्छा, लोचन = आँख/ नेत्र, लोगाईं = स्त्री, सैल = पर्वत, कानन = जंगल, सौमित्र = लक्ष्मण

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : सूर्यवंश रूपी कुमुदनी के चंद्र (श्रीरामचंद्र) को देखने से गाँव-गाँव में इस प्रकार का आनंद हो रहा है। जो अन्य कुछ और समाचार सुन पाते हैं वे राजा और रानी को दोष देते हैं। कोई कहते हैं कि राजा (दशरथ) बहुत अच्छे हैं, जिन्होंने हमें इस प्रकार नेत्रों का लाभ दिया। स्त्री-पुरुष सभी आपस में सरल, स्नेहयुक्त एवं सुंदर बातें कर रहे हैं। कहते हैं - वे माता-पिता धन्य हैं जिन्होंने इन्हें जन्म दिया। वह नगर धन्य है, जहाँ से ये आए हैं। वह देश, पर्वत, वन और गाँव धन्य हैं, और वही स्थान धन्य है जहाँ-जहाँ वे जाते हैं। उनको रचकर विधाता ने भी सुख प्राप्त किया है, जिन्हें ये हर प्रकार से प्रिय हैं। श्रीराम-लक्ष्मण की सुंदर कथा सारे रास्ते और जंगल में छा गई है। इस प्रकार रघुवंश रूपी कमल के सूर्य श्रीराम, मार्ग के लोगों को आनंद देते हुए लक्ष्मण और सीता के साथ वन देखते हुए चले जा रहे हैं।

विशेष : राम के साथ संबंध रखने वाले माता-पिता आदि को अच्छे बताते हुए कवि ने राम के माहात्म्य को स्थापित करने का प्रयास किया है।

आगें रामु लखनु बने पाछें। .... तेइ बिनु श्रम रहे सिराइ॥123॥

शब्दार्थ : तापस = तपस्वी, बेष = वेश, उभय = दोनों, खग = पक्षी, मृग = पशु

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : आगे श्रीराम तथा पीछे लक्ष्मण सुशोभित हैं। वे तपस्वी वेश में बहुत अच्छे लग रहे हैं। उन दोनों के बीच सीता जी सुशोभित हो रही हैं, जैसे ब्रह्म तथा जीव के बीच में माया। जिस प्रकार की छवि मेरे मन में बस रही है, वह इस प्रकार है कि मानो वसंत ऋतु और कामदेव के बीच में रति (कामदेव की पत्नी) शोभित हो। हृदय से विचार करके फिर उपमा कहता है कि मानो चंद्रमा और बुध (चंद्रमा के पुत्र) के बीच रोहिणी (चंद्रमा की पत्नी) शोभित है। प्रभु श्रीराम के पद चिह्नों के बीच-बीच में अत्यधिक सभीत भाव से अर्थात डरते हुए सीता जी पग रखती हुई मार्ग पर चलती है। लक्ष्मण श्रीराम तथा सीता के पद चिह्नों को बचाते हुए दाहिनी ओर लगकर रास्ते में चलते हैं। राम, लक्ष्मण और सीता की सुंदर प्रीति अनिर्वचनीय है। अतः वह कैसे कही जा सकती है? पक्षी, पशु भी उस सुंदर छवि को देखकर मुग्ध हो रहे हैं। पथिक रूप श्रीरामचंद्र जी ने उनके भी चित्त चुरा लिए हैं। जिन-जिन लोगों ने सीता सहित दोनों भाईयों को प्रिय पथिक वेश में देखा उनके अगम्य भाव मार्ग बिना परिश्रम के आनंदपूर्वक तय हो गया।

बोध प्रश्न

- उक्त **प्रसंग** में कवि ने माया कहकर किसे संबोधित किया?

अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ। .... रघुबर आगमनु मुनि आगें आयउ लेन॥124॥

शब्दार्थ : अजहुँ = आज भी, जासु = जिसके, उर = हृदय, सपनेहुँ = सपने में, श्रमित = थकी हुई, सीतल = शीतल/ ठंडा, बिटप = वन, बीर = शत्रु

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : आज भी, सपने में भी किसी के हृदय में श्रीराम, लक्ष्मण और सीता रूप पथिक निवास करते हैं तो वह भी श्रीराम के परमधाम (मुक्ति) के उस मार्ग को पा जाएगा, जिस मार्ग को विरले ही कोई मुनि प्राप्त करते हैं। तब श्रीराम ने सीता को थकी हुई जानकर समीप ही बरगद का वृक्ष और ठंडा पानी देखकर उस दिन वहीं ठहर गए। कंद, मूल और फल खाकर रात भर वहीं रहकर प्रातः काल स्नान करके श्रीरघुनाथ जी आगे चले। श्रीराम सुंदर वन, सरोवर एवं पर्वतमालाओं को देखते हुए वाल्मीकि आश्रम पर आए। श्रीराम ने देखा कि मुनि का निवास स्थान बहुत सुंदर है, जहाँ पर्वत और जंगल सुंदर हैं तथा जल पवित्र है। सरोवरों में कमल और वनों में वृक्ष पुष्पित हैं। रस में मस्त भ्रमर सुंदर गुंजार कर रहे हैं। असंख्य पशु-पक्षी कोलाहल कर रहे हैं तथा शत्रु भाव भूलकर प्रसन्न मन से विचरण कर रहे हैं। पवित्र और सुंदर आश्रम को देखकर कमलनयन श्रीराम प्रसन्न हुए। मुनि भी आश्रम में राम के आगमन को सुनकर उन्हें लेने के लिए आगे आए।

विशेष : प्रकृति चित्रण।

बोध प्रश्न

- उक्ति **प्रसंग** कवि ने मुनि वाल्मीकि के आश्रम का कैसे चित्र प्रस्तुत किया?

मुनि कहुँ राम दंडवत कीन्हा। .... दरस तुम्हार प्रभु सबु मम पुन्य प्रभाउ॥125॥

शब्दार्थ : आसिरबादु = आशीर्वाद, बिस्व = विश्व, प्रभाउ = प्रभाव

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : श्रीराम ने मुनि वाल्मीकि को दंडवत किया और मुनिश्रेष्ठ ने उन्हें आशीर्वाद दिया। श्रीराम की छवि को देखकर उनके नेत्र शीतल हो उठे तथा सम्मान सत्कार करके आश्रम में ले आए। मुनिश्रेष्ठ प्राणप्रिय अतिथि को पाकर प्रसन्न हुए। मंगल-मूर्ति को नेत्रों से देखकर वाल्मीकि जी का मन आनंद से भर उठा। तब श्रीरघुनाथ कमल सदृश हाथों को जोड़कर, कानों को सुख देने वाले मधुर वचन बोले - हे मुनिनाथ! आप त्रिकालदर्शी हैं। संपूर्ण विश्व आपके लिए हथेली पर रखे हुए बेर के समान है। श्रीराम ने ऐसा कहकर फिर जिस-जिस प्रकार से रानी कैकेयी ने वनवास दिया, वह सब कथा विस्तार से सुनाई। वाल्मीकि ने कहा - हे प्रभु! पिता की आज्ञा का पालन, माता का हित और भरत जैसे स्नेही और धर्मात्मा भाई का राजा होना और फिर मुझे आपके दर्शन होना, यह सब मेरे पुण्यों का प्रभाव है।

बोध प्रश्न

- श्रीराम से मुनि वाल्मीकि ने क्या कहा?

देखि पाय मुनिराय तुम्हारे। ..... अकथ अपार नेति नित निगम कह॥126॥

शब्दार्थ : सुकृत = पुण्य, आयसु = आज्ञा, उदबेगु = उद्वेग/ व्यवधान, तापस = तपस्वी, पावक = अग्नि, बिप्र = ब्राह्मण, रोषू = क्रोध, साला = कुटी, पालक = रक्षक, अबिगत = अव्यक्त

संदर्भ : प्रस्तुत चौपाई तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग :

व्याख्या : हे मुनिराज! आपके चरणों को देखकर हमारे संपूर्ण पुण्य सार्थक हो उठे। अब आपकी जहाँ आज्ञा हो और जहाँ कोई भी मुनि व्यवधान न प्राप्त कर सकें ऐसा कोई स्थान दिखाइए क्योंकि जिन नरेशों से मुनि तथा तपस्वी दुख प्राप्त करते हैं, वे नरेश बिना अग्नि के अपने ही दुष्ट कर्मों से जलकर भस्म हो जाते हैं। विप्र (ब्राह्मण) जनों का संतोष सब मंगलों की जड़ है और भूदेव ब्राह्मणों का क्रोध करोड़ों राज कुलों को नष्ट कर देता है। ऐसे हृदय में विचार करके वह स्थान बतलाइए जहाँ सीता तथा लक्ष्मण के साथ जाऊँ। वहाँ अत्यंत सुंदर पर्णशाला (घास की कुटी) रचकर के हे कृपालु! कुछ समय तक मैं निवास करूँ। श्रीराम की सहज तथा सरल वाणी सुनकर त्रिकालज्ञ मुनि बोले - 'धन्य! धन्य! हे रघुवंश ध्वज (श्रीराम)! आप निरंतर श्रुति सेतु अर्थात नैतिकता तथा मर्यादा के पालनकर्ता (रक्षक) हैं, आप ऐसा क्यों न कहें?

हे श्रीराम! आप वैदिक मर्यादा के पालनकर्ता जगत के रक्षक हैं और सीता आपकी माया (कार्य) है, हे कृपानिधि! जो आपका संकेत पाकर संसार का सृजन, पालन एवं विनाश करती है और जो सहस्र सिर पर पृथ्वी धारण करने वाले शेषनाग तथा संपूर्ण जड़-जंगम के स्वामी हैं, वे लक्ष्मण हैं। देवताओं के कार्य की सिद्धि के लिए आप नृपति (राजा) का शरीर धारण करके दुष्ट राक्षसों की सेनाओं का दलन करने के लिए चले हैं (अवतरित हुए हैं)।

हे श्रीराम! आपका स्वरूप वचनों के लिए अनिवर्चनीय तथा बुद्धि से परे, अज्ञेय, अकथनीय तथा अपार है एवं वेद निरंतर उसे 'नेति नेति' कहकर वर्णन करते हैं।

विशेष : राम के व्यक्तित्व का अद्‌भुत रूप से उभरना। निखिल सृष्टि को श्रीराम में निहित बताकर वाल्मीकि काव्यात्मक परिहास करते हैं। पाठक में आश्चर्य तथा हर्षा का भाव उत्पन्न होता है। नर में नारायण की परिकल्पना है। यह अवतारवादी धारणा है।

बोध प्रश्न

- वाल्मीकि श्रीराम के संदर्भ में क्या कहते हैं?

(घ) समीक्षात्मक अध्ययन

तुलसीदास भारतीय सामाजिक व्यवस्था को मान्यता देने वाले रचनाकार हैं। उनकी कविता में लोकमंगल की भावना को देखा जा सकता है। वे वर्णाश्रम व्यवस्था के उल्लंघन को अक्षम्य मानते हैं। वे ब्राह्मणों को श्रेष्ठ मानते हैं। वे आदर्श समाज की स्थापना करना चाहते हैं। श्रीराम को तुलसी ने जहाँ आदर्श पुत्र, भाई और पति के रूप में चित्रित किया है, वहीं एक आदर्श मित्र के रूप में भी चित्रित किया है। 'रामचरितमानस' में तुलसी व्यक्ति, परिवार और समाज - तीनों का व्यावहारिक विवेचन प्रस्तुत करते दिखाई देते हैं। उनके राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। यदि कहें कि रामकथा के माध्यम से तुलसी ने समाज में व्याप्त जीवन मूल्यों को व्याख्यायित करने की कोशिश की हैं तो गलत नहीं होगा। आयोध्याकाण्ड में रोचकता लाने के लिए तुलसी ने मार्मिक प्रसंगों का समावेश किया है। जैसे - केवट प्रसंग, तापस भेंट, शृंगेरपुर के नर-नारियों के भावोद्गार, ग्रामवधू प्रसंग आदि प्रसंगों को अत्यंत कुशलता से विस्तार देकर मानस के उल्लेखनीय प्रसंग बना दिए हैं।

तुलसीदास ने भक्ति के साथ प्रेम के गहरे संबंध को निरूपित किया है। उन्होंने अपने आराध्य के प्रति प्रेमासक्ति भावना को व्यक्त करते हुए कहा है कि श्रीराम सर्वव्यापी हैं। 'रामचरितमानस' के द्वारा उन्होंने ज्ञान और भक्ति का सेतु निर्मित किया है। तुलसी अपने आँखों देखे उस समाज का वर्णन करते हैं जो ताप, पाप, दोष और दरिद्रता से पीड़ित है। तुलसी की महत्ता को रेखांकित करते हुए विश्वनाथ त्रिपाठी लिखते हैं कि "ऐसा नहीं है कि तुलसी सामंतवादी व्यवस्था के स्थान पर किसी जनवादी या समाजवादी व्यवस्था की कल्पना नहीं कर सकता था। तुलसी सामंती व्यवस्था की त्रुटियाँ ही देख सकते थे, प्रजा की सुखी और राजा के प्रजापालक रूप की ही कल्पना कर सकते थे। उन्होंने रामराज्य के रूप में ही कल्पना की थी।"

तुलसी सामाजिक-पारिवारिक मर्यादा पर जोर देते हैं। पिता के वचन को निभाने के लिए राम का वन जाना, भरत का त्याग, राम का कैकेयी के साथ आदरपूर्वक व्यवहार, गुरुओं के प्रति आदर आदि प्रसंग इसी बात की ओर संकेत करते हैं। उनके संपूर्ण काव्य की महत्वपूर्ण विशेषता है लोक जीवन का चित्रण। रामचंद्र शुक्ल ने 'कथा की मार्मिक स्थलों की पहचान' को तुलसी की प्रमुख विशेषता के रूप में रेखांकित किया है। 'रामचरितमानस' का अयोध्याकाण्ड सुगठित प्रतीत होता है। राम वन-गमन का प्रसंग अत्यंत मार्मिक बन पड़ा है। जब राम वनवास के लिए अयोध्या से निष्कासित होते हैं तब ग्राम के स्त्री-पुरुष राम का जिस प्रकार स्वागत करते

हैं, उनके प्रति स्वाभाविक अनुराग प्रकट करते हैं वह तुलसी के हृदय को प्रकट करता है। इससे सरल-निष्कपट ग्रामीण जनता, निषाद आदि के प्रति तुलसी की भावना स्पष्ट होती है। सीता और लक्ष्मण के साथ राम जब पथिक वेश में वन के मार्ग में चले जा रहे हैं तो ग्रामीण जनता अपना घर, काम सब कुछ छोड़कर उनके दर्शन के लिए दौड़ती है। उन्हें देखकर वे प्रेममग्न हो जाते हैं। तुलसी कहते हैं कि उन्हें ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उन्हें चिंतामणि की ढेरी मिल गई हो। भारतीय ग्रामीण जनता उन्हें को देखकर पुलकित ही नहीं होते, बल्कि अपनी शक्ति-सामर्थ्य के अनुरूप उनकी थकान को दूर करने की कोशिश भी करते हैं। कोई बरगद की छाँव में घास-पात बिछाकर विश्राम करने के लिए कहते हैं तो कोई जल लेकर दौड़ पड़ते हैं।

5.4 : पाठ सार

प्रस्तुत इकाई में तुलसी कृत रामचरितमानस के दोहा संख्या 107 से 126 तक का गहन अध्ययन किया गया. इसमें प्रसंग सम्मलित है प्रयाग तथा भरतद्वाज प्रसंग, तापस प्रसंग, ग्राम वधुओं का प्रसंग तथा श्री राम – वाल्मिक संवाद. इस इकाई से यह स्पष्ट हुआ है कि तुलसी सहज लोकानुभाव को अपने काव्य का मूल तत्व बनाकर प्रस्तुत करने में सफल हैं। उक्त प्रसंगों में जहाँ एक ओर करुण की भाषा ध्वनित है, वहीं दूसरी ओर व्यंजनापूर्ण और परिहास की भाषा भी व्यंजित है। कहा जा सकता है कि तुलसी ने मानव जगत के यथार्थ को अभिव्यंजित करने के लिए सहज रूप से अपने अनुभव के आधार पर भाषा का प्रयोग किया है।

5.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं –

- अध्येय पाठांश तुलसी ने राम वन गमन के विविध प्रसंगों का मार्मिक चित्रण किया है।
- अध्येय पाठांश काव्य नुपरक राम के धिरोदात चिरित्र की पुष्टि करते हैं।
- अध्येय पाठांश राम की लोक प्रियता और लोक की सहजता को भली प्रकार उभरते हैं।

5.6 : शब्द संपदा

1. अनिवर्चनीय = अवर्णनीय
2. आगम = लोक परंपरा, जिनमें शास्त्र के प्रति विरोध रहता है
3. निगम = वेदों से चलने वाली परंपरा, कर्मकांड की प्रधानता से भरा मार
4. मन्तव्य = मत, विचार
5. माहात्म्य = महिमा, गौरव
6. लोकरक्षक = लोक की रक्षा करने वाला
7. वैराग्य = सांसारिक बंधनों से विमुक्ता
8. षड्यंत्र = धोखा देने की योजना, साज़िश

5.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'रामचरितमानस' के आयोध्याकाण्ड का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
2. तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड की विशेषताओं को पठित प्रसंगों के आधार पर रेखांकित कीजिए।
3. तुलसीदास और 'रामचरितमानस' की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।
4. तुलसी की लोकमंगल भावना को स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. पठित प्रसंगों के आधार ग्रामीण स्त्रियों की सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति पर प्रकाश डालिए।
2. पठित प्रसंगों के आधार पर श्रीराम के चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
3. पठित प्रसंगों के आधार 'रामचरितमानस' के आयोध्याकाण्ड की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. **निम्नलिखित उद्धरण की स प्रसंग व्याख्या कीजिए -**

   कुसल प्रस्न करि आसन दीन्हे। पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे॥
   कंद मूल फल अंकुर नीके। दिए आनि मुनि मनहुँ अमी के॥
   सीय लखन जन सहित सुहाए। अति रुचि राम मूल फल खाए॥
   भए बिगतश्रम रामु सुखारे। भरद्वाज मृदु बचन उचारे॥
   आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जप जोग बिरागू॥
   सफल सकल सुभ साधन साजू। राम तुम्हहि अवलोकत आजू॥

5. **निम्नलिखित उद्धरण की स प्रसंग व्याख्या कीजिए -**

   बहुरि कहउँ छबि जसि मन बसई। जनु मधु मदन मध्य रति लसई॥
   उपमा बहुरि कहउँ जियँ जोही। जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही॥
   प्रभु पद रेख बीच बिच सीता। धरति चरन मग चलति सभीता॥
   सीय राम पद अंक बराएँ। लखन चलहिं मगु दाहिन लाएँ॥
   राम लखन सिय प्रीति सुहाई। बचन अगोचर किमि कहि जाई॥
   खग मृग मगन देखि छबि होहीं। लिए चोरि चित राम बटोहीं॥

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. निषाद गुह कहाँ के राज्य थे? ( )
   (अ) चित्रकूट (आ) अयोध्या (इ) प्रयाग (ई) शृंगेरपुर
2. ऋषि भरद्वाज का आश्रम कहाँ था? ( )
   (अ) चित्रकूट (आ) अयोध्या (इ) प्रयाग (ई) शृंगेरपुर
3. श्रीराम, सीता और लक्ष्मण वनवास जाते समय सबसे पहले किसके आश्रम पहुँचे? ( )
   (अ) वाल्मीकि (आ) भरद्वाज (इ) अत्रि (ई) भृगु
4. पंचवटी जाने से पहले किसके आश्रम पहुँचे? ( )
   (अ) वाल्मीकि (आ) भरद्वाज (इ) अत्रि (ई) भृगु

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. श्रीराम जहाँ-जहाँ जाते हैं, लोग प्रेम से .... हो जाते हैं।
2. 'रामचरितमानस' के आयोध्याकाण्ड में .... और .... जीवन का श्रेष्ठ चित्रण हुआ है।
3. 'रामचरितमानस' के आयोध्याकाण्ड .... का हृदय है।
4. 'रामचरितमानस' के आयोध्याकाण्ड का केंद्रीय आधार .... रस है।

III. सुमेल कीजिए

1. बुध	(अ) सुंदर पुत्र
2. सीता	(आ) चंद्रमा के पुत्र
3. राम	(इ) त्रिकालदर्शी
4. सुअन	(ई) लोकनायक
5. वाल्मीकि	(उ) माया

5.8 : पठनीय पुस्तकें

1. रामचरितमानस : तुलसीदास
2. लोकवादी तुलसीदास : विश्वनाथ त्रिपाठी
3. तुलसी शब्द कोश

इकाई 6 : रामचरितमानस : अयोध्याकांड - IV : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 मूल पाठ : रामचरितमानस : अयोध्याकांड- IV : व्याख्या
6.3.1 मूल रचना सहित व्याख्या
6.3.2 काव्यगत विशेषताएँ
6.4 पाठ सार
6.5 पाठ की उपलब्धियाँ
6.6 शब्द संपदा
6.7 परीक्षार्थ प्रश्न
6.8 पठनीय पुस्तकें

6.1 : प्रस्तावना

तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' में सात कांड हैं- बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड और उत्तरकांड| राम के चरित्र पर आधारित यह महाकाव्य उदात्त जीवन मूल्यों और मर्यादा की स्थापना करती है| इस दृष्टि से 'अयोध्याकांड' सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है| यह आडंबरहीन, निष्कपट और सरल जीवन का चित्र प्रस्तुत करता है| राम द्वारा अयोध्या के महल से निकलकर वन में निवास का यह पाठ, जीवन के कठिन क्षणों में मार्ग सुझानेवाला है| यह सत् तत्व को पुष्ट करता है| अतः इसे हृदयंगम करना आवश्यक है| इसकी भाषा केंद्रीय बैसवाड़ी अवधी है| इसकी शैली सरल, लालित्यपूर्ण और प्रवाहमय है| इनके साथ विवरणात्मक, ऐतिहासिक, पौराणिक एवं स्त्रोत शैली का भी प्रयोग इस ग्रंथ में किया गया है|

6.2 :उद्देश्य

प्रिय छात्रों! इस इकाई में आप मध्यकालीन हिंदी काव्य रामचरितमानस-अयोध्याकांड- दोहा संख्या 127-146 का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप-

- रामचरितमानस-अयोध्याकांड के अध्येय अंश के मूल पाठ से परिचित हो सकेंगे|
- आप भारतीय संस्कृति की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे|
- इसकी काव्यगत विशेषताओं को जान सकेंगे|
- रामचरितमानस-अयोध्याकांड के इस अंश का समीक्षात्मक विश्लेषण कर सकेंगें|

6.3 : मूल पाठ : रामचरितमानस : अयोध्याकांड – IV : खंड

6.3.1 मूल रचना सहित व्याख्या -

दो 0- पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूंछत सकुचाउं|
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउं|| 127||
सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने| सकुचि राम मन महुँ मुसुकाने||
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी| बानी मधुर अमिअ रस बोरी||1||
सुनहु राम अब कहउं निकेता| जहाँ बसहु सिय लखन समेता||
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना| कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना||2||
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे| तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे||
लोचन चातक जिन्ह करि राखे| रहहिं दरस जलधर अभिलाषे||3||
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी| रूप बिंदु जल होहिं सुखारी||
तिन्ह के हृदय सदन सुखदायक| बसहु बंधु सिय सह रघुनायक||4||

शब्दार्थ: ठाउं- रहने का स्थान, बहोरी- फिर, सुभग- सुंदर, सरि- नदी, जलधर- मेघ, निदरहिं- निरादर करना

संदर्भ: प्रस्तुत अंश तुलसीदास कृत रामचरितमानस के अयोध्याकांड से लिया गया है|

प्रसंग: प्रस्तुत अंश वनवास के दौरान श्रीराम और महर्षि वाल्मीकि के मध्य का संवाद है| इसमें श्रीराम वन में अपने निवास करने योग्य स्थान के बारे में महर्षि से पूछते हैं| इसके उत्तर में महर्षि वाल्मीकि अपने प्रत्युत्पन्नमतित्व से रामनिकेत का वर्णन करते हैं|

व्याख्या: राम वन में हैं| वहाँ वे महर्षि वाल्मीकि से भेंट करते हैं| राम उनसे वनवास काल बिताने के लिए उचित निवासस्थान के बारे में पूछते हैं| राम के प्रश्न पर महर्षि संकोच सहित प्रश्न करते हैं कि हे राम! इस सृष्टि में ऐसा कौन-सा स्थान है जहाँ आप नहीं हैं? आप मुझे उस स्थान के बारे में बता दीजिए फिर मैं आपको निवास योग्य स्थान दिखाता हूँ| मुनि की प्रेमरसयुक्त वाणी को सुनकर श्रीराम संकोचवश मन-ही-मन मुस्कुराने लगे| कहीं उनके परब्रह्म और घट-घट वासी परमात्मस्वरूप का भेद न खुल जाए, यह सोचकर ही श्रीराम संकोच में पड़े| राम की मनःस्थिति को भाँपकर महर्षि ने अपनी अमृतमय वाणी में रामनिकेत का वर्णन करना आरंभ किया किया| उनके इस वर्णन से राम की अलौकिकता का दर्शन होता है| मनुष्य रूप में प्रकट हुए ब्रह्म राम को महर्षि रहने के योग्य स्थान बता रहे हैं! यह लीला का एक अंग है|

महर्षि उस लीला के समक्ष नत हैं| राम की शंका समझते हुए भी वे अपने भक्तिभाव को प्रकट होने से न रोक सके| हँसते हुए उन्होंने कहा कि हे राम, सुनिए मैं कुछ स्थान बताता हूँ जहाँ आप सीता और लक्ष्मण के साथ निवास कर सकते हैं| जिस प्रकार समुद्र अनेकानेक नदियों के जल से हमेशा भरा रहता है परंतु कभी अघाता नहीं है; उसी प्रकार जिनके कान आपकी कथा के रस से कभी तृप्त नहीं होते हैं; आप उनके हृदय में निवास कीजिए| जो आपके दर्शनों का सदा अभिलाषी है यानी जिसने आपके दर्शन रूपी मेघ के लिए अपनी आँखों को चातक बना रखा है| जो अपार जलराशि (समुद्र, झील, नदी) का निरादर करते हैं तथा आपकी रूप शोभा रूपी एक

बूंद जल से सुखी हो जाते हैं; उनके हृदय आपको सुख देनेवाले घर हैं| वहाँ आप भ्राता लक्ष्मण और सीता सहित निवास कीजिए| सच्चिदानंद स्वरूप की शोभा की एक झलक के सम्मुख जिन्हें इस त्रिलोक का सौंदर्य भी फीका जान पड़ता है आप वहाँ निवास कीजिए|

राम वह विराट शक्ति हैं जिनकी अभिव्यक्ति सारी सृष्टि है| उनका निवास स्थान उस प्राणी का हृदय है जो उनके प्रति पूर्ण समर्पित है| जिसकी उनमें अनन्य श्रद्धा है और जो उनसे परमप्रेम करता है| जो उनकी रूप शोभा को पाने के लिए सदा लालायित रहता है, उसका हृदय ही राम का निवास स्थान है|

बोध प्रश्न

- 'जहँ न होहु तहँ देहु कहि'- इस कथन से कौन-सा रहस्य उजागर होता है?

दो0 - जसु तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु|
मुकताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ जासु|| 128||
प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुबासा| सादर जासु लहइ नित नासा||
तुम्हहि निवेदित भोजन करहीं| प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं||1||
सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी| प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी||
कर नित करहिं राम पद पूजा| राम भरोस हृदय नहिं दूजा||2||
चरन राम तीरथ चलि जाहीं| राम बसहु तिन्ह के मन माहीं||
मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा| पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा||3||
तरपन होम करहिं बिधि नाना| बिप्र जेवाँइ देहि बहु दाना||
तुम्ह ते अधिक गुरहि जियँ जानी| सकल भायँ सेवहिं सनमानी||4||

शब्दार्थ: जसु- यश, मानस- मानसरोवर, मुकताहल- मोतियों, नासा- नासिका,

संदर्भ एवं प्रसंग: पूर्ववत

व्याख्या: महर्षि वाल्मीकि ने अब तक बताया कि राम के प्रति प्रेम से पूर्ण हृदय ही राम का निवास स्थान है| यहाँ भक्ति के उच्चतम साधन प्रेम पर प्रकाश डाला गया है| भक्ति की इस उच्चावस्था को पाने से पूर्व कई सोपान आते हैं| प्रस्तुत अंश में उन लौकिक कर्म रूपी सोपानों का वर्णन आया है| इन्हें भक्ति का साधन कहा जाता है| यह उच्चतम प्रेम को पाने का सतत अभ्यास है| प्राणी के चित्त के अनुरूप इसका आरंभ रुपासक्ति, गुण श्रवण और कथन; कहीं से भी होता है| इस अंश में वर्णित सद्कर्म के प्रति भी प्राणी की निष्ठा उसकी चित्तवृत्ति के अनुरूप ही होती है|

श्रीराम का यश निर्मल मानसरोवर है| उनके गुण इस सरोवर में मोतियों के समूह हैं| मोतियों को हंस चुनता है| हंस में नीर-क्षीर विवेक होता है| महर्षि कहते हैं, जिस प्राणी की जीभ हंसिनि की भाँति इस सरोवर में से राम के गुणसमूह रूपी मोतियों को चुगती है, हे राम आप उसके हृदय में निवास कीजिए| पुनः वे कहते हैं कि हे राम, जिसकी नाक आपके पवित्र, सुंदर और सुगंधित प्रसाद को रोज नियम से आदर के साथ ग्रहण करती है तथा जो भोजन और वस्त्र पहले आपको निवेदित कर पीछे स्वयं धारण करता हो, जो सदा आपका नाम जपता हो, जो सुर, गुरु और ब्राह्मण को देखकर बड़े प्रेम से विनय के साथ नित्य प्रणाम करता हो, जो नित्य अपने हाथों से आपकी पूजा करता हो, जिसे केवल आपका ही भरोसा हो तथा जिसके चरण स्वयं ही तीर्थों

में चले जाते हों, आप उनके मन में निवास कीजिए| जो राम नाम रूपी महामंत्र का नित्य जाप करते हैं, जो अपने परिवार के साथ रोज आपकी पूजा करते हैं, जो विविध प्रकार से तर्पण और हवन करते हैं, जो ब्राह्मणों को भोजन, दान और मान देते हैं तथा आपसे भी अधिक अपने गुरु को मान देकर हर भाव से उनकी सेवा और सम्मान करते हैं- उन धर्मात्मा का हृदय ही आपका निवास स्थान है|

राम के आश्रय के प्रसंग से, यहाँ बताया गया है कि उस असीम शक्ति का मानव के हृदय में बसना ही मानव जीवन का अभीष्ट है| इसकी पूर्ति हेतु धर्मसम्मत कर्मों का उल्लेख किया गया है| इसका लक्ष्य जीवन में नित्य नैमित्तिक कर्म और धर्माचरण की आवश्यकता पर बल देना भी है| इष्ट सेवा, बड़ों के प्रति आदर का भाव, तर्पण करना, ब्राह्मणों को भोजन, दान और मान से संतुष्ट करना तथा ईश्वर से भी अधिक गुरु को मान देना इत्यादि कर्म भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग हैं| इन सबके साथ जो राम के प्रति एकनिष्ठ भाव रखते हैं उनका हृदय ही राम का निवास स्थान है|

बोध प्रश्न

- राम निकेत का वर्णन करते हुए किन धर्मसम्मत कर्मों का उल्लेख किया गया है?

दो 0 - सबु करि माँगहिं एक फलु राम चरन रति होउ||
तिन्ह के मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ||129||
काम कोह मद मान न मोहा| लोभ न छोभ न राग न द्रोहा||
जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया| तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया||1||
सब के प्रिय सब के हितकारी| दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी||
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी| जागत सोवत सरन तुम्हारी||2||
तुम्हहि छाडि गति दूसरि नाहीं| राम बसहु तिन्ह के मन माहीं||
जननी सम जानहिं परनारी| धनु पराव विष तें विष भारी||3||
जे हरषहिं पर संपति देखी| दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी||
जिन्हहि राम तुम्ह प्रानपिआरे| तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे||4||

शब्दार्थ: रति- प्रेम, कोह- क्रोध, सरिस- समान, गति- आश्रय, पराव-पराया

संदर्भ एवं प्रसंग: पूर्ववत

व्याख्या: आगे वाल्मीकि कहते हैं कि इन सभी उत्तम और पवित्र कर्म को करने के फलस्वरूप जो केवल श्रीरामचरण में अनुराग की कामना करते हैं, उनके मनमंदिर में आप सीता के साथ बसिए| जो काम, क्रोध, मद, अभिमान, मोह, लोभ, क्षोभ, राग-द्वेष, कपट, दंभ और माया से रहित हैं- हे राम आप उनके हृदय में रहिए| जो सबके प्रिय और सबके हितकारी हैं| जिनके लिए दुख-सुख, प्रशंसा और निंदा एक समान है, जो सत्य और प्रिय वचन भी सोच-विचारकर ही बोलते हैं तथा जो जागते और सोते हुए भी केवल आपकी ही शरण में रहते हैं| जिनका आपके अलावा दूसरा सहारा नहीं है, जो दूसरी स्त्री को माता और दूसरे के धन को विष के समान

समझता है- आप उसके हृदय में वास कीजिए| हे राम, जिसे आप प्राणप्यारे लगे तथा जो दूसरों के सुख में सुखी तथा दुःख में दुखी होता हो, उनका मन ही आपका शुभता से युक्त घर है|

इस अंश में मानसिक आचरण पर बल दिया गया है| भौतिक रूप से भी शुभ कर्मों का संपादन तभी संभव है जब व्यक्ति का मन सबल हो| दुर्बल मन काम, क्रोध, मद, अभिमान, मोह, लोभ, क्षोभ, राग-द्वेष, कपट, दंभ और माया का आश्रय है| वहाँ सत्य और संतोष रूपी राम का निवास कहाँ! जहाँ सत्य और संतोष है वहीँ विवेक भी सही कार्य करता है| विवेकवान और सच्चरित्र मनुष्य ही हर अवस्था में एक समान रहते हैं एवं सबका हित सोचते हैं| जिनके प्राण राम में बसते हों, उनके हृदय राम के निवासस्थान हैं|

बोध प्रश्न

- राम किनके हृदय में निवास कर सकते हैं?

दो 0- स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात|
मन मंदिर तिन्ह कें बसहु सीय सहित दोउ भ्रात||130||
अवगुन तजि सब के गुन गहहिं| बिप्र धेनु हित संकट सहहीं||
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका| घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका||1||
गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा| जेहि सब भांति तुम्हार भरोसा||
राम भगत प्रिय लागहिं जेही| तेहि उर बसहु सहित बैदेही||2||
जाति पाँति धनु धरमु बड़ाई| प्रिय परिवार सदन सुखदाई||
सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई| तेहि के हृदय रहहु रघुराई||3||
सरगु नरकु अपबरगु समाना| जहँ तहँ देख धरें धनु बाना||
करम बचन मन राउर चेरा| राम करहु तेहि के उर डेरा||4||

शब्दार्थ: धेनु- गाय, गहहीं- ग्रहण करना, लीका- मर्यादा, अपबरगु- मोक्ष, चेरा- सेवक,

संदर्भ एवं प्रसंग: पूर्ववत

व्याख्या: हे तात, जिनके सब कुछ (स्वामी, मित्र, पिता-माता और गुरु) आप ही हैं यानी जिनके सारे संबंधों की डोर आपसे ही जुड़ी हुई है, उनके मनमंदिर में आप दोनों भाई सीता के साथ निवास कीजिए| जो सबके अवगुणों को छोड़कर उनके गुणों को ग्रहण करे, जो गाय तथा ब्राह्मण के लिए कोई भी संकट सह ले, जो नीतिवान हो- उनका अच्छा मन ही आपका घर है| जो गुणों को आपका और दोषों को अपना मानता हो तथा जिसे हर तरह से केवल आपका ही भरोसा हो और जिसे रामभक्त बहुत प्रिय लगते हों, उनके हृदय में आप वैदेही के साथ निवास कीजिए| जो दुनिया के विषयों (जाति-पाँति, धन, धर्म, बड़ाई, प्रिय परिवार, सुख देनेवाला घर) को छोड़कर केवल आपको ही अपने हृदय में धारण करता हो, हे राम आप उनके हृदय में रहिए| स्वर्ग-नरक और मोक्ष जिनके लिए समान हो कारण कि वे हर जगह आपको ही धनुष-बाण धारण किए देखते हैं, जो कर्म, वचन और मन से आपके सेवक हों, हे राम आप उनके हृदय में अपना डेरा डालिए|

अर्थात राम उसी के हृदय में रह सकते हैं जो केवल राम के भरोसे हो| जिसे लौकिक-पारलौकिक किसी भी प्रकार का कोई प्रलोभन नहीं लुभाता हो, जिसके सर्वस्व राम ही हैं तथा

जिसकी मनोवृत्ति धार्मिक हो- वैसे मनुष्य का हृदय ही राम का निवास स्थान है| धार्मिक मनोवृत्ति प्रधान व्यक्ति को ही ब्राह्मण, गाय और रामभक्त प्रिय लगते हैं| वही इस संसार को राममय देख सकता है| सब में प्रियतम का दर्शन करने से वैर और विरोध की संभावना ही नष्ट हो जाएगी|

बोध प्रश्न

- कवि के अनुसार वैर और विरोध की संभावना कब खत्म हो जाएगी?

दो 0- जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु|
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु||131||
एहि बिधि मुनिबर भवन देखाए| बचन सप्रेम राम मन भाए||
कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक| आश्रम कहउं समय सुखदायक||1||
चित्रकूट गिरि करहु निवासू| तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू||
सैलु सुहावन कानन चारू| करि केहरि मृग बिहग बिहारू||2||
नदी पुनीत पुरान बखानी| अत्रिप्रिया निज तप बल आनी||
सुरसरि धार नाउं मंदाकिनि| जो सब पातक पोतक डाकिनि||3||
अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं| करहिं जोग जप तप तन कसहीं||
चलहु सफल श्रम सब कर करहू| राम देहु गौरव गिरिबरहू||4||

शब्दार्थ: तासु- उसके, भानुकुलनायक- सूर्यकुल के स्वामी, सुपासू- सुविधा, अत्रिप्रिया- अनसूया, पातक- पाप रूपी, पोतक- बालक, डाकिनी- डाइन, नाउं- नाम,

संदर्भ: पूर्ववत

प्रसंग: इस **प्रसंग** में महर्षि वाल्मीकि समय के अनुसार सुखदायक आश्रम बताते हुए चित्रकूट की महिमा का वर्णन राम से करते हैं|

व्याख्या: इस तरह विविध प्रकार से निवास स्थान दिखाते हुए महर्षि राम से पुनः कहते हैं कि हे राम! वैसे मनुष्य जिनके मन में कुछ पाने की कोई इच्छा शेष न हो और जो आपसे सहज प्रेम करते हों, आप उनके मन में निरंतर रहिए क्योंकि वह आपका अपना घर है| मुनि के प्रेमयुक्त वचन राम के मन को भी अच्छे लगे| यहाँ तुलसीदास ने निःस्वार्थ प्रेम की प्रतिष्ठा की है| फिर इस समय के अनुकूल सुखदायक निवास स्थान के बारे में बतलाते हुए मुनिवर ने राम से कहा- हे भानुकुलनायक, चित्रकूट ही उचित निवास स्थान है| क्योंकि यह पर्वत मनोरम और सुविधा संपन्न है| वहाँ सुंदर वन भी है जिसमें हाथी, सिंह, हिरन और नाना प्रकार के पक्षी विहार करते हैं| पुराणों द्वारा प्रशंसित पवित्र नदी मंदाकिनी भी वहाँ है| यह गंगा की एक धारा है जिसे धरती पर लाने का श्रेय अत्रिप्रिया अनसूया के तपबल को जाता है| वह नदी पापरूपी बालकों को खा जानेवाली डाकिनी है| उस नदी के स्मरण, दर्शन या स्पर्श मात्र से पापसमूह नष्ट हो जाते हैं| वहाँ ऋषि अत्रि सहित श्रेष्ठ मुनिगण योग, जप-तप करते हुए साधना में लीन रहते हैं| हे राम! आप वहाँ पधारकर उन सबके श्रम को सफल कीजिए और चित्रकूट पर्वत को भी गौरव दीजिए|

बोध प्रश्न

- चित्रकूट सुखदायक निवास किस प्रकार से है?

दो 0- चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ|
आइ नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाइ||132||
रघुबर कहेउ लखन भल घाटू| करहु कतहुं अब ठाहर ठाटू||
लखन दीख पय उतर करारा| चहुँ दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा||1||
नदी पनच सर सम दम दाना| सकल कलुष कलि साउज नाना|
चित्रकूट जनु अचल अहेरी| चुकइ न घात मार मुठभेरी||2||
अस कहि लखन ठाउं देखरावा| थलु बिलोकि रघुबर सुखु पावा||
रमेउ राम मनु देवन्ह जाना| चले सहित सुर थपति प्रधाना||3||
कोल किरात बेष सब आए| रचे परन तृन सदन सुहाए||
बरनि न जाहिं मंजु दुइ साला| एक ललित लघु एक बिसाला||4||

शब्दार्थ: अमित- अपरिमित, महामुनि- वाल्मीकि के लिए प्रयुक्त, भल-अच्छा, ठाहर ठाटू- ठहरने की व्यवस्था करना, पय- पयस्विनी, नदी-मंदाकिनी, अचल अहेरी- अचल शिकारी जिसका निशाना कभी नहीं चूकता है, सुर थपति प्रधाना- देवताओं के प्रधान थवई (मकान बनाने वाले, विश्वकर्मा)

संदर्भ: पूर्ववत

प्रसंग: प्रस्तुत अंश में पर्णकुटी निर्माण का वर्णन किया गया है| मंदाकिनी नदी के मनोरम तट पर राम ने लक्ष्मण से कहा कि यहीं कहीं ठहरने की व्यवस्था करो| पर्णकुटी के निर्माण हेतु देवगण विविध रूप में वहाँ आकर सहयोग करने लगे|

व्याख्या: महर्षि वाल्मीकि ने राम से चित्रकूट की महिमा को बहुत प्रकार से कहा| उसे सुनने के बाद दोनों भाइयों ने सीता सहित मंदाकिनी नदी में स्नान किया| रघुबर ने लखन से कहा कि यह घाट अच्छा लग रहा है अतः यहीं कहीं रहने की व्यवस्था की जाए| लखन ने भी सहमति बनाते हुए उस स्थान का उत्तम वर्णन किया| उन्होंने पयस्विनी नदी के उत्तर के ऊँचे किनारे की ओर देखते हुए कहा कि इसके चारों ओर धनुष के आकार का नाला बना हुआ है| यह मंदाकिनी नदी उस धनुष की डोरी है| शम, दम और दान उसके बाण हैं जिसने कलयुग के पापरूपी हिंसक पशुओं पर निशाना साध रखा है| शम, दम और दान से मनुष्य अपने पापों का नाश कर सकता है| चित्रकूट वह अचल शिकारी है जिसका निशाना कभी नहीं चूकता| चित्रकूट पापनाशक है| उस स्थल को देखकर राम ने सुख पाया| जब देवताओं को यह ज्ञात हुआ कि राम का मन यहाँ रम गया है तब वे विश्वकर्मा को साथ लेकर चित्रकूट की ओर चले| सभी देवता कोल-किरात के वेश में आए एवं दिव्य पत्तों और घासों से उन्होंने दो पर्णकुटी का निर्माण किया| उन्होंने ऐसी दो सुंदर कुटियाँ बनाई जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता| दोनों में से एक छोटी सी सुंदर और दूसरी बड़ी थी|

यहाँ राम का दिव्य स्वरूप प्रकट रूप में प्रस्तुत किया गया है| उनकी सेवा को लालायित देवगण चित्रकूट में कोल-किरात के वेश में आकर अपने प्रभु राम के लिए सुखद आवास का निर्माण कर रहे हैं|

बोध प्रश्न

- पर्णकुटी के निर्माण का वर्णन करें|

दो0- लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत|
सोह मदनु मुनि बेष जनु रति रितुराज समेत||133||
अमर नाग किंनर दिसिपाला| चित्रकूट आए तेहि काला||
राम प्रनामु कीन्ह सब काहू| मुदित देव लहि लोचन लाहू||1||
बरषि सुमन कह देव समाजू| नाथ सनाथ भए हम आजू||
करि बिनती दुख दुसह सुनाए| हरषित निज निज सदन सिधाए||2||
चित्रकूट रघुनंदनु छाए| समाचार सुनि सुनि मुनि आए||
आवत देखि मुदित मुनिबृंदा| कीन्ह दंडवत रघुकुल चंदा||3||
मुनि रघुबरहि लाइ उर लेहीं| सुफल होन हित आसिष देहीं||
सिय सौमित्रि राम छबि देखहिं| साधन सकल सफल करि लेखहिं||4||

शब्दार्थ: रुचिर-सुंदर, दिसिपाला- दिक्पाल, मुदित- आनन्दित होना, सुफल- सफल,सौमित्रि- लक्ष्मण

संदर्भ: पूर्ववत

प्रसंग: चित्रकूट पर्वत पर राम, सीता और लक्ष्मण अपनी पर्णकुटी में शोभित हो रहे हैं| यह समाचार पाकर विविध लोक के प्राणी राम से मिलने आ रहे हैं|

व्याख्या: लखन और सीता के साथ राम उस सुंदर घर में इस प्रकार विराजमान हैं मानो मुनिवेश में कामदेव रति और ऋतुराज वसंत के साथ सुशोभित हो रहे हैं| देवता, नाग, किन्नर और दिक्पाल उस समय चित्रकूट में आए| राम ने सभी को प्रणाम किया| राम के दर्शन से देवगण लोचन-लाभ पाकर आनंदित हुए| उनकी प्रसन्नता का पारावार न रहा| देवसमाज ने पुष्पवर्षा करते हुए कहा कि हे नाथ आपका दर्शन पाकर हम आज सनाथ हुए| विविध प्रकार से विनती करके उन्होंने अपने कष्टों को सुनाया तथा राम से अभयदान पाकर हर्षित होकर अपने-अपने निवास स्थल की ओर चले गए| राम के चित्रकूट में बस जाने का समाचार सुनकर मुनिगण वहाँ प्रसन्न मन से भेंट करने के लिए आने लगे| रघुकुल के चाँद श्रीराम ने उन मुनियों के समूह को दंडवत नमस्कार किया| मुनिगण ने राम को हृदय से लगा लिया तथा सफल होने के लिए आशीर्वाद देने लगे| वे लोग सीता, लक्ष्मण और राम की छवि को देखकर अपनी साधना को सफल हुआ मान रहे हैं|

जीवन के सारे धार्मिक कृत्य जिनके दर्शन की लालसा में प्राणी करता है, उन प्रभु राम का साक्षात दर्शन पाकर मुनि, देव, नाग, किन्नर और दिक्पाल सभी धन्य हो गए| राम के बल से अब उन्हें असुरों के त्रास का भी भय न रहा|

बोध प्रश्न

- लोचन लाभ से आप क्या समझते हैं?

दो0 – जथाजोग सनमानि प्रभु बिदा किए मुनिबृंद|
करहिं जोग जप जाग तप निज आश्रमन्हि सुछंद||134||

यह सुधि कोल किरातन्ह पाई| हरषे जनु नव निधि घर आई||
कंद मूल फल भरि भरि दोना| चले रंक जनु लूटन सोना||1||
तिन्ह महँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता| अपर तिन्हहि पूँछहिं मगु जाता||
कहत सुनत रघुबीर निकाई| आई सबन्हि देखे रघुराई||2||
करहिं जोहारु भेंट धरि आगे| प्रभुहिं बिलोकहिं अति अनुरागे||
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े| पुलक सरीर नयन जल बाढ़े||3||
राम सनेह मगन सब जाने| कहि प्रिय बचन सकल सनमाने||
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी| बचन बिनीत कहहिं कर जोरी||4||

शब्दार्थ: अपर- दूसरे लोग, निकाई- सुंदरता, ठाढ़े- खड़े

संदर्भ: पूर्ववत

प्रसंग: देवगण और मुनिगण के बाद अब राम के चित्रकूट में बसने का समाचार वनवासियों ने पाया| वे लोग राम से मिलने के लिए बड़ी आतुरता और प्रेम के साथ भेंट लेकर आते हैं|

व्याख्या: मुनिमंडली का यथायोग्य सम्मान करके श्रीराम ने उन्हें विदा किया| अपने-अपने आश्रम में वे सभी स्वच्छंदता के साथ योग, जप,यज्ञ और तप करने लगे| श्रीराम के आगमन का समाचार जब कोलों और भीलों ने पाया तब वे ऐसे प्रसन्न हुए मानो नव निधि उनके घर पर आ गई हो| वे दोना में कंद-मूल और फल भरकर इस प्रकार चले मानो दरिद्र सोना लूटने चले हों| उनमें से जिन लोगों ने पहले उन दोनों भाइयों को देखा था, दूसरे लोग उनसे उनके बारे में रास्ते में चलते हुए पूछ रहे थे| इस प्रकार श्रीराम की सुंदरता को परस्पर कहते-सुनते हुए सभी ने उनके दर्शन किए| श्रीराम के आगे भेंट रखकर सभी झुककर उनका अभिवादन करते हैं और परमप्रेम के साथ उनका दर्शन करते हैं| दर्शन में मग्न वे कोल और भील यहाँ-वहाँ इस तरह खड़े हैं मानो चित्रलिखे हों| उनका मन श्रीराम के रूप पर मुग्ध है, शरीर पुलकित है और आँखों से प्रेमजल की वर्षा हो रही है| उनकी प्रेममग्न अवस्था को भलीभांति पहचानकर, राम ने अपने प्रिय वचन से उनका सत्कार किया| उन सभी ने बार-बार उनका जोहार किया और हाथ जोड़कर विनती किया|

दो 0- अब हम नाथ सनाथ सब भए देखि प्रभु पाय|
भाग हमारें आगमनु राउर कोसलराय||135||
धन्य भूमि बन पंथ पहारा| जहँ जहँ नाथ पाउ तुम्ह धारा||
धन्य बिहग मृग काननचारी| सफल जनम भए तुम्हहि निहारी||1||
हम सब धन्य सहित परिवारा| दीख दरसु भरि नयन तुम्हारा||
कीन्ह बासु भल ठाउं बिचारी| इहाँ सकल रितु रहब सुखारी||2||
हम सब भाँति करब सेवकाई| करि केहरि अहि बाघ बराई||
बन बेहड़ गिरि कंदर खोहा| सब हमार प्रभु पग-पग जोहा||3||
तहँ तहँ तुम्हहि अहेर खेलाउब| सर निर्झर जलठाउं देखाउब||
हम सेवक परिवार समेता| नाथ न सकुचब आयसु देता||4||

शब्दार्थ: राउर- आपका, भल- अच्छी, पाउ- पाँव, अहि- सर्प, बराई- बचाकर, जोहा- देखा हुआ,

संदर्भ: पूर्ववत

प्रसंग: राम से मिलने के बाद अपनी प्रेमदशा को संभाल कर, सुस्थिर चित्त से वनवासी कहते हैं कि वन का हर कोना उनका देखा हुआ है| इससे आपको बड़ी सुविधा रहेगी| हम सब परिवारसमेत हर प्रकार से आपकी सेवा में तत्पर रहेंगे|

व्याख्या: कोल-किरात ने राम के प्रति विनती करते हुए कहा कि हे नाथ, आपके चरण को देखकर हम सनाथ हो गए| हमारे भाग्य से ही आपका यहाँ आगमन हुआ है| हे नाथ! आपने जहाँ-जहाँ अपने चरण रखे हैं वे भूमि, वन, रास्ता और पहाड़ धन्य हैं| वन में विचरण करनेवाले पशु और पक्षी भी धन्य हैं| उनका जन्म लेना आपको निहारकर सफल हो गया| हम सभी भी परिवार के साथ धन्य हैं क्योंकि हमने आपका दर्शन नयन भरकर किया है| आपने विचार करके रहने का अच्छा स्थान चुना है| यहाँ हर ऋतु में आप सुखी रहेंगे| हम सब हर प्रकार से आपकी सेवा करेंगे| आपको हाथी, सिंह, साँप और बाघ से बचाकर रखेंगे| यहाँ के बीहड़ वन, पहाड़, गुफा और खोह का पग-पग हमारा देखा हुआ है| उन-उन स्थानों में हम आपको शिकार खेलायेंगे| वहाँ के तालाब, झरने और जलाशय को दिखाएँगे| हे नाथ! हम परिवार समेत आपके सेवक हैं इसलिए हमें आज्ञा देने में संकोच मत कीजिएगा|

कोल-किरात राम के वन में आगमन से स्वयं को धन्य मान रहे हैं| फिर वे राम के लिए सारी सुविधा उपलब्ध कराने की बात भी कर रहे हैं| प्रभु समर्थ हैं पर उनकी आवश्यकता को अपने सामर्थ्य भर पूरा करने के लिए वन के वासी तत्पर हैं| यह इनका अपनापन और आतिथ्य सत्कार है| इसमें कृत्रिमता का लेशमात्र भी नहीं है| यह मनोदशा भारतीय संस्कृति का प्रतिबिंब है|

बोध प्रश्न

- राम के प्रति वनवासियों के स्नेह का वर्णन कीजिए|

दो0 – बेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन|
बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बैन||136||
रामहि केवल प्रेमु पिआरा| जानि लेउ जो जाननिहारा||
राम सकल बनचर तब तोषे| कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे||1||
बिदा किए सिर नाइ सिधाए| प्रभु गुन कहत सुनत घर आए||
एहि बिधि सिय समेत दोउ भाई| बसहिं बिपिन सुर मुनि सुखदाई||2||
जब तें आइ रहे रघुनायकु| तब तें भयउ बनु मंगलदायकु||
फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना| मंजु बलित बर बेलि बिताना||3||
सुरतरु सरिस सुभायँ सुहाए| मनहुं बिबुध बन परिहरि आए ||
गुंज मंजुतर मधुकर श्रेनी| त्रिबिध बयारि बहइ सुख देनी||4||

शब्दार्थ: ऐन- धाम, बैन- वाणी, वचन, परिपोषे- पूर्ण, बनचर- वन में विचरण करनेवाले, सिधाए- चले, सुरतरु- कल्पवृक्ष, बिबुध वन- नंदन वन देवताओं के वन, मंजु- सुंदर, गुंज- गुंजार करना

संदर्भ: पूर्ववत

प्रसंग: यहाँ बताया गया है कि 'प्रेम' राम को सबसे अधिक प्रिय है| राम के आने से वन के सौंदर्य में वृद्धि हुई|

व्याख्या: जो वेदों के वचन और मुनिवृंद के लिए भी आसानी से सुलभ नहीं हैं, वे करुणा के धाम प्रभु इन भीलों की बातों को इस प्रकार सुन रहे हैं मानो पिता बालक के वचन को सुन रहा हो| जो लोग जानना चाहते हैं, वे जान लें कि राम को केवल प्रेम ही प्रिय है| राम ने सभी वनवासियों को अपने कोमल और प्रेममय वचन से संतुष्ट करके, उन्हें विदा किया| वे सिर नवाकर, प्रभु का गुणगान करते हुए अपने घर आए| इस प्रकार सुरगण और मुनिगण को सुख देनेवाले दोनों भाई सीता सहित वन में निवास करने लगे| जब से राम वन में आकर रहने लगे तब से वन मंगलदायक हो गया| बहुत प्रकार के फल-फूल से वृक्ष लदे हुए हैं| उनपर सुंदर लताएँ लिपटी हुई ऐसी प्रतीत हो रही हैं मानो मंडप तना हुआ हो| वृक्ष कल्पवृक्ष की भांति शोभ रहे हैं| ऐसा लगता है मानो नंदन वन को छोड़कर आए हों| पंक्तिबद्ध भौरों का सुंदर गुंजार मन को मोह रहा है| वन में सुगंध देनेवाली शीतल, मंद और सुगंधित हवा बह रही है|

आवोहवा साधारणतः व्यक्ति को प्रभावित करती है परंतु यह राम के गुणों का प्रभाव ही है; जिसके संसर्ग से वन और भी मंगलदायक हो गया| यह भी कहा जा सकता है कि परम शक्ति के स्वागत में प्रकृति ने अपनी सारी सुंदरता और सारा ऐश्वर्य बिछा कर रख दिया|

बोध प्रश्न

- वन की शोभा का वर्णन कीजिए|

दो0 – नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्क चकोर|
भांति भाँति बोलहिं बिहग श्रवन सुखद चित चोर||137||
करि केहरि कपि कोल कुरंगा| बिगतबैर बिचरहिं सब संगा||
फिरत अहेर राम छबि देखी| होहिं मुदित मृग बृंद बिसेषी||1||
बिबुध बिपिन जहँ लगि जग माहीं| देखि रामबनु सकल सिहाहीं||
सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या| मेकलसुता गोदावरि धन्या||2||
सब सर सिंधु नदीं नद नाना| मंदाकिनि कर करहिं बखाना||
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू| मंदर मेरु सकल सुरबासू||3||
सैल हिमाचल आदिक जेते| चित्रकूट जसु गावहिं तेते||
बिधि मुदित मन सुखु न समाई| श्रम बिनु बिपुल बड़ाई पाई||4||

शब्दार्थ: नीलकंठ- एक प्रकार का पक्षी, कलकंठ- कोयल, सुक- तोता, चातक- पपीहा, चक्क- चकवा, करि- हाथी, केहरि- सिंह, कोल- सूअर, बिगत- छोड़कर, अहेर- शिकारी, मृग बृंद- पशुओं के समूह, सरसइ- सरस्वती, सुरसरि- गंगा, दिनकर कन्या- यमुना, मेकलसुता- नर्मदा, बिंधि- विंध्याचल

संदर्भ: पूर्ववत

प्रसंग: यहाँ चित्रकूट पर्वत, वहाँ के वन (रामवन) और मंदाकिनी नदी को सभी पर्वतों, वनों और नदियों द्वारा श्रेष्ठ बताया जा रहा है| रामवन में विचरते हुए वन्यजीवों का वर्णन किया गया है|

व्याख्या: नीलकंठ, कोयल, तोता, पपीहा, चकवा और चकोर इत्यादि पक्षी तरह-तरह की बोलियाँ बोल रहे हैं| उनकी बोली सुनने में सुखद और चित्त को चुराने वाली हैं| आपसी वैर छोड़कर हाथी, सिंह, बंदर, सूअर और हिरन साथ-साथ विचरण कर रहे हैं| शिकार के लिए विचरते हुए राम की छवि को देखकर वे पशुगण विशेष रूप से आनंदित हो रहे हैं| श्रीराम के वन को देखकर सभी देवताओं के वन भी सिहा रहे हैं| गंगा, सरस्वती, यमुना, नर्मदा, गोदावरी आदि नदियाँ धन्य हैं| सारे तालाब, सागर, नदी और विविध नद मंदाकिनी की प्रशंसा करते हैं| देवताओं के निवास स्थान (उदयाचल, अस्ताचल, कैलास, मंदराचल, सुमेरु और हिमालय) चित्रकूट का यश गाते हैं| विंध्याचल बहुत प्रसन्न है क्योंकि उसने बिना परिश्रम के ही बड़ाई पा ली है| अतः उसके मन में सुख समा नहीं रहा है|
समाहार यह कि राम की उपस्थिति मनमोहक, यश और दिव्यता प्रदाता है| इनकी मंगलकारी छवि के सम्मुख सारे कुभाव भाव में परिणत हो जाते हैं| पशुवृंद भी परस्पर वैर त्याग कर साथ रहते हैं|

दो 0- चित्रकूट के बिहग मृग बेलि बिटप तृन जाति|
पुन्य पुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति||138||
नयनवंत रघुबरहि बिलोकी| पाइ जनम फल होहिं बिसोकी||
परसि चरन रज अचर सुखारी| भए परम पद के अधिकारी||1||
सो बनु सैलु सुभायँ सुहावन| मंगलमय अति पावन पावन||
महिमा कहिअ कवनि बिधि तासू| सुखसागर जहाँ कीन्ह निवासू||2||
पय पयोधि तजि अवध बिहाई| जहँ सिय लखनु रामु रहे आई||
कहि न सकहिं सुषमा जसि कानन| जौं सत सहस होहि सहसानन||3||
सो मैं बरनि कहौं बिधि केहीं| डाबर कमठ कि मंदर लेहीं||
सेवहिं लखनु करम मन बानी| जाइ न सीलु सनेहु बखानी||4||

शब्दार्थ: नयनवंत- आँखोंवाले जीव, बिसोकी- शोकरहित, परसि- छू कर, सुभायँ- स्वाभाविक, पय पयोधि- क्षीरसागर, सहसानन- हजार मुख वाले शेषजी, बरनि- वर्णन करना, डाबर- तालाब/पोखर, कमठ- कछुआ,
संदर्भ: पूर्ववत
प्रसंग: देवतागण चित्रकूट के कण-कण के भाग्य की सराहना कर रहे हैं, जिन्हें राम का सानिध्य प्राप्त हो रहा है|
व्याख्या: दिन-रात देवतागण ऐसा कहते हैं कि चित्रकूट के पक्षी, पशु, लता, पेड़ और घास आदि जातियाँ सब पुण्य-पुंज और धन्य हैं| आँखोंवाले जीव रघुबर की छवि को देखकर शोकरहित हो जाते हैं| उन्हें उनका जन्मफल मिल जाता है| जो स्थिर जीव हैं, अचर हैं वे प्रभु के चरणों की धूल का स्पर्श पाकर सुखी होते हैं| इस प्रकार सभी मोक्ष के अधिकारी हो गए हैं| वह वन और पहाड़ स्वाभाविक रूप से ही सुंदर, मंगलमय तथा परम पवित्र को भी पवित्र करनेवाला है| जहाँ सुख के सागर राम का निवास स्थान है, उसकी महिमा किस प्रकार कही जा सकती है| उस वन की

शोभा कोई कैसे कह सकता है जहाँ क्षीरसागर और अयोध्या को छोड़कर, सीता और लक्ष्मण के साथ श्रीराम निवास करते हैं| हजार मुख वाले सौ हजार (लाख) शेषनाग भी उस शोभा का वर्णन नहीं कर सकते हैं| उसकी शोभा का वर्णन मैं कैसे कर सकता हूँ? कहीं तालाब का कछुआ भी मंदराचल उठा सकता है? समुद्र मंथन के समय विष्णु ने कच्छप अवतार लेकर मंदराचल को अपनी पीठ पर धारण किया था| लक्ष्मण कर्म, मन और वाणी से श्रीराम की सेवा करते हैं| उनके शील और स्नेह का बखान नहीं किया जा सकता|

आप देख रहे हैं कि चित्रकूट का महत्व क्षीरसागर और अयोध्या से भी अधिक हो गया है| स्पष्ट है कि महत्व किसी स्थान विशेष का नहीं है| महत्व है राम का| राम के दर्शन का! राम के स्पर्श का! राम के सानिध्य का! राम हैं तो उल्लास और हर्ष है| राम के बिना सारी सृष्टि निष्चेष्ट और प्रभाहीन प्रतीत होती है|

बोध प्रश्न

- राम के आने से अचर जीव कैसे सुखी होते हैं?

दो 0- छिनु छिनु लखि सिय राम पद जानि आपु पर नेहु|
करत न सपनेहुँ लखनु चितु बंधु मातु पितु गेहु|| 139||
राम संग सिय रहति सुखारी| पुर परिजन गृह सुरति बिसारी||
छिनु छिनु पिय बिधु बदनु निहारी| प्रमुदित मनहुं चकोर कुमारी||1||
नाह नेहु नित बढ़त बिलोकी| हरषित रहति दिवस जिमि कोकी||
सिय मनु राम चरन अनुरागा| अवध सहस सम बनु प्रिय लागा||2||
परनकुटी प्रिय प्रियतम संगा| प्रिय परिवारु कुरंग बिहंगा||
सासु ससुर सम मुनितिय मुनिबर| असनु अमिय सम कंद मूल फर||3||
नाथ साथ सांथरी सुहाई| मयन सयन सय सम सुखदाई||
लोकप होहिं बिलोकत जासू| तेहि कि मोहि सक बिषय बिलासू||4||

शब्दार्थ : चितु- याद करना, परिजन- परिवार के लोग, नाह- स्वामी, पति, कोकी- चकवी, कुरंग- मृग, असनु- आहार, अमिअ- अमृत, साँथरी- कुश और पत्तों की सेज, मयन- कामदेव, सयन- सेज, तेहि- उनको

संदर्भ: पूर्ववत

प्रसंग: वन में भी राम के साथ सीता और लक्ष्मण प्रसन्न हैं| राम के स्नेह में मग्न रहते हुए वे भूलवश भी घर-परिवार को याद नहीं करते हैं| वनवासी एवं वन्यजीवों के साथ सारे संबंध जोड़कर, वे प्रसन्न हैं|

व्याख्या: लक्ष्मण क्षण-क्षण सीता राम के चरण का दर्शन करते हैं| स्वयं पर उनका स्नेह जानकर वे स्वप्न में भी भाइयों, माता-पिता एवं घर की याद नहीं करते हैं| अयोध्या सहित परिवार के लोगों एवं घर की सुधि भूलकर सीता भी राम के साथ सुखपूर्वक रह रही हैं| जिस प्रकार चकोरी चंद्रमा को देखकर प्रसन्न रहती है उसी प्रकार सीता भी श्रीराम का दर्शन हर क्षण पाकर प्रसन्न हैं| अपने प्रति नित राम का प्रेम बढ़ता हुआ देखकर वे उसी प्रकार हर्षित हैं जिस प्रकार दिन में चकवी| सीता का राम के चरणों में अनुराग होने से उन्हें यह वन हजारों अयोध्या के समान प्रिय

लग रहा है| प्रियतम राम के संग पर्णकुटी उन्हें प्रिय लग रही है| पशु-पक्षी प्रिय परिवारजन हैं| मुनि और उनकी स्त्री ही ससुर और सास के समान हैं| कंद-मूल और फल अमृत के समान हैं| पति के साथ कुश और पत्तों की सेज सैकड़ों कामदेव की सेजों के समान सुख देनेवाली हैं| जिनकी कृपादृष्टि से सामान्य जीव भी लोकपाल के सदृश हो जाते हैं उन्हें भला भोग-विलास क्या मोहित कर सकेंगे!

यहाँ प्रेम और आसक्ति का विषय सीता-राम और लक्ष्मण का परस्पर साथ है| वन में उनके सुखी रहने का कारण भी यही है| भौतिक भोग-विलास आंतरिक सुख के साधन नहीं होते| वन में भाव संबंध का सुंदर संसार बसाकर, उसका प्रेमपूर्ण निर्वाह करती सीता, राम का संग पाकर सुखी हैं| प्रतिकूलता में अपने लिए अनुकूलता ढूंढना ही कला है|

बोध प्रश्न

- 'तेहि कि मोहि सक बिषय बिलासू' का अर्थ स्पष्ट कीजिए|

दो 0- सुमिरत रामहि तजहिं जन तृन सम बिषय बिलासु|
रामप्रिया जग जननि सिय कछु न आचरजु तासु||140||
सीय लखन जेहि बिधि सुखु लहहीं| सोइ रघुनाथ करहिं सोइ कहहीं||
कहहिं पुरातन कथा कहानी| सुनहिं लखनु सिय अति सुखु मानी||1||
जब जब राम अवध सुधि करहीं| तब तब बारि बिलोचन भरहीं||
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई| भरत सनेहु सीलु सेवकाई||2||
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी| धीरजु धरहिं कुसमउ बिचारी||
लखि सिय लखनु बिकल होइ जाहीं| जिमि पुरुषहिं अनुसर परिछाहीं||3||
प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदनु| धीर कृपाल भगत उर चंदनु||
लगे कहन कछु कथा पुनीता| सुनि सुखु लहहिं लखनु अरु सीता||4||

शब्दार्थ : बिषय- भोग, पुनीता- पवित्र,

संदर्भ: पूर्ववत

प्रसंग: परिवार के वियोग में राम की विकलता का वर्णन किया गया है| उनके दुख से सीता और लक्ष्मण भी दुखी हो जाते हैं| परस्पर एक-दूसरे की विकलता को दूर करने का उपाय भी करते हैं|

व्याख्या: राम का सुमिरन करके तिनके के समान लोग विषय विलास को छोड़ देते हैं| तात्पर्य यह है कि जिस पर राम की कृपा होती है वह विषयों के झमेले में नहीं पड़ता| जगजननी और रामप्रिया सीता का विषय विमुख होने में कोई आश्चर्य नहीं है| श्रीराम वही करते हैं जिससे सीता और लक्ष्मण को सुख मिले| वे प्राचीन कथा और कहानियों को कहते हैं जिन्हें सुनकर सीता और लक्ष्मण बहुत सुख पाते हैं| राम जब-जब अयोध्या की याद करते हैं तब-तब उनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं| माता-पिता, परिवारजन, भाइयों तथा भरत के स्नेह, शील और सेवा को याद करके राम दुखी हो जाते हैं| परंतु खराब समय जानकर धीरज धर लेते हैं| उनकी विकलता को देखकर सीता और लक्ष्मण ठीक उसी प्रकार विकल हो जाते हैं जिस प्रकार मनुष्य की परछाई मनुष्य के समान ही प्रक्रम करती है| प्रिया और भाई की यह दशा देखकर धीर, कृपालु और भक्तों के हृदय को शीतल करनेवाले चंदनस्वरूप राम कुछ पवित्र कथा कहने लगे जिसे सुनकर लक्ष्मण

और सीता ने सुख माना| विवेकवान मनुष्य भोग-विलास को जीवन का लक्ष्य नहीं बनाता| वह संबंध जोड़ता है| स्नेह बंधन का निर्वाह करता है|

बोध प्रश्न

- परिवार की सुधि करके राम क्यों विकल हो जाते हैं?

दो 0- रामु लखन सीता सहित सोहत परन निकेत|
जिमि बासव बस अमरपुर सची जयंत समेत||141||
जोगवहिं प्रभु सिय लखनहिं कैसें| पलक बिलोचन गोलक जैसें||
सेवहिं लखनु सीय रघुबीरहि| जिमि अबिबेकी पुरुष सरीरहि||1||
एहि बिधि प्रभु बन बसहिं सुखारी| खग मृग सुर तापस हितकारी||
कहेउँ राम बन गवनु सुहावा| सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा||2||
फिरेउ निषादु प्रभुहि पहुँचाई| सचिव सहित रथ देखेसि आई||
मंत्री बिकल बिलोकि निषादू| कहि न जाइ जस भयउ बिषादू||3||
राम राम सिय लखन पुकारी| परेउ धरनितल ब्याकुल भारी||
देखि दखिन दिसि हय हिहिनाहीं| जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं||4||

शब्दार्थ : बासब- रहना, भयउ- हुआ, हिहिनाहीं- घोड़े की आवाज/ हिनहिनाना

संदर्भ: पूर्ववत

प्रसंग: राम को वन में पहुँचाकर निषाद लौट आए हैं| निषाद को राम के बिना देखकर सुमंत्र और रथ के घोड़ों की व्याकुलता का वर्णन यहाँ किया गया है|

व्याख्या: उस पर्णकुटी में राम लक्ष्मण और सीता के साथ उसी प्रकार शोभित हो रहे हैं जिस प्रकार अमरावती में इंद्र, शची और जयंत के साथ रहते हैं| जिस तरह पलकें आँखों के गोलकों की रक्षा करती हैं उसी प्रकार राम, सीता और लक्ष्मण को संभालते हैं| जिस तरह से अज्ञानी पुरुष अपने शरीर की सेवा करता है उसी तरह से सीता और लक्ष्मण, रघुबीर की सेवा करते हैं| इस प्रकार पशु, पक्षी, देवता और तपस्वियों के हितकारक प्रभु वन में सुख से रहते हैं| तुलसीदास ने राम का सुहावन वनगमन सुनाया| अब आगे वे सुमंत्र के अयोध्या आने की कथा कहते हैं| निषादराज प्रभु राम को पहुँचाकर जब लौटे तब उन्होंने मंत्री सुमंत्र सहित रथ को देखा| सुमंत्र की व्याकुलता को देखकर निषाद को जैसा दुख हुआ वह नहीं कहा जा सकता| निषाद को देखते ही सुमंत्र राम, सीता और लक्ष्मण को पुकारते हुए व्याकुल होकर धरती पर गिर पड़े| घोड़े दक्षिण दिशा की ओर देखकर हिनहिनाने लगे मानो बिना पंख के पक्षी अकुला रहे हो| पशुओं की यह दशा करुण भाव की तीव्रता को बढ़ा रही है|

बोध प्रश्न

- घोड़े दक्षिण दिशा की ओर देखकर क्यों हिनहिनाते हैं?

दो 0- नहिं तृन चरहिं न पिअहिं जलु मोचहिं लोचन बारि|
ब्याकुल भए निषाद सब रघुबर बाजि निहारि||142||
धरि धीरजु तब कहइ निषादू| अब सुमंत्र परिहरहु बिषादू||
तुम्ह पंडित परमारथ ग्याता| धरहु धीर लखि बिमुख बिधाता||1||

बिबिध कथा कहि कहि मृदु बानी| रथ बैठारेउ बरबस आनी||
सोक सिथिल रथु सकइ न हाँकी| रघुबर बिरह पीर उर बाँकी||2||
चरफराहिं मग चलहिं न घोरे| बन मृग मनहुं आनि रथ जोरे||
अढुकि परहिं फिरि हेरहिं पीछें| राम बियोगि बिकल दुख तीछें||3||
जो कह राम लखनु बैदेही| हिंकरि हिंकरि हित हेरहिं तेही||
बाजि बिरह गति कहि किमि जाती| बिनु मनि फनिक बिकल जेहि भाँती||4||

शब्दार्थ: बारि- जल, मोचहिं- बहाना, बाजि- घोड़ा, चरफराहिं- तड़फड़ाना, अढुकि- लड़खड़ाना, हिंकरि- हिकर कर, किमि- कैसे, फनिक- साँप

संदर्भ: पूर्ववत

प्रसंग: सुमंत्र और रथ के घोड़ों की विरह वेदना का वर्णन किया गया है|

व्याख्या: राम के विरह में व्याकुल घोड़े न घास चरते हैं न जल पीते हैं| वे अपनी आँखों से केवल जल बहा रहे हैं| रघुबर के घोड़ों की इस स्थिति को देखकर सभी निषाद व्याकुल हो गए| तब धीरज धरकर निषादराज ने सुमंत्र से दुख से बाहर निकलने के लिए कहा| उन्होंने कहा कि आप पंडित हैं और परमार्थ के ज्ञाता हैं| इस समय विधाता को प्रतिकूल जानकर धीरज धारण कीजिए| अपनी मृदु वाणी से बहुत सी कथा कहकर जबरन निषाद ने सुमंत्र को रथ पर लाकर बैठाया| हृदय में रघुबर विरह की तीव्र वेदना से सुमंत्र शोक संतप्त हैं अतः उनके अंग शिथिल हो गए हैं| इस समय वे रथ हांकने में अक्षम हो गए हैं| घोड़े भी तड़फड़ाते हैं और रास्ते से विचलित हो जाते हैं|ऐसा प्रतीत होता है मानो जंगली पशु को रथ में जोत दिया गया हो| कभी वे पीछे देखते हैं तो कभी ठोकर खाकर गिड़ पड़ते हैं| राम के वियोग में वे तीक्ष्ण दुख से व्याकुल हैं| जो कोई राम-लखन-वैदेही कहता है, वे हिकरकर उसे देखने लगते हैं| घोड़ों की विरहदशा कैसे कही जा सकती है! उनकी विकलता ठीक वैसी है जैसे बिना मणि के साँप की व्याकुलता|

राम का व्यवहार सबके साथ किस प्रकार का रहा होगा कि पशु भी उनके वियोग में विकल हैं| केवल भगवान होने से कोई प्रेम का पात्र नहीं हो जाता| तभी भगवान को भी केवल प्रेम की अपेक्षा होती है| यहाँ सभी राम के प्रेमी हैं| राम में वह कौन-सा गुण है जिसने सबको उनकी ओर आकृष्ट किया?

बोध प्रश्न

- घोड़ों की व्याकुलता का वर्णन कीजिए|

दो 0- भयउ निषादु बिषादबस देखत सचिव तुरंग|
बोलि सुसेवक चारि तब दिए सारथी संग||143||
गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई| बिरहु बिषादु बरनि नहिं जाई||
चले अवध लेइ रथहि निषादा| होहिं छनहिं छन मगन बिषादा||1||
सोच सुमंत्र बिकल दुख दीना| धिग जीवन रघुबीर बिहीना||
रहिहि न अंतहुँ अधम सरीरु| जसु न लहेउ बिछुरत रघुबीरू||2||
भए अजस अघ भाजन प्राना| कवन हेतु नहिं करत पयाना||
अहह मंद मनु अवसर चूका| अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका||3||

मीजि हाथ सिरु धुनि पछिताई| मनहुं कृपन धन रासि गँवाई||
बिरिद बाँधि बर बीरु कहाई| चलेउ समर जनु सुभट पराई||4||

शब्दार्थ: तुरंग- घोड़ा, विषाद-, सारथी-सुमंत्रजी, जसु- यश, धिग- धिक्कार है, पयाना- कूच करना/ निकलना, अजस-अपयश, अघ भाजन- पाप के भांड़े, अहह- हाय, अजहुँ- अब, मीजि हाथ- हाथ मलना/ पछताना, सिरु धुनि-, बिरिद बाँधि- वीर का बाना पहनकर, सुभट- उत्तम शूरवीर

संदर्भ: पूर्ववत

प्रसंग: अब सुमंत्र रामरहित रथ लेकर अयोध्या की ओर जा रहे हैं| रास्ते में वे विविध प्रकार से पश्चाताप करते हैं|

व्याख्या: मंत्री और घोड़ों की यह दशा देखकर निषादराज भी दुख से व्याकुल हो गए| उन्होंने अपने चार सेवक को सारथी के साथ भेज दिया| निषादराज (गुह) सारथी सुमंत्र को विदा करके लौटे| वे चारों निषाद रथ लेकर अयोध्या की ओर चले| वे भी उनकी विरहदशा को देखकर क्षण-क्षण दुख में मग्न हो जाते थे| व्याकुल और व्यथित सुमंत्र सोचते हैं कि रघुबीर के बिना जीवन को धिक्कार है| अंत में भी यह अधम शरीर नष्ट ही होगा| इसने राम से बिछड़ने पर ही यश क्यों नहीं ले लिया! अब ये प्राण अपयश और पाप के भांड़े ही हैं| अब ये क्यों नहीं निकल रहे हैं? हाय! मंद मन के कारण बहुत अच्छा अवसर छूट गया| अब भी इस हृदय के दो टुकड़े नहीं होते! जो स्थिति किसी कंजूस के सारे धन के खो जाने पर कंजूस की होती है ठीक उसी तरह सुमंत्र हाथ मलकर और सिर पीटकर पछताते हैं| जिस प्रकार कोई बड़ा योद्धा वीर का बाना पहनकर और उत्तम शूरवीर कहलाकर युद्ध से भाग जाता है, सुमंत्र भी उसी भांति चलते हैं|

राम के बिना अयोध्या आने में सुमंत्र को दुख हो रहा है| पशु भी दुखी हैं| इनके दुख से निषादों की टोली भी दुखी है| दूसरों के दुख में दुखी होने का सामाजिक भाव यहाँ प्रकट है|

दो 0 – बिप्र बिबेकी बेदबिद संमतसाधु सुजाति|
जिमि धोखें मदपान कर सचिव सोच तेहि भाँति||144||
जिमि कुलीन तिय साधु सयानी| पतिदेवता करम मन बानी||
रहै करम बस परिहरि नाहू| सचिव हृदयं तिमि दारुन दाहू||1||
लोचन सजल डीठि भइ थोरी| सुनइ न श्रवन बिकल मति भोरी||
सूखहिं अधर लागि मुँह लाटी| जिउ न जाइ उर अवधि कपाटी||2||
बिबरन भयउ न जाइ निहारी| मारेसि मनहुँ पिता महतारी||
हानि गलानि बिपुल मन ब्यापी| जमपुर पंथ सोच जिमि पापी||3||
बचनु न आव हृदयं पछिताई| अवध काह मैं देखब जाई||
राम रहित रथ देखिहि जोई| सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई||4||

शब्दार्थ : बिबेकी- विवेकशील, बेदबिद- वेदों का ज्ञाता, सोच करना- पछताना, जिमि- जैसे, तिमि- वैसे ही, तिय- स्त्री, दारुन दाहू- भयानक संताप, करम बस- भाग्यवश, डीठि- दृष्टि, लोचन- आँख, अधर- ओंठ, जिउ- प्राण, लागि मुहँ लाटी- मुहँ में लाटी लगना (मृत्यु का लक्षण),

बिबरन- मुहँ का रंग बदल जाना, बिपुल- बहुत, काह-क्या, सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई- मुझे देखने में संकोच करेगा मेरा मुँह नहीं देखना चाहेगा|

संदर्भ एवं प्रसंग: पूर्ववत

व्याख्या: जैसे धोखे से मदिरा पीकर कोई विवेकशील, वेदज्ञ, साधुसम्मत आचरण वाला, कुलीन ब्राह्मण पछताता है, वैसे ही सुमंत्र पछता रहे हैं| जिस तरह उत्तम कुलवाली, साधु स्वभाव की समझदार स्त्री जो मन, कर्म और वचन से पति को देवता मानती हो; उसे जो दुख भाग्यवश पति से अलग रहने पर होता है वही भयानक दुख सुमंत्र को हो रहा है| आँखों में जल भरा है, दृष्टि भी कम हो गई है| कानों से सुनाई नहीं पड़ता व्याकुलता के मारे बुद्धि भोरी हो गई है| ओंठ सूख रहे हैं और मुँह में लाटी लग गई है| फिर भी प्राण नहीं निकलते क्योंकि अवधि (चौदह वर्ष) रूपी कपाट लगे हुए हैं| सुमंत्र का उतरा हुआ रंग देखा नहीं जाता है| ऐसा लग रहा है मानो उन्होंने माता-पिता को मार डाला हो| रामविरह रूपी हानि से उन्हें बहुत ग्लानि हो रही है| वे इस भांति सोच में पड़े हैं जैसे नरक के रास्ते में जाता हुआ जीव सोच करता है| उनके हृदय में पछतावा है| उनके मुँह से बोली नहीं निकल रही| वे सोचते हैं अवध जाकर मैं क्या देखूँगा? राम के बिना जो-जो रथ देखेगा वही मुझे नहीं देखना चाहेगा|

बोध प्रश्न

- सुमंत्र के शोक और पश्चाताप का वर्णन कीजिए|

दो 0- धाइ पूंछिहहिं मोहि जब बिकल नगर नर नारि|
उतरु देब मैं सबहि तब हृदयं बज्रु बैठारि||145||
पुछिहहिं दीन दुखित सब माता| कहब काह मैं तिन्हहि बिधाता||
पूछिहि जबहिं लखन महतारी| कहिहउं कवन संदेश सुखारी||1||
राम जननि जब आइहि धाई| सुमिरि बच्छु जिमि धेनु लवाई||
पूँछत उतरु देब मैं तेही| गे बनु राम लखनु बैदेही||2||
जोइ पूँछिहि तेहि ऊतरु देबा| जाइ अवध अब यहु सुखु लेबा||
पूँछिहि जबहिं राउ दुख दीना| जिवनु जासु रघुनाथ अधीना||3||
देहउं उतरु कौनु मुहु लाई| आयउं कुसल कुअंर पहुँचाई||
सुनत लखन सिय राम सँदेसू| तृन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू||4||

शब्दार्थ : धाइ- दौड़कर, महतारी- माता, सुखारी- सुखदायी, बच्छु- बछड़ा, तेही- उन्हें, गे- चले जाना, राउ- राजा, तृन- तिनका, तनु- शरीर, परिहरिहि- त्याग देना

संदर्भ एवं प्रसंग : पूर्ववत

व्याख्या: जब नगर के व्याकुल नर-नारी दौड़कर मुझसे पूछेंगे तब मैं अपने हृदय पर वज्र रखकर उत्तर दूंगा| हे विधाता, दीन-दुखी सब माताएँ जब पूछेंगी तब मैं उनसे क्या कहूंगा? जब लक्ष्मण की माता मुझसे पूछेंगी तब मैं उनसे कौनसा सुखदायी संदेश कहूंगा? जिस प्रकार बछड़े को याद करके गाय दौड़ी हुई आती है उसी तरह राम की माता जब दौड़ी आएँगी तब उनसे क्या कहूँगा? उनके पूछने पर मैं यही उत्तर दूँगा कि सीता, राम और लक्ष्मण वन को चले गए| जो भी पूछेगा उसे उत्तर दूँगा| अयोध्या जाकर अब यही सुख लेना है| राजा दशरथ का जीवन तो रघुनाथ के

अधीन है| विरह दुख से दीन वे राजा जब पूछेंगे तब कौन सा मुँह लेकर यह उत्तर दूँगा कि कुँवर को कुशलतापूर्वक पहुँचाकर आया हूँ! सीता, राम और लक्ष्मण के संदेश को सुनते ही राजा तिनके के समान शरीर का त्याग कर देंगे|

दो 0- हृदय न बिदरेउ पंक जिमि बिछुरत प्रीतम नीरू|
जानत हौं मोहि दीन्ह बिधि यहु जातना सरीरु||146||
एहि बिधि करत पंथ पछितावा| तमसा तीर तुरत रथु आवा||
बिदा किए करि बिनय निषादा| फिरे पायं परि बिकल बिषादा||1||
पैठत नगर सचिव सकुचाई| जनु मारेसि गुर बाँभन गाई||
बैठि बिटप तर दिवसु गवाँवा| साँझ समय तब अवसरु पावा||2||
अवध प्रबेसु कीन्ह अँधियारें| पैठ भवन रथु राखि दुआरें||
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए| भूप द्वार रथु देखन आए||3||
रथु पहिचानि बिकल लखि घोरे| गरहिं गात जिमि आतप ओरे||
नगर नारि नर ब्याकुल कैसें| निघटत नीर मीनगन जैसें||4||

शब्दार्थ: पंक- कीचड़, बिदरेउ- फटना, नीरू- जल, बिधि- विधाता, जातना सरीरु- नरक भोगने के लिए मिला हुआ शरीर, यातना शरीर, पैठत- प्रवेश करना, बिटप-वृक्ष, गरहिं- गलना, गात-शरीर, आतप-घाम, ओरे- ओला, निघटत- घटना, बाँभन- ब्राह्मण

संदर्भ: पूर्ववत

प्रसंग: रास्ते में विभिन्न प्रकार से पछतावा करते हुए सुमंत्र का रथ अयोध्या आ गया| दिन में अयोध्या में प्रवेश करने का साहस वे नही जुटा सके| अंधेरा होने पर उन्होंने नगर में प्रवेश किया|

व्याख्या: प्रियतम जल से विलग होते ही जिस तरह कीचड़ फट जाता है उसी तरह मेरा हृदय राम से बिछुड़ते ही क्यों फट नहीं गया? अतः मुझे ज्ञात है कि विधाता ने मुझे यह यातनाशरीर ही दिया है| इस प्रकार रास्ते में पछताते हुए सुमंत्र का रथ शीघ्र ही तमसा के तट पर आ गया| तब बहुत विनय के साथ सुमंत्र ने निषादों को विदा किया| वे सभी निषाद दुख से व्याकुल होकर सुमंत्र के चरणों पर लोटकर लौटे| नगर में प्रवेश करते समय सचिव को अत्यंत ग्लानि का अनुभव हो रहा है| ऐसा प्रतीत होता है कि गुरु, ब्राह्मण या गाय को मारकर आए हों| इसलिए पूरा दिन उन्होंने एक वृक्ष के नीचे बैठकर बिता दिया| शाम घिरने पर उन्हे अवसर मिला| उन्होंने अँधेरा होने पर अयोध्या में प्रवेश किया| रथ को द्वार पर रखकर वे महल में घुसे| जिन-जिनने यह समाचार सुना वे राजा के द्वार पर रथ देखने आए| रथ को पहचानकर और घोड़ों को व्याकुल देखकर उनके शरीर ऐसे क्षीण हो रहे हैं जैसे घाम में ओले क्षीण होते हैं| नगर के स्त्री-पुरुष की दशा भी अत्यंत करुण है| जल के घटने पर मछलियाँ जिस तरह छटपटाती हैं, वही दशा नगर के स्त्री-पुरुष की हो रही है|

बोध प्रश्न

- सुमंत्र ने अँधेरा होने पर ही क्यों नगर में प्रवेश किया?

6.3.2 काव्यगत विशेषताएँ

तुलसीदास की काव्यकला की विशिष्टता के संबंध में प्रचलित है, “कविता करके तुलसी ना लसै, कविता लसी पा तुलसी की कला|” तुलसीदास की काव्यकला स्वतः स्फूर्त है| इनके काव्य का स्वरूप प्रकृत है एवं भाषा रागात्मक| प्रकृत स्वरूप से आशय है जीवन की यथास्थिति का चित्रण करना| जिस भाषा में भावनाओं और दृष्टि से उत्पन्न प्रभाव के रक्षण की प्रवृत्ति निहित होती है, वह भाषा रागात्मक कहलाती है| रागात्मक भाषा की यह परिभाषा आई.ए.रिचर्डस ने दी है| तुलसी ने अवधी और ब्रज दोनों को ही परिनिष्ठित काव्य भाषा के रूप में प्रस्तुत किया| इस क्रम में उनका बल तत्समीकरण एवं अवधीकरण पर रहा| भाषा के प्रयोग में इन्होंने व्याकरण के नियमों का निर्वाह किया|

रामचरित के माध्यम से कवि ने जीवन के विविध पक्षों का अंकन किया है| उनके शब्द श्रोता, वक्ता और पाठक के हृदय में उन भावों की अनुभूति कराने में सक्षम हैं| राम वनवास का प्रसंग कहते-सुनते न जाने कितने लोगों की आंखों से आँसू बहने लगते हैं! वह जगह जहाँ रामकथा पर चर्चा-परिचर्चा होती है, वहाँ मानो हर कोई अयोध्यावासी के समान भावों की तीव्रता की अनुभूति करनेवाला हो जाता है| शोक, वात्सल्य, रति, भक्ति, मैत्री, हर्ष, दीनता या शत्रुता- हर भाव की प्रभाव उत्पन्न करनेवाली व्यंजना रामचरितमानस में उपलब्ध है|

इस मर्मस्पर्शी भाव व्यंजना का आधार तुलसी की काव्यभाषा है| समर्थ, विस्तृत और सटीक भाषिक प्रयोग से ही बाह्य दृश्य, परिस्थिति एवं मानसिक स्थिति का चित्रण जीवंत हो सका है| चित्रकूट की रम्यता का वर्णन हो या विविध रामनिकेत का, भक्ति भाव का वर्णन हो अथवा घोड़ों और सचिव की विरह वेदना का- इन सबमें कवि ने विस्तार का पूरा ध्यान रखा है| एक दृश्य या एक भाव को मूर्त रूप में दिखाने के लिए उसका बहुविध वर्णन किया गया है। इसी तथ्य को आ.रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में देखें, “शास्त्र के भीतर निरुपित तथ्य को भी जब कोई कवि अपनी रचना के भीतर लेता है, तब वह पारिभाषिक तथा अधिक व्याप्तिवाले जाति-संकेत शब्दों को हटाकर उस तथ्य को व्यंजित करनेवाले कुछ विशेष मार्मिक रूपों और व्यापारों का चित्रण करता है| कवि गोचर और मूर्त्त रूपों द्वारा ही अपनी बात करता है|” स्पष्ट है कि तुलसी की काव्यभाषा मार्मिक, बिंबात्मक और विस्तार के गुण से पूर्ण है| वर्ण विन्यास की कसौटी पर भी यह कविता खड़ी उतरती है| कविता में नाद सौंदर्य उत्पन्न करने का साधन वर्ण विन्यास है| इसके अंतर्गत वृत्तिविधान, अंत्यानुप्रास और लय को कविता का महत्वपूर्ण साधन माना जाता है तथा श्रुतिकटु मानकर कुछ कठोर वर्णों का त्याग किया जाता है| “नाद सौंदर्य से कविता की आयु बढ़ती है| तालपत्र, भोजपत्र, कागज आदि का आश्रय छूट जाने पर भी वह बहुत दिनों तक लोगों की जिह्वा पर नाचती रहती है| बहुत-सी उक्तियों को लोग, उनके अर्थ की रमणीयता इत्यादि की ओर ध्यान ले जाने का कष्ट उठाये बिना ही, प्रसन्नचित्त रहने पर गुनगुनाया करते हैं| अतः नाद-सौंदर्य का योग भी कविता का पूर्ण स्वरूप खड़ा करने के लिए कुछ न कुछ अवश्य होता है|” (रामचंद्र शुक्ल)| नाद सौंदर्य के लिए उपयुक्त वर्णविन्यास के सारे साधन रामचरितमानस में

उपलब्ध हैं| दोहा चौपाई छंद में रचित इस महाकाव्य में अंत्यानुप्रास का अबाधित प्रवाह नाद सौंदर्य उत्पन्न करता है|

6.4 : पाठ सार

इस पाठ में रामचरितमानस के अयोध्याकांड के जितने अंश को अध्ययन का विषय बनाया गया; उस पूरे भाग को हम दो भागों में बाँट कर देख सकते हैं| पहला हिस्सा हर्ष, उल्लास और भक्ति से पूर्ण है तो बाद का हिस्सा वेदनानुभूति से भरा हुआ| वाल्मीकि द्वारा राम को जितने निवास स्थान सुझाए गए; उनमें भक्त के लक्षणों का ही विवरण है| राम के वन में आने से वन में चौतरफा उल्लास छाया हुआ है| देवता, वनवासी और मुनिगण सभी राम को समक्ष पाकर भयमुक्त हो गए हैं| चित्रकूट में पशु-पक्षी हर्षयुक्त होकर और परस्पर वैर भूलकर विचरण कर रहे हैं| मनुष्यों ने भी अपनी अशुभ वृत्तियों को त्याग दिया है| चित्रकूट में भक्ति रस का संयोग पक्ष चित्रित हुआ है| वन से अयोध्या के रास्ते में इसका वियोग पक्ष मूर्तिमान है| राम को वन में छोड़कर जब निषाद मंत्री सुमंत्र के पास लौटते हैं तब वहाँ बड़ा विषाद छा जाता है| राम के बिना अयोध्या जाना सुमंत्र के लिए जितना दुष्कर है उतना ही उस रथ में जुते घोड़ों के लिए भी दुष्कर है| विविध प्रकार से सुमंत्र द्वारा पश्चाताप करने से काव्य में करुणा का संचार हुआ है| व्याकुल घोड़ों की विरही मुद्रा ने इसे और तीव्रता प्रदान किया है| काव्यभाषा रागात्मक, अनुपम वर्ण-विन्यास और नाद सौंदर्य से परिपूर्ण है| इसमें लौकिक काव्य रूप दोहा और चौपाई छंद का प्रयोग हुआ है| सादृश्यमूलक अलंकारों के साथ भक्ति, शृंगार और करुण रस की व्याप्ति है जो माधुर्य और प्रसाद गुणों से पूर्ण है| एकाध जगह ओज गुण के भी दर्शन हो जाते हैं जो परुषावृत्ति प्रधान होती है| राम के बिना राजमहल विषादभवन बन गया है| विभिन्न सामाजिक मर्यादाओं की रेखा खींचते हुए तुलसीदास ने स्पष्ट किया है कि सुख के विभिन्न साधन से वह सुख नहीं मिलता जो प्रियजन के साथ से मिलता है| भक्ति और प्रेम की स्थापना में उनका बल शिष्टाचार पर रहा है|

6.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त कर प्राप्त हुए हैं-

1. तुलसी ने अवधी और ब्रज दोनों को ही परिनिष्ठित काव्य भाषा के रूप में प्रस्तुत किया|
2. तुलसी की कविता मूर्ति विधान युक्त, काव्यदोष मुक्त और व्याकरण सम्मत है|
3. स्थानीयता से जुड़ी होने के कारण इसमें लोकभाषा की मिठास है| इससे यह सरल, सरस, हृदयग्राही और व्यापक विस्तार वाली है|
4. जीवन के स्थूल कार्यव्यापार में सूक्ष्म भाव व्यंजना का उत्कर्ष यहाँ ध्यान खींचता है| कवि ने विभिन्न चरित्रों के माध्यम से शील, स्नेह, समता, शिष्टता, ममता, प्रेम, भक्ति, दया, चिंता, शोक, हर्ष इत्यादि भावों का सहज निर्वाह किया है|

6.6 : शब्द संपदा

1. कोल- एक वनवासी मानव जाति, सूअर

2. धृति- धीरता, धैर्य
3. उत्कर्ष- बढ़ना
4. प्रत्युत्पन्नमतित्व- अपनी बुद्धि से तत्काल उत्तर देना

6.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए|

1. वाल्मीकि द्वारा बताए गए रामनिकेत का वर्णन कीजिए|
2. तुलसीदास द्वारा व्यक्त निष्काम भक्ति के स्वरूप का विस्तृत वर्णन कीजिए|
3. तुलसीदास की काव्यभाषा का उदाहरणसहित विवेचन करें|
4. तुलसी के काव्य में करुण रस के संचार पर प्रकाश डालें|

खंड (ब)

(आ)लघु श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए|

1. तुलसी काव्य में भक्ति रस का विवेचन करें|
2. विरह दशा में घोड़ों के उन्माद का चित्र कवि ने किस प्रकार प्रस्तुत किया है?
3. 'राम को केवल प्रेम प्रिय है' स्पष्ट करें|
4. सुमंत्र के शोक-संताप पर प्रकाश डालिए|

खंड (स)

(इ) वैकल्पिक प्रश्न

| सही विकल्प चुनिए

1. पर्णकुटी कहाँ बनाई गयी? ( )
   (अ) अमरावती (आ) अयोध्या (इ) चित्रकूट (ई) कोई नहीं
2. कंद-मूल भरकर राम से मिलने कौन आए? ( )
   (अ) कोल-किरात (आ) सिंह (इ) मुनिगण (ई) देवगण
3. अचल अहेरी कौन है? ( )
   (अ) राम (आ) लक्ष्मण (इ) चित्रकूट (ई) पयस्विनी

II रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. धन्य बिहग मृग ....| सफल .... भए तुम्हहि निहारी||
2. हम सब ....सहित परिवारा| दीख दरसु भरि .... तुम्हारा||
3. कीन्ह बासु भल ...... बिचारी| इहाँ सकल ...... रहब सुखारी||
4. हम सब भाँति .... सेवकाई| करि केहरि ...... बाघ बराई||

III सुमेल कीजिए

(i) पर्णकुटी	(अ) हेरहिं
(ii) बाजि	(आ) अमरावती
(iii) मंदाकिनी	(इ) समुद्र मंथन
(iv) मंदराचल	(ई) अत्रिप्रिया

6.8 : पठनीय पुस्तकें

1. तुलसी – उदयभानु सिंह
2. गोस्वामी तुलसीदास – रामचंद्र शुक्ल
3. तुलसी आधुनिक वातायन से – रमेशकुंतल मेघ
4. काव्य तत्त्व विमर्श- राममूर्ति त्रिपाठी

इकाई 7 : रामचरितमानस : अयोध्याकाण्ड – V : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 मूल पाठ : रामचरितमानस : अयोध्याकाण्ड – V : व्याख्या

7.3.1 प्रसंग सहित व्याख्या

7.4 पाठ सार

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

7.6 शब्द संपदा

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

7.8 पठनीय पुस्तकें

7.1 : प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस के अयोध्या कांड की संपूर्ण कथा दो भागों में विभक्त की जा सकती है -1- राम कथा 2- भरतकथा। दोनों कथाएं दो उद्देश्यों से प्रेरित हैं। कवि रामकथा से जीवन में त्याग, सहनशीलता, सत्यनिष्ठा, धर्माचरण,नैतिक सदाचरण तथा उदारता को शीर्ष बिंदु पर चित्रित करना चाहता है वहीं भरत कथा के माध्यम से वह भक्ति को सर्वोच्च मानक के साथ शीर्ष बिंदु पर चित्रित करना चाहता है इसमें जहाँ राम लोकादर्श के प्रतीक है वहीं भरत भक्ति के सर्वोच्च मानक हैं। इस प्रकार अयोध्याकाण्ड की रचना का मूल उद्देश्य लोकादर्श एवं भक्ति के सर्वोत्कृष्ट मानदण्डों की समवेत प्रतिष्ठा करना है अब आप इस इकाई में तुलसीदास द्वारा रचित अयोध्याकाण्ड के निर्धारित काव्यांश का अध्ययन करेंगे।

7.2 : उद्देश्य

अब आप इस इकाई में तुलसीदास द्वारा रचित अयोध्याकाण्ड के 147 से 166 तक के काव्यांश का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप-

1- राम के चरित्र को समझ सकेंगे।

2- भरत के चरित्र को समझ सकेंगे।

3- सुमंत्र की कर्तव्यपरायणता को समझ सकेंगे।

4- अयोध्याकाण्ड के पठित काव्यांश की स प्रसंग व्याख्या कर सकेंगे।

5- अवधी भाषा के कठिन शब्दों के अर्थ को समझ सकेंगे।

6- काव्यगत विशेषताओं के तत्त्व जैसे- रस,छंद, अलंकार इत्यादि को पठित काव्यांश के माध्यम से समझ सकेंगे।
7- दशरथ मरण की प्रस्तावना के माध्यम से पिता-पुत्र के असीम प्रेम को समझ सकेंगे।
8- रामचरितमानस के विषय में विशेष जानकारी प्रस्तावना के माध्यम से समझ सकेंगे।

करेंगे।

7.3 : मूल पाठ : रामचरितमानस : अयोध्याकाण्ड – V : व्याख्या

7.3.1- प्रसंग सहित व्याख्या

एहि बिधि करत पंथ पछितावा। तमसा तीर तुरत रथु आवा।।
बिदा किए करि बिनय निषादा। फिरे पायँ परि बिकल बिषादा।।
पैठत नगर सचिव सकुचाई। जनु मारेसि गुर बाँभन गाई।।
बैठि बिटप तर दिवसु गवाँवा।साँझ समय तब अवसरु पावा।।
अवध प्रबेसु कीन्ह अँधिआरें। पैठ भवन रथु राखि दुआरें।।
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए। भूप द्वार रथु देखन आए।।
रथु पहिचानि बिकल लखि घोरे। गरहिं गात जिमि आतप ओरे।।
नगर नारि नर ब्याकुल कैंसें।निघटत नीर मीनगन जैसें।।
दो0-सचिव आगमनु सुनत सबु बिकल भयउ रनिवासु।
भवनु भयंकरु लाग तेहि मानहुँ प्रेत निवासु।। 147।।

शब्दार्थ- पंथ- मार्ग, तीर तट, बिकल-व्याकुल, बिटप-पेड़, नीर- जल, मीन- मछली।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश गोस्वामी तुलसीदास कृत ‘रामचरितमानस’ के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में मंत्री सुमंत्र की आत्मग्लानि तथा अयोध्यावासियों की मनोव्यथा को चित्रित किया गया है।

व्याख्या- मंत्री सुमंत्र राजकुमार को विदाकर अयोध्या लौटते हुए मार्ग में पश्चताप कर रहे थे। इतने में ही रथ तमसा नदी के तट पर आ पहुँचा।निषादों से विनय करके मंत्री सुमंत्र ने निषादों को विदा किया। वे विषाद से व्याकुल होते हुए सुमंत के पैरों में पड़कर लौट गये। नगर में प्रवेश करते हुए मंत्री ग्लानि के कारण ऐसे सकुचाते हैं कि मानो उन्होंने कोई जघन्य अपराध कर दिया हो या फिर जैसे गुरु, ब्राह्मण या गौ हत्या करके आए हुए हों। ग्लानि के कारण वह सारा दिन पेड़ के नीचे बैठकर बिताते हैं तथा संध्या होने के पश्चात ही नगरगमन करते हैं। नगरगमन करने के पश्चात् वह अयोध्या में प्रवेश करते हैं तथा रथ को द्वारपर खड़ा करके चुपके से राजमहल में चले जाते हैं। जिन-जिन लोगों को सुमंत्र के लौटने का समाचार मिला वे सब राजद्वार पर रथ को देखने आए। रथ को पहचानकर और घोड़ों को व्याकुल देखकर उनके शरीर ऐसे क्षीण होते जा रहें हैं जैसे धूप में ओले गल जाते हैं। नगर के स्त्री और पुरुष ऐसे व्याकुल हो जाते हैं जैसे

तालाब के जल के घटने पर मछलियाँ व्याकुल हो जाती हैं। मंत्री का अकेले आना सुनकर सारा रनिवास व्याकुल हो उठा। राजमहल उनको ऐसा भयानक लग रहा है जैसे भूतों का निवास स्थान या श्मशान हो।

काव्यगत विशेषताएं –

- सुमंत्र की आत्मग्लानि का भाव विशेष रूप से अनिष्ट की आशंका के रूप में चित्रित है।
- रस-करुण, भयानक
- छंद- चौपाई, दोहा
- अलंकार- उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, रुपक
- गुण-प्रसाद
- भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• सुमंत्र के अयोध्या लौटने पर अयोध्या नगरी सुमंत्र को कैसी लगी।

अति आरति सब पूँछहिं रानी। उतरु न आव बिकल भइ बानी।।
सुनइ न श्रवन नयन नहिं सूझा। कहहु कहाँ नृप तेहि तेहि बूझा।।
दासिन्ह दीख सचिव बिकलाई कौसल्या गृहँ गईं लवाई।।
जाइ सुमंत्र दीख कस राजा अमिअ रहित जनु चंदु बिराजा।।
आसन सयन बिभूषन हीना।परेउ भूमितल निपट मलीना।।
लेइ उसासु सोच एहि भाँती। सुरपुर तें जनु खँसेउ जजाती।।
लेत सोच भरि छिनु छिनु छाती। जनु जरि पंख परेउ संपाती।।
राम राम कह रामसनेही।पुनि कह राम लखन बैदेही।।
दो0-देखि सचिवँ जय जीव कहि कीन्हेउ दंड प्रनामु।
सुनत उठेउ ब्याकुल नृपति कहु सुमंत्र कहँ रामु।।148।।

शब्दार्थ- अमिअ-अमृत, सयन- शय्या, विभूषन- आभूषण, निपट-पूरी तरह, बिल्कुल, उसासु-साँसें।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश कवि शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित अत्यन्त लोकप्रिय महाकाव्य रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में मंत्री सुमंत्र जी को देखकर माताओं की व्याकुलता, महाराजा दसरथ का राम के प्रति स्नेह का अत्यन्त दारुण वर्णन कवि ने किया है।

व्याख्या- प्रस्तुत पद्यांश में तुलसीदास जी लिखते हैं, कि अत्यन्त पीड़ा से व्याकुल होकर सभी रानियाँ सुमंत्र से पूछती हैं, पर आर्य सुमंत्र के पास कोई उत्तर नहीं है वे निरूत्तर हो गए। उनकी वाणी रुक गई है। उनके कानों से न कुछ सुनाई दे रहा है न उनकी आंखों से कुछ दिखाई पड़ रहा

है। जो भी सुमंत्र के सामने आता है वह उससे यही पूछते हैं कि कहो ! राजा कहाँ है? दासियाँ मंत्री को व्याकुल देखकर उन्हें कौसल्या जी के महल में ले गईं। सुमंत्र वहाँ जाकर राजा को ऐसे बैठे हुए देखा जैसे बिना अमृत के चन्द्रमा हो। राजा बिना शय्या और बिना आभूषणों के पृथ्वी पर पड़े हुए हैं। वे लंबी सांसे लेकर इस प्रकार सोच रहे हैं मानों राजा ययाति स्वर्ग से गिरे हों। हर क्षण सोच-सोचकर अत्यन्त व्याकुल होते जा रहे हैं। उनकी दशा ऐसी है मानो गिद्धराज जटायु का भाई संपाती, पंख के जल जाने पर धरती पर गिर पड़ा हो। राजा बार-बार राम!, राम!, प्यारे राम! कहते हैं, फिर हा राम ! हा लक्ष्मण!, हा जानकी! ऐसा कहने लगते हैं। मंत्री को देखकर जयजीव कहकर दण्डवत् प्रणाम किया सुनते ही राजा व्याकुल हो उठते हैं और मंत्री से कहते हैं सुमंत्र। कहो राम कहाँ हैं ?

काव्यगत विशेषताएं –

• प्रस्तुत पद्यांश में रनिवास की भयंकरता,मंत्री

की व्याकुलता,दशरथ की निष्तेजता को चित्रित किया गया है।

•रस - करुण और वात्सल्य

•छंद- चौपाई, दोहा

•अलंकार- उत्प्रेक्षा, छेकानुप्रास,

•गुण- प्रसाद, माधुर्य

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• 'जनु जरी पंख परेउ संपाती' पंक्ति तुलसीदास ने किसके लिए कही है।

भूप सुमंत्रु लीन्ह उर लाई। बूड़त कछु अधार जनु पाई।।
सहित सनेह निकट बैठारी।पूँछत राउ नयन भरि बारी।।
राम कुसल कहु सखा सनेही।कहँ रघुनाथु लखनु बैदेही।।
आने फेरि कि बनहि सिधाए।सुनत सचिव लोचन जल छाए।।
सोक बिकल पुनि पूँछ नरेसू। कहु सिय राम लखन संदेसू।।
राम रूप गुन सील सुभाऊ।सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ।।
राउ सुनाइ दीन्ह बनबासू। सुनि मन भयउ न हरषु हराँसू।।
सो सुत बिछुरत गए न प्राना। को पापी बड़ मोहि समाना।।
दो0-सखा रामु सिय लखनु जहँ तहाँ मोहि पहुँचाउ।
नाहिं त चाहत चलन अब प्रान कहउँ सतिभाउ।।149।।

शब्दार्थ- नयन-नेत्रों में, लोचन-नेत्र, सुत-पुत्र, सखा-मित्र।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश रामचरितमानस के अयोध्याकांड से अवतरित है। जिसके रचयिता कवि शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी है।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में राजा के पुत्र मोह में व्याकुलता और शोक को दर्शाया गया है।

व्याख्या- राजा दसरथ ने मंत्री सुमन्त्र को अपने सीने से लगा लिया। मानों डूबते हुए आदमी को कुछ सहारा मिल गया हो। मन्त्री को स्नेह के साथ पास बैठाकर जल से भरे नेत्रों से राजा पूछने लगे- कि हे मेरे स्नेही सखा ! बताओ राम कुशलपूर्वक तो हैं? बताओ राम, लक्ष्मण और सीता कहाँ हैं? उन्हें लौटा लाये हो कि वे वन को चले गये। यह सुनते ही मन्त्री के नेत्रों में जल भर आया। शोक से व्याकुल होकर राजा फिर पूछते हैं कि - सीता, राम और लक्ष्मण का संदेश तो कहो। श्रीरामचन्द्र जी के रूप, गुण, शील और स्वभाव को याद कर-करके दशरथ हृदय में सोच रहे हैं कि मैंने राज्याभिषेक की बात सुनाकर जिसे वनवास दे दिया, ऐसे पुत्र के मन में हर्ष और विषाद नहीं हुआ, ऐसे पुत्र के बिछुड़ने पर भी मेरे प्राण नहीं गये, तब मेरे समान बड़ा पापी कौन होगा ? हे सखा! श्रीराम, जानकी और लक्ष्मण जहाँ हैं, मुझे भी वहाँ पहुँचा दो। नहीं तो मंछ सत्य भाव से कहता हूँ कि मेरे प्राण अब चलना चाहते हैं।

काव्यगत विशेषताएं-

• प्रस्तुत पद्यांश में दशरथ के शोक को चित्रित किया गया है।

•रस- करुण एवं वात्सल्य रस

•छंद- चौपाई, दोहा

•अलंकार- छेकानुप्रास, उत्प्रेक्षा

•गुण- प्रसाद एवं माधुर्य

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• उक्त पंक्तियों में राजा दशरथ सुमंत्र से स्वयं को कहाँ पहुँचाने के लिए कहते हैं।

पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राऊ।प्रियतम सुअन सँदेस सुनाऊ।।
करहि सखा सोइ बेगि उपाऊ।रामु लखनु सिय नयन देखाऊ।।
सचिव धीर धरि कह मुदु बानी।महाराज तुम्ह पंडित ग्यानी।।
बीर सुधीर धुरंधर देवा।साधु समाजु सदा तुम्ह सेवा।।
जनम मरन सब दुख सुख भोगा। हानि लाभु प्रिय मिलन बियोगा।।
काल करम बस होहिं गोसाईं। बरबस राति दिवस की नाईं।।
सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं। दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं।।
धीरज धरहु बिबेकु बिचारी। छाड़िअ सोच सकल हितकारी।।
दो0-प्रथम बासु तमसा भयउ दूसर सुरसरि तीर।

न्हाई रहे जलपानु करि सिय समेत दोउ बीर।। 150।।

शब्दार्थ- सुअन सुनाओ, बेगि-उपाय, धीर-धीरज/धैर्य, मृदु-मीठी, सम-समान, बासु-निवास।

संदर्भ-प्रस्तुत पद्यांश सुप्रसिद्ध महाकाव्य रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है। जिसके रचयिता कवि शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी है।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में राजा की व्याकुलता पर सुमन्त्र जी ने धैर्य धारण करने का जो संदेश दिया वह प्रसंग वर्णित है।

व्याख्या-राजा दसरथ बार-बार मन्त्री से पूछते हैं - मेरे प्रियवर! पुत्रों का संदेश सुनाओ ! हे सखा ! तुम तुरंत वही उपाय करो जिससे श्रीराम, लक्ष्मण और सीता को मुझे आँखों से दिखा दो। सुमन्त्र धीरज धरकर कोमल वाणी में बोले-महाराज आप पण्डित और ज्ञानी है। हे देव ! आप शूरवीर तथा उत्तम धैर्यवान पुरुषों में श्रेष्ठ हैं। आपने सदा साधुओं के समाज का सेवन किया है। जन्म-मरण, सुख-दुःख के भोग, हानि-लाभ, प्रिय का मिलना-बिछुडना, ये सब हे स्वामी! सभी काल तथा कर्म के अधीन रात-दिन की तरह अपने-आप होते रहते हैं। मूर्ख लोग सुख में हर्षित होते हैं और दुःख में रोते हैं, पर धीर पुरुष अपने मन में दोनों को समान भाव से धारण करते हैं। हे सबके हितकारी (रक्षक)! आप विचारकर धीरज धरिये और शोक का परित्याग कीजिए। श्रीराम जी का पहला निवास (मुकाम) तमसा के तट पर हुआ, दूसरा गङ्गा नदी के तट पर सीताजी सहित दोनों भाई उस दिन स्नान करके जलपान करके रहे।

काव्यगत विशेषताएं-

- प्रस्तुत पद्यांश में सुमंत्र द्वारा राजा के हृदय में धैर्य का संचार करने का प्रयास किया गया है।
- रस- करुण एवं शांत रस
- छन्द- चौपाई व दोहा
- अलंकार- अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश
- गुण- प्रसाद, माधुर्य
- भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न

- 'सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाही' का अर्थ बताइए।

केवट कीन्हि बहुत सेवकाई। सो जामिनि सिंगरौर गवाँई।।
होत प्रात बट छीरु मगावा। जटा मुकुट निज सीस बनावा।।
राम सखाँ तब नाव मगाई। प्रिया चढ़ाई चढ़े रघुराई।।
लखन बान धनु धरे बनाई। आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई।।
बिकल बिलोकि मोहि रघुबीरा। बोले मधुर बचन धरि धीरा।।
तात प्रनामु तात सन कहेहू। बार बार पद पंकज गहेहू।।

करबि पायँ परि बिनय बहोरी। तात करिअ जनि चिंता मोरी।।
बन मग मंगल कुसल हमारें। कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारें।।
छं0-तुम्हरें अनुग्रह तात कानन जात सब सुखु पाइहौं।
प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाय पुनि फिरि आइहौं।।
जननीं सकल परितोषि परि परि पायँ करि बिनती घनी।।
तुलसी करहु सोइ जतनु जेहिं कुसली रहहिं कोसल धनी।।
सो0-गुर सन कहब सँदेसु बार बार पद पदुम गहि।
करब सोइ उपदेसु जेहिं न सोच मोहि अवधपति।। 151।।

शब्दार्थ- छीरू-दूध, आयसु-आज्ञा, बिकल-व्याकुल, तात-पिता, पंकज-कमल, बिनय-विनती, मग-मार्ग, कानन-वन।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश सुप्रसिद्ध महाकाव्य रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड से अवतरित है। जिसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में श्री राम के दैनिक जीवन का तथा सुमंत्र के द्वारा दशरथ के लिए राम का संदेश भेजवाने का वर्णन किया गया है।

व्याख्या- केवट (निषादराज) ने बहुत सेवा की तथा वह रात सिंगरौर (श्रृंगवेरपुर) में ही बितायी। दूसरे दिन सुबह होते ही बरगद के पेड़ का दूध मँगवाया और उससे श्रीराम-लक्ष्मण ने अपने सिरों पर जटाओं के मुकुट बनाये। तब श्रीरामचन्द्र जी के सखा निषादराज ने नाव मँगवाई। पहले प्रिया सीताजी को उस पर चढ़ाकर फिर श्री रघुनाथ जी चढ़े। फिर लक्ष्मण जी ने धनुष-बाण संभालकर रखे और प्रभु श्री रामचन्द्र जी की आज्ञा पाकर स्वयं चढ़े। मुझे व्याकुल देखकर श्रीरामचन्द्र जी धीरज धरकर मधुर वचन बोले- हे तात! मेरे! पिताजी से मेरा प्रणाम कहिएगा और मेरी ओर से बार-बार चरण-कमल पकड़ लीजिएगा। फिर पाँव पकड़कर विनती करना कि हे पिताजी ! आप मेरी चिंता न कीजिए। आपकी कृपा अनुग्रह और पुण्य से वन में और मार्ग में हमारा कुशल - मंगल होगा। हे पिताजी! आपके अनुग्रह से मैं वन जाते हुए सब प्रकार का सुख पाऊँगा। आज्ञा का भलीभाँति पालन करके चरणों का दर्शन करने कुशलपूर्वक फिर लौट आऊँगा। सभी माताओं के पैरों को पड़कर सान्त्वना प्रदान करिएगा और उनसे बहुत विनती करके - तुलसीदास जी कहते हैं कि- आप वही प्रयत्न करिएगा जिससे कोसलपति पिताजी कुशलपूर्वक रहें। बार-बार चरणकमलों को पकड़कर गुरू वसिष्ठजी से मेरा संदेश कहिएगा कि वे वही उपदेश दें जिससे अवधपति पिताजी मेरी चिंता न करें।

काव्यगत विशेषताएं-

• संपूर्ण संदेश की भावात्मक केन्द्रियता पिता दशरथ के प्रति है।

•रस- करुण रस।

•छन्द- चौपाई, सोरठा।

•अलंकार - पुनरूक्ति प्रकाश, रूपक, अनुप्रास।

•गुण- प्रसाद, माधुर्य

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• सुमंत्र से श्री राम ने पिता दशरथ के लिए क्या संदेश भेजवाया?

पुरजन परिजन सकल निहोरी।तात सुनाएहु बिनती मोरी।।
सोइ सब भाँति मोर हितकारी।जातें रह नरनाहु सुखारी।।
कहब सँदेसु भरत के आएँ।नीति न तजिअ राजपदु पाएँ।।
पालेहु प्रजहि करम मन बानी।सेएहु मातु सकल सम जानी।।
ओर निबाहेहु भायप भाई।करि पितु मातु सुजन सेवकाई।।
तात भाँति तेहि राखब राऊ।सोच मोर जेहिं करै न काऊ।।
लखन कहे कछु बचन कठोरा।बरजि राम पुनि मोहि निहोरा।।
बार बार निज सपथ देवाई।कहबि न तात लखन लरिकाई।।
दो0-कहि प्रनामु कछु कहन लिय सिय भइ सिथिल सनेह।
थकित बचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह।। 152।।

शब्दार्थ- सुजन-स्वजनों, भाँति-उसीप्रकार, शपथ-सौगंध, लोचन-नेत्र, सजल-जल से भरा, पल्लवित-रोमांच।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश 'रामचरितमानस' महाकाव्य के 'अयोध्याकाण्ड' से उद्धृत है। जिसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में तुलसीदास ने श्री राम द्वारा अपने राज्य और परिजनों के प्रति अपनी चिंता का वर्णन किया है।

व्याख्या- हे तात! सभी नगरवासियों और कुटुम्बियों से निहोरा अर्थात् अनुरोध करके मेरी विनती को सुनाईएगा कि वही मनुष्य मेरा सब प्रकार से हितैषी है। जिसकी चेष्टा से महाराज सुखी रहें। भरत के आने पर उनको मेरा संदेश कहिएगा कि राज्य पद पा जाने पर नीति न छोड़ें, कर्म, वचन और मन से प्रजा का पालन करना और सब माताओं को समान मानकर उनकी सेवा करना और हे भाई! पिता, माता, और स्वजनों की सेवा करके भातृत्व के प्रेम का निर्वाह करना। हे तात! राजा अर्थात् पिताजी को उसी प्रकार से रखना, जिससे वे कभी भी किसी तरह की मेरी चिंता न करें। लक्ष्मण जी ने कुछ कठोर कहे। किन्तु श्रीराम ने उन्हें फिर रोककर मुझसे अनुरोध किया और बार-बार अपनी सौगंध दिलायी और कहा- हे तात! वहाँ लक्ष्मण के बचपने को न कहना। सीताजी ने प्रणाम किया और कुछ कहना चाहा,परन्तु स्नेहवश वे शिथिल हो गयीं, और नेत्रों में जल भर आया और शरीर विवश से उल्लसित हो गया।

काव्यगत विशेषताएं-

•प्रस्तुत पद्यांश में भातृत्व की भावना को चित्रित किया गया है।

•रस- शांत एवं करुण।

•छन्द - चौपाई एवं दोहा।

•अलंकार - पुनरुक्ति प्रकाश, अनुप्रास।

•गुण- माधुर्य

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• श्री राम ने भरत के लिए क्या संदेश भेजवाया?

तेहि अवसर रघुबर रुख पाई। केवट पारहि नाव चलाई।।
रघुकुलतिलक चले एहि भाँती। देखउँ ठाढ़ कुलिस धरि छाती।।
मैं आपन किमि कहौं कलेसू।जिअत फिरेउँ लेइ राम सँदेसू।।
अस कहि सचिव बचन रहि गयऊ।हानि गलानि सोच बस भयऊ।।
सुत बचन सुनतहिं नरनाहू।परेउ धरनि उर दारुन दाहू।।
तलफत बिषम मोह मन मापा। माजा मनहुँ मीन कहुँ ब्यापा।।
करि बिलाप सब रोवहिं रानी। महा बिपति किमि जाइ बखानी।।
सुनि बिलाप दुखहू दुखु लागा। धीरजहू कर धीरजु भागा।।
दो0-भयउ कोलाहलु अवध अति सुनि नृप राउर सोरु।
बिपुल बिहग बन परेउ निसि मानहुँ कुलिस कठोरु।।153।।

शब्दार्थ- कुलिस-वज्र, किमि-कैसे, उर-हृदय, तलफल-तड़पने, मीन-मछली, नृप-राजा, बिहग-पक्षियों

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश रामचरितमानस महाकाव्य के अयोध्याकांड से उद्धृत है। जिसके रचयिता तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में मंत्री सुमन्त्र द्वारा राजा दशरथ को श्रीराम के वनगमन की बात बताने तथा दसरथ जी की मनोव्यथा का वर्णन है।

व्याख्या- तुलसीदास जी कहते हैं कि उसी समय श्रीराम चन्द्र जी का रुख पाकर केवट ने पार जाने के लिए नाव चला दी। इस प्रकार रघुवंशतिलक श्री रामचन्द्र जी चल दिए और मैं छाती पर वज्र रखकर खड़ा-खड़ा देखता ही रहा। मैं अपने क्लेश को कैसे कहूँ जो श्री रामचन्द्र जी का यह संदेश लेकर जीवित ही लौट आया। ऐसा कहकर मंत्री की वाणी रुक गई, और वे हानि की ग्लानि और सोच के वशीभूत हो गए। सुमंत्र के वचन सुनते ही राजा पृथ्वी पर गिर पड़े। उनके हृदय में भयानक जलन होने लगी। वे तड़पने लगे। उनका मन भीषण मोह से व्याकुल हो गया। मानो मछली को पहली वर्षा का जल मिल गया हो। सब रानियाँ विलाप करके रो रहीं हैं। उस

महान विपत्ति का कैसे वर्णन किया जाए। उस समय के विलाप को सुनकर दुःख को भी दुःख लगा और धैर्य का भी धैर्य भाग गया। राजा के अन्त:भवन में अर्थात् रनिवास में रोने का शोर सुनकर अयोध्या नगरी में बड़ा भारी कोहराम मच गया। ऐसा जान पड़ता था मानो पक्षियों के विशाल वन में भयंकर वज्र गिरा हो।

काव्यगत विशेषताएं -

• प्रस्तुत पद्यांश में सुमंत्र के द्वारा संदेश सुनाने के बाद जो भावात्मक प्रतिक्रिया रही उसका उल्लेख है।

•रस-करुण

•छन्द- चौपाई और दोहा

•अलंकार- उत्प्रेक्षा, अनुप्रास

•गुण- प्रसाद, माधुर्य

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• श्री राम का संदेश सुनकर दशरथ की मनोदशा को बताइए।

प्रान कंठगत भयउ भुआलू।मनि बिहीन जनु ब्याकुल ब्यालू।।
इद्रीं सकल बिकल भईं भारी।जनु सर सरसिज बनु बिनु बारी।।
कौसल्याँ नृपु दीख मलाना।रबिकुल रबि अँथयउ जियँ जाना।।
उर धरि धीर राम महतारी।बोली बचन समय अनुसारी।।
नाथ समुझि मन करिअ बिचारू।राम बियोग पयोधि अपारू।।
करनधार तुम्ह अवध जहाजू।चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू।।
धीरजु धरिअ त पाइअ पारू।नाहिं त बूड़िहि सबु परिवारू।।
जौं जियँ धरिअ बिनय पिय मोरी।रामु लखनु सिय मिलहिं बहोरी।।
दो0-प्रिया बचन मृदु सुनत नृपु चितयउ आँखि उघारि।
तलफत मीन मलीन जनु सींचत सीतल बारि।। 154।।

शब्दार्थ- सरसिज तालाब, रवि-सूर्य, उर-हृदय, पयोधि-समुद्र, पथिक-राही, नृपु-राजा, तलफत-तड़पत,

मीन-मछली।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश सुप्रसिद्ध लोकप्रिय महाकाव्य 'रामचरितमानस के 'अयोध्याकाण्ड' से अवतरित है। जिसके रचयिता महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में मृत्यु पूर्व राजा दशरथ और रानी कौशल्या की बातचीत का प्रसंग है जिसमें रानी धैर्य-धारण करने के लिए अत्यंत कोमल और पीड़ा भरी वाणी में राजा दशरथ से बात कर रही है।

व्याख्या- तुलसीदास जी कहते हैं कि राजा के प्राण कंठ में आ गए हैं वे इस प्रकार लगते हैं जैसे मणि के बिना साँप व्याकुल अर्थात् मरणासन्न हो गया हो। सभी इन्द्रियाँ बहुत ही व्याकुल हो गयी हैं मानो बिना जल के तालाब में कमलों का वन मुरझा गया हो। कौसल्या जी ने राजा को बहुत दुःखी देखकर अपने हृदय मे जान लिया कि अब सूर्यकुल का सूर्य अस्त हो चला तब श्रीरामचन्द्र जी की माता कौसल्या हृदय में धीरज धरकर समय के अनुकूल वचन बोली हे नाथ! आप मन में समझकर विचार करिए कि श्री राम चंद्र का वियोग अपार समुद्र है। अयोध्या जहाज है और आप उसके कर्णधार अर्थात- खेने वाले हैं। सब प्रिय जन कुटुम्बी और प्रजा ही पथिक समाज है जो इस जहाज पर सवार है। आप धीरज धरिये तो सब उस पार पहुँच जायेंगे नहीं तो सारा परिवार डूब जायेगा। स्वामी ! यदि मेरी विनती हृदय में धारण करेंगे तो श्रीराम, लक्ष्मण, सीता फिर आ मिलेंगे। प्रिय पत्नी कौसल्या के कोमल वचन सुनते हुए राजा ने आंखें खोलकर देखा मानो तड़पती हुई दीन मछली पर कोई शीतल जल छिड़क रहा हो।

काव्यगत विशेषताएं -

•प्रस्तुत पद्यांश में मृत्यु के क्षण राजा दशरथ चैतन्यता और जड़ता के मध्य झूल रहे हैं जो पाठकों की संवेदना को करुण रस से जोड़ देता है।

•रस-करुण रस

•छन्द-चौपाई, दोहा।

•अलंकार - रूपक, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा।

•गुण- प्रसाद, माधुर्य

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• प्रस्तुत पद में कौशल्या ने दशरथ से क्या कहा?

धरि धीरजु उठी बैठ भुआलू। कहु सुमंत्र कहँ राम कृपालू।।
कहाँ लखनु कहँ रामु सनेही। कहँ प्रिय पुत्रबधू बैदेही।।
बिलपत राउ बिकल बहु भाँती भइ जुग सरिस सिराति न राती।।
तापस अंध साप सुधि आई। कौसल्यहि सब कथा सुनाई।।
भयउ बिकल बरनत इतिहासा। राम रहित धिग जीवन आसा।।
सो तनु राखि करब मैं काहा। जेंहि न प्रेम पनु मोर निबाहा।।
हा रघुनंदन प्रान पिरीते। तुम्ह बिनु जिअत बहुत दिन बीते।।
हा जानकी लखन हा रघुबर। हा पितु हित चित चातक जलधर।

दो0-राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम।

तनु परिहरि रघुबर बिरहँ राउ गयउ सुरधाम।।155।।

शब्दार्थ- बिलपत-विलाप, सरिस-समान, बिकल-व्याकुल, तापस-तपस्वी, धिग-धिक्कार, जलधर-मेघ।

संदर्भ-प्रस्तुत पद्यांश सुप्रसिद्ध महाकाव्य रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है। जिसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में राजा दशरथ का पुत्र वियोग में व्याकुल होने, तपस्वी श्रवण कुमार के पिता के श्राप को याद करना तथा दशरथ मरण का वर्णन हैं।

व्याख्या- तुलसीदास जी कहते हैं कि धैर्य धारण करके राजा उठ बैठे और बोले सुमन्त्र बताओ कृपालु श्री राम कहाँ हैं?राम स्नेही लक्ष्मण कहाँ है? और मेरी प्यारी बहू जानकी कहाँ हैं? राजा व्याकुल होकर अनेक प्रकार से विलाप कर रहे हैं। वह रात युग के समान बड़ी हो गयी और वह समाप्त नहीं होती। राजा को अंधे तपस्वी अर्थात् श्रवण कुमार के पिता का श्राप याद आ गया। उन्होंने सम्पूर्ण कथा कौसल्या को कह सुनाई। उस इतिहास का वर्णन करते-करते राजा व्याकुल हो गए और कहने लगे कि श्रीराम के बिना जीने की आशा को धिक्कार है। मैं उस शरीर को रखकर क्या करूँगा जिसने मेरे प्रेम के प्रण का निर्वाह नहीं किया। रघुकुल को आनन्द देने वाले मेरे प्राण प्यारे राम तुम्हारे बिना जीते हुए मुझे बहुत दिन बीत गए। हा जानकी। हा लक्ष्मण! हा रघुवर ! हा पिता के हित्त चिंता रूपी चातक के मेघ ! राम राम कहकर राम कहकर फिर राम कहकर। फिर राम राम कहकर। राजा श्रीराम के विरह में शरीर त्याग कर सुरलोक को सिधार गए।

काव्यगत विशेषताएं-

• प्रस्तुत पद्यांश में दशरथ के मरण का दृश्य है जिसमें श्रवण कुमार के माता-पिता के श्राप को कवि ने आकास्मिक प्रसंग के रूप में मात्र एक चौपाई में उल्लेख किया है।

•रस- करुण रस

•छन्द- चौपाई, दोहा

•अलंकार-रुपक, अनुप्रास

•गुण-प्रसाद, माधुर्य

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• प्रस्तुत पद में दशरथ को कौन-सा श्राप याद आया?

जिअन मरन फलु दसरथ पावा। अंड अनेक अमल जसु छावा।।

जिअत राम बिधु बदनु निहारा। राम बिरह करि मरनु सँवारा।।
सोक बिकल सब रोवहिं रानी।रूपु सीलु बलु तेजु बखानी।।
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा। परहीं भूमितल बारहिं बारा।।
बिलपहिं बिकल दास अरु दासी। घर घर रुदनु करहिं पुरबासी।।
अँथयउ आजु भानुकुल भानू। धरम अवधि गुन रूप निधानू।।
गारीं सकल कैकइहि देहीं। नयन बिहीन कीन्ह जग जेहीं।।
एहि बिधि बिलपत रैनि बिहानी। आए सकल महामुनि ग्यानी।।
दो0-तब बसिष्ठ मुनि समय सम कहि अनेक इतिहास।
सोक नेवारेउ सबहि कर निज बिग्यान प्रकास।।156।।

शब्दार्थ- भूमितल-धरती पर, बिलपहिं-विलाप करना, रुदनु-रोना, अँधयउ-कहते हैं, भानू-सूर्य, नयन-नेत्र।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश सुप्रसिद्ध महाकाव्य 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है। जिसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में तुलसीदास जी ने राजा दसरथ की मृत्यु के पश्चात् रानियों के शोक का वर्णन प्रस्तुत किया है।

व्याख्या- तुलसीदास जी कहते हैं; कि जीने और मरने का फल तो दसरथ जी ने ही प्राप्त किया। जिनका निर्मल यश अनेक ब्रम्हाण्डों में छा गया। जीते जी तो श्रीरामचन्द्र जी के चन्द्रमा के समान मुख को देखा और श्रीराम के विरह को निमित्त बनाकर अपना मरण सुधार लिया। सब रानियां शोक के मारे व्याकुल होकर रो रही हैं। वे राजा के शील, रूप, बल और तेज का बखान कर-कर के अनेक प्रकार से विलाप कर रहीं हैं और बार-बार धरती पर गिर-गिर पड़ती हैं। दास-दासीगण व्याकुल होकर विलाप कर रहे हैं और नगर निवासी घर-घर रो रहें हैं वे कहते हैं कि धर्म की सीमा, गुण और रूप के भण्डार सूर्यकुल का सूर्य अस्त हो गया है। सब कैकेयी को गालियां देते हैं जिसने सम्पूर्ण संसार को बिना नेत्र का अर्थात् अंधा कर दिया। इस प्रकार विलाप करते सारी रात बीत गयी। प्रातः काल सब बड़े -बड़े ज्ञानी मुनि आए तब वशिष्ठ मुनि समय के अनुकूल अनेक इतिहास पढ़कर अपने विज्ञान के प्रकाश से सबका शोक दूर किया।

काव्यगत विशेषताएं-

•प्रस्तुत पद्यांश में तुलसीदास ने भारतीय परंपरा में जो विलाप की परिपाटी है, उसका वर्णन किया है।

•रस- करुण रस

•छन्द - चौपाई और दोहा

•अलंकार - उपमा, मानवीकरण, अनुप्रास

•गुण- प्रसाद, माधुर्य

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• 'नयन बिहीन कीन्ह जग जेहिं।।' किसके लिए कहा गया है।

तेल नाँव भरि नृप तनु राखा।दूत बोलाइ बहुरि अस भाषा।।
धावहु बेगि भरत पहिं जाहू।नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू।।
एतनेइ कहेहु भरत सन जाई।गुर बोलाई पठयउ दोउ भाई।।
सुनि मुनि आयसु धावन धाए।चले बेग बर बाजि लजाए।।
अनरथु अवध अरंभेउ जब तें।कुसगुन होहिं भरत कहुँ तब तें।।
देखहिं राति भयानक सपना।जागि करहिं कटु कोटि कलपना।।
बिप्र जेवाँइ देहिं दिन दाना।सिव अभिषेक करहिं बिधि नाना।।
मागहिं हृदयँ महेस मनाई।कुसल मातु पितु परिजन भाई।।
दो0-एहि बिधि सोचत भरत मन धावन पहुँचे आइ।
गुर अनुसासन श्रवन सुनि चले गनेसु मनाइ ||157।।

शब्दार्थ- नृप-राजा, घावहु- दौड़कर, बाजि-घोडा, कोटि- करोड़ों, श्रवन- कान

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश सुप्रसिद्ध महाकाव्य रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है। जिसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में गुरु वशिष्ठ द्वारा राजा के शरीर को तेल से भरी नाव में रखवाकर भरत को बुलाने हेतू भेजे गये दूत के संदेश का तथा भरत के मन में अनिष्ट होने की आशंका के फलस्वरूप उनके उपायों का तथा उनकी मन की व्याकुलता का वर्णन है।

व्याख्या-वसिष्ठ जी ने नाव में तेल भरवाकर राजा के. शरीर को उसमें रखवा दिया फिर दूतों को बुलवाकर उनसे कहा कि तुम लोग जल्दी भरत के पास जाओ। राजा की मृत्यु कहीं भी किसी से न कहना जाकर भरत से इतना ही कहना कि दोनों भाइयों को गुरुजी ने बुलावा भेजा है। मुनि की आज्ञा सुनकर दूत दौड़े। वे अपने वेग से उत्तम घोडे को भी लज्जित करते हुए चले। जबसे अयोध्या में अनर्थ प्रारंभ हुआ तभी से भरत जी को अपशकुन होने लगे। वे रात को भयंकर स्वप्न देखते थे और जागने पर उन स्वप्नों के कारण बुरी-बुरी कल्पनाएँ किया करते थे। अनिष्ट शांति के लिए वे प्रतिदिन ब्राम्हणों को भोजन कराकर दान देते थे। अनेक विधियों से रुद्राभिषेक करते थे। महादेव जी से हृदय में मन ही मन प्रार्थना करके माता- पिता, परिवारजन और भाइयों का कुशल क्षेम मांगते थे। भरत जी इस प्रकार मन में चिंता कर रहे थे कि दूत आ पहुँचे। कानों से गुरुजी की आज्ञा सुनकर गणेश जी से मन ही मन प्रार्थना करके चल पड़े।

काव्यगत विशेषताएं-

• तुलसीदास ने शोक एवं आशंका संचारी भाव के माध्यम से अपशकुन एवं दु:स्वप्न आदि को अभिप्राय के रूप में वर्णित किया।इन अभिप्राय में लोक विश्वास निहित होता है।

•रस- करुण

•छन्द- चौपाई, दोहा

•अलंकार - अनुप्रास, अतिश्योक्ति

•गुण- प्रसाद

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• वशिष्ठ ने दूतों को भेजकर किसको बुलाया?

चले समीर बेग हय हाँके।नाघत सरित सैल बन बाँके।।
हृदयँ सोचु बड़ कछु न सोहाई।अस जानहिं जियँ जाउँ उड़ाई।।
एक निमेष बरस सम जाई।एहि बिधि भरत नगर निअराई।।
असगुन होहिं नगर पैठारा।रटहिं कुभाँति कुखेत करारा।।
खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला।सुनि सुनि होइ भरत मन सूला।।
श्रीहत सर सरिता बन बागा।नगरु बिसेषि भयावनु लागा।।
खग मृग हय गय जाहिं न जोए।राम बियोग कुरोग बिगोए।।
नगर नारि नर निपट दुखारी।मनहुँ सबन्हि सब संपति हारी।।
दो0-पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गवँहिं जोहारहिं जाहिं।
भरत कुसल पूँछि न सकहिं भय बिषाद मन माहिं।। 158।।

शब्दार्थ- समीर- हवा, हय- घोड़ा, सरित-नदी, सैल-पहाड़, खर- गधा, खग-पक्षी, गय-हाथी।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश रामचरितमानस महाकाव्य के 'अयोध्याकाण्ड' से उद्धृत है। जिसके रचयिता तुलसीदास जी है।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में तुलसीदास जी ने दूतों द्वारा भरत को संदेश देने तथा उनके साथ वापस अयोध्या आने का प्रसंग बताया है। साथ ही नगर में प्रवेश करते ही तरह-तरह के अपशकुन को देखकर तथा नगरवासियों के उदास चेहरे को देखकर भरत के मन की व्याकुलता का वर्णन है।

व्याख्या- तुलसीदास जी कहते हैं; कि हवा के समान वेग वाले घोड़ों को हाँकते हुए वे विकट नदी पहाड़ तथा जंगलों को लांघते हुए चले। उनके हृदय में अत्यधिक चिंता है कुछ अच्छा नहीं लगता,मन में ऐसा सोचते थे कि उड़कर पहुँच जाऊँ। एक-एक पलक निमेष वर्ष के समान बीत रहा था, इस प्रकार भरत जी नगर के समीप पहुँचे। नगर में प्रवेश करते समय अपशकुन होने लगे। कौए बुरी जगह बैठकर बुरी तरह से काँव-काँव कर रहें हैं। गधे और सियार प्रतिकूल बोल रहे हैं। यह सुन-सुनकर भरत के मन में बड़ी पीडा हो रही है। तालाब, नदी, वन एवं बगीचे सब शोभाहीन हो रहे हैं। नगर बहुत ही भयानक लग रहा है। श्री राम के वियोग रूपी बुरे रोग से सताये हुए पशु-पक्षी घोड़े हाथी ऐसे दुखी हो रहे हैं कि देखे नहीं जाते। नगर के स्त्री-पुरुष

अत्यन्त दुःखी हो रहे हैं। मानो अपनी सब सम्पत्ति हार बैठे हो। नगर के लोग भरत से मिलते हैं पर कुछ कहते नहीं चुपके से वन्दना करके चले जाते हैं भरत जी भी किसी से कुशल क्षेम नहीं पूछ सकते। क्योंकि उनके मन में भय और विषाद हो रहा है।

काव्यगत विशेषताएं-

•लोक विश्वास एवं काव्यरूढ़ियों के माध्यम से भरत के मन के भय और विषाद का चित्रण है।

•रस- शांत रस,भयानक रस

•छन्द-चौपाई, दोहा

•अलंकार - पुनरुक्तिप्रकाश, छेकानुप्रास,उत्प्रेक्षा

•गुण- प्रसाद

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• भरत जी को किस प्रकार के अपशकुन हो रहे थे।

हाट बाट नहिं जाइ निहारी।जनु पुर दहँ दिसि लागि दवारी।।
आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि।हरषी रबिकुल जलरुह चंदिनि।।
सजि आरती मुदित उठि धाई।द्वारेहिं भेंटि भवन लेइ आई।।
भरत दुखित परिवारु निहारा। मानहुँ तुहिन बनज बनु मारा।।
कैकेई हरषित एहि भाँति। मनहुँ मुदित दव लाइ किराती।।
सुतहि ससोच देखि मनु मारें।पूँछति नैहर कुसल हमारें।।
सकल कुसल कहि भरत सुनाई। पूँछी निज कुल कुसल भलाई।।
कहु कहँ तात कहाँ सब माता। कहँ सिय राम लखन प्रिय भ्राता।।

दो0-सुनि सुत बचन सनेहमय कपट नीर भरि नैन।

भरत श्रवन मन सूल सम पापिनि बोली बैन।। 159।।

शब्दार्थ- हाट-बाजार, बाट-रास्ते, पुर-नगर, सुत-पुत्र, मुदित-आनन्द, तात-पिता, नीर-पानी।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश रामचरितमानस महाकाव्य के 'अयोध्याकाण्ड' से उद्धृत है। जिसके रचयिता तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में भरत का नगर में प्रवेश तथा कैकेयी द्वारा उनके स्वागत का वर्णन है।

व्याख्या- बाजार और रास्ते देखे देख नहीं जाते मानों नगर में दशों दिशाओं में दावाग्नि लगी हुई है। पुत्र को आते सुनकर सूर्यकुल रूपी कमल के लिए चांदनी रूपी कैकेयी बड़ी हर्षित हुई। वह आरती सजाकर आनन्द में भरकर उठ कर दौड़ी और दरवाजे पर मिलकर उन्हें महल में ले आई। भरत ने सारे परिवार को दुःखी देखा मानो कमल के समूह को पाला मार गया हो। एक कैकेयी ही इस तरह हर्षित दिखती हैं मानों भीलनी जंगल में आग लगाकर आनन्द मना रही हो। पुत्र को चिंताग्रस्त एवं उदास देखकर वह पूछने लगी हमारे नैहर में कुशल तो है। भरत जी ने सब कुशल

कह कर सुनाया। फिर अपने कुल का कुशल क्षेम पूँछा। भरत जी ने कहा कहो बताओ पिताजी कहाँ हैं? मेरी सब माताएँ सीताजी और मेरे प्यारे भाई राम, लक्ष्मण कहाँ हैं? पुत्र के स्नेहमय वचन सुनकर नेत्रों में कपट का जल भरकर पापिनी कैकेयी भारत के कानों में और मन में शूल के समान चुभने वाले वचन बोली।

काव्यगत विशेषताएं-

•कवि दो विरोधी भावों को समानान्तर लाता है। एक ओर कैकेयी का हर्ष है तो दूसरी ओर भारत की आशंका एवं उदासीनता।

•रस- शान्त एवं वात्सल्य

•छन्द- चौपाई और दोहा

•अलंकार- अनुप्रास,उत्प्रेक्षा

•गुण- माधुर्य

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• प्रस्तुत पद में कैकेयी ने भरत से क्या कहा?

तात बात मैं सकल सँवारी। भै मंथरा सहाय बिचारी।।
कछुक काज बिधि बीच बिगारेउ। भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ।।
सुनत भरतु भए बिबस बिषादा। जनु सहमेउ करि केहरि नादा।।
तात तात हा तात पुकारी। परे भूमितल ब्याकुल भारी।।
चलत न देखन पायउँ तोही। तात न रामहि सौंपेहु मोही।।
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी। कहु पितु मरन हेतु महतारी।।
सुनि सुत बचन कहति कैकेई। मरमु पाँछि जनु माहुर देई।।
आदिहु तें सब आपनि करनी। कुटिल कठोर मुदित मन बरनी।।
दो0-भरतहि बिसरेउ पितु मरन सुनत राम बन गौनु।
हेतु अपनपउ जानि जियँ थकित रहे धरि मौनु।।160।।

शब्दार्थ- काज- काम, सुरपति-देवलोक, विषाद- दुःख, केहरि-सिंह, भूमितल-जमीन पर।

संदर्भ-प्रस्तुत पद्यांश सुप्रसिद्ध लोकप्रिय महाकाव्य 'रामचरितमानस के 'अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है। जिसके रचयिता 'गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में कैकेयी और भरत के बीच का संवाद तथा भरत की व्याकुलता का प्रसंग है।

व्याख्या- तुलसीदास जी कहते है कि हे तात! मैंने सारी बात बना ली थी। बेचारी मन्थरा सहायक हुई पर विधाता ने बीच में जरा-सा काम बिगाड़ दिया। वह यह कि राजा देवलोक को

पधार गये। भरत यह सुनते ही बेहाल हो गये। मानो सिंह की गर्जना सुनकर हाथी सहम गया हो। वे तात! तात ! हा तात ! पुकारते हुए अत्यन्त व्याकुल होकर जमीन पर गिर पड़े। और विलाप करने लगे कि हे तात! मैं आपको चलते समय देख भी न सका। हाय, आप मुझे श्रीराम जी को सौंप भी नहीं गये। फिर धीरज धरकर वे सँभलकर उठे और बोले- माता! पिता के मरने का कारण तो बताओ। पुत्र का वचन सुनकर कैकेयी कहती हैं मानों घावों को उकेरकर उसमें जहर भर रही हो। कुटिल और कठोर कैकेयी ने अपनी सब करनी शुरू से आखिर तक बड़े प्रसन्न मन से सुना दी। श्रीरामचन्द्र का वन जाना सुनकर भरत जी को पिता का मरण भूल गया और हृदय में इन सारे अनर्थ का कारण अपने को ही जानकर वे मौन होकर स्तम्भित रह गये अर्थात् उनकी बोली बंद हो गयी और वे सन्न रह गये।

काव्यगत विशेषताएं -

• कैकेयी और मंथरा के षड़यंत्र को भावयोजना के माध्यम से चित्रित किया गया है।

•रस- करुण रस।

•छन्द- चौपाई, दोहा।

•अलंकार- उत्प्रेक्षा, पुनरुक्तिप्रकाश, छेकानुप्रास

•गुण- प्रसाद, माधुर्य

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• प्रस्तुत पद में भरत की क्या मनोदशा है उसके विषय में बताइए।

बिकल बिलोकि सुतहि समुझावति। मनहुँ जरे पर लोनु लगावति।।
तात राउ नहिं सोचै जोगू। बिढ़इ सुकृत जसु कीन्हेउ भोगू।।
जीवत सकल जनम फल पाए। अंत अमरपति सदन सिधाए।।
अस अनुमानि सोच परिहरहू। सहित समाज राज पुर करहू।।
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू। पाकें छत जनु लाग अँगारू।।
धीरज धरि भरि लेहिं उसासा। पापिनि सबहि भाँति कुल नासा।।
जौं पै कुरुचि रही अति तोही। जनमत काहे न मारे मोही।।
पेड़ काटि तैं पालउ सींचा। मीन जिअन निति बारि उलीचा।।

दो0- हंसबंसु दसरथु जनकु राम लखन भाइ।

जननी तूँ जननी भई बिधि सन कछु न बसाइ || 161।।

शब्दार्थ- लोनु- नमक, सुकृत-पुण्य, सदन घर, उसासा- लंबी सांस, जन्मत- जन्म लेते ही, मीन- मछली।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश सुप्रसिद्ध महाकाव्य 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' से अवतरित है। जिसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास' जी है।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में कैकेयी के दोष को जानकर भरत द्वारा उन्हें धिक्कारने तथा उनकी कोख से जन्म लेने के पश्चाताप का वर्णन किया गया है।

व्याख्या- पुत्र को व्याकुल देखकर कैकेयी समझाने लगी। मानो जले पर नमक लगा रही हो। वह बोली हे तात! राजा शोक के योग्य नहीं हैं उन्होंने पुण्य और यश कमा कर उसका पर्याप्त भोग किया है। जीवनकाल में ही उन्होंने जन्म लेने के सम्पूर्ण फल को पा लिया है और अंत में वे इंन्द्रलोक को चले गयें हैं। ऐसा विचारकर शोक को छोड़ दो और समाज सहित नगर अयोध्या पर राज्य करो। राजकुमार भरत जी यह सुनकर बहुत ही सहम गये मानो पके घाव पर अंगार छू गया हो। उन्होंने धीरज धरकर बड़ी लंबी साँस लेकर कहा- पापिनी ! तुमने सभी तरह से कुल का नाश कर दिया। हाय। यदि तेरी ऐसी ही अत्यन्त बुरी इच्छा थी तो तूने मुझे जन्मते ही मुझे मार क्यों न डाला ? तूने पेड़ को काटकर पत्ते को सींचा है और मछली के जीने के लिए पानी ही उलीच डाला अर्थात मेरा हित करने की सोचकर उल्टा तूने मेरा ही अहित कर डाला। मुझे सूर्यवंश सा वंश दशरथ जी सरीखे पिता और राम-लक्ष्मण जैसे भाई मिले पर हे जननी! मुझे जन्म देने वाली माता तू हुई। क्या किया जाय विधाता के सामने कुछ भी बस नहीं चलता।

काव्यगत विशेषताएं-

•भरत द्वारा अपनी माता की भत्र्सना करना राम के प्रति महत्तम एकांतनिष्ठा को प्रदर्शित करता है जिससे भरत की चारित्रिक उज्जवलता का प्रकटीकरण हो जाता है।

•रस- करुण, रौद्र

•छन्द - चौपाई, दोहा

•अलंकार- अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा

•गुण - प्रसाद, ओज

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• प्रस्तुत पद में भरत ने कैकयी को क्या कहा?

जब तैं कुमति कुमत जियँ ठयऊ। खंड खंड होइ ह्रदउ न गयऊ।।
बर मागत मन भइ नहिं पीरा। गरि न जीह मुहँ परेउ न कीरा।।
भूँप प्रतीत तोरि किमि कीन्ही। मरन काल बिधि मति हरि लीन्ही।।
बिधिहुँ न नारि हृदय गति जानी। सकल कपट अघ अवगुन खानी।।
सरल सुसील धरम रत राऊ। सो किमि जानै तीय सुभाऊ।।
अस को जीव जंतु जग माहीं। जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं।।
भे अति अहित रामु तेउ तोही। को तू अहसि सत्य कहु मोही।।

जो हसि सो हसि मुहँ मसि लाई। आँखि ओट उठि बैठहि जाई।।

दो0-राम बिरोधी हृदय तें प्रगट कीन्ह बिधि मोहि।

मो समान को पातकी बादि कहउँ कछु तोहि।। 162।।

शब्दार्थ- खंड-खंड-टुकड़े टुकड़े, बर-वरदान, भू भूँप-राजा, किमि-कैसे, ओट-पीछे।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश सुप्रसिद्ध लोकप्रिय महाकाव्य रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से उद्धृत है। जिसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में दशरथ की मृत्यु के कारण को जानने के बाद भरत द्वारा कैकेयी को धिक्कारने का प्रसंग है।

व्याख्या-भरत अपनी माँ को धिक्कारते हुए कहते हैं, कि अरे कुमति ! जब तूने हृदय में यह बुरा विचार ठाना उसी समय तेरे हृदय के टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गए। वरदान मांगते समय तेरे मन में कुछ भी पीड़ा नहीं हुई। तेरी जीभ गल नहीं गई। तेरे मुँह में कीड़े नहीं पड़ गए। राजा ने तेरा विश्वास कैसे कर लिया ? ऐसा लगता है कि विधाता ने मृत्युकाल में उनकी बुद्धि हर ली थी। स्त्रियों के हृदय की गति विधाता भी नहीं जान सके। वह संपूर्ण पाप और अवगुणों की खान हैं। फिर राजा तो सीधे, सुशील और धर्म परायण थे वे भला स्त्री स्वभाव को कैसे जान पाते। अरे जगत के जीव-जंतुओं में ऐसा कौन है जिसे श्री रघुनाथ जी प्राणों के समान प्यारे न हों वही श्रीराम जी ही तुम्हारे लिए अहितकर हो गये। इसलिए तू कौन है? मुझे सच-सच कह तू जो है सो है अब मुँह में स्याही पोतकर उठकर मेरी आँखों की ओट में जाकर बैठो। विधाता ने मुझे हृदय से राम का विरोधी बना दिया मेरे बराबर पापी दूसरा कौन है? मैं व्यर्थ ही तुझे कुछ कहता हूँ? क्योंकि मैं ही जन्म से तेरा विरोधी साबित हुआ हूँ।

काव्यगत विशेषताएं-

• भरत की आत्मभत्र्सना से भरत का चरित्र निर्मल होगा जो की कवि के वर्णन क्रम को केंद्रियता प्रदान करता है।

•रस- रौद्र रस, करुण रस

•छन्द- चौपाई, दोहा

•अलंकार - उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास

•गुण- ओज, प्रसाद

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• सकट कपट अघ अवगुन खानी। भरत ने किसके लिए कहा है?

सुनि सत्रुघुन मातु कुटिलाई। जरहिं गात रिस कछु न बसाई।।

तेहि अवसर कुबरी तहँ आई। बसन बिभूषन बिबिध बनाई।।
लखि रिस भरेउ लखन लघु भाई। बरत अनल घृत आहुति पाई।।
हुमगि लात तकि कूबर मारा। परि मुह भर महि करत पुकारा।।
कूबर टूटेउ फूट कपारू।दलित दसन मुख रुधिर प्रचारू।।
आह दइअ मैं काह नसावा। करत नीक फलु अनइस पावा।।
सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी। लगे घसीटन धरि धरि झोंटी।।
भरत दयानिधि दीन्हि छड़ाई। कौसल्या पहिं गे दोउ भाई।।
दो0- मलिन बसन बिबरन बिकल कृस सरीर दुख भार।
कनक कलप बर बेलि बन मानहुँ हनी तुसार।।163।।

शब्दार्थ- बसन-वस्त्र, लघु-छोटा, अनल- आग, कपार-सर, रुधिर-खून, तुसार-पाला

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश लोकप्रिय महाकाव्य 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' से अवतरित है। जिसके रचयिता महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी है।

प्रसंग-प्रस्तुत पद्यांश में शत्रुघ्न के गुस्से का प्रसंग वर्णित है। गुस्से में शत्रुघ्न द्वारा मंथरा को लात से मारने तथा अत्याधिक रोष का वर्णन किया गया है।

व्याख्या-अपनी माता की कुटिलता सुनकर शत्रुघ्न जी के सब अंग क्रोध से जल रहे हैं। पर कुछ वश नहीं चलता उसी समय भांति-भांति के कपड़ों और गहनों से सजकर मंथरा वहाँ आई। उसे सजी देखकर लक्ष्मण के छोटे भाई शत्रुघ्न जी क्रोध से भर गए मानो जलती हुई आग को घी की आहुति मिल गई हो। उन्होंने जोर से हुमक करके कूबड़ पर एक लात मार दी वह चिल्लाती हुई मुँह के बल जमीन पर गिर पड़ी। उसका कपाल फूट गया, दाँत निकल गए और मुँह से खून बहने लगा। वह कराहती हुई बोली हाय दैव! मैंने क्या बिगाड़ा जो भला करते बुरा फल पाया। यह बात सुनकर और उसे नख से शिखा तक दुष्ट जानकर शत्रुघ्न जी उसके बाल पकड़कर उसे घसीटने लगे तब दयानिधि भरत जी ने उसे छुड़ा लिया और दोनों भाई तुरंत कौसल्या जी के पास गए। कौसल्या जी मैले वस्त्र पहने हैं। चेहरे का रंग बदला हुआ है। व्याकुल हो रही हैं। दुःख के बोझ से शरीर सूख गया है ऐसी दिख रही हैं मानों वन की सुन्दर कल्पलता को वन में पाला मार गया हो।

काव्यगत विशेषताएं-

• प्रस्तुत पद्यांश में कुबरी प्रसंग के माध्यम से शोक से उमड़ते हुए मन के प्रतिशोध का भाव व्यक्त हुआ है।

•रस- रौद्र, करुण

•छन्द - चौपाई, दोहा

•अलंकार - उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश

•गुण- ओज, माधुर्य

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• शत्रुघ्न ने मंथरा के साथ कैसा व्यवहार किया?

भरतहि देखि मातु उठि धाई।मुरुछित अवनि परी झइँ आई।।
देखत भरतु बिकल भए भारी। परे चरन तन दसा बिसारी।।
मातु तात कहँ देहि देखाई। कहँ सिय रामु लखनु दोउ भाई।।
कैकयी कत जनमी जग माझा। जौं जनमि त भइ काहे न बाँझा।।
कुल कलंकु जेहिं जनमेउ मोही। अपजस भाजन प्रियजन द्रोही।।
को तिभुवन मोहि सरिस अभागी। गति असि तोरि मातु जेहि लागी।।
पितु सुरपुर बन रघुबर केतू। मैं केवल सब अनरथ हेतू।।
धिग मोहि भयउँ बेनु बन आगी। दुसह दाह दुख दूषन भागी।।
दो0-मातु भरत के बचन मृदु सुनि पुनि उठी सँभारि।।
लिए उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति बारि।।164।।

शब्दार्थ-अवनि-पृथ्वी, सरिस-समान, मृदु-मीठे, लोचन-आँख।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश लोकप्रिय महाकाव्य 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' से अवतरित है। जिसके रचयिता महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी है।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में भरत को देखकर कौसल्या की वात्सल्यमयी स्थिति का अत्यन्त दारुण वर्णन किया गया है।

व्याख्या- भरत को देखते ही माता कौसल्या जी उठकर दौड़ी किन्तु चक्कर आ जाने से मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। यह देखते ही भरत जी बहुत व्याकुल हो गए और शरीर की सुध भुलाकर चरणों में गिर पड़े फिर बोले माता पिताजी कहाँ हैं? उन्हें दिखा दो। सीताजी तथा मेरे दोनो भाई श्रीराम, लक्ष्मण कहाँ है उन्हें दिखा दो। कैकेयी ने जन्म क्यों लिया यदि जन्मीं तो फिर बांझ क्यों न हुई ? जिसने कुल के कलंक अपयश के पात्र और प्रियजनों के द्रोही मुझ जैसे पुत्र को जन्म दिया। तीनों लोकों में मेरे समान अभागा कौन होगा,जिसके कारण हे माता तुम्हारी यह दशा हुई। पिताजी स्वर्ग में है और श्रीराम जी वन में हैं। केतु के समान केवल मैं ही इन सब अनर्थों का कारण हूँ। मुझे धिक्कार है मैं रघुवंश रूपी बाँस के वन के लिए आग होकर कठिन दाह दुःख और दोषों का भागी बना। भरत जी कोमल वचन सुनकर माता कौसल्या जी फिर संभल कर उठीं। उन्होंने भरत को उठाकर छाती से लगा लिया। और नेत्रों से आसूँ बहाने लगी।

काव्यगत विशेषताएं-

• कवि भरत द्वारा भत्र्सना,आत्मग्लानि एवं अंतःकरण की निर्मलता के क्रम में भरत के चरित्र को निखार रहा है।

•रस- करुण, वात्सल्य

•छन्द-चौपाई,दोहा

•अलंकार - उपमा, छेकानुप्रास

•गुण- प्रसाद, माधुर्य

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• प्रस्तुत पद में भरत ने कौसल्या से क्या कहा?

सरल सुभाय मायँ हियँ लाए। अति हित मनहुँ राम फिरि आए।।
भेंटेउ बहुरि लखन लघु भाई। सोकु सनेहु न हृदयँ समाई।।
देखि सुभाउ कहत सबु कोई। राम मातु अस काहे न होई।।
माताँ भरतु गोद बैठारे। आँसु पोंछि मृदु बचन उचारे।।
अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू। कुसमउ समुझि सोक परिहरहू।।
जनि मानहु हियँ हानि गलानी। काल करम गति अघटित जानि।।
काहुहि दोसु देहु जनि ताता। भा मोहि सब बिधि बाम बिधाता।।
जोए तेहुँ दुख मोहि जिआवा। अजहुँ को जानइ का तेहि भावा।।
दो0-पितु आयस भूषन बसन तात तजे रघुबीर।

बिसमउ हरषु न हृदयँ कछु पहिरे बलकल चीर। 165।।

शब्दार्थ- मृदु-कोमल, बाम-उल्टा, भूषण-बसन, आभूषण और वस्त्र

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश लोकप्रिय महाकाव्य 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' से उदधृत है। जिसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में भरत और कौसल्या के वात्सल्य का दारुणिक वर्णन किया गया है तथा कौसल्या द्वारा भरत को धैर्य धारण करने की बात कही गयी है।

व्याख्या- तुलसीदास जी कहते हैं कि सरल स्वभाव वाली माता ने बड़े प्रेम से भरत जी को छाती से लगा लिया मानों श्रीराम जी लौट कर आ गए हों फिर लक्ष्मण जी के छोटे भाई शत्रुघ्न को हृदय से लगाया। शोक और स्नेह हृदय में समाता नहीं। कौसल्या जी का स्वभाव देखकर सब कोई कह रहे हैं कि श्रीराम की माता का ऐसा स्वभाव क्यों न हो? माता ने भरत जी को गोद में बैठाया और उनके आंसू पोछकर कोमल वचन में कहा हे वत्स! मैं बलैय्या लेती हूँ तुम अब भी धैर्य धारण करो बुरा समय समझकर शोक त्याग दो। काल और कर्म की गति अमिट जानकर हृदय में हानि और ग्लानि मत मानो। हे तात! किसी को दोष मत दो। विधाता मेरे लिए सब प्रकार से उल्टा हो गया है। जो इतने बड़े दुःख पर भी मुझे जीवित रखा है। अब भी कौन जानता

है, कि उसका क्या विचार है? हे तात! पिता की आज्ञा से श्री रघुवीर ने भूषण- वस्त्र त्याग दिये और वल्कल वस्त्र पहन लिए। उनके हृदय में न कुछ विषाद था और न हर्ष।

काव्यगत विशेषताएं-

•कौसल्या का भरत के प्रति स्नेह का सुंदर चित्रण हुआ है।

•रस- वियोग रस, करुण रस,वात्सल्य रस

•छन्द - चौपाई, दोहा।

•अलंकार- उत्प्रेक्षा, छेकानुप्रास।

•गुण- प्रसाद, माधुर्य

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• प्रस्तुत पद में किस तरह की भाषा का प्रयोग मिलता है।

मुख प्रसन्न मन रंग न रोषू। सब कर सब बिधि करि परितोषू।।
चले बिपिन सुनि सिय सँग लागी। रहइ न राम चरन अनुरागी।।
सुनतहिं लखनु चले उठि साथा। रहहिं न जतन किए रघुनाथा।।
तब रघुपति सबही सिरु नाई। चले संग सिय अरु लघु भाई।।
राम लखन सिय बनहि सिधाए। गइउँ न संग न प्रान पठाए।।
यहु सबु भा इन्ह आँखिन्ह आगें। तउ न तजा तनु जीव अभागें।।
मोहि न लाज निज नेहु निहारी। राम सरिस सुत मैं महतारी।।
जिऐ मरै भल भूपति जाना। मोर हृदय सत कुलिस समाना।।
दो0- कौसल्या के बचन सुनि भरत सहित रनिवासु।
ब्याकुल बिलपत राजगृह मानहुँ सोक नेवासु।।166।।

शब्दार्थ- रोषू-द्वेष, लघु-छोटा, तजा-त्यागा, निहारी-देखकर, सरिस- की तरह, कुलिस-वज्र।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश सुप्रसिद्ध लोकप्रिय महाकाव्य 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' से उद्धृत है। जिसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी है।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में माता कौसल्या भरत को श्रीराम के वनगमन के समय उनकी भावभंगिमा तथा साथ में सीता जी और लक्ष्मण के जाने की बात का संपूर्ण प्रसंग सुनाती हैं।

व्याख्या- तुलसीदास जी लिखते हैं, कि उनका मुख प्रसन्न था; मन में न आनन्द था, न रोष। सबको सब तरह से सन्तोष कराकर वे वनको चले गये। यह सुनकर सीता भी उनके साथ चली गयीं। श्रीराम के चरणों की अनुरागिणी वे राम के बिना किसी तरह रहती ऐसा सुनते ही लक्ष्मण भी उठकर साथ चले गये। श्री रघुनाथ ने उन्हें रोकने के बहुत यत्न किए, किन्तु लक्ष्मण ने उनकी एक न सुनी। तब श्रीरघुनाथ जी सभीको सिर झुकाकर सीता और छोटे भाई लक्ष्मण को साथ

लेकर चले गये। श्रीराम, लक्ष्मण और सीता वन को चले गये। मैं न तो साथ जा सकी और न मैंने अपने प्राण ही उनके साथ भेजा। यह सब इन्हीं आंखों के सामने हुआ। तो भी अभागे मेरे जीव ने शरीर नहीं छोड़ा। अपने आप को देखकर मुझे लज्जा भी नहीं आती, राम के समान पुत्र की कैसी मैं माता। जीना और मरना तो राजा ने खूब समझा। मेरा हृदय तो सैकड़ो वज्रों के समान कठोर है। कौसल्या जी के वचनों को सुनकर भरत सहित सारा रनिवास व्याकुल होकर विलाप करने लगा। राजमहल मानो शोक का निवास बन गया हो।

काव्यगत विशेषताएं-

•कौसल्या ने राम वनगमन के समय मातृत्व तथा कर्तव्य के द्वन्द में कर्तव्य के पक्ष को महत्त्वपूर्ण समझा जो नैतिकता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

•रस- करुण रस

•छन्द - चौपाई, दोहा

•अलंकार- अनुप्रास, उत्प्रेक्षा

•गुण- प्रसाद, माधुर्य

•भाषा-अवधी।

बोध प्रश्न-

• प्रस्तुत पद्यांश में कौसल्या अपनी मनोव्यथा को कैसे व्यक्त कर रही हैं, चित्रित कीजिए।

7.4 : पाठ सार

इस इकाई की कथा सुमंत्र के अयोध्या लौटने से शुरू होती है।सुमंत्र को राम के बिना अयोध्या का राजमहल श्मशान जैसा लगने लगता है अभी तक तो दशरथ को कुछ आशा भी थी किंतु सुमंत्र को अकेला वापस आया देखकर वह भी नष्ट हो गई। पुत्र वियोग की छटपटाहट और विकलता में महाराज दशरथ का विलाप पाठक के हृदय को छू लेता है। छटपटाते हुए एक पिता का प्राण-त्याग तुलसी ने बड़े कारुणिक रूप में प्रस्तुत किया है। जब भरत ननिहाल से अयोध्या वापस लौटते हैं तब मार्ग में ही उन्हें किसी अमंगल की आशंका होने लगती है। समस्त जलाशय,सरिताएं,पेड़- पौधे, पशु-पक्षी उन्हें विषाद-ग्रस्त से दृष्टिगत होते हैं।सम्पूर्ण अयोध्यानगरी भयावनी-सी लगती है और भरत किसी अज्ञात आशंका से घिर जाते हैं।अन्त:पुर में प्रवेश करते ही उन्हें सीता और लक्ष्मण के साथ-साथ राम के वन गमन और महाराज दशरथ के स्वर्गवास की अशुभ सूचना प्राप्त होती है उनके हृदय पर कठोर वज्रपात हो जाता है आत्मग्लानि से परिपूर्ण उनका कातर हृदय अपने को नितान्त असहाय अनुभव करते हुए चित्कार कर उठता है।कैकेयी अनेक प्रकार से समझाती है,किंतु उसकी बातें भरत को जले पर नमक जैसी लगती हैं। जब कैकेयी भरत को राज सिंहासन संभालने की बात कहती है तब तो वह चौंक जाते हैं और उसी आवेश में आकर ना जाने क्या कुछ नहीं कह जाते हैं,इसके बाद वह

कैकेयी से विमुख होकर माता कौसल्या के पास चले जाते हैं। भरत के पहुंचते ही माता कौसल्या का जो रूप-वेश कवि ने वर्णित किया है वह न केवल एक मां की वेदना को ही साकार नहीं करता था बल्कि कितनी पुत्र वियोगिनी माता का दैन्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत कर रहा था। माता कौसल्या अपनी आंखों में आंसू लिए दु:खी होकर दु:खी भरत को अपने हृदय से लगा लेती हैं और उन्हें धैर्यपूर्वक सांत्वना देती हैं।इस प्रकार स्पष्ट है कि अयोध्याकाण्ड का यह अंश अत्यधिक मार्मिक है,जिसको पढ़ने से हृदय करुणा से भर जाता है।

7.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1- प्रस्तुत काव्यांश रामचरितमानस महाकाव्य का अंश है,जो प्रबंधात्मक शैली की रचना है।

2- कोई भी रचना रस के बिना आनंद की अनुभूति नहीं कर सकती। संपूर्ण काव्यांश में करुण रस का बहुत ही सुंदर प्रयोग हुआ है इसके साथ ही कहीं-कहीं वात्सल्य, रौद्र और भयानक रस को भी देखा जा सकता है।

3- भाषा एवं शैली की दृष्टि से यह कहा जा सकता है की सम्पूर्ण काव्यांश में दोहा-चौपाई और सोरठा छंदों का प्रयोग हुआ है तथा सम्पूर्ण काव्यांश अवधी भाषा में रचित है।

4- इस काव्यांश में तत्कालीन समाज,धर्म, राजनीति, पारिवारिक व्यवस्था, नैतिकता एवं आदर्श सभी के दर्शन होते हैं।

5- रामचरितमानस केवल भक्ति और धर्म को स्थापित करने वाला ग्रंथ नहीं है बल्कि उच्च कोटि का साहित्यिक महाकाव्य भी है,जो समाज के लिए आदर्श की स्थापना करता है।

7.6 : शब्द सम्पदा

1- अनर्थ होना - विनाश होना

2- अपशकुन - अशुभ लक्षण

3- कुशल क्षेम - कुशल, संपन्न तथा स्वस्थ होने की स्थिति

4- एकांत निष्ठा - अनन्य विश्वास

5-उज्ज्वलता - उजलापन, स्वच्छता

6-कलंक - दाग. बदनामी

7.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1- अयोध्याकाण्ड के पठित अंश के आधार पर राम का चरित्र-चित्रण कीजिए।

2- अयोध्याकाण्ड के पठित अंश के आधार पर मार्मिक स्थलों का वर्णन कीजिए।

3- अयोध्याकाण्ड के पठित अंश के आधार पर काव्यसौष्ठव की विशेषता बताइए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1-अयोध्याकाण्ड के पठित अंश के आधार पर राजा दशरथ की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

2- जनम मरन सब दुख सुख भोगा। हानि लाभु प्रिय मिलन बियोगा।।
काल करम बस होहिं गोसाई।बरबस राति दिवस की नाईं।।
सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं। दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं।।
धीरज धरहु बिबेक बिचारी।छाड़िअ सोच सकल हितकारी।
इस अंश की स प्रसंग व्याख्या कीजिए।

3- कहब सँदेसु भरत के आएँ। नीति न तजिअ राजपदु पाएँ।।
पालेहु प्रजहि करम मन बानी। सेएहु मातु सकल सम जानी।।
ओर निबाहेहु भायप भाई।करि पितु मातु सुजन सेवकाई।।
तात भाँति तेहि राखब राऊ। सोच मोर जेहिं करै न काऊ।।
इस अंश की स प्रसंग व्याख्या कीजिए।

खंड(स)

(I)सही विकल्प चुनिए-

(1) पठित अंश में किस नदी के तट पर राम ने निवास किया। ( )

(क) यमुना (ख) गोमती (ग) तमसा (घ) घाघरा

(2) राजा दशरथ को किसने श्राप दिया था। ( )

(क) वसिष्ठ (ख) कैकेयी (ग) श्रवण कुमार (घ) श्रवण कुमार के माता-पिता।

(3)राजा दशरथ की मृत्यु के बाद भरत-शत्रुघ्न को बुलाने के लिए किसने दूतों को भेजा। ()

(क) कैकेयी (ख) वसिष्ठ (ग) कौसल्या (घ) सुमित्रा।

(II) **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

(1) एहि बिधि करत..........पछितावा।

(2)..........किन्हि बहुत सेवकाई।

(3).......... नाँव भरि नृप तनु राखा।

(4) खंड..........होइ हृदय न गयऊ।।

(5).........काटि तैं पालउ सींचा।

(III)**सुमेल कीजिए-**

1- अमिअ	**(अ)** हृदय
2- लोचन	**(आ)** घोड़ा
3- उर	**(इ)** नेत्र
4- बाजि	**(ई)** गधा
5- खर	**(उ)** अमृत

7.8 : पठनीय पुस्तकें

1- तुलसीदास - श्री रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड

2- वियोगी हरि -अयोध्याकाण्ड श्री रामचरितमानस

3- योगेंद्र प्रताप सिंह -श्री रामचरितमानस द्वितीय सोपान अयोध्या काण्ड

4. चंद्र शुक्ल- गोस्वामी तुलसीदास

5- नंदकिशोर नवल- तुलसीदास

6- संपादक उदय भान सिंह- तुलसी

इकाई 8 : रामचरितमानस : अयोध्या काण्ड – VI : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

8. 1 प्रस्तावना
8. 2 उद्देश्य
8.3 मूल पाठ : रामचरितमानस : अयोध्या काण्ड – VI व्याख्या
8.3.1 अध्येय पाठांश की व्याख्या
8.4 पाठ सार
8.5 पाठ की उपलब्धियाँ
8.6 शब्द सम्पदा
8.7 परीक्षार्थ प्रश्न
8.8 पठनीय पुस्तकें

8.1 : प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! इस इकाई में रामचरितमानस के अयोध्या कांड के दोहा संख्या 167 से 187 तक व्याख्या की जा रही है । अयोध्या कांड में राम के राज्याभिषेक की तैयारी के मध्य में कैकयी द्वारा वर मांगे जाने पर अपने पिता के वचन को निभाने के लिए राम, लक्ष्मण और सीता वन की ओर प्रस्थान करते हैं। पुत्र वियोग में राजा दशरथ की मृत्यु हो जाती है। भरत अपनी मां से नाराजगी जताते हुए राजा के अधिकार को स्वीकार नहीं करते हैं। वे अपने स्वजनों के साथ चित्रकूट, जहाँ राम -सीता- लक्ष्मण वनवास में रह रहे थे, जाकर राम को वापस लाने की कोशिश भी करते हैं। उनके न आने पर भरत राजगद्दी पर राम की पादुकाओं को रखकर खुद नंदीग्राम में रहने लगते हैं।

8.2 : उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप-

- निर्धारित पाठांश की विषय वस्तु से परिचित हो सकेंगे।
- उसकी सप्रसंग व्याख्या कर सकेंगे।
- रामकथा में निहित जीवन मूल्यों को आत्मसात कर सकेंगे।

8.3 : मूल पाठ : रामचरित मानस : अयोध्या काण्ड - VI : व्याख्या

8. 3.1 : अध्येय पाठ की व्याख्या -

चौपाई और दोहे -

बिलपहिं बिकल भरत दोउ भाई। कौसल्याँ लिए हृदयँ लगाई।।
भाँति अनेक भरतु समुझाए। कहि बिबेकमय बचन सुनाए।।

भरतहुँ मातु सकल समुझाईं। कहि पुरान श्रुति कथा सुहाईं।।
छल बिहीन सुचि सरल सुबानी। बोले भरत जोरि जुग पानी।।
जे अघ मातु पिता सुत मारें। गाइ गोठ महिसुर पुर जारें।।
जे अघ तिय बालक बध कीन्हें। मीत महीपति माहुर दीन्हें।।
जे पातक उपपातक अहहीं। करम बचन मन भाव कबि कहहीं।।
ते पातक मोहि होहुँ बिधाता। जौं यहु होई मोर मत माता।।
दोहा - जे परिहरि हरि हर चरन भजहिं भूतगन घोर।
तेहि कइ गति मोहि देउ बिधि जौं जननी मत मोर।। **167**।।

शब्दार्थ : 1 भाँति - प्रकार 2 बिबेकमय - विवेक से भरा 3 मीत - मित्र, दोस्त
4 महीपति - राजा 5 माहुर - ज़हर 6 पातक - पाप
7 बिधि - विधाता 8 जारें - जलाना

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमे अपनी माँ द्वारा लिए गए वचन के बदले राम, सीता और लक्ष्मण का वन गमन और पिता की मृत्यु पर दुखी भरत विलाप (रो) कर रहे हैं।

व्याख्या : भरत और शत्रुघ्न दोनों विलाप कर रहे हैं। राम -सीता और लक्ष्मण के वन जाने से वह आहत हुए हैं। कौशल्या जी (राम की माँ) ने उन्हें गले लगाया और अनेक प्रसंगों के माध्यम से उन्हें समझाया। भरत अपना दुख पुराणों और वेदों से अनेक माताओं की कहानियों का उदाहरण दिया। दोनों हाथ जोड़ कर सच्चे दिल से कहा कि जो पाप माता -पिता और पुत्र मारने से होता है, जो पाप गोशाला और ब्राह्मणों की नगरी जलाने से हो, जो पाप स्त्री और बच्चे को मारने से हो, मित्र और राजा को जहर दे कर मारने से हो, काम, बात या दिल से किए हुए किसी भी तरह का छोटा - बड़ा पाप में यदि मेरा हिस्सा है तो तो हे माता उस पाप का दोष मुझे लगे और मैं उसकी सज़ा का भी हकदार हूँ। जो लोग श्री हरि (नारायण) और शंकर के शरण को छोड़ कर भयानक भूत -प्रेतों के पास मदद के लिए जाते हो या पूजते हो तो मेरा हाथ हो तो हे माता मुझे ईश्वर सज़ा जरूर दे, मेरी दुर्गति हो।

बोध प्रश्न :

- राम -सीता और लक्ष्मण कहाँ गए थे ?
- भरत की माता कौन थी और उन्होंने क्या वर माँगा ?

बेचहिं बेदु धरमु दुहि लेहीं। पिसुन पराय पाप कहि देहीं।।
कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी। बेद बिदूषक बिस्व बिरोधी।।
लोभी लंपट लोलुपचारा। जे ताकहिं परधनु परदारा।।
पावौं मैं तिन्ह कै गति घोर। जौं जननी यहु संमत मोरा।।

जे नहिं साधुसंग अनुरागे। परमारथ पथ बिमुख अभागे।।
जे न भजहिं हरि नर तनु पाई। जिन्हहि न हरि हर सुजसु सोहाई।।
तजि श्रुतिपंथु बाम पथ चलहीं। बंचक बिरचि बेष जगु छलहीं।।
तिन्ह कै गति मोहि संकट देऊ। जननी जौं यहु जानौं भेऊ।।
दोहा - मातु भरत के बचन सुनि साँचे सरल सुभायँ।
कहति राम प्रिय तात तुम्ह सदा बचन मन कायँ।। **168**।।

शब्दार्थ : 1 बेचहिं - बेचते 2 बिदूषक - वेदों के 3 बिस्व - विश्व, दुनिया
4 परदारा -पराई औरत 5 सुजसु - सुयश, नाम 6 साँचे - सच्चे

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमे भरत अपनी माँ की करनी पर लज्जित और दुखी है और सारे उदाहरणों के माध्यम से अपने आप को सच्चा और अपराध मुक्त बताना चाहते हैं।

व्याख्या : आगे कौशल्या जी से भरत कहते हैं कि जो लोग वेदों को बेचते हैं, धर्म को छोड़ देते हैं, चुगलखोरी करते हैं और दूसरों को पापी कह देते हैं, जो कपटी, कुटिल, झगड़ालू, गुसैला हो और वेदों की बुराई करने वाले और पूरी दुनिया के खिलाफ है। जो लालची, लम्पट और लोभियों जैसा व्यवहार करने वाले, जो पराए बहन और पराई औरत पर बुरी नज़र रखे और उनकी ताक में रहे, हे!मेरी प्यारी माँ !अगर इन में से किसी भी बुराई में मेरा हाथ हो तो मेरा भी बुरा ही हो, मुझे सज़ा मिले। जिसका सत्संगति में, जो अभागे सही राह चलना नहीं चाहता हो, जो मानव जन्म ले कर भी श्री हरि का भजन नहीं करते, जिनको हरि(भगवान) का नाम नहीं भाता। जो वेद मार्ग को छोड़ कर वाम मार्ग पर चलते हैं, जो लोगो को ठगते है, वेश बदलकर दुनिया में लोगों को छलते हो, हे माता अगर मैं इन में से किसी भी काम के बारे में सोचू तो भी शंकर जी मेरी भी दुर्गति ही करें। माता कौशल्या भरत के स्वभाव को जानते हैं। उन्हें स्वाभाविक सरल और सच्ची बातों को सुन कर कहने लगीं -हे पुत्र, तुम तो मन से, वचन और शरीर से हमेशा से ही अपने भाई श्री रामचंद्र के प्यारे रहे हो।

बोध प्रश्न :

- भरत किस बात से दुखी हैं ?
- शंकर जी किसकी दुर्गति करते हैं ?

राम प्रानहु तें प्रान तुम्हारे। तुम्ह रघुपतिहि प्रानहु तें प्यारे।।
बिधु बिष चवै स्रवै हिमु आगी। होइ बारिचर बारी बिरागी।।

भएँ ग्यानु बरु मिटै न मोहू। तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होहू।।
मत तुम्हार यहु जो जग कहहीं। सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं।।
अस कहि मातु भरतु हियँ लाए। थन पय स्त्रवहिं नयन जल छाए।।
करत बिलाप बहुत एहि भाँती। बैठेहिं बीति गई सब राती।।
बामदेउ बसिष्ठ तब आए। सचिव महाजन सकल बोलाए।।
मुनि बहु भाँति भरत उपदेसे। कहि परमारथ बचन सुदेसे।।
दोहा - तात हृदयँ धीरजु धरहु करहु जो अवसर आजु।
उठे भरत गुर बचन सुनि करन कहेउ सबु साजु।। 169।।

शब्दार्थ : 1 बारि - पानी, जल 2 हियँ - जिगर, ह्रदय 3बिधु - चन्द्रमा
4 बारिचर -जल में रहने वाला जीव 5 सुगति - शुभ गति 6 बामदेव - वामदेव

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमे भरत को रोता देख कौशल्या उन्हें समझाती है कि वे हमेशा अपने भाई (श्री राम) के प्यारे रहेंगे।

व्याख्या : श्री राम चंद्र जी तुम्हारे प्राणों से भी बढ़ कर तुम्हे प्यारे हैं और रघुनाथ को भी तुम उनके जान से भी प्रिय हो। चाँद भले ही ज़हर बरसाए, ओस चाहे आग बरसाने लगे, जलचर शायद पानी से अलग हो जाए और ज्ञान होने पर भी अगर मोह न मिटा पाए, पर तुम राम के खिलाफ कभी नहीं हो सकते। इसमें तुम्हारी हमेशा सहमति होगी, अगर ऐसा कोई भी तुम्हारे बारे में कहे तो उसे अपनों का प्यार और साथ नहीं मिलेगा। ऐसा कह कर कौशल्या ने भरत को हृदय से लगा लिया उनकी छाती से दूध बहने लगा और आँखों में प्रेम के आँसू भर गए। इस प्रकार रोते हुए सारी रात बैठे - बैठे ही बीत गई। तब वामदेवजी और वसिष्ठ जी आए। उन्होंने सब मंत्रियों और महाजनों को बुलवाया। फिर वशिष्ठ जी ने परमार्थ के सुन्दर और समय के अनुसार बोल कर भरत को अनेक प्रकार से समझाया और उपदेश दिया। वशिष्ठ जी ने भरत से कहा हे पुत्र ! मन में हौसला (धीरज) रखो और आज जो काम करना ज़रूरी है उसे करो। गुरुजी की बात सुनकर भरत जी उठे और सब को तैयारी करने के लिए कहा।

बोध प्रश्न :

- रघुनाथ जी को कौन प्रिय है ? सुबह कौन आए ?
- भरत जी को समझाने सुबह कौन आए ?

नृप तनु बेद बिदित अन्हवावा। परम बिचित्र बिमानु बनावा।।
गहि पद भरत मातु सब राखी। रहीं रानि दरसन अभिलाषा।।
चंदन अगर भार बहु आए। अमित अनेक सुगंध सुहाए।
सरजु तीर रचि चिता बनाई। जनु सुरपुर सोपान सुहाई।।
एहि बिधि दाह क्रिया सब कीन्ही। बिधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्हीं।।

सोधि सुमृति सब बेद पुराना। कीन्ह भरत दसगात बिधाना।।
जहँ जस मुनिबर आयसु दीन्ह। तहँ तस सहस भाँति सबु कीन्हा।।
भए बिसुद्ध दिए सब दाना। धेनु बाजि गज बाहन नाना।।
दोहा - सिंघासन भूषन बसन अन्न धरनि धन धाम।
दिए भरत लहि भूमिसुर भे परिपूर्रन काम।।170।।

शब्दार्थ : 1 बिदित - विधि (नियम) के अनुसार 2 सरजु - सरयु नदी 3 दरसन - दर्शन 4 आयसु - आज्ञा 5 बरनी - वर्णन, व्याख्या 6 बाजि - घोड़ा

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान अयोध्या काण्ड से लिए गए हैं। वशिष्ठ के समझाने पर राम की गैरहाज़िरी में भरत ने अपने मृत पिता का अंतिम संस्कार करके सारे कर्मकांड किया।

व्याख्या : वेदों में बताए गए तरीके से राजा के मृत शरीर को नहलाया गया। परम विचित्र विमान बनाया गया। भरत ने सभी माताओं के पैर ज़ोर से पकड़ लिए ताकि वह सति रूप में खुद न जल जाए। मांओं ने भी भरत की बात मान ली और वे भी श्रीराम के दर्शन के लिए रुक गए। चन्दन और अगरके तथा और भी अनेकों प्रकार के खुशबूदार पदार्थ (कपूर, गुग्गुल, केसर आदि).सुगंध (खुशबू) द्रव्य के बहुत सा सामान आया। सरयू नदी के तट सुन्दर चिता बनवाई गई, ऐसा लग रहा है जैसे वह जन्नत की सीढ़ी हो। इस प्रकार सारे कर्मकांड और रीति रिवाज़ो के साथ सबने विधि पूर्वक स्नान करके तिलांजलि दिया। फिर वेद, स्मृति और पुराण में दिए नियमों के अनुसार भरत ने पिता दशरत का दशगात्र (दस दिनों का कर्मकांड) किया। मुनिश्रेष्ठ वशिष्ठ जी ने जहाँ जैसी आज्ञा दी, उसका भरत ने हज़ारों तरह से अनुसरण किया। शुद्ध हो जाने पर (विधि पूर्वक) सब दान दिए, गाएँ, घोड़े तथा हाथी अनेक प्रकार ही सवारियाँ। सिंहासन, गहने, कपड़े, अन्न, पृथ्वी, धन और घर भरत जी ने दिए। भूदेव ब्राह्मण दान पाकर प्रसन्न हो गए। यानी उनकी सारी मनोकामना पूरी हो गई।

बोध प्रश्न :

- किस नदी के तट पर राजा का अंतिम संस्कार किया गया ?

पितु हित भरत कीन्हि जसि करनी। सो मुख लाख जाइ नहिं बरनी।।
सुदिनु सोधि मुनिबर तब आए। सचिव महाजन सकल बोलाए।।
बैठे राजसभाँ सब जाई। पठए बोलि भरत दोउ भाई।।
भरतु बसिष्ठ निकट बैठारे। नीति धरममय बचन उचारे।।
प्रथम कथा सब मुनिबर बरनी। कैकइ कुटिल कीन्हि जसि करनी।।
भूप धरमब्रतु सत्य सराहा। जेहिं तनु परिहरि प्रेमु निबाहा।।

कहत राम गुन सील सुभाऊ। सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ।।
बहुरि लखन सिय प्रीति बखानी। सोक सनेह मगन मुनि ग्यानी।।
दोहा - सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ।।**171**।।

शब्दार्थ : 1 सुदिनु - शुभ दिन 2 भूप - राजा 3 परिहरि - त्याग, छोड़ 4 सुभाऊ - स्वभाव 5 पुलकेउ - पुलकित होना, प्रसन्न होना 6 विधि -विधाता

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान अयोध्या काण्ड से लिए गए हैं। वशिष्ठ के समझाने पर राम की गैरहाज़िरी में भरत ने अपने मृत पिता का अंतिम संस्कार करने के बाद जीवन की सच्चियों और कर्तव्यों की चर्चा सभा में करते हैं।

व्याख्या : पिता जी के लिए भरत जी ने जैसी करनी की वह लाखों मुँह से भी बताया नहीं जा सकता है। तब एक अच्छा दिन (शुभ दिन) ढूँढ कर श्रेष्ठ मुनि वशिष्ठ जी आये और उन्होंने मंत्रियों तथा महाजनों को बुलवाया। सब लोग राज सभा में आकर बैठ गए। तब मुनि ने भरत जी और शत्रुघ्न जी दोनों भाइयों को बुलवा भेजा। भरत को वसिष्ठ जी ने अपने पास बैठा लिया और नीति तथा धर्म से भरी हुई बातें बताई। पहले कैकेयी ने जो बुरे काम किए उनके बारे में बात की गई, श्रेष्ठ मुनि ने सारी कहानी सब को सुनाई। फिर राजा के धर्म के प्रति निष्ठा और सत्य की सराहना की, जिन्होंने (दशरथ) इस दुनिया को छोड़ कर अपना प्यार निभाया। श्री रामचंद्र जी के गुण, शील और स्वभाव को सब को बताते -बताते सब की आँखों में आँसू भर आए और वे शरीर से पुलकित हो गए। फिर लक्ष्मण जी और सीता के प्यार की भी बढ़ाई करते हुए ज्ञानी मुनि दुख और प्यार में मगन हो गए। मुनि ने रोते हुए (दुखी होकर) कहा - हे भरत !सुनो समय बहुत ताकतवर है। हानि -लाभ, जीवन - मरण और यश -अपयश, ये सब ऊपर वाले (विधाता के)के हाथ में है।

बोध प्रश्न :

- मुनि ने सलाह के लिए किसे बुलाया ?
- भरत के साथ और किसे बुलवाया गया ?

अस बिचारि केहि देइअ दोसू। ब्यरथ काहि पर कीजिअ रोसू।।
तात बिचारु करहु मन माहीं। सोच जोगु दसरथु नृपु नाहिं।।
सोचिअ बिप्र जो बेद बिहीना। तजि निज धरमु बिषय लयलीना।।
सोचिअ नृपति जो नीति न जाना। जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना।।
सोचिअ बयसु कृपन धनवानू। जो न अतिथि सिव भगति सुजानू।।
सोचिअ सूद्रु बिप्र अवमानी। मुखर मानप्रिय ग्यान गुमानी।।
सोचिअ पुनि पति बंचक नारी। कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी।।

सोचिअ बटु निज ब्रतु परिहरई। जो नहिं गुर आयसु अनुसरई।।

दोहा - सोचिअ गृही जो मोह बस करइ करम पथ त्याग।

सोचिअ जती प्रपंच रत बिगत बिबेक बिराग।। **172**।।

शब्दार्थ : 1 ब्यरथ - व्यर्थ, बेकार 2 बिप्र - ब्राह्मण 3 अवमानी - अपमान

4 सुद्र -शूद्र 5 कलहप्रिय - झगड़ालू 6 आयसु - आज्ञा

7 बंचक - छल करने वाली 8 प्रपंच - दुनियादारी

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमे भरत को समझाया जा रहा है को राजा के लिए प्रजा के श्रेय से बढ़ कर कुछ नहीं है।

व्याख्या : यह सब सोच कर किसे दोष दिया जाए ? और किस पर क्रोध किया जाय ?हे भाई !अच्छे से सोच लो। अब राजा दशरथ करने या सोचने के लिए नहीं है। सोचो उस ब्राह्मण का क्या करना चाहिए जो वेदों को न जानता हो और खाली भोग विलास में लगा रहे। उस राजा के बारे में सोचिए जो नियम और कानून न जानता हो और जिसे अपनी प्रजा से कोई प्यार न हो। उस व्यापारी (वैश्य) का सोचो जो रईस हो कर भी कंजूस हो, अतिथि का सत्कार न करे और शिव की भक्ति न कर पाए। उस शूद्र का सोचो जो जो ब्राह्मणों का अपमान करे, बहुत ज़रूरत से ज्यादा बोले और अपनी बढ़ाई करने वाला हो या जो अपने ज्ञान का घमंड रखता हो। फिर उस औरत के बारे में सोचो जो पति के साथ धोखा करे, झकड़ालू हो, और खुलेआम घूमने - फिरनेवाली हो। उस ब्रह्मचारी का सोचो जो अपने ब्रह्मचर्य - कर्म छोड़ देता है, और गुरु की आज्ञा को अनसुना कर देता हो। उस गृहस्थ (घर -परिवार वाला)का सोचो जो मोह - माया में पड़ कर अपने कर्म मार्ग (रास्ता)को छोड़ दे। उस सन्यासी के बारे में सोचो जो ज्ञान और वैराग्य को छोड़ कर दुनिया के पचड़ों में फँस गया हो।

बोध प्रश्न :

- ब्राह्मण का क्या कार्य है ?
- राजा को क्या करना चाहिए ?

बैखानस सोई सोचै जोगू। तपु बिहाइ जेहि भावइ भोगू।।

सोचिअ पिसुन अकारन क्रोधी। जननि जनक गुर बंधु बिरोधी।।

सब बिधि सोचिअ पर अपकारी। निज तनु पोषक निरदय भारी।।

सोचनीय सबहीं बिधि सोई। जो न छाड़ि छलु हरि जन होई।।

सोचनीय नहिं कोसलराऊ। भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ।।

भयउ न अहइ न अब होनिहारा। भूप भरत जस पिता तुम्हारा।।

बिधि हरि हरु सुरपति दिसिनाथा। बरनहिं सब दसरथ गुन गाथा।।

दोहा - कहहु तात केहि भाँति कोउ करिहि बड़ाई तासु।

राम लखन तुम्ह सत्रुहन सरिस सुअन सुचि जासु।। **173**।।

शब्दार्थ : 1 तपु - तपस्या 2 बिधि - ब्रह्मा 3 चारिदस - चौदह 4 तनु - शरीर
5 भावइ - भाना, अच्छा लगना 6 पिसुन - चुगलखोर 8 जासु - बुद्धिमान

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमे कवि ने दुष्टों की चिंता हमेशा करने को कहा है। दशरथ जैसे महान राजा के गुणगान सभी भगवान और राजा करते हैं।

व्याख्या : वानप्रस्थ (जीवन के अंतिम पड़ाव में संन्यासी का जीवन) की चिंता उसे ही हो सकती है जिसे तपस्या छोड़ भोग अच्छा लगता है। चिंता उसकी करनी चाहिए जो चुगली करता है, बिना कारण गुस्सा करता है, और माँ -पिता, गुरु, भाई, बंधुओं के साथ बिना कारण दुश्मनी रखने वाला है। सब प्रकार से उसकी चिंता करनी चाहिए जो दूसरों का बुरा सोचता है। अपने शरीर की देखभाल करता है और दूसरों के प्रति क्रूर (निर्दयी) है। और उस के बारे में तो और भी चिंता करनी चाहिए जो छल -कपट छोड़ कर भगवान (हरि) की भक्ति नहीं करता है। कोसल के राजा दशरथ जी चिंता करने की जरूरत नहीं क्योंकि उनका प्रभाव (असर) चौदह लोकों में दिखता है। हे भरत ! तुम्हारे पिता जी जैसा राजा तो कभी हुए है, न अब है और न ही आगे कोई होगा। ब्रह्मा,विष्णु, शिव, इंद्र और सारे दिक्पालक (दसो दिशाओं का पालन करने वाले सभी दशरथ के गुणों की कथाएँ सुनाते हैं(गुणगान करते हैं)। हे पूज्य पिता जी !यह बताओ कि कौन उसकी तारीफ़ नहीं करेगा जिनके श्रीराम, लक्ष्मण, तुम और शत्रुघ्न जैसे पावन (पवित्र) पुत्र हो।

शब्दार्थ : 1 तपु - तपस्या 2 बिधि - ब्रह्मा 3 चारिदस - चौदह 4 तनु - शरीर
5 भावइ - भाना, अच्छा लगना 6 पिसुन - चुगलखोर 8 जासु - बुद्धिमान

बोध प्रश्न :

- वानप्रस्थ की अवस्था की चिंता कौन करते हैं ?
- किस प्रकार के लोगों को चिंता करनी चाहिए ?

सब प्रकार भूपति बड़भागी। बादि बिषादु करिउ तेहि लागी।
यह सुनि समुझि सोचु परिहरहू। सिर धरि राज रजायसु करहू।।
रयाँ राजपदु तुम्ह कहुँ दीन्हा। पिता बचनु फुर चाहिअ कीन्हा।।
तजे रामु जेहिं बचनहि लागी। तनु परिहरेउ राम बिरहागी।।
नृपहि बचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना। करहु तात पितु बचन प्रवाना।।
करहु सीस धरि भूप रजाई। हइ तुम्ह कहँ सब भाँति भलाई।।
परसुराम पितु अग्या राखी। मारी मातु लोक सब साखी।।
तनय जजातिहि जौबनु दयऊ। पितु आग्याँ अघ अजसु न भयऊ।।
दोहा - अनुचित उचित बिचारु तजि जे पालहिं पितु बैन।

ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति ऐन।। **174**।।

शब्दार्थ : 1 दीन्हा - दिया 2 फुर - सच 3 परिहरेउ - परित्याग

4 बिरहागी - विरह की अग्नि 5 प्राना - प्राण 6 प्रवाना - प्रभाव, असर

7 साखी - साक्षी, गवाह 8 अघ - पाप 9 बैन - वचन

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं। इसमें तुलसीदास जी भरत को समझाते हुए संसार में यह सन्देश देना चाहते हैं कि पिता के वचन का पालन करना हर संतान का धर्म है।

व्याख्या : राजा (दशरथ) सब प्रकार से उत्तम थे। उनके बारे में शोक (दुःख) करना बेकार है। यह सुन कर और समझकर चिंता छोड़ दो और राजा की आज्ञा को मान कर उसके अनुसार काम करो। राजा ने राज पद आपको दिया है। पिता के वचन (आज्ञा)को तुम्हें सच करना चाहिए, जिन्होंने अपने वचन को निभाने के लिए अपने प्रिय पुत्र श्री रामचंद्र को त्याग दिया (वनवास) और राम से बिछड़ने के दुख (विरह की आग में) से अपने शरीर को ही त्याग दिया। राजा को अपने वचन अपने प्राणों से प्रिय थे। इसलिए हे तात !पिता के वचनों को सच करो ! राजा की आज्ञा को सिर आँखों पर रख कर उसका पालन करो, इसी में हम सब की भलाई है। इस बात को और समझते हुए मुनि कहते है परशुराम ने पिता की आज्ञा मान कर अपनी ही माता को मार दिया था। सब लोक इस बात के गवाह हैं, राजा ययाति के पुत्र ने अपनी जवानी को पिता को दे दिया। पिता की आज्ञा का पालन करने से उन्हें पाप या अपयश नहीं मिला। जो उचित और अनुचित (सही - गलत) का ख्याल छोड़ कर केवल अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हैं वे यहाँ (धरती) पर सुख और सुयश (अच्छा नाम) प्राप्त करते हैं और अंत में मृत्यु के बाद इंद्रपुरी (स्वर्ग / जन्नत) में रहने जाते हैं।

बोध प्रश्न :

- पिता की आज्ञा का पालन करने पर किसकी प्राप्ति होती है ?
- पिता के वचन क्या थे ?

अवसि नरेस बचन फुर करहू। पालहु प्रजा सोकु परिहरहू।।
सुरपुर नृपु पाइहि परितोषू। तुम्ह कहुँ सुकृतु सुजसु नहिं दोषू।।
बेद बिदित संमत सबही का। जेहि पितु देइ सो पावइ टीका।।
करहु राजु परिहरहु गलानी। मानहु मोर बचन हित जानी।।
सुनि सुखु लहब राम बैदेहीं। अनुचित कहब न पंडित केहीं।।
कौसल्यादि सकल महतारीं। तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारीं।।
परम तुम्हार राम कर जानिहि। सो सब बिधि तुम्ह सन भल मानिहि।।
सौंपेहु राजु राम के आएँ। सेवा करेहु सनेह सुहाएँ।।

दोहा - कीजिअ गुर आयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि।
रघुपति आएँ उचित जस तस तब करब बहोरि।। **175**।।

शब्दार्थ : 1 अवसि - अवश्य, ज़रूर 2 सोकु - शोक, अफ़सोस 3 टीका - राज तिलक 4 बैदेहीं - सीता का एक नाम, वैदेही 5 जोरि - जोड़ कर 6 सचिव - मंत्री

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमें परशुराम जी और अन्य मंत्री भरत को समझा रहे है कि उन्हें राजा दशरथ की आज्ञा का पालन करते हुए राज्य संभालना होगा।

व्याख्या : राजा का वचन सही करो शोक (दुःख) त्याग दो और प्रजा का पालन करो। ऐसा करने से आपके पिता (राजा दशरथ) स्वर्ग में संतोष पाएंगे। तुम को भी पुण्य और अच्छा नाम मिलेगा ना कि कोई बदनामी होगी। यह वेदों में भी मान्य (प्रसिद्ध) है और (स्मृति - पुराण आदि)सभी शास्त्रों में सम्मत (मान्य) है कि पिता जिसे दे वही राज तिलक का हकदार होता है इसलिए तुम राज्य करो मन से ग्लानि (पश्चाताप /खेद) मत करो। मेरे वचन को हित समझ कर मान लो। इस बात को सुनकर (तुम्हारे राज तिलक) स्वयं श्री रामचंद्र और जानकी जी (सीता) भी सुखी होंगे और पंडित भी इसे अनुचित (गलत) नहीं कहेंगे। कौशल्या जी और अन्य सभी माताएँ भी प्रजा के सुख और खुशी में ही सुखी होंगी। जो भी तुम्हारे और श्री रामचन्द्र जी के श्रेष्ठ संबंधों को जान लेंगे वे हर प्रकार से तुम्हे भला और सही मानेंगे। श्री रामचंद्र जी के वनवास से लौटने पर राज्य उनको वापस सौंप देना और संडे स्नेह (प्यार) से उनकी सेवा करना।

बोध प्रश्न :

- मंत्री हाथ जोड़ कर भरत से क्या निवेदन कर रहे हैं ?
- राज तिलक का हकदार कौन होता है ?

कौसल्या धरि धीरजु कहई। पूत पथ्य गुर आयसु अहई।।
सो आदरिअ करिअ हित मानी। तजिअ बिषादु काल गति जानी।।
बन रघुपति सुरपुर नरनाहू। तुम्ह एहि भाँति तात कदराहू।।
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा। तुम्हही सुत सब कहँ अवलंबा।।
लखि बिधि बाम कालु कठिनाई। धीरजु धरहु मातु बलि जाई।।
सिर धरि गुर आयसु अनुसरहू। प्रजा पालि परिजन दुखु हरहू।।
गुर के बचन सचिव अभिनंदनु। सुने भरत हिय हित जनु चंदनु।।
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी। सील सनेह सरल रस सानी ।।
छंद - सानी सरल रस मातु बानी सुनि भरतु ब्याकुल भए।
लोचन सरोरुह स्रवह सींचत बिरह उर अंकुर नए।।
सो दसा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की।

तुलसी सराहत सकल सादर सीवँ सहज सनेह की।।

सोरठा - भरतु कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धरि।

बचन अमिअँ जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहि।। **176**।।

शब्दार्थ : 1 सुरपुर - स्वर्ग 2 अंबा - माता 3 हिय - हृदय 4 लोचन - नेत्र, आँख

5 बिसरी - भूलना, 6 अनुसरहू - अनुसार 7 अमिअँ - अमृत

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमें मंत्री जी और माता सब भरत को समझा रहे है कि उन्हें भी उनके पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए और राम के वनवास से लौटने तक पालन करना चाहिए।

व्याख्या : मंत्री जी हाथ जोड़ कर कह रहे हैं कि गुरु जी की आज्ञा का पालन कीजिए। श्री रघुनाथ जी के आने पर जैसा उचित (ठीक)हो वैसा ही कीजिए। कौसल्या जी धीरज धरकर कह रही हैं -हे पुत्र ! गुरु जी की आज्ञा पथ दिखाते हैं। उसका आदर करना चाहिए और हित मानकर उसका पालन करना चाहिए। समय की गति को जान कर विषाद (दुख) का त्याग कर देना चाहिए। श्री रघुनाथ जी वन में हैं, महाराज (दशरथ) स्वर्ग का राज्य करने चले गए हैं। हे तात !तुम इस प्रकार डर क्यों रहे हो। हे पुत्र ! कुटुम्ब (परिवार) प्रजा, मंत्री और सभी माताओं के - इस सब के अब तुम एक मात्र सहारे हो।विधाता अपने खिलाफ देख कर और समय को कठोर देख कर हौसला रखो, माता तुम्हारी बलिहारी जाती है। गुरु को आज्ञा को सर चढ़ा कर उसी के अनुसार काम करो और प्रजा का पालन और परिवार के सदस्यों का दुख कम करना होगा। भरत जी गुरु के वचनों और मंत्रियों के अभिवादन (आग्रह) को सुनो, जो उनके लिए मानो एक चन्दन का लेप के समान ठंडक दे। फिर उन्होंने शील, स्नेह और सरलता के रस से भरी हुई माता कौसल्या की कोमल (नरम) वाणी सुनी। सरलता रस में सनी हर माता की वाणी सुनकर भरत जी व्याकुल हो गए। उनके नेत्र - कमल (आँखें) जल (आँसू) भाकर हृदय के विरह रुपी बीज को सींचने लगे। (आँखों के निकलने वाले आंसुओं ने वियोग -दुख को बहुत बढ़ाकर उन्हें अत्यंत व्याकुल कर दिया।)उनकी वह दशा देखकर उस समय सब अपने शरीर की सुध भूल गए। तुलसीदास जी कहते हैं - स्वाभाविक प्रेम की सीमा श्री भरत जी की सब लोग आदरपूर्वक सराहना करने लगे। धैर्य की धुरी को धारण करने वाले भरत धीरज धरकर, कमल के समान हाथों को जोड़ कर, वचनों को मानो अमृत में डुबोकर सबको उचित उत्तर देने लगे।

बोध प्रश्न :

- कौसल्या जी भरत को क्या समझाती हैं ?
- चन्दन का लेप क्या देता है ?

मोही उपदेसु दीन्ह गुर नीका। प्रजा सचिव संमत सबही का।
मातु उचित धरि आयसु दीन्हा। अवसि सीस धरि चाहउँ कीन्हा।।
गुर पितु मातु स्वामि हित बानी। सुनि मन मुदित करिउ भलि जानी।।
उचित कि अनुचित किएँ बिचारू। धरमु जाइ सिर पातक भारू।।
तुम्ह तौ देहु सरल सिख सोई। जो आचरत मोर भल होई।।
जद्यपि यह समुझत हउँ नीकें। तदपि होत परितोषु न जी कें।।
अब तुम्ह बिनय मोरि सुनि लेहू। मोहि अनुहरत सिखावनु देहू।।
ऊतरु देउँ छमब अपराधू। दुखित दोष गन गनहिं न साधू।।
दोहा - पितु सुरपुर सिय रामु बन करन कहहु मोहि राजु।
एहि तें जानहु मोर हित कै आपन बड़ काजु।। **177**।।

शब्दार्थ : 1 चाहउँ - चढ़ाकर 2 मुदित - खुश 3 पातक - पाप
4 अनुहरत - अनुसार 5 ऊतरु - उत्तर 6 गनहिं - गिनना

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमें भरत गुरु, मंत्री और माता को समझाने की कोशिश कर रहे है कि वे लाख कोशिश करने पर भी इस बात के लिए तैयार नहीं हो पा रहे है कि उनका राजतिलक हो, जो केवल श्री राम का ही होना चाहिए।

व्याख्या : गुरु जी ने मुझे सुन्दर उपदेश दिया। फिर प्रजा, मंत्री आदि सभी को यही सम्मत (मंज़ूर) है। माता ने उचित समझकर ही आज्ञा दी है और मैं भी अवश्य उसको सर चढ़ाकर वैसे ही करना चाहता हूँ क्योंकि गुरु।,पिता, माता, स्वामी और सहृदय (मित्र /दोस्त) की वाणी सुनकर प्रसन्न मन से उसे अच्छा समझ कर मानना चाहिए। इन सब में उचित -अनुचित (सही - गलत) ढूँढने से सिर पर पाप का भार चढ़ता है। आप सब तो वही सरल शिक्षा दे रहे हैं, जिसका पालन करने में मेरा ही भला हो। यद्यपि मैं इस बात को भली - भाँति समझता हूँ, पर मेरे मन को तसल्ली नहीं मिल रही है। अब आप लोग मेरी विनती सुन लीजिए और मेरी योग्यता के अनुसार मुझे शिक्षा दीजिए। मैं उत्तर दे रहा हूँ, इस अपराध को क्षमा कीजिए। साधू पुरुष दुखी मनुष्य के दोष -गुणों को नहीं गिनते। पिता जी स्वर्ग में हैं, श्री सीताराम जी वन में हैं और मुझे आप सब राज्य करने के लिए कह रहे हैं। इसमें आप मेरा कल्याण समझते हैं या अपना कोई बड़ा काम। (ऐसा करने की आशा के साथ समझाया)

बोध प्रश्न :

- भरत बड़ों को क्या समझाना चाहते हैं ?

- भरत को सब ने क्या शिक्षा दी ?

हित हमार सियपति सेवकाईं। सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाईं।।
मैं अनुमानि दीख मन माहीं। आन उपायँ मोर हित नाहीं।।
सोक समाजु राजु केहि लेखें। लखन राम सिय बिनु पद देखें।।
बादि बसन बिनु भूषन भारू। बादि बिरति बिनु ब्रह्मबिचारू।।
सरुज सरीर बादि बिनु भोगा। बिनु हरिभगति जायँ जप जोगा।।
जायँ जीव बिनु देह सुहाई। बादि मोर सबु बिनु रघुराई।।
जाऊँ राम पहिं आयसु देहू। एकहिं आँक मोर हित एहू।।
मोहि नृप करि भल आपन चहहू। सोउ सनेह जड़ता बीस कहहू।।
दोहा - कैकेई सुअ कुटिलमति राम बिमुख गतलाज।।
तुम्ह चाहत सुखु मोहबस मोहि से अधम कें राज।। **178**।।

शब्दार्थ : 1 समाजु - समुदाय 2 भूषन - गहनें 3 सरुज - रोग
4 सुअ - पुत्र 5 गतलाज - बिना शर्म, निर्लज्ज 6 जोग - योग

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमें भरत इस बात को जोर देकर कह रहे हैं की वे राजा बनने योग्य नहीं है। उन्हें केवल राम ही राजा के रूप में मान्य है।

व्याख्या : मेरा कल्याण तो सीता पति श्री राम की चाकरी (सेवा)में ही है, उसे मेरी माता की कुटिलता ने छीन लिया है। मैंने अपने मन में यह अनुभव करके देख लिया है कि दूसरे किसी उपाय से मेरा कल्याण नहीं हो सकता। यह शोक से भरा समुदाय राज्य लक्ष्मण, श्री रामचंद्र जी और सीता जी के चरणों को देखे बिना किस प्रकार रह सकते है, जीवन का क्या मूल्य होगा ?जैसे कपड़ों के बिना गहनों का बोझ बेकार है। वैराग्य के बिना ब्रह्मविचार व्यर्थ है। रोगी शरीर के लिए कोई भी प्रकार का सुख (भोग) बेकार है। श्री हरि की भक्ति के बिना जप और योग बेकार है। प्राण के बिना सुन्दर शरीर का कोई महत्व नहीं है ठीक उसी प्रकार श्री राम चंद्र के बिना मेरा सब कुछ बेकार है। मुझे आज्ञा दीजिए, मैं श्री राम जी के पास जाऊँ !एक ही आँक (निश्चयपूर्वक) मेरा हित इसमें है। और आप सब लोग मुझे राजा बनाकर आप अपना भला चाहते है, यह सब आप प्रेम के वश में हो कर कह रहे हैं। कैकेयी के पुत्र, कुटिल बुद्धि, राम से अलग होकर निर्लज्ज मुझ -से अधम के राज्य से आप मोह के वश होकर ही सुख चाहते हैं।

बोध प्रश्न :

- भरत अपने को राजा क्यों नहीं मानते ?
- कपड़ों के बिना क्या बोझिल लगती हैं ?

कहउँ साँचु सब सुनि पतिआहू। चाहिअ धरमसील नरनाहू।।
मोहि राजु हठि देइहहु जबहीं। रसा रसातल जाइहि तबहीं।।
मोहि समान को पापनिवासू। जेहि लगि सीय राम बनबासू।।
रायँ राम कहुँ काननु दीन्हा। बिछुरत गमनु मारपुर कीन्हा।।
मैं सठु सब अनरथ कर हेतु। बैठ बात सब सुनउँ सचेतू।।
बिनु रघुबीर बिलोकि अबासू। रहे प्रान सहि जग उपहासू।।
राम पनीत बिषय रस रूखे। लोलुप भूमि भोग के भूखे।।
कहँ लगि कहौं हृदय कठिनाई। निदरि कुलिसु जेहिं लही बड़ाई।।
दोहा - कारन तें कारजु कठिन होइ दोसु नहिं मोर।
कुलिस अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर।।179।।

शब्दार्थ : 1 रसा - धरती 2 रसातल - पाताल 3 अमरपुरी - स्वर्गधाम
4 सठु -दुष्ट 5 लोलुप - लालची 6 उपल - पत्थर

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमें भरत अपने आप को राज्य के योग्य न मानते हुए तर्क देने के लिए कई उदाहरण देते हैं।

व्याख्या: मैं सच कहता हूँ, आप सब मेरी बात का विश्वास करें, धर्मशील (धर्म को मानने वाला)को ही राजा होना चाहिए।आप अगर जिद करके जैसे ही राज्य देंगे वैसे ही धरती पाताल में धंस जाएगा। मेरे समान पापों का घड़ा (घर) कौन होगा, जिसके कारण सीता जी और श्री राम जी वनवास हुआ, राजा ने श्री राम जी को वन भेज दिया और उनके जाते ही (बिछुड़ते) खुद स्वर्ग चले गए। और मैं दुष्ट इन सारे अनर्थों का जड़ (कारण) हूँ। होशो -हवास में बैठ सब बातें सुन रहा हूँ। श्री राम के बिना घर को देख रहा हूँ और जगत का उपहास (मज़ाक)भी प्राण बने (ज़िंदा) हुए हैं। पर इस प्राण के बने रहने का मेरे जिंदा रहने का कारण श्री राम रूप पवित्र रसों में आसक्ति नहीं है। यह लालची भूमि और भोगों के ही भूखे हैं। मैं अपने मन को कठोरता कहाँ तक कहूँ। जिसने वज्र का भी तिरस्कार करके बड़ाई पाई है। कारण (वजह) से कार्य (काम) मुश्किल होता है, इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। हड्डी से वज्र और पत्थर से लोहा और ज़्यादा कठोर होता है।

बोध प्रश्न :

- भरत सारे दोषों का जड़ किसे मानते हैं ?
- किस प्रकार के व्यक्ति को राजा बनना चाहिए ?

कैकेई भव तनु अनुरागे। पावँर प्राण अघाइ अभागे।।
जौं प्रिय बिरहँ प्राण प्रिय लागे। देखब सुनब बहुत अब आगे।।

लखन राम सिय कहुँ बनु दीन्हा। पठइ अमरपुर पति हित कीन्हा।।
लीन्ह बिधवपन अपजसु आपू। दीन्हेउ प्रजहि सोकु संतापू।।
मोहि दीन्ह सुखु सुजसु सुराजू। कीन्ह कैकईं सब कर काजू।।
एहि तें मोर काह अब नीका। तेहि पर देन कहहु तुम्ह टीका।।
कैकई जठर जनमि जग माहीं। यह मोहि कहँ कछु अनुचित नाहीं।।
मोरि बात सब बिधिहिं बनाई। प्रजा पाँच कत करहु सहाई।।
दोहा - ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस तेहि पुनि बीछी मार।
तेहि पिआइअ बारुनी कहहु काह उपचार।।**180**।।

शब्दार्थ : 1 भव - उत्पन्न 2 पावँर - पापी 3 बिरहँ - वियोग
4 अमरपुर - स्वर्ग 5 सुराजू - सुन्दर राज्य 6 जठर - पेट से, कोख से
7 सहाई - सहायता, मदद 8 बारुनी -मदिरा, शराब

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमें भरत अपने को उस कुटिल माता का पुत्र (कैकई) कह कर व्यंग करते हुए राज तिलक के लायक नहीं मानता है।

व्याख्या :कैकेयी से उत्पन्न देह में प्रेम करने वाले ये पापी प्राण (इंसान) पूरी तरह से अभागा (बदकिस्मत) है। जिसे प्रिय (प्यारे भाई) के वियोग में भी अपने प्राण प्रिय लग रहे हैं। तब मुझे आगे भी और बहुत कुछ देखना और सुनना है। लक्ष्मण, राम और सीता जी को वनवास दिया, पति को स्वर्ग भेज कर कल्याण किया, स्वयं विधवापन और अपयश लिया, साथ ही प्रजा को दुख और संताप दिया(भरत की माँ सभी के दुख का कारण बनी)। जिसके बदले में मुझे सुख, सुंदर, यश और उत्तम राज्य दिया। कैकेयी ने सभी का काम बना दिया। इससे अच्छा और मेरे लिए क्या होगा ?(भरत अपने पर व्यंग कर रहे है)उस पर भी आप लोग मेरा राज तिलक करना चाहते हैं। कैकेयी जैसी माँ के पेट से जन्म लेकर मेरे लिए कुछ भी अनुचित नहीं है। मेरा सब कुछ तो विधाता ने पहले ही बना दिया है मेरी माँ के माध्यम से, अब उसमे प्रजा या बाकी के लोग किसलिए सहायता कर रहे हैं ?किसी को लकवा मार गया हो, या कोई वायु रोग (वात) से पीड़ित हो या उसी पर अगर उसे बिच्छू डंक मार दे, उनको अगर मदिरा (शराब) पिलाई जाए तो आप ही बताइए इलाज कैसे संभव है !

बोध प्रश्न :

- किसे मदिरा नहीं पिलानी चाहिए ?

कैकई सुअन जोगु जग जोई। चतुर बिरंचि दीन्ह मोहि सोई।।
दसरथ तनय राम लघु भाई। दीन्हि मोहि बिधि बादि बड़ाई।।
तुम्ह सब कहहु कढ़ावन टीका। राय रजायसु सब कहँ नीका।।

उतरु देउँ केहि बिधि केहि केही। कहहु सुखेन जथा रुचि जेही।।
मोहि कुमाता समेत बिहाई। कहहु कहिहि के कीन्ह भलाई।।
मो बिनु को सचराचर माहीं। जेहि सिय रामु प्रानप्रिय नाहीं।।
परम हानि सब कहँ बड़ लागू। अदिनु मोर नहिं दूषन काहू।।
संसय सील प्रेम बस अहहू। सबुइ उचित सब जो कछु कहहू।।
दोहा - राम माता सुठि सरलचित मो पर प्रेमु बिसेषि।
कहइ सुभाय सनेह बस मोरी दीनता देखि।।**181**।।

शब्दार्थ : 1 सुअन - पुत्र 2 बादि - व्यर्थ,बेकार 3 नीका - अच्छा, ठीक

4 सचराचर - जड़ - चेतन 5 लाहूँ - लाभ, फायदा 6 संसय - बेशक

7 बिसेषि - विशेष, ख़ास 8 सुनब - स्वभाव

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमें अपने माता के किए पर खुद को दोषी मानकर राज नहीं करना चाहते है

व्याख्या :कैकेयी के पुत्र के लिए संसार में जो कुछ योग्य था,चतुर विधाता ने मुझे वही दिया।पर 'दशरथ जी का पुत्र' और 'राम का छोटा भाई' होने की बधाई मुझे विधाता ने बेकार में ही दे दिया।आप सब लोग मुझे राजतिलक करने के लिए कह रहे हैं।राजा की आज्ञा सभी के लिए अच्छी है।पर मैं किस-किस को किस-किस प्रकार से उत्तर दूँ ? जिसकी जैसी रुचि हो,आप लोग सुख पूर्वक वही करें(आप को जो उचित लगे वही करें)।मेरी कुमाता कैकई समेत मुझे छोड़कर,आप ही बताइए और कौन कहेगा कि मेरा राजतिलक सही है। जड़ चेतन जगत में मेरे सिवा और कौन है जिसको श्री सीताराम जी प्राणों से भी अधिक प्यार ना हो !जिसमें सबसे ज्यादा नुकसान है, उसमें सभी को फायदा दिख रहा है। यह मेरे ही बुरे दिन है,और किसी का दोष नहीं। आप सब जो कुछ कहते हैं या समझते हैं वह उचित ही है क्योंकि आप लोग बिना किसी शक, समझ और प्रेम के वश में कर रहे हैं। श्री राम चंद्र की माता बहुत सरल हृदय की है,मुझे उन्हें बहुत प्रेम है इसलिए शायद वह मेरी दीनता (दुख) को देखकर स्वाभाविक प्रेम वश ही ऐसा कह रही है कि मुझे राज्य संभाल लेना चाहिए।

बोध प्रश्न :

- भरत के राज तिलक में किसे फायदा होगा ?

गुर बिबेक सागर जगु जाना। जिन्हहि बिस्व कर बदर समाना।।
मो कहँ तिलक साज सज सोऊ। भएँ बिधि बिमुख बिमुख सबु कोऊ।।
परिहरि रामु सीय जग माहीं। कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं।।
सो मैं सुनब सहब सुखु मानी। अंतहुँ कीच तहाँ जहँ पानी।।
डरु न मोहि जग कहिहि कि पोचू। परलोकहु कर नाहिन सोचू।।

एकइ उर बस दुसह दवारी। मोहि लगि भे सिय रामु दुखारी।।
जीवन लाहु लखन भल पावा। सबु तजि राम चरन मनु लावा।।
मोर जनम रघुबर बन लागी। झूठ काह पछिताऊँ अभागा।
दोहा - आपनि दारुण दीनता कहउँ सबहि सिरु नाइ।।
देखें बिनु रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जाइ।।**182**।।

शब्दार्थ : 1 बदर - बेर (एक फल) 2 कीच - कीचड़ 3 दुसह - असनीय
4 लाहु - लाभ 5 जरनि - जलन 6 नाइ - झुकाकर

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमें भरत अपने ह्रदय की आग की बात कर रहे हैं कि किस प्रकार वे अपने आप को राम सीता के वन गमन का दोषी मानते हैं।

व्याख्या :गुरु जी ज्ञान का सागर हैं, इस बात को सारा संसार जानता है, जिनके लिए दुनिया हथेली पर रखे हुए बेर के समान है,वह भी मेरे लिए राजतिलक का साज सज रहे हैं. सच है विधाता के विपरीत होने पर सब कुछ विपरीत हो जाते हैं। श्री राम चंद्र जी और सीता माता को छोड़ कर दुनिया में कोई यह नहीं कहेगा कि इस अनर्थ (गलत काम) में भी मेरा सम्मत (रज़ामंदी) नहीं है। मैं उसे सुखपूर्वक सुनूँगा और सहूँगा क्योंकि जहाँ पानी होगा वहाँ अंत में कहीं न कहीं कीचड़ ज़रूर होगा। मुझे इस बात का डर नहीं है कि लोग मेरे बारे में क्या सोचते है या परलोक में मेरे साथ कैसा व्यवहार होगा !मेरे हृदय में केवल एक ही आग दहक रही है कि मेरे कारण सीता -राम जी को दुख झेलना पड़ रहा है। जीवन का सही लाभ तो लक्ष्मण ने पाया है, उन्होंने सब कुछ त्याग कर राम के चरणों में मन लगाया है। मेरा जन्म तो शायद राम - सीता के वनवास के लिए हुआ है। मैं शायद झूठ - मूठ (दिखावे) का पछतावा कर रहा हूँ। सबको सर झुकाकर मैं अपनी दारुण दीनता कहता हूँ। श्रीराम जी के चरणों के दर्शन किये बिना मेरे मन की यह आग कम नहीं होगी।

बोध प्रश्न :

- लक्ष्मण को क्या लाभ मिला ?
- भरत के मन की आग कैसे बुझ

आन उपाय मोहि नहिं सूझा। को जिय कै रघुबर बिनु बूझा।।
एकहिं आँक इहइ मन माहीं। प्रातकाल चलिहउँ प्रभु पाहीं।।
जद्यपि मैं अनभल अपराधी। भै मोहि कारण सकल उपाधी।।
तदपि सरन सनमुख मोहि देखी। छमि सब करिहहिं कृपा बिसेषी।।
सील सकुच सुठि सरल सुभाऊ। कृपा सनेह सदन रघुराऊ।।
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा। मैं सिसु सेवक जद्यपि बामा।
तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी। आयसु आसिष देहु सुबानी।।

जेहिं सुनि बिनय मोहि जनु जानी। आवहिं बहुरि रामु रजधानी।।
दोहा - जद्यपि जनमु कुमाता तें मैं साठु सदा सदोस।
आपन जानि न त्यागिहीं मोहि रघुबीर भरोसा।।(183)

शब्दार्थ : 1 पाहीं - पास 2 उपाधी - उपद्रव 3 छमि - क्षमा
4 सकुच - संकोच 5 सठु -दुष्ट 6 आन - दूसरा

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमें वह राम की शरण में जा कर अपने दिल की गुहार लगाना चाहते हैं।

व्याख्या :मुझे दूसरा कोई उपाय नहीं सूझता राम जी के अलावा कौन मेरे मन की बात को समझेगा। मन में एक ही इच्छा है कि सुबह होते ही श्री राम के पास चला जाऊँ हालाँकि मैं बुरा हूँ और अपराधी भी हूँ। और फिर मेरे ही कारण यह सब उपद्रव (बवाल) हुआ है, पर शायद श्री राम जी के शरण में सम्मुख आया हुआ देख कर सब गुनाह माफ़ करके मुझ पर विशेष कृपा करेंगे। श्री रघुनाथ जी शील, संकोच, सीधे स्वभाव, कृपा और प्रेम का घर है। श्रीराम जी ने तो कभी किसी दुश्मन का भी बुरा नहीं किया है। मैं भले ही टेढ़ा हूँ पर हूँ तो उनका बच्चा और गुलाम ही। आप पंच (सब) लोग भी इसी ने मेरा कल्याण मानकर सुंदर वाणी से आज्ञा और आशीर्वाद दीजिए, जिसमें मेरी विनती सुनकर और मुझे अपना दास जानकर श्रीराम चंद्र जी राजधानी लौट आएँगे। भले ही मेरा जन्म कुमाता से हुआ है और मैं दुष्ट और दोष से भरा हूँ फिर भी मुझे श्री राम चंद्र जी पर भरोसा है कि वे मुझे अपना मान कर त्यागेंगे नहीं।

बोध प्रश्न :

- भरत किस बात से अपने को अपराधी मानते हैं ?
- भरत अपनी माँ को क्या कहते हैं ?

भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे। राम सनेह सुधाँ जनु पागे।।
लोग बियोग बिषम बिष दागे। मंत्र सबीज सुनत जनु जागे।।
मातु सचिव गुर पुर नर नारी। सकल सनेहँ बिकल भए भारी।।
भरतहि कहहिं सराहि सराही। राम प्रेम मूरति तनु आही।।
तात भरत अस काहे न कहहू। प्राण समान राम प्रिय अहहू।।
जो पावँरु अपनी जड़ताईं। तुम्हहि सुगाई मातु कुटिलाई।।
सो सठु कोटिक पुरुष समेता। बसिहि कलप सत नरक निकेता।।
अहि अघ अवगुन नहिं मनि गहई। हरइ गरल दुख दारिद दहई।।
दोहा - अवसि चलिअ बन रामु जहँ भरत मंत्रु भल कीन्ह।।
सोक सिंधु बूड़त सबहि तुम्ह अवलंबनु दीन्ह।।184।।

शब्दार्थ : 1 सुधा - अमृत 2 पुर - नगर 3 मूरति -मूर्ति 4 पावरूँ - मूर्खता

5 कोटिक -करोड़ 6 निकेता - घर 7 सिंधु - सागर 8 बूड़त डूबना

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमें भरत को इस बात का विश्वास है कि राम उनके गुनाह को माफ़ करके अपनी शरण में लेंगे। वे उन्हें अयोध्या वापास लाने की ठान लेते हैं।

व्याख्या : भरत जी के वचन (बातें) सबको प्यारी लगे। मानो श्री राम जी प्रेमरूपी अमृत में डूबे हुए हैं। श्रीराम वियोग रूपी भयंकर जहर सब जल रहे हैं। वे मानो बीज सहित मंत्र (अर्थ सहित मंत्र)सुनते ही जाग उठे हो। माता, मंत्री, गुरु,नगर के स्त्री -पुरुष सभी प्रेम के कारण बेचैन हो गए हैं। सब भरत की सराहना करते हुए कहते हैं कि आप का शरीर श्रीराम प्रेम की साक्षात मूर्ति हैं। हे पूज्य भरत ! आप ऐसा क्यों न कहें। राम जी आपको जान की तरह प्यारे हैं। वो नीच ही होगा जो अपनी मूर्खता और नादानी में आपकी माता कैकेयी को कुटिलता को लेकर आप पर संदेह (शक) करेंगें। ऐसा करने वाला दुष्ट करोड़ों पुरखों सहित सौ युगों तक नर्क के घर में रहेंगें। साँप के पाप या गुण (जहर) को वह मणि नहीं ग्रहण करती जो उसके पास है। बल्कि वह विष (ज़हर) को हर (जीत) लेती है और दुख तथा गरीबी को खत्म कर देती है। हे भरत जी वन जरूर जाइए जहाँ श्री राम जी हैं, आपने बहुत ही अच्छी सलाह सोची है। अयोध्या में शोक समुद्र (दुख के सागर) में डूबे हुए लोगों को आपने बड़ा सहारा दे दिया।

बोध प्रश्न :

- सब ने किस बात का समर्थन किया ?
- राम का वियोग प्रजा को कैसा लग रहा है

भा सब कें मन मोदु न थोरा। जनु घन धुनि सुनि चातक मोरा।।
चलत प्रात लखि निरनउ नीके। भरतु प्रानप्रिय भे सबही के।।
मुनिहि बंदि भरतहि सिरु नाई। चले सकल घर बिदा कराई।।
धन्य भरत जीवनु जग माहीं। सीलु सनेहु सराहत जाहीं।।
कहहिं परसपर भा बड़ काजू। सकल चलै कर साजहिं साजू।।
जेहि राखहिं रहु घर रखवारी। सो जानइ जनु गरदनि मारी।।
कोउ कह रहन कहिअ नहिं काहू। को न चहइ जग जीवन लाहू।।

दोहा - जरउ सो संपति सदन सुखु सुहृदय मातु पितु भाइ।
सनमुख होत जो राम पद करै न सहस सहाइ।।**185**।।

शब्दार्थ : 1 लाहू - लाभ   2 परसपर - आपस में   3 मोदु - आनंद
4 निरनउ - निर्णय   5 बड़ - बड़ा   6 जाय - जन्मा हुआ (संतान)

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमें भरत के राम के पास जा कर उन्हें वापस लाने का निर्णय का सभी समर्थन करते हैं।

व्याख्या : सब के मन में कम आनंद नहीं था। (यानी सब बहुत खुश थे)मानो बादलों की गर्जना सुनकर मोर और चातक पक्षी खुश हो रहे हैं। दूसरे दिन सुबह -सवेरे चलने का सुन्दर निर्णय देखकर भरत जी सब के प्राण प्रिय हो गए। मुनि वशिष्ठ जी वंदना करके और भरत जी के सिर पर हाथ फेर, सब लोगो से विदा लेकर अपने -अपने घर को चले गए। इस संसार में भरत जी का जीवन सफल हो गया इस प्रकार कहते हुए सब ने भरत के शील और स्नेह की सराहना करते जाते हैं। आपस में कहते हैं, बड़ा काम हुआ। सभी चलने की तैयारी करने लगे। जिनको भी घर की रखवाली के लिए अयोध्या में रुकना पड़ा उन्हें वह बहुत कष्ट दायक लगा (जैसे गरदन कटने पर कष्ट होता है)।कोई -कोई तो यह भी कहने लगा कि घर पर रहने को मत कहो ! संसार में जीवन का लाभ (राम से मिलने का सौभाग्य) कौन नहीं चाहेगा। वह अपनी संपत्ति, घर, सुख, मित्र, माता, पिता, भाई, जल, जाय (संतान)सभी कुछ राम के लिए छोड़ने को तैयार है जो उनके रास्ते का रोड़ा बने, राम तक पहुँचने के लिए।

बोध प्रश्न :

- सब लोग किस बात से आनंद से भर उठे ?
- घर पर कोई क्यों नहीं रहना चाहते है

घर घर साजहिं बाहन नाना। हरषु हृदयँ परभात पयाना।।
भरत जाए घर कीन्ह बिचारू। नगरु बाजि गज भवन भँडारू।।
संपति सब रघुपति कै आही। जौं बिनु जतन चलौं तजि ताही।।
तौ परिनाम न मोरि भलाई। पाप सिरोमनि साइँ दोहाई।।
करइ स्वामि हित सेवकु सोई। दूषन कोटि देइ किन कोई।।
अस बिचारि सूचि सेवक बोले। जे सपनेहुँ निज धरम न डोले।।
कहि सबु मरमु धरमु भल भाषा। जो जेहि लायक सो तेहिं राखा।
करि सबु जतनु राखि रखवारे। राम मातु पहिं भरतु सिधारे।।
दोहा - आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान।
कहेउ बनावन पालकीं साजन सुखासन जान।।186।।

शब्दार्थ : 1 परभात - सुबह 2 भंडारू - खजाना 3 सिरोमनि - सबसे ऊँचा, श्रेष्ठ
4 दोहाई - द्रोह 5 सुचि - सच्चे, विश्वासपात्र 6 मरमु - भेद, रहस्य

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमें भरत चित्रकूट जाने की तैयारी करते हुए पीछे राज्य और संपत्ति की देख -रेख के लिए सेवकों को नियुक्त करते हैं।

व्याख्या : घर -घर लोग अनेकों प्रकार की सवारियाँ सजा रहे थे। दिल में ढेरों खुशियाँ है कि सुबह वे राम को लेने जा रहे हैं। भरत ने घर जाकर विचार किया कि नगर, घोड़े, हाथी, महल, खजाना सब श्री राम की अमानत हैं। यदि उनकी रक्षा की व्यवस्था किये बिना, उसे ऐसे ही छोड़ कर चल दूँ, तो इसके परिणाम (नतीजा) में मेरी भलाई नहीं है क्योंकि स्वामी द्रोह (मालिक के साथ गद्दारी) सब पापों में सबसे बड़ा है। सच्चा सेवक वही है जो स्वामी (मालिक) का हित (भला) करे, चाहे उसे करोड़ों इल्जाम क्यों न सहना पड़े। भरत जी इस सब के बारे में सोच कर कुछ ऐसे विश्वासपात्र (भरोसेमंद) सेवकों को बुलाया जो कभी भी स्वार्थ में आ कर अपने धर्म को नहीं छोड़ेंगें। (रास्ता नहीं भटकेंगे)भरत जी ने उन सेवकों को सारे भेद बताया और फिर सही धर्म समझाया, योग्यता के अनुसार सब को काम सौंप दिया। सब व्यवस्था करके रक्षकों को रखकर भरत जी राम माता कौसल्या जी के पास गए। प्रेम की बारीकियों को समझ कर भरत ने सारी दुखी माताओं के लिए पालकियों की तैयारी की और सुखासन सजाने के लिए कहा ताकि उन्हें यात्रा (सफर) में कोई कष्ट न हो।

बोध प्रश्न :

- चित्रकूट जाने से पहले भरत क्या करते हैं ?
- सच्चे सेवक का क्या धर्म होता है ?

चक्क चक्कि जिमि पुर नर नारी। चहत प्रात उर आरत भारी।।
जागत सब निसि भयउ बिहाना। भरत बोलाए सचिव सुजाना।।
कहेउ लेहु सबु तिलक समाजू। बनहिं देब मुनि रामहि राजू।।
बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे। तुरत तुरग रथ नाग सँवारे।।
अरुंधती अरु अगिनि समाऊ। रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ।।
बिप्र बृंद चढ़ि बाहन नाना। चले सकल तप तेज निधाना।।
नगर लोग सब सजि सजि जाना। चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना।।
सिबिका सुभग न जाहिं बखानी। चढ़ि चढ़ि चलत भईं सब रानी।।
दोहा - सौंपि नगर सुचि सेवकनि सादर सकल चलाइ।
सुमिरि राम सिय चरन तब चले भरत दोउ भाइ।।187।।

शब्दार्थ : 1 नाग - हाथी 2 तुरग - घोड़ा 3 निसि - रात
4 बिप्र - ब्राह्मण 5 समाजू - सामान 6 चक्क -चक्कि -चकवा -चकवी (एक प्रकार का पक्षी)

संदर्भ : उपर्युक्त चौपाई और दोहों का समूह तुलसीदास द्वारा रचित ‘रामचरितमानस’ के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है। यह एक आदर्श ग्रंथावली है जिसे पढ़ कर हम जीवन के सही मार्ग को समझ सकते है और मानव मूल्यों को समझ सकते हैं।

प्रसंग : यह रामचरितमानस के द्वितीय सोपान से लिए गए हैं जिसमें अयोध्या वासियों और भरत -शत्रुघ्न
का चित्रकूट रवाना होने का क्रम बताया गया है।

व्याख्या :नगर (शहर) के नर -नारी चकवा -चकवी की तरह हृदय में बहुत सारा दुख लेकर सुबह का इंतज़ार कर रहे थे। सारी रात जाग - जाग कर ही बिता दिया और सुबह हो गई। तब भरत जी ने चतुर मंत्रियों को बुलवाया और कहा कि तिलक का सारा सामान साथ ले चलो ! वन में ही मुनि वशिष्ठ श्री राम चंद्र जी को राज्य देंगे, जल्दी चलो। यह सुन कर मंत्रियों ने वंदना की और तुरंत घोड़े, हाथी, रथ सजवा दिए। सबसे पहले मुनि राज वशिष्ठ अरुंधती और अग्निहोत्र - सब सामग्री के साथ रथ पर सवार होकर चले। फिर ब्राह्मणों का समूह, जो सब के सब तपस्या और तेज का भंडार थे, अनेकों सवारियों पर चढ़ कर चले। नगर के सब लोग रथों को सजा -सजाकर कर चित्रकूट की ओर चल पड़े। जिसका वर्णन नहीं हो सकता ऐसे सुन्दर पालकियों पर चढ़- चढ़ कर सब रानियाँ भी चल पड़ी। विश्वासपात्र (भरोसेमंद) सेवकों को नगर सौंप कर और सब को आदर पूर्वक रवाना करके (भेज कर), तब श्री सीता राम जी के चरणों को स्मरण करके भरत -शत्रुघ्न दोनों भाई चले।

बोध प्रश्न :

- मुनि वशिष्ठ कहाँ के लिए रवाना हुए ?
- भरत ने अयोध्या से निकलने से पहले क्या किया ?

8.4 : पाठ सार

रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड के निर्धारित पाठांश दोहा संख्या 167-187 राम वन गमन और उसके बाद के घटना चक्र का वर्णन किया गया है। इसमें माता कौसल्या से राम के वन गमन का विवरण सुनकर भरत शत्रुघ्न की सफलता भरत के लिए राज्य प्रस्ताव, भरत असहमति राम का वन से लौटा लाने की योजना तथा भरत के चित्रकूट गमन के प्रसंग शामिल है।

8.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

- तुलसी को मानव मनों के ज्ञान की गहरी पकड़ है।
- तुलसी ने भरत के चरित्र की उदात्तता को पुरे मनोयोग से चित्रित किया है।
- भरत के चरित्र के माध्यम से भ्रतृ के प्रेम साथ ही अनासक्ति के आदर्श की स्थापना की गई है।
- यह अंश तुलसी की उत्कृष्ट काव्य कला का भी उत्तम उदाहरण है।

8.6 : शब्द संपदा

1. गोशाला - गायों की रहने की जगह
2. शरण - पनाह
3. वाम मार्ग - उल्टा रास्ता, अधर्म
4. महाजन - आदरणीय बड़े लोग
5. तिलांजलि - तिल एवं जल मृतक नाम से अर्पित करना.

8.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड अ -

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए|

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए -

प्र01 अयोध्याकाण्ड के आधार पर भरत, दशरथ और कैकेयी का चरित्र चित्रण कीजिए ?

प्र02 राम को वन क्यों जाना पड़ा ?राम के वनवास का कारण जान कर भरत ने क्या किया ?

खंड - ब

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए|

1 भरत ने राजा बनने से क्यों इंकार कर दिया ?वे चित्रकूट क्यों गए ?

2 दशरथ की मृत्यु के बाद मुनि वशिष्ठ ने भरत को क्या और कैसे समझाया ?

3 राम को अयोध्या लाने के लिए भरत ने क्या किया ? वे लौट कर क्यों नहीं आए ?

खंड - स

1 सही विकल्प चुनिए -

1 अयोध्या काण्ड कहाँ लिखा गया है ?

अ) चित्रकूट आ) नंदीग्राम इ) अयोध्या ई) बनारस

2 रामचरित मानस भाषा में रचित है ?

अ) संस्कृत आ) अवधि इ) अरबी ई) ब्रज

3 गोस्वामी तुलसीदास जी के गुरु कौन थे ?

अ) नरहरिदास आ) गोवर्धनदास इ) जमुनादास ई) विट्ठलदास

4 रामचरितमानस की रचना कब हुई थी ?

अ) 1651 आ) 1641 इ) 1681 ई) 1631

5 रामचरित मानस का सबसे छोटा काण्ड कौन सा है ?

अ) बालकाण्ड   आ) सुंदरकांड   इ) किष्किन्धाकाण्ड ई) अयोध्याकाण्ड

2 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1 तुलसीदास जी की पत्नी का नाम -------------------------------- है।

2 रामचरितमानस ----------------------- भाषा में लिखी गई है।

3 उत्तर भारत में रामचरितमानस को ---------------------------- कहा जाता है।

4 दशरथ को पुत्र वियोग का श्राप ------------------------- ने दिया था।

5 रामचरितमानस का अंतिम काण्ड ---------------------------- काण्ड है।

3 सुमेल कीजिए -

1 मंथरा	रामायण
2 अयोध्या	दासी
3 कैकेयी	युद्धकाण्ड
4 वशिष्ठ	दशरथ
5 लंका काण्ड	भरत
6 वाल्मीकि	मुनि

8.8 : पठनीय पुस्तकें

1. श्रीरामचरितमानस - गोस्वामी तुलसीदास

इकाई 9 : कवितावली: एक परिचय

इकाई की रूपरेखा

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 मूल पाठ: दिव्या: कविता : एक परिचय

9.3.1 कवितावली का वस्तु विधान

9.3.2 कवितावली : वस्तु समीक्षा

9.3.3 कवितावली का काव्य रूप

9.3.4 कवितावली : रस योजना

9.3.5 कवितावली : छन्द योजना

9.3.6 भाषा-शिल्प

9.3.7 कवितावली में भक्ति भावना

9.4 पाठ सार

9.5 पाठ की उपलब्धियाँ

9.6 शब्द संपदा

9.7 परीक्षार्थ प्रश्न

9.8 पठनीय पुस्तकें

9.1 : प्रस्तावना

हिंदी साहित्य का मध्यकाल दो भागों में विभाजित किया गया है - पूर्व मध्यकाल और उत्तर मध्यकाल। पूर्व मध्यकाल को 'भक्तिकाल' तथा उत्तर मध्यकाल को 'रीतिकाल' के नाम से जाना जाता है। भक्तिकाल में वैष्णव भक्ति की दो धाराएँ प्रवाहित हुई - 'निर्गुण' और 'सगुण'। पुनः सगुण भक्तिकाव्य की दो मुख्य धाराएँ प्रकाश में आई - कृष्ण भक्तिकाव्य और राम भक्तिकाव्य। राम भक्तिकाव्य के प्रमुख कवि लोकनायक गोस्वामी तुलसीदास को माना जाता है। तुलसीदास ने बहुत सी कृत्तियों की रचना की उन सभी रचनाओं का साहित्य में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। कवितावली गोस्वामी तुलसीदास की प्रमुख रचनाओं में है। इसकी रचना 16वीं शताब्दी में की गई थी। कवितावली में श्री रामचन्द्र के इतिहास का वर्णन कवित्त, चैपाई, सवैया आदि छंदों में किया गया है। रामचरितमानस के जैसा ही कवितावली में भी सात काण्ड है। ये छन्द ब्रजभाषा में लिखे गए हैं। इनकी रचना प्रायः उसी परिपाटी पर की गयी है जिस परिपाटी पर रीति काल के अधिकतर रीति-मुक्त काव्य लिखा गया है।

9.2 : उद्देश्य

प्रिय छात्रों ! इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि गोस्वामी तुलसीदास के बारे में जान सकेंगे।
- तुलसीदास की रचना कवितावली के बारे में जान सकेंगे।
- कवितावली के अन्तर्गत श्री राम के जीवन चरित्र से परिचित हो सकेंगे।
- इसके काव्य शिल्प से परिचित हो सकेंगे।
- कवितावली के सभी काण्डों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- कवितावली की भाषा से परिचित होंगे।

9.3 : मूल पाठ: कवितावली: एक परिचय

9.3.1 कवितावली का वस्तु विधान

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल (सम्वत् 1375 से 1700) के प्रमुख एवं प्रतिनिधि महाकवि और लोकनायक गोस्वामी तुलसीदास अपनी मूल और अवधारणगत चेतना में सबसे पहले श्रीराम भक्त है, बाद में वे एक कवि, लोकनायक, समाज सुधारक आदि कुछ और थे। यही कारण है कि उनकी पूरी काव्य-साधना में श्रीराम और उनकी महिमा का ही बखान मिलता है। गोस्वामी तुलसीदास की कविता का एक-एक अक्षर राममय है अतः उसी प्रकार जीस प्रकार उनका रोम-रोम राममय था। अतः अन्तर केवल इतना है कि 'रामचरितमानस' में यदि श्रीराम के जीवन का सम्पूर्ण जीवन-चरित्र चित्रित किया गया है, तो गीतावली, कवितावली आदि अन्य रचनाओं में खण्ड-रूप् से राम के जीवन और कथा के मार्मिक प्रसंगों का उद्गान किया गया है। तुलसीदास के समुचे काव्य के अध्ययन से यह पता चलता है कि इनके काव्य में भगवान श्रीराम के तीन विशिष्ट गुणों का प्रावधान मिलता है। वे तीन विशिष्ट गुण है- सौन्दर्य, शील और शक्ति। 'रामचरितमानस' के राम के चरित्र में थे ये तीनों गुण एक साथ दिखाया गया है।

अगर हम कवितावली की बात करें तो यह एक प्रबन्धाभास देने वाला मुकतक काव्य है। इसमें कवि की प्रवृत्ति क्रमबद्ध रूप से राम कथा कहने की दिखाई नहीं देती और न ही इसका प्रयास ही किया है।

'कवितावली' को रामचरितमानस और 'गीतावली' के समान सात काण्डों में विभाजित किया है। अतः इन काण्डों में कवितावली' का वस्तु-विधान स्पष्ट दिखाई देता है।

बाल काण्ड:- इस काण्ड की वस्तु का सम्बन्ध राम-जन्म से लेकर जनकपुरी में होने वाले सीता-स्वयम्बर, धनुष-यज्ञ और बाद में परशुराम-सम्बाद तक की घटनाओं का काव्यमय उल्लेख किया गया है। पहले तीन पदों में कवि ने श्रीराम के बाल स्वरूप के सौन्दर्य का चित्रण किया है। इसके

बाद के तीन-चार पदों में राम आदि के बाल-स्वरूप एवं स्वभाव के साथ-साथ सामान्य बाल लीलाओं (क्रीड़ाओं) का वर्णन किया गया है। इसके बाद 'धनु यज्ञ' प्रसंग में वस्तुतः कवितावली की भाव-योजना का वर्णन होने लगता है जैसे शक्ति गुण या तत्व का वर्णन मिलता है। इस काण्ड के अन्तिम प्रसंग 'परशुराम लक्ष्मण सम्वाद' में भी इसी तत्व एवं गुण की प्रधानता है। अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि बाल काण्ड का वस्तु-विधान प्रभावी एवं सम्पन्न है।

अयोध्या काण्ड:- 'कवितावली' के अयोध्या काण्ड का आरम्भ श्री राम के वन-गमन प्रसंग से होता है। पहले के दो पदों में श्रीराम के निर्मोही बनकर गृह-त्याग की बात कही गई है। कोई शक्ति-सम्पन्न व्यक्ति ही इस प्रकार निर्मोही हो सकता है, निर्बल और कायर व्यक्ति नहीं। अयोध्या काण्ड के बाद 'वन के मार्ग में' प्रसंग में कवि ने मुख्यतः श्रीराम लक्ष्मण और सीता के सौन्दर्य का ही चित्रण किया है, पर वन में प्रसंग में पुनः वीर रस और शक्ति रूप प्रधान हो गया है। इस समूचे काण्ड को कवित्व शक्ति और प्रभाव की दृष्टि से महत्वपूर्ण कहा जा सकता है।

अरण्य काण्ड:- अरण्य काण्ड में कवि को कोई विशेष महत्वपूर्ण बिन्दु नहीं दिखाई पड़ा है। अतः इस काण्ड का आरम्भ-समापन मात्र एक ही छन्द में कर दिया गया है। इस छन्द में सीता की प्रेरणा से श्रीराम के स्वर्ण-मृग के पीछे धनुष बाण लेकर भाग पड़ने की घटना का सुन्दर वर्णन है। इस पद्य की विशेषता यह है कि इसमें कवि ने श्रीराम के 'शक्ति' गुण के साथ सौन्दर्य गुण का सौन्दर्य गुण का भी सांकेतिक वर्णन किया गया है। स्वर्ण-मृग के पीछे धनुष-बाण लेकर भाग पड़ना शक्ति तत्व का ही परिचायक है।

किष्किन्धा काण्ड:- अरण्य काण्ड के तरह किष्किन्धा काण्ड की पद्य-संख्या भी मात्र एक ही है। इस पद्य में निश्चय ही रामकथा के एक मार्मिक प्रसंग के दर्शन होते हैं। और वह प्रसंग है महावीर हनुमान का समुद्र-तट से लंका की दिशा में खुदना वर्णन में निश्चय ही यहाँ भी शक्ति-तत्व की प्रधानता है। राम कृपा से महावीर हनुमान की शक्ति की पराकाष्ठा दिखाई गई है।

सुन्दर काण्ड - 'रामचरितमानस' के जैसा ही कवितावली का सुन्दर काण्ड बहुत ही महत्वपूर्ण है। इन दोनों में मुख्य यह है कि 'मानस' और कवितावली दोनों का नायक महावीर हनुमान ही है। इस काण्ड में हनुमान के वीरता का वर्णन किया है। इस काण्ड में कुल 32 छन्दों में क्रमशः अशोक वन में हनुमान द्वारा सीता दर्शन और वन को उजाड़ने, फिर रावण दरबार में पहुँच लंका दहन करने, तत्पश्चात् सीता से विदा हो और स्मृति चिह्न लेकर प्रत्यावर्तन पर वानर आमोद और अन्त में श्रीराम की अनुज्ञापूर्ण कृतज्ञता-ज्ञापन का वर्णन किया गया है। सारे काण्ड में शक्ति-शौर्य को प्रमुखता दी गई है। प्रधान रस वीर रस है। साथ में रौद्र, भयानक और अनेकशः वीभत्स रस की प्रधानता देखी गई है। लंका दहन और उस क्षण राक्षसियों की प्रतिक्रिया, राक्षसों की असमर्थता आदि का वर्णन किया गया है।

लंका काण्ड:- लंका काण्ड में श्री राम की रावण पर विजय और सीता की मूक्ति तथा साथ में रावण के चंगुल से देव, नर, नाग, किन्नर आदि की बात कही गई है, अतः इसमें शक्ति के साथ-साथ शील और सौन्दर्य तत्वों का समन्वय भी देखा जाता है। यह सारा वर्णन कूल अद्‌ठावन छन्दों में किया गया है। लंका काण्ड में बहुत ही मार्मिक प्रसंगों का वर्णन किया गया है। इसमें वीर रस की प्रधानता पाई जाती ळै।

उत्तर काण्ड:- 'कवितावली' के इस काण्ड में कवि का आत्म निवेदन भाव ही प्रमुख हो गया है। इसमें सभी काण्डों से अधिक 183 पद्य है। इस काण्ड में क्रमशः राम की कृपालुता, केवल राम ही से याचना, उदबोधन, विनय के पद, राम-प्रेम सार, नाम-विश्वास कवि वर्णन, राम-नाम-महिमा, राम गुणगान, राम प्रेम की प्रधानता, राम-भक्ति की याचना, गोपियों का अनन्य प्रेम-सीतावट वर्णन, चित्रकुट- वर्णन, तीर्थराज सुषमा, काशी में महामारी एवं विविध- प्रसंग का वर्णन किया गया है।

इस काण्ड में कवि ने समय समय पर उनके मन में आने वाले विचारों को अपने आराध्य श्री राम से निवेदित कर दिया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'कवितावली' के वस्तु विधान में कोई आन्तरिक तारतम्य नहीं है। कथा में रस भी नहीं है। आराध्य श्री राम के चरित्र को लेकर समयपर कवि के मन में जो विचार भाव उठते रहे, उन्हें ही कवि ने एक क्रम से रखने के चेष्ठा की है। अतः इसे आत्मचरितात्मक परिस्थिति प्रभावित काव्य ही कहना चाहिए।

बोध्य प्रश्न

कवितावली के उत्तर काण्ड में कुल कितने पद्य हैं?

9.3.2 कवितावली : वस्तु समीक्षा

कवितावली की वस्तु समीक्षा की बात करें तो यह एक प्रबन्ध का आभास देने वाली एक मुक्तक रचना है। तुलसीदास के राम अनन्त है, उनकी कथा के प्रसंग की भी कोई सीमा नहीं है। वन अनन्त है। और उन अनन्त प्रसंगों को कवि ने क्रमबद्धता अपने प्रमुख महाकाव्य रामचरित मानस में ही दी है। उसकी रचना से पहले और बाद में उन्होंने अपने हृदय मन-मस्तिष्क को अपने आराध्य श्री राम के मुक्त विहार के लिए एकदम मुक्त छोड़ दिया है। कवितावली के वस्तु में राम-कथा रस का बहुत ही अभाव पाया जाता है। कवि की अन्तश्चेतना जिन मार्मिक प्रसंगों में समय≤ पर रमती रही, उनमें से एक एक बात का वर्णन उन्होंने कही तो मात्र एक पद्य में ही कर दिया है जैसे अरण्य काण्ड और किष्किन्धा काण्ड और कहीं कई-कई पद्यों का सृजन किया है। जैसे बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड में। अतः कवितावली की वस्तु योजना की परम्परागत ढंग से समीक्षा कर पाना सम्भव नहीं है।

बोध प्रश्न

- कवितावली में कथा रस के अभाव का क्या कारण है ?

9.3.3 कवितावली : काव्य रूप

'कवितावली' कवि और भक्त-हृदय कवि गोस्वामी तुलसीदास की एक मार्मिक रचना है। सभी प्रसंगों को भावात्मक परिपाश्र्व प्रदान किया गया है। कवितावली के काव्य रूप की बात करे वो कवितावली को आन्तरिक नियोजन की दृष्टि से देखें तो कवितावली एक प्रबन्ध काव्य प्रतीत होता है पर वस्तु वर्णन की दृष्टि से वह प्रबन्धभास मुक्तक काव्य है। शास्त्रीय दृष्टि से भी देखें तो आचार्य राजशेखर द्वारा निर्धारित भानों के अनुसार इस काव्यकृति को अधिक से अधिक 'कयोत्य मुक्तक' कह सकते हैं। सभी आग्रहों को देखकर इसे प्रबन्धामास- मुक्तक या 'प्रबन्धात्मक मुक्तक' या प्रबन्धात्मक- मुक्तक काव्य' कहना अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

बोध प्रश्न

- कवितावली काव्य रूप कैसा है ?

9.3.4 कवितावली : रस योजना

कवितावली महाकवि और भक्त हृदय गोस्वामी तुलसीदास की 'रामचरितमानस' और गीतावली के बाद तीसरी प्रमुख रचना मानी गई है। कवितावली में राम का शक्ति गुण ही अनेक सन्दर्भों में व्यापकता और विस्तार पाकर प्रमुख रूप से रूप पा सका है। अतः जैसा की हम जानते हैं कि काव्य की आत्मा रस है। अगर हम कवितावली के बारे में बात करें तो कवि ने इसमें मुख्य रूप से अपने आराध्य श्री राम के 'शक्ति' गुण का ही प्रतिपादन किया है। अतः वीर रस यहाँ आत्म तत्व की तरह भक्ति भाव से संयमित होकर सर्वत्र परिव्याप्त है। वीर रस के अतिरिक्त कवितावली में रोद्र, भयानक और बीभात्म जैसे रसों को भी पर्याप्त स्थान मिला है।

अतः हम गोस्वामी तुलसीदास की आलोच्य रचना 'कवितावली' में प्रायः सभी रसों का सुन्दर वर्णन किया गया है।

बोध प्रश्न –

- कवितावली में कौन –कौन से रस हैं ?

9.3.5 कवितावली : छन्द योजना

जैसा कि आज हम देखते हैं कविता में छन्द योजना का उतना महत्व अब नहीं रह गया है। किन्तु परम्परागत कविता और काव्यों में छन्द का बहुत ही अधिक महत्व देखा गया है। वैसे भी भारत में छन्द-शास्त्र की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। वेदों में भी छन्द का उचित प्रयोग मिलता है। और इसी कारण उन्हें छान्दस भी कहा गया है।

अगर हम कवितावली की बात करें तो यहां पर कवि ने परम्परागत दृष्टि से तो रसानुकूल आज की दृष्टि से वर्ण-विषय के अनुकूल उपयुक्त छन्दों का प्रयोग किया है। कवितावली में कवि ने

छन्दो की शास्त्रीय शुद्धता का भी प्रायः बहुत ध्यान रखा है। यह बात भी ध्यान देने की है कि किसी एक छन्द के जो कई स्वरूप और भेद माने गए हैं, उन सभी का प्रयोग प्रायः कवि ने प्रसंगानुकूल 'कवितावली' में किया है। अगर हम सवैया छन्द की बात करें तो शुद्ध सवैया के अतिरिक्त मालती, दुभिल, और मिश्रित चरणों वाला सवैया भी माना गया है। यह सभी रूप कवितावली में अनेक बार देखे जाते हैं। एक विशेषता यह भी यहाँ पर देखी जाती है कि कवि ने एक ही पद्य को भिन्न चरणों में भिन्न सवैया-रूपों का प्रयोग किया तथा छन्द-शास्त्र के उत्कृष्ट ज्ञान का ही नहीं, अपनी छन्द प्रयोग की कुशलता का सुन्दर परिचय दिया है। अतः इस प्रकार का कवितावली की छन्द-योजना को एक सफल एवं सार्थक योजना कह सकते हैं।

बोध प्रश्न –

- कवितावली में प्रयुक्त तीन छंद के नाम लिखिए।

9.3.6 भाषा-शिल्प

जब कभी किसी काव्य के भाषा शिल्प पर विचार किया जाता है, इसमें देखने वाली मुख्य बात यही होती है कि कवि जो भाव या विचार अपने मन-मस्तिष्क में रखता है, जिन्हें वह अपने पाठकों तक किस प्रकार से सम्प्रेषित करता है, सही से कर पाता है या नहीं। यदि सम्प्रेषित कर पाने में सफल रहा है, तब तो उसके भाषा शिल्प या जो भाषा कवि ने प्रयोग की उसको पूर्ण रूप से सफल माना जाएगा।

कवितावली के भाषा-शिल्प की अगर हम बात करें तो इसमें कवि तुलसीदास ने भाषा का प्रयोग करते समय साहित्यिकता का पूरा ध्यान दिया है। भाषा को किसी भी स्तर पर स्खलित या दूषित नहीं होने दिया है। भाषा में एक स्वाभाविक क्रम पाया जाता है। वह सभी प्रकार के भावों और विचारों को वहन कर पाने में भी पूर्ण सक्षम है। ब्रजभाषा का लालित्य, प्रवाह और स्वतः स्फूर्त ओज, प्रसाद माधुर्य आदि सभी गुणवत्ता यहाँ पर देखी जाती है। कवि तुलसीदास ने जिस प्रकार सर्वत्र जीवन की सभी भयादाओं की भरसक रक्षा की है, 'कवितावली' में उसी प्रकार भाषा की मर्यादा की भी पूरी रक्षा की है।

बोध प्रश्न

- कवितावली की रचना किस भाषा में की गई है ?

9.3.7 कवितावली में भक्ति भावना

गोस्वामी तुलसीदास अपने आरम्भ से लेकर अन्त तक भक्त पहले थे, और बाद में वह कवि या कुछ और थे। भक्त केवल वह अपने श्री राम के थे। उन्होंने भगवान श्री राम के सगुण साकार रूप की भक्ति पर बहुत अधिक बल दिया है। भक्तिकाल में सगुण भक्ति धारा की दो प्रमुख शाखाएं थी- एक कृष्ण भक्ति शाखा और दूसरी राम भक्ति शाखा कवि तुलसीदास राम-भक्ति शाखा के प्रमुख एवं प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। वह राम के साकार सगुण स्वरूप के

बहुत बड़े भक्त थे। उन्होंने 'कवितावली' के साथ-साथ अपने सभी काव्यों में भगवान श्री राम के सौन्दर्य, शील और शक्ति गुणों का वर्णन किया है। 'कवितावली' के पहले पद्य में ही वे बोलते हैं कि राम भक्ति के बिना जीवन व्यर्थ एवं धिक्कार है। वे श्रीराम के सौन्दर्य का वर्णन भी बहुत विस्तार से करते हैं। तुलसीदास और उनके द्वारा कवितावली में वर्णित सभी भक्ति-भावना है। उसमें सघन आत्मविश्वास और दृढ़ आस्था है। तुलसीदास के काव्यों में नवधा-भक्ति के सभी रूप जैसे श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य साख्य, आत्मनिवेदन आते हैं। पर मुख्यतः उनकी भक्ति-भावना दास्य-भाव पर ही आधारित है।

बोध प्रश्न

- कवितावली में राम के किन-किन गुणों का वर्णन किया गया है?

9.4 : पाठ सार

कवितावली गोस्वामी तुलसीदास की प्रमुख रचनाओं में है। यह रामचरितमानस और गीतावली के बाद तुलसीदास की तीसरी महत्वपूर्ण रचना मानी जाती है। इसका रचना काल 16वीं शताब्दी माना जाता है। कवितावली में श्री रामचन्द्र के इतिहास का वर्णन कवित्त चैपार्ठ, सवैया आदि छंदों में की गई ळै। रामचरितमानस के जैसे ही कवितावली में भी सात काण्ड है। ये छन्द ब्रजभाषा में लिखे गये हैं। इसकी रचना प्रायः उसी परिपाटी पर की गई है जिस तरह से रीतिकाल का अधिकतर रीति मुक्त काव्य लिखा गया था। यह एक प्रबन्धामास देने वाला मुक्तक काव्य है। इसमें सभी छन्दो का प्रयोग किया गयसा है। तुलसीदास ने कवितावली में भाषा शिल्प का बहुत ही प्रयोग किया गया है।

9.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

- कवितावली महाकवि लोकनायक गोस्वामी तुलसीदास की रामचरितमानस और गीतावली के बाद तीसरी महत्वपूर्ण रचना मानी जाती है।
- रामचरितमानस के जैसा कवितावली में भी सात काण्ड है।
- कवितावली की रचना 16वीं शताब्दी में की गई थी।
- इसमें राम के इतिहास का वर्णन भक्ति चैपाई, सवैया आदि छंदों में किया गया है।
- कवि तुलसीदास ने भाषा का प्रयोग करते समय साहित्यिक्ता का पूरा ध्यान दिया है। इसमें भाषा की मर्यादा की पूरी रक्षा की गई है।
- कवि तुलसीदास की भक्ति भावना दास-भाव पर आधारित है। तुलसीदास का कहना है कि राम भक्ति के बिना जीवन व्यर्थ है।

9.6 : शब्द संपदा

1. प्रबंधभास् मुक्तक काव्य -	ऐसा मुक्तक काव्य जो कथा के सूत्र में बंधा हुआ हो
2. लीला -	क्रीडा
3. गृहत्याग -	घर छोड़कर जाना
4. स्वर्णमृग -	सोने का हिरण
5. प्रत्यावर्तन -	वापसी

9.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

(अ) **दीर्घ श्रेणी के प्रश्न**

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. कवितावली का वस्तु विधान एवं वस्तु समीसा पर प्रकाश डालिए।

2. कवितावली का काव्य-रूप और रस योजना को बताइए।

3. कवितावली में छंद योजना एवं भाषा शिल्प को प्रस्तुत कीजिए।

खण्ड (ब)

(आ) **लघु श्रेणी के प्रश्न**

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. कवितावली में तुलसीदास की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

2. तुलसीदास के कवितावली का काव्य-रूप बताइए।

3. कवितावली के उत्तरकांड पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

खण्ड (स)

। सही विकल्प चुनिए

1. 'कवितावली' किस शताब्दी में लिखी गई है?

(क) 15वीं शताब्दी (ख) 16वीं शताब्दी

(ग) 17वीं शताब्दी (घ) 18वीं शताब्दी

2. कवितावली में कौनसा छंद का प्रयोग हुआ है?

(क) कवित्त (ख) चैपाई (ग) सवैया (घ) यह सभी

3. कवितावली में कितने कांउ है?

(क)तीन (ख) चार (ग) सात (घ) आठ

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. कवितावली के आयोध्या कांड का आरंभ राम के .... प्रसंग से होता है।

2. कवितावली में .... कांड हैं।

3. सीता की मुक्ति का प्रसंग .... कांड में प्रस्तुत है।

III. सुमेल कीजिए

(1) अयोगध्याकांड	(क) कवि का आत्म-निवेदन भाव
(2) किष्किन्धाकांड	(ख) श्री राम की रावण पर विजय और सीता की मुक्ति
(3) लंकाकांड	(ग) हनुमान का समुद्र तट से लंका की दिशा में कुंदना
(4) उत्तरकांड	(घ) वनगमन प्रसंग

9.8 : पठनीय पुस्तकें

1. कवितावली - राजेश शर्मा

2. गोस्वामी तुलसीदास - रामचंद्र शुक्ल

3. तुलसीदास और उनका काव्य - रामनरेश त्रिपाठी

4. मध्ययुगीन हिंदी काव्य भाषा - रामस्वरूप चतुर्वेदी

इकाई 10 : कवितावली : उत्तरकाण्ड - I : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 मूल पाठ : कवितावली : उत्तरकाण्ड- I : व्याख्या

10.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

10.3.2 विस्तृत व्याख्या

10.4 पाठ-सार

10.5 पाठ की उपलब्धियाँ

10.6 शब्द सम्पदा

10.7 परीक्षार्थ प्रश्न

10.8 पठनीय पुस्तकें

10.1 : प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल की रामभक्ति शाखा के महत्वपूर्ण कवियों में तुलसीदास का स्थान अग्रणी है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामभक्ति शाखा के अन्तर्गत अनेकों महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की है। इनका 'रामचरितमानस' हिन्दी का सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसके अलावा अनेक चर्चित ग्रंथों से रूबरू कराये जैसे— विनय पत्रिका, कवितावली, गीतावती, दोहावली, रामाज्ञा प्रश्नावली, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, बरवै रामायण, कृष्णा गीतावली, रामलला नहछू, वैराग्य संदीपनी। तुलसीदास ने कवितावली के उत्तरकाण्ड में दुनिया के प्रति उदासी और ईश्वर के चरणों में भक्ति को दर्शाते हैं। तुलसीदास ने उत्तरकाण्ड में जानकीनाथ अर्थात् श्रीराम के गुणों की बखान करते हैं। अर्थात् वे यह भी कहते हैं जो राम को नहीं जाना तो वह जीव वास्तविक रूप से जीव कहलाने के लायक़ नहीं है।

10.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अन्तर्गत हम तुलसीदास की सगुण भक्ति (रामाश्रयी) शाखा का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हो सकेगी।

1. कवितावली के उत्तरकाण्ड के अन्तर्गत राम-कथा को जान सकेंगे।
2. गोस्वामी तुलसीदास की सगुण भक्ति से अवगत होंगे।

3. कवितावली के उत्तरकाण्ड से चयनित छंदों की व्याख्या कर सकेंगे।

4. तुलसीदास के कवितावली के उत्तरकाण्ड के भाव पक्ष और कला पक्ष को समझेंगे।

10.3 : मूल पाठ : कवितावली : उत्तरकाण्ड - I : व्याख्या

10.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

गोस्वामी तुलसीदास के काव्य कवितावली के अंतर्गत उत्तरकाण्ड में प्रस्तुत राम के स्वरूप, उनके जीवन को दर्शाया गया है। तुलसीदास ने राम को अपना स्वामी माना और उनकी उपासना की। इन छंदो में ब्रजभाषा के माध्यम से भक्ति रस को पिरोया गया है।

10.3.2 विस्तृत व्याख्या

[1]

सुनु कान दिएँ नितु नेमु लिएँ रघुनाथहिके गुनगाथहि रे।
सुखमंदिर सुंदर रूपु सदा उर आनि धरें धनु-भाथहिँ रे॥
रसना निसि-बासर सादर सों तुलसी! जपु जानकीनाथहि रे।
करु संग सुसील सुसंतन सों तजि कूर कुपंथ कुसाथहिरे॥

शब्दार्थ— गुनगाथाह= गुणों की कथा का वर्णन, सदा= हमेशा, तजि= त्यागना, कुपंथ= ग़लत रास्ता

संदर्भ— प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली ग्रंथ के उत्तरकाण्ड से लिया गया है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास हैं।

प्रसंग— राम के स्वरूप का गुणगान किया गया है।

व्याख्या— हे तुलसीदास! प्रतिदिन नियमपूर्वक श्रीराम जी के गुणों की कहानी ध्यानमग्न होकर सुना करो। सदैव सुख के साथ-साथ, धनुष और तरकश (तीर-कमान रखने का अवधारणा) लिए हुए सुखमय मन्दिर में राम के सुन्दर स्वरुप को ही याद करो। जीभ से रात-दिन आदरपूर्वक श्री जानकी नाथ (अर्थात् श्री राम) का ही नाम जपा करो। अच्छे और संत पुरुषों के पाठ पर चलो। बुरे मनुष्यों को त्याग दो।

काव्यगत विशेषता— श्री जानकीनाथ के गुणों की बयान, और राम नाम का स्मरण।

भाषा— उपर्युक्त छन्द में ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।

रस— भक्ति रस।

छन्द— सवैया छन्द।

अलंकार— अनुप्रास अलंकार।

[2]

सो जननी, सो पिता, सोइ भाइ, सो भामिनि, सो सुत, सो हितु मेरो।
सोई सगो, सो सखा, सोइ सेवक, सो गुरु, सो सुर, साहिब, चेरो॥
सो तुलसी प्रिय प्रान समान, कहाँ लौं बनाइ कहौं बहुतेरो।
जो तजि देह को गेह को नेह सनेह सो राम को होइ सबेरो॥

शब्दार्थ— जननी= माता, सुतु= पुत्र, प्रान= जीवन, देह= शरीर, सगो= सगा।

संदर्भ— प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली ग्रंथ के उत्तरकाण्ड से लिया गया है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास हैं।

प्रसंग— प्रस्तुत छन्द में सांसारिक मोहमाया को त्याग व मोक्ष प्राप्ति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या— तुलसीदास कहते हैं कि जो पुरुष अपना शरीर, घर और ममता का त्याग कर वह स्नेहपूर्वक भगवान राम का हो जाता है। वही सच्चा पुरुष है क्योंकि वह शरीर और घर को त्यागने के बाद भगवान राम ही माता हैं, वही पिता हैं, वही भाई हैं, वही स्त्री हैं, वही सगा है, वही मित्र हैं, वही मेरा सम्बन्धी हैं। वही गुरु हैं, वही देवता हैं, वही स्वामी, वही सेवक अर्थात् श्री भगवान राम ही पालनहार हैं। अब इससे अधिक क्या ही कहूँ कि गोस्वामी तुलसी के वह प्राणतुल्य हैं। जो संसारी मोह-माया त्यागकर राम के हो गये हैं।

काव्यगत विशेषता— उपरोक्त छन्द में राम को अपना सब कुछ मान लिया गया है।

भाषा— उपर्युक्त छन्द में ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।

रस— भक्ति रस।

छन्द— सवैया छन्द।

अलंकार— अनुप्रास अलंकार।

[3]

सियराम-सरूपु अगाध अनूर बिलोचन मीननको जलु है।
श्रुति रामकथा, मुख रामको नाम, हिएँ पुनि रामहिको थलु है॥
मति रामहि सो;गति रामहिं सों,रति राम सों, रामहिं को बलु है।
सबकी न कहैं तुलसी के मते इतना जग जीवन को फलु है॥

शब्दार्थ— अगाध= गहरा, मीन= मछली, मति= विवेक, जग= संसार।

संदर्भ— प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली ग्रंथ के उत्तरकाण्ड से लिया गया है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास हैं।

प्रसंग— उपर्युक्त छन्द में तुलसीदास ने राम के अनुपम सौंदर्य का चर्चा किया है।

व्याख्या— तुलसीदास कहते हैं कि श्रीराम और जानकी जी के अनुपम सौन्दर्य के समान नेत्र रूपी मछलियों के लिए बहुत ही गहरा जल है। राम की कथा को सुनने और मुख से राम का नाम जपने और हृदय में उन्हीं का स्थान है। क्योंकि राम नाम से ही विवेक है। और उन्हीं की गति है। और राम नाम से ही सुन्दरता है। और श्रीराम का ही बल है। तुलसीदास कहते हैं कि सबके बदले या यूँ कहें कि जीवन जीने का इतना ही फल है।

काव्यगत विशेषता— प्रस्तुत छन्द में जीवन के मूल्यों का वर्णन किया गया है।

भाषा— उपर्युक्त छन्द में ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।

रस— भक्ति रस।

छन्द— सवैया छन्द।

अलंकार— अनुप्रास अलंकार।

[4]

झूमत द्वार अनेक मतंग जँजीर-जरे मद-अंबु चुचाते।
तीखे तुरंग मनोगति-चंचल, पौनके गौनहु तें बढ़ि जाते॥
भीतर चंद्रमुखी अवलोकति, बाहर भूप खरे न समाते।
ऐसे भए तौ कहा तुलसी जो पै जानकीनाथ के रंग न राते॥

शब्दार्थ- मतंग= हाथी, भूप= राजा, मद= गंधयुक्त द्रव जो मतवाले हाथियों की कनपटियों को बहता है। तुरंग= घोड़ा।

संदर्भ— प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली ग्रंथ के उत्तरकाण्ड से लिया गया है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास हैं।

प्रसंग— प्रस्तुत छन्द में लक्षणार्थ रूप में राम के चरित्र की व्याख्या किया है।

व्याख्या— द्वार पर ज़ंजीरों से बँधे हुए मतवाले हाथी झूम रहे हैं। जिनके गंड स्थल से मद चू रहे हैं। साथ ही (मन) के समान तेज़ गति वाले उत्साहित घोड़े भी है, जो वायु से भी तेज़ दौड़ सकते हैं। घर में चन्द्रमुखी स्त्री देखती है और बाहर खड़े, बड़े-बड़े राजा हैं जो भीतर नहीं जा सकते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि जानकी नाथ (श्री राम के) यदि उनके रंग में ना रंगे तो कोई बड़ी बात नहीं है।

काव्यगत विशेषता— भक्ति में भक्त का राम (ईश्वर) में रमना ही उसका मूल उद्देश्य हो।

भाषा— उपर्युक्त छन्द में ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।

रस— भक्ति रस।

छन्द— सवैया छंद।

अलंकार— अनुप्रास अलंकार।

[5]

राज सुरेस पचासकको, बिधिके करको जो पटो लिखि पाएँ।
पूत सुपूत, पुनीत प्रिया, निज सुंदरताँ रतिको मदु नाएँ॥
संपति-सिद्धि सबै 'तुलसी' मन की मनसा चितवैं चित लाएँ।
जानकी-जीवन जाने बिना जग ऐसेउ जीव न जीव कहाएँ॥

शब्दार्थ— रति= कामदेव की पत्नी, प्रिया= नारी, स्त्री, पुनीत= पवित्र।

संदर्भ— प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली ग्रंथ के उत्तरकाण्ड से लिया गया है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास हैं।

प्रसंग— प्रस्तुत छन्द में राम को सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी माना गया है।

व्याख्या— ब्रह्म जी अर्थात् (सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी) के हाथ से मिले एक पट्टे में पंचासी इन्द्र के समान राज्य, अच्छा पुत्र, और पतिव्रता स्त्री को दर्शाने वाली एक सुन्दरता में रति (कामदेव की पत्नी जी दक्ष प्रजाति की कन्या मानी जाती है।) मद को भी नीचा दिखाने वाली स्त्री मिली है। उसकी पूँजी और वैभव को देखकर लगता है कि वह मन की दृष्टि से खड़ी है; लेकिन तुलसीदास कहते हैं कि अगर जानकी के पति अर्थात् श्रीराम को नहीं जाना तो, उस जीव को वास्तविकता में जीव कहलाने के लायक़ नहीं है।

काव्यगत विशेषता— श्रीराम के वास्तविकता का वर्णन किया गया है।

भाषा— उपर्युक्त छन्द में ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।

छन्द— सवैया छन्द।

रस— भक्ति रस।

अलंकार— अनुप्रास अलंकार।

[6]

आपु हौं आपको नीकें कै जानत, रावरो राम! बढ़ायो गढ़ायो।
कीर ज्यों नाम रटै तुलसी, सो कहै जग जानकीनाथ पढ़ायो॥

सोई है खेदु, जो बेदु कहै, न घटै जन जो रघुबीर बढ़ायो।

हौं तो सदा खरको असवार, तिहारोई नाम गयंद चढ़ायो॥

शब्दार्थ— नीक= अच्छा, कीरु= तोता, जानकीनाथ= श्रीराम, खर= गदहा, गयंद= हाथी।

संदर्भ— प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली ग्रंथ के उत्तरकाण्ड से लिया गया है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास हैं।

प्रसंग— प्रस्तुत पद्य में सुख, समृद्धि, आचरण की व्याख्या की गयी है।

व्याख्या— तुलसीदास कहते हैं कि मैं ख़ुद ही अपने आपको अच्छी तरह समझता हूँ। हे राम! मैं आप ही के द्वारा रचाया और बढ़ाया गया हूँ। तुलसी तोते की भाँति राम का नाम रटता रहता है। उस पर से दुनिया कहती है कि यह स्वयं भगवान श्रीराम का पढ़ाया हुआ है। इसी बात का मुझे अफ़सोस है (कि आपका नाम तोते की तरह रटता हूँ, फिर भी मन में भक्ति नहीं है।) वेद भी कहता है कि जिस मनुष्य को राम ने बढ़ाया है वह घट नहीं सकता है। (अर्थात् बढ़ाने का तात्पर्य यह भी हो सकता है सुख, समृद्धि, आचरण जो कभी घट नहीं सकता है।) वैसे तो मैं गदहे पर सवार होने के लायक़ था (यहाँ गदहे पर सवार होने से मतलब है निन्दनीय आचरण वाला, जिसका कोई अस्तित्व नहीं होता है।) परन्तु राम के नाम ने मुझे हाथी पर विराजमान कर दिया अर्थात गौरव प्रदान कर दिया। इसलिए मुझे केवल राम नाम के वास्ते नहीं बल्कि सच्चा भक्त हो जाना चाहिए।

काव्यगत विशेषता— सच्ची भक्ति की विशेषता बतायी गई है।

भाषा— उपर्युक्त छन्द में ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।

रस— भक्ति रस।

छन्द— सवैया छन्द।

अलंकार— अनुप्रास अलंकार।

[7]

ऊँचो मनु, ऊँची रुचि, भागु नीचा निपट ही,

लोक-रीति-लायक न, लंगर लबारु है।

स्वारथु अगमु, परमारथकी कहा चली,

पेटकीं कठिन, जगु जीव को जवारु है॥

चाकरी न आकरी, न खेती, न बनिज-भीख,

जानत न कूर कछु किसब कबारु है।

तुलसीकी बाजी राखी रामहीकें नाम, न तु
भेंट पितरन कौं न मूड़हू में बारू है॥

शब्दार्थ— भागु= क़िस्मत, मूड़हूँ= मुण्डन कराना, सिर के बाल उतरवाना, चाकरी= नौकरी, लंगर= बोझ, भारी, वज़नी, भीख= भिक्षा माँगना।

संदर्भ— प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली ग्रंथ के उत्तरकाण्ड से लिया गया है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास हैं।

प्रसंग— प्रस्तुत पद्य में तुलसीदास ने अपने समय की आर्थिक व रोज़गार के साथ किसान संबंधी समस्याओं का वर्णन किया है।

व्याख्या— तुलसीदास कहते हैं कि इसका मन तो ऊँचा है और रुचि भी बढ़ी हुई है। परन्तु भाग्य (क़िस्मत) इसकी छोटी है। इस संसार में व्याप्त लोक-व्यवहार के योग्य भी है। और बड़ा ही खोटा और झूठा है अर्थात् गप्प मारने वाला है। इसके लिए तो स्वार्थ भी कठिन है, परमार्थ की क्या ही चर्चा करना। इस संसार में उसे अपना पेट पालने में अनेक कठिनाइयों के कारण जीना दुश्वार हुआ है। वह न तो कोई नौकरी करता है, और न ही खेती है। उसके पास न कोई व्यापार है, न भीख ही माँगना जानता है, और न कोई अन्य उद्यम है। (अन्य प्रकार का धन्धा) अर्थात् कोई अन्य प्रकार का पेशा भी नहीं जानता हूँ। तुलसी की बात राम-नाम में ही रखी है। नहीं तो जल्दी पितरों से भेंट होती। पितरों से यहाँ तात्पर्य है बाप, दादा, भाई या अन्य कोई सम्बन्धी जो दिवंगत हो गया हो उससे भेंट होती। अर्थात् मर जाता सिर में एक बाल भी नहीं रहता।

काव्यगत विशेषता— तुलसीदास ने अपने दूर दृष्टि का परिचय देते हुए सामाजिक जीवन के मूलभूत समस्याओं की तरफ़ ईशारा किया है।

भाषा— उपर्युक्त छन्द में ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।

छन्द— कवित्त छन्द।

रस— भक्ति रस।

अलंकार— अनुप्रास अलंकार।

[8]

जायो कुल मंगन, बधावनो बजायो सुनि,
भयो परितापु पापु जननी-जनकको।
बारेतें ललात-बिललात द्वार-द्वार दीन,
जानत हौं चारि फल चारि ही चनकको॥

तुलसी सो साहेब समर्थको सुसेवकु है,
सुनत सिहात सोचु बिधिहू गनकको।
नाम, राम! रावरो सयानो किधौं बाबरो,
जो करत गिरी तें गरु तृनतें तनकको॥

शब्दार्थ— मंगन= भीख माँगने वाला, बावरो= पागल, सयाना, बुद्धिमान, समझदार।

संदर्भ— प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली ग्रंथ के उत्तरकाण्ड से लिया गया है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास हैं।

प्रसंग— प्रस्तुत पद्य में तुलसीदास ने कर्म की महत्ता पर बल देते हुए मोक्ष की प्राप्ति का उपाय सुझाया है।

व्याख्या— भिक्षा माँगने वाले परिवार में जन्म हुआ, जिसके कारण जन्म का बधावा न बजा। यह सुनकर परिवार में माता-पिता को पाप का परिताप और कष्ट हुआ है। बचपन से ही द्वार-द्वार ललचाता रहा, रोता रहा, बिलबिलाता फिरा, अत्यंत दीन होने के कारण चने के चार दानों को ही फल जानता हूँ अर्थात् चार चने के दाने मिल जाने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष मिल जाते हैं। तुलसीदास अब भी श्रीरामचन्द्र जी के अच्छे सेवक बन गए हैं। यह सुनते ही बड़े-बड़े शक्तिशाली गणक को चिन्ता और ईष्या होने लगी थी। हे राम! मुझे पता नहीं आपके काम से ही साधना है अर्थात् यह भी कह सकते हैं कि आपके नाम में ही चतुरता है या पागलपन है, जो तिनके समान नीच पुरुष को भी गिरी से बड़ा बना दिया है।

काव्यगत विशेषता— इस पद्य के माध्यम से कर्म की महत्ता को बताया गया है।

भाषा— उपर्युक्त छन्द में ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।

रस— भक्ति रस।

छन्द— कवित्त छन्द।

अलंकार— अनुप्रास अलंकार।

[9]

बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
रामनाम ही सों रीझें सकल भलाई है।
कासीहूँ मरत उपदेसत महेसु सोई,
साधना अनेक चितई न चित लाई है॥
छाछीको ललात जे, ते रामनामकें प्रसाद
खात खुनसात सोंधे दूध की मलाई है।

रामराज सुनिअत राजनीतिकी अवधि,

नाम राम! रावरो तौ चामकी चलाई है॥

शब्दार्थ— उपदेसत= उपदेश देना, खुनसात= ग़ुस्सा करना, चित= हृदय।

संदर्भ— प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली ग्रंथ के उत्तरकाण्ड से लिया गया है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास हैं।

प्रसंग— प्रस्तुत पद्य तुलसीदास ने प्रेम को सच्चा मार्ग बताया है।

व्याख्या— गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं कि वेद और पुराण में भी लिखा है और इस दुनिया में देखने में भी मिलता है कि राम नाम से प्रेम करने में सब तरह की भलाई अर्थात् तरक़्क़ी है। काशी में मरने के समय भी शिवजी यही उपदेश देते हैं और हर प्रकार के साधनों को उन्होंने न तो देखा है न उसको हृदय में लाया है जो छाछ (मट्ठे) का लालच करते थे जबकि राम नाम के प्रसाद से सब (खुनसे) एवं (सोंधे) दूर होकर दूध की मलाई खाने को मिलती है अथवा जो मट्ठों का लालच करते थे वे तुलसीदास के राम नाम के प्रसाद से दूध की सोंधी मलाई खाने में ख़फ़ा होते हैं श्री रामचन्द्र जी के राज्य में राजनीति की हद सुनी जाती है। परन्तु हे राम! आपके नाम ने तो धाम (नौका पानी पर) चलाई है, अथवा चर्म (का सिक्का) चलाया है। अथवा अधर्मियों को सज्जीवित कर दिया है।

काव्यगत विशेषता— मनुष्य जीवन में प्रेम की महत्व को बताया गया है।

भाषा— उपर्युक्त छन्द में ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।

रस— भक्ति रस।

छन्द— कवित्त छन्द।

अलंकार— अनुप्रास अलंकार।

[10]

बरन-धरमु गयो, आश्रम निवासु तज्यो,

त्रासन चकित सो परावनो परो-सो है।

करम उपासना कुबासनाँ बिनास्यो, ग्यानु,

बचन-बिराग, बेष जगतु हरो-सो है॥

गोरख जगायो जोगु भगति भगायो लोगु,

निगम-नियोगतें सो केलि ही छरो-सो है।

कायँ-मन-बचन सुभायँ तुलसी है जाहि

रामनामको भरोसो, ताहि को भरोसो है॥

शब्दार्थ— चकित= आश्चर्य, तरासन= त्रासन= डराने का काम

संदर्भ— प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली ग्रंथ के उत्तरकाण्ड से लिया गया है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास हैं।

प्रसंग— प्रस्तुत पद्य में तुलसीदास ने संसार में ईश्वर के प्रति बढ़ते अविश्वास की तरफ़ ध्यानमग्न करने व ईश्वर की साधना में ही सच्ची भक्ति है, का निरूपण किया है।

व्याख्या— तुलसीदास कहते हैं कि इस बुरे समय में वर्ण धर्म चला गया है। सात्विक जीवन बिताने वाले लोग आश्रम से अपना पद त्याग दिये हैं, अधर्म और भय से चकित होकर भागम-भाग पड़ी हुई है। काम, उपासना (भक्ति) ज्ञान और कर्म आदि को बुरी इच्छाओं ने नष्ट कर दिया है। लोगों के बातों में वैराग्य (ख़ालीपन) आ गया है। वेश ने मानो जगत को हर लिया है। गोरख ने योग क्या जगा दिया जिससे लोग राम की भक्ति से विमुख हो गये। वेद की आज्ञा से खेल-खेल में संसार को ठग लिया। तुलसी जी कहते हैं कि जिस जीव के मन में, शरीर में, बातों में स्वाभाविक रूप से राम नाम का भरोसा है। उसी का भरोसा सच्चा है।

काव्यगत विशेषता— इस कवित्त के माध्यम से तुलसीदास ने सांसारिक बुराईयों का उजागर किया है।

भाषा— उपर्युक्त छन्द में ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।

रस— भक्ति रस।

छन्द— कवित्त छन्द।

अलंकार— अनुप्रास अलंकार।

10.4 : पाठ सार

गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं में कवितावली का सर्वोच्च स्थान है। 16वीं सदी में लिखी गयी कवितावली में श्रीरामचन्द्रजी के गाथाओं का वर्णन है। रामचरितमानस की भाँति कवितावली में भी 7 कांड हैं। इस पाठ में कवितावली के उत्तरकाण्ड के चयनित छंदों का पाठ किया गया है। इनमें सवैया, कवित्त व चौपाई छंद के साथ अनुप्रास अलंकार का सुंदर प्रयोग कर भक्ति रस को ब्रजभाषा में पिरोया है। कवितावली का काव्य शिल्प मुक्तक काव्य है।

अध्येय पाठ में तुलसी ने राम के चरित्र को माध्यम बनाकर ईश्वर की उपासना, मोक्ष प्राप्ति व मनुष्य को उसके कर्म के प्रति आगाह किया है।

तुलसीदास ने कवितावली के उत्तरकाण्ड में सामाजिक जीवन के उन मूलभूत समस्याओं का वर्णन किया है जिनमें आर्थिक, सामाजिक, बेरोज़गारी व किसान जीवन की व्यथा। जो आज भी प्रासांगिक बनी हुई है। यह तुलसीदास के दूरगामी दृष्टि को अभिव्यक्त करता है।

10.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

(1) तुलसी सगुण भक्ति के उपासक थे।

(2) तुलसीदास श्रीरामचन्द्र को ही अपना भगवान मानते हैं।

(3) तुलसीदास भक्तिकाल के सगुण काव्यधारा के रामाश्रयी शाखा के कवि हैं।

(4) तुलसी अपनी रचनाओं में अवधी और ब्रजभाषा का प्रयोग किये हैं।

(5) तुलसीदास ने सांसारिक मोहमाया को त्याग दिया था इसलिए उन्हें गोस्वामी की उपाधि से विभूषित किया गया था।

10.6 : शब्द संपदा

1. कुपंथ = ग़लत रास्ता
2. जननी = माता
3. सुतु = पुत्र
4. प्रान = जीवन
5. सगो = सगा।
6. अगाध = गहरा
7. मीन = मछली
8. मति = विवेक
9. जग = संसार।
10. मतंग = हाथी
11. भूप = राजा
12. मद = गंधयुक्त द्रव जो मतवाले हाथियों की कनपटियों को बहता है।
13. तुरंग = घोड़ा।
14. रति = कामदेव की पत्नी
15. प्रिया = नारी, स्त्री
16. पुनीत = पवित्र।

17. लंगर	=	बोझ, भारी, वज़नी
18. भीख	=	भिक्षा माँगना।

10.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए—

1. तुलसीदास का साहित्यिक परिचय दीजिए।
2. उत्तरकाण्ड में राम की महिमा का वर्णन कीजिए।
3. तुलसीदास के काव्य में लक्षित अलंकार और रस को सोदाहरण सहित समझाइए।

खण्ड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए—

1. गोस्वामी तुलसीदास के व्यक्तित्व और कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. कवितावली के उत्तरकाण्ड का महत्व बताइए।
3. तुलसीदास के काव्यगत विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।

खण्ड (स)

(I) सही विकल्प चुनिए—

1) तुलसीदास भक्तिकाल की किस घशाला के कवि है।
   (क) ज्ञानाश्रयी (ख) प्रेममार्गीय (ग) कृष्ण भाक्त (घ) रामभाक्त.
2) कवितावली में कितने काण्ड है।
   (क) 6 (ख) 7 (ग) 8 (घ) 5
3) कवितावली में तुलसीदास ने किस भाषा का प्रयोग किया है।
   (क) अवधी (ख) मैथिली (ग) ब्रजभाषा (घ) मगही

(II) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(1) बेदहूँ पुरान कही, ... बिलोकिअत।

(2) तुलसीदास के गुरु .... थे।

(3) रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि .... हैं।

(4) रामचरितमानस की भाषा --------- है।

(III) सुमेलित कीजिए—

भक्ति	अवधी
बरवै रामायण	कवि
तुलसीदास	सगुण

10.8 : पठनीय पुस्तकें

1. कवितावली —तुलसीदास
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास — रामचन्द्र शुक्ल
3. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास — विश्वनाथ त्रिपाठी
4. प्राचीन कवि— विश्वम्भर मानव

इकाई 11 : कवितावली : उत्तरकाण्ड - II : व्याख्या

इकाई का रुपरेखा

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 मूल पाठ: कवितावली: उत्तरकाण्ड : II व्याख्या

11.3.1. अध्येय पदों का परिचय

11.3.2 अध्येय पदों की व्याख्या

11.4 पाठ सार

11.5 पाठ की उपलब्धियाँ

11.6 शब्द संपदा

11.7 परीक्षार्थ प्रश्न

11.8 पठनीय पुस्तकें

11.1 : प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में भक्तिकालीन कवि तुलसीदास के कवितावली के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की जाएगी। इनकी रचनाओं में इनके आराध्य राम के प्रति उनकी अनन्य भक्ति-भावना और एकनिष्ठ भक्ति का परिचय प्राप्त करेंगे।

तुलसी भक्तिकाल के सगुण भक्ति धरा के रामभक्ति शाखा के प्रवर्तक कवि हैं, जिन्होंने संकट के समय सारे प्राचीन तथा उनके युग में प्रचलित मत-मतान्तरों, दार्शनिक एवं धार्मिक सिद्धान्तों क नवीन युग की माँग और आवश्यकता के अनुसार परिष्कार और समन्वय कर एक ऐसे भक्तिमार्ग की स्थापना की थी जो सारी जनता को अद्‌भुत साहस, सन्तोष् और बल प्रदान करने में पूर्ण समर्थ रहा था। इसी कारण विद्वानों ने तुलसी की गणना शंकराचार्य जैसे महान् लोकनायकों की परम्परा में राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध कर तुलसी को अपने युग का लोकनायक अर्थात् जनता का पथ-प्रदर्शन करने वाला महान् व्यक्ति माना है। इस इकाई के माध्यम से इनकी रचना कवितावली के चुनिंदा पदों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

11.2 : उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से आप

- राम के प्रति तुलसी की अनुरक्ति को समझ सकेंगे।
- तुलसीदास के युग-परिवेश को समझ पाएँगे।

- तुलसी कृत कवितावली का सामन्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- तुलसी के साहित्य में अभिव्यक्त संवेदना, कथ्य, अनुभूति ही नहीं वरन उनकी सामाजिकता और उनकी भक्ति संबंध में जानकारी प्राप्त कर उसे आत्मसात कर सकेंगे।
- उनके अभिव्यंजनाशिल्प की विशेषताओं को सप्रमाण जान सकेंगे।

11.3 : मूल पाठ: कवितावली: उत्तरकाण्ड : ॥ व्याख्या

11.3.2 अध्येय पदों का परिचय

तुलसी कृत कवितावली का उत्तरकाण्ड जीवन-दर्शन सम्बन्धी तत्त्वों से परिपूर्ण है। 'जीवन- दर्शन' जैसा कि नाम से ही विदित है 'दर्शन' का व्यावहारिक, जीवनोपयोगी तथा समाजोपयोगी रूप। यह शब्द 'दर्शन' के साथ ही 'जीवन' से भी अनिवार्य रूप से जुड़ा है। अतः 'जीवन-दर्शन' का आशय है- 'जीवन में काम आने वाले उपयोगी तत्त्वों का ज्ञान।'

कवितावली में राम-कथा का निरूपण कवित्त और सवैया शैली में हुआ है। 'रामचरितमानस' की ही भाँति कवितावली के उत्तरकाण्ड में महात्मा तुलसीदास ने ज्ञान, भक्ति तथा अपने जीवन के अनुभूत निष्कर्षों को संजोकर रखा है। यही कारण है कि कवितावली का उत्तरकाण्ड पूर्णतया सजीव, मार्मिक, प्रेरणादायक तथा शिक्षामूलक है। इस काण्ड में राम-कथा का वर्णन नहीं मिलता बल्कि तुलसी द्वारा राम की महत्ता, भक्ति ज्ञान, सदाचार, समाज और युग-समन्वय आदि जीवनोपयोगी तत्त्वों का सम्यक् निरूपण किया गया है। इस दृष्टि से कवितावली का उत्तरकाण्ड अधिक उपयोगी व सार्वजनीन बन पड़ा है। तो आइए इसी कवितावली के कुछ चयनित पदों को उल्लिखित उपर्युक्त तथ्यों के माध्यम से समझने का प्रयास करेंगे।

11.3.2 अध्येय पदों की व्याख्या

पाइ सुदेह बिमोह-नदी-तरनी न लही, करनी न कछू की।
रामकथा वरनी न बनाइ, सुनी न कथा प्रहलाद न ध्रू की
अब जोर जरा जरि गात गयो, मन मानि गलानि कुबानि न मुकी
नीके के ठीक दई 'तुलसी' अवलब बड़ी उर आखर दू की ॥ 88 ॥

शब्दार्थ : सुदेह = नरदेह। विमोह-नदी-तरनी = अज्ञानतारूपी नदी क पार करने के लिए नाव। धू=ध्रुव। जोर जोरदार, भरपूर। जरा बुढ़ापा। गात- (गात्र) शरीर। गलानि = (ग्लानि) घृणा। कुबानि - बुरा स्वभाव। मूकी= (स0 मुच् धातु से) छोड़ी। नीके के = अच्छी तर से। ठीक दई निश्चय कर दिया हैआखर दू की=दो अक्षर अर्थात् र' अ 'म' की।

संदर्भ : उपर्युक्त पद तुलसीकृत कवितावली के उत्तरकाण्ड से उधृत है। इस पद के माध्यम से कवि शिरोमणि तुलसी यह सन्देश देते हैं कि जिसको 'राम' का अवलंब ही सर्वोत्तम है और इसके बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं है।

व्याख्या : सुन्दर मनुष्य देह प्राप्त करके मोह (अज्ञानता) रुपी नदी को पार करने के लिए न तो भक्ति रूपी नाव प्राप्त की और न कोई अच्छा कर्तव्य किया। रामचन्द्रजी के चरित्र की कथा बनाकर औरों से न कही अर्थात रामकथा का भलीभाँति वर्णन नहीं किया। प्रह्लाद और ध्रुव जैसे भक्तों की कथा भी न सुनी; और अब भरपूर वृद्धावस्था से शरीर गल गया है तब भी मन ने ग्लानि नहीं छोड़ी (अपने बुरे स्वभाव को न छोड़ा), अर्थात्, इनमें से कुछ भी न किया तो तुलसीदास कहते हैं कि मैंने अच्छी तरह से निश्चय कर लिया है कि ऐसे समय में दो अक्षर 'राम' नाम का अवलंब ही सर्वोत्तम है।

बोध प्रश्न :

- तुलसी के अनुसार अज्ञानता रूपी नदी को पार करने के लिए कैसी नाव अवश्यक्त है?
- तुलसी ने क्या निश्चय किया है?

राम विहाय 'मरा' जपते बिगरी सुपरी कवि-कोकिल हू की।
नामह ते गज की गतिका की, अजामिल की चलि गे चल चुकी
नाम-प्रताप बड़े कुसमाज बजाइ रही पति पांडुबधू की
ताको भलो अजहूँ 'तुलसी' जेहि प्रीति प्रतीति है आखर दू की ॥89॥

शब्दार्थ : विहाय (सं) = छोड़कर। कबि-कोकिल = वाल्मीकि। चल- चूकी = चंचलता और अपराध। निभ गई। कुसमाज – दुष्ट दुर्योवन की सभा में। पति = प्रतिष्ठा, लाज। बजाइ रही पति = प्रतिष्ठा (रामनाम के प्रताप का डंका) बजाकर बनी रही। पांडु-बधू = द्रौपदी

संदर्भ : उपर्युक्त पद तुलसीकृत कवितावली के उत्तरकाण्ड से उधृत है। इस पद के माध्यम से कवि शिरोमणि तुलसी यह सन्देश देते हैं कि जिसको 'राम' इस दो अक्षरों में प्रीति और प्रतीति है उसका भला अभी भी और आज भी संभव है।

व्याख्या : सीधा रामनाम त्याग कर उलटा 'मरा' 'मरा' जपने से कवि कोकिल (श्री वाल्मीकि) की बिगड़ी हुयी दशा (डकैत होने के कारण किया हुआ दुष्कर्म) सुधर गई। नाम ही के प्रताप से हाथी की, वेश्या की और अजामिल की चंचलता और उनके सब अपराध निभ गये। रामनाम के प्रताप से दुष्ट दुर्योधन की बड़ी भारी सभा में द्रौपदी की प्रतिष्ठा डंका बजाकर बनी रही। तुलसीदास कहते हैं कि जिसको अक्षर 'रा' और 'म' पर प्रीति और विश्वास है उसका भला अभी भी और आज भी संभव है।

बोध प्रश्न :

- कवि कोकिल वाल्मीकि की बिगड़ी दशा कैसे सुधर गई?

भागीरथी जलपान करों अरु नाम है राम के लेत नीतै हौं
मोको है लेनी न देनी कछ, कलि ! भूलि न रावरी ओर चितैहौं।

जानि के जोर करों, परिनाम, तुम्हें पछितैहो पै मैं न भितैहौं।
ब्राह्मन ज्यों उगिल्यौं उरगारि, हौं त्योही तिहारे हिये न हितैहौं।। 102।।

शब्दार्थ : नाम द्वै = सीता-राम। नितै=प्रतिदिन। चितैहौं= देखूंगा। जोर करों= जबर्दस्ती करो। परिनाम = अंतिम फल | पै=परन्तु। भितैहौ= डरूँगा। उगिल्यौ = वमन कर दिया। उरगारि = गरुड़। हौं = मैं। त्योंही= उसी प्रकार। हिये (यहाँ पर) पेट में। हितैहौं - पंचूँगा, हितकारक हूँगा।

संदर्भ : उपर्युक्त पद तुलसीकृत कवितावली के उत्तरकाण्ड से उधृत है। इस पद के माध्यम से कवि तुलसी यह सन्देश देते हैं कि जिसको 'राम' नाम का महत्व दर्शाते हुए कलि को चेतावनी देते हैं कि राम भक्त का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता और यदि वह ऐसा प्रयास कर भी लेता है तो अंततोगत्वा उसे पछतान पड़ेगा।

व्याख्या : प्रतिदिन गंगाजी का जल पीता हूँ और सीता-राम ये दो नाम लेता हूँ। हे कलि ! मेरा तुमसे लेना-देना कुछ नहीं है (अर्थात् मेरा तुमसे कुछ भी सरोकार नहीं), अतः मैं भूलकर भी कभी तुम्हारी ओर नहीं देखूंगा। यदि तुम जानबूझ कर मेरे साथ जोर (अत्याचार) करोगे तो अन्त में तुम्हीं पछताओगे, पर मैं तुमसे न डरूँगा। जैसे गरुड़ ने ब्राह्मण को न पचा सकने के कारण वमन कर दिया था वैसे ही मैं भी तुम्हारे पेट में न पचूँगा (और अन्त में तुमको मुझे छोड़ ही देना पड़ेगा)।

(नोट - गरुड़ ने एक समय धोखे से एक ब्राह्मण को निगल लिया था। उससे उनके पेट में जलन पैदा हुई अन्त में उन्हें उसे अपने पेट से निकाल देना पड़ा)

बोध प्रश्न :

- तुलसी कलि को क्या चेतावनी दे रहे हैं?
- गरुड़ द्वारा ब्राह्मण को निगाने पर उसकी क्या दशा हई?

राजमराल के बालक पेलि के, पालत लालत खूसर को।
सुचि सुन्दर सालि सकेलि सुबारि कै बीज बटोरत ऊसर को।
गुन- ज्ञान-गुमान भभेरि बड़ो, कलपद्रुम काटत मूसर को।
कलिकाल विचार अचार हरो, नहि सूझे कछू धमबूसर को।103।।

शब्दार्थ : राजमराल= राजहंस। पेलि के = ठेलकर। खुसर= उलूक, खूसट। सुचि= (शुचि) पवित्र। सालि = (शालि) धान। सकेलि = (सं0) संकलन से, बटोरकर। सुबारि कै = जलाकर। ऊसर = अनुत्पादक भूमि। गुमान = = घमंड। भभेरि= मूर्ख। मूसर को = मुशल बनाने के लिए। विचार= धर्मा- धर्म का विचार। अचार = तप शौचादि का आचरण। धमधूसर = निर्बुद्धि

संदर्भ : उपर्युक्त पद तुलसीकृत कवितावली के उत्तरकाण्ड से उधृत है। इस पद के माध्यम से कवि तुलसी कलि के प्रभाव या कलि काल का वर्णन करते हुए कलि ने लोगों की बुद्धि को किस तरह

हर लिया है इस और ध्यान आकर्षित करते हैं और कहते हैं कि कलि के प्रभाव के कारण ही लोग बुद्धि हीन हो रहे हैं।

व्याख्या : सुन्दर राजहंसों के बालकों को (अर्थात् विवेकियों को) ठेलकर (हटाकर) अर्थात भक्तों और विद्वानों क अनादर करके अब के लोग उल्लू के बच्चों का (निर्बुद्धियों) लालन-पालन करते हैं, सुन्दर और पवित्र धानों को एकत्र करके उनको जलाकर ऊसर भूमि में खाने के लिए दाने बटोरते फिरते हैं। उन्हें गुण और ज्ञान का बड़ा घमंड है पर मूर्ख इतने बड़े हैं कि मुशल बनाने के लिए कल्पवृक्ष का पेड़ काटते हैं। इस कलियुग ने उनका सब आचार-विचार हर लिया है, पर बेवकूफों को कुछ सूझता नहीं।

बोध प्रश्न :

- समाज पर कलियुग का प्रभाव किस तरह परिलक्षित होता है?

कोऊ कहे करत कुसाज दगाबाज बड़ो,
कोऊ कहे राम को गुलाम सरो खूब है।
साधु जानें महासाधु, खल जानें महाखल,
बानी झूठी सांची कोटि उठत हबूब है।
चहत न काहू सोंन कहता की कछू,
सब की सहत उर अंतर न ऊब है।
'तुलसी' को भलो पोच हाथ रघुनाथ ही के,
राम की भगति भूमि, मेरी मति दूब है ॥108॥

शब्दार्थ : कुसाज = कुसंग, बुरी वस्तुओं का संग्रह। खरो खूब है = अत्यंत निष्कपट है। बानी = बातें। हबूब = चर्चा, हुबाब = पानी के बुलबुले, ऊब = घबराहट

संदर्भ : उपर्युक्त पद तुलसीकृत कवितावली के उत्तरकाण्ड से उधृत है। इस पद के माध्यम से कवि तुलसी यह सन्देश देते हैं कि उन्होंने अपना सब कुछ अपने प्रभु राम को समर्पित कर दिया है। उनके बारे में कोई क्या कहता है इससे उन्हें कोई लेना-देना नहीं है। उनके लिए राम ही सब कुछ हैं।

व्याख्या : कोई कहते हैं कि यह तुलसी बुरी वस्तुओं का संग्रह करता है, अतः बड़ा छली है, और कोई कहते हैं कि यह राम का सच्चा सेवक है। सज्जन तो मुझे (तुलसीदास को) बड़ा भारी सज्जन समझते हैं और दुष्ट लोग दुर्जन ही समझते है। इस प्रकार करोड़ों भाँति की झूठी- सच्ची चर्चाएँ उठती रहती हैं। पर मैं न किसी से कुछ चाहता हूँ, न किसी के विषय में कुछ भला-बुरा ही करता हूँ। सबका कथन सुन लेता हूँ, चित्त में कोई घबराहट नहीं है। मेरा तो भला-बुरा सब श्रीरामचन्द्रजी के ही हाथ है। रामचंद्रजी की भक्ति भूमि है जिसमें मेरी बुद्धि दूब होकर जमी है (अर्थात् मेरी बुद्धि रामचंद्रजी की भक्ति में ही लगी हुई है)

बोध प्रश्न :

- लोगों द्वारा आलोचना करने पर भी तुलसी क्यों घबराते नहीं?

भेष सुबनाइ, सुचि बचन कहें चुवाइ,
जाइ तौ न जरनि धरनि धन धाम की।
कोटिक उपाय करि लालि पालियत देह,
मुख कहियत गति राम ही के नाम की।
प्रगटै उपासना, दुरावे दुरबासनाहि,
मानस निवास-भूमि लोभ, मोह काम की।
राग रोष ईरवा कपट कुटिलाई भरे,
'तुलसी' से भगत भगति चहें राम की ! ॥ 119॥

शब्दार्थ : भेष सुबनाइ = सुन्दर साधुओं का सा वेश बनाकर। चुवाइ = शांत और मधुर करके। गति = पहुँच, शरण। उपासना = पूजा-पाठ, भक्ति। दुरावे = छिपाता है। दुरबासनाहिं = दुर्वासिना को, बुरी इच्छाओं को। मानस= मन। निवास-भूमि = रहने का स्थान। राग = सांसारिक विषयों से प्रेम, रोष== क्रोध, ईरषा = (सं0 ईर्ष्या) पराई उन्नति देखकर जलना।

संदर्भ : उपर्युक्त पद तुलसीकृत कवितावली के उत्तरकाण्ड से उधृत है। इस पद के माध्यम से कवि तुलसी यह कहना चाहते हैं कि मात्र भेस और वचन से ईश्वर प्राप्ति संभव नहीं है वरन कुवासनाओं, लोभ, मोह रोष, ईर्ष्या, कपट और कुटिलता को त्यागने के पश्चात ही ईश्वर प्राप्ति संभव है वरन यह सब स्वांग जान पड़ता है।

व्याख्या : मन से पृथ्वी, धन और घर की चिंता नहीं छूटती पर सुन्दर साधुओं का वेश बनाकर मुख से शांत और मीठे वचन बनाकर पवित्र (वेद-पुराण संबंधी) अमृत चुवाते वचन कहते हैं। करोड़ों प्रकार के भले-बुरे उपायों से अपनी देह (मरंधार्मा) का लालन-पालन करते हैं, परन्तु लोगों से कहते हैं कि हमें तो केवल राम नाम का ही भरोसा है। उपासना (भक्ति भावना) को तो प्रगट करते हैं, पर अपने मन में कुवासनाओं को छिपाये रखते हैं। मन तो लोभ, मोह और काम का निवासस्थान ही है। इस प्रकार के राग, रोष, ईर्ष्या, कपट और कुटिलता से भरे तुलसीदास के समान भक्त भी राम की भक्ति चाहते हैं। क्या ही आश्चर्य की बात है या हास्यास्पद स्थिति है कि इस प्रकार के कर्म के बावजूद लोग राम को प्रसन्न करना चाहते हैं।

बोध प्रश्न :

- मन किस तरह की भावनाओं का निवास स्थान होता है?

धरम के सेतु जगमंगल के हेतु भूमि,
भार हरिबे को अवतार लियो नर को।
नीति औ प्रतीति-प्रीति पाल प्रभु चालि मान,

लोक बेद राखिबे को पन रघुबर को।

बानर बिभीषन की ओर के कनावड़े हैं,

सो प्रसंग सुने अंग जरै अनुचर को।

राखे रीति आपनी जो होइ सोई कीजै, बलि,

'तुलसी' तिहारो घरजायक है घर को ॥ 122 ॥

शब्दार्थ : धरम के सेतु = धर्म की मर्यादा। हेतु = कारण। पन = प्रण | कनावड़े = एहसानमंद, ऋणी। प्रसंग = कथा, वार्त्ता। अनुचर = सेवक (तुलसीदास)। घरजायऊ = घरजाया, गुलाम।

संदर्भ : उपर्युक्त पद तुलसीकृत कवितावली के उत्तरकाण्ड से उधृत है। इस पद के माध्यम से कवि तुलसी यह कहना चाहते हैं कि उन्हें विभीषण और वानरों से ईर्षा होती है क्यों कि राम उनके ऋणी है और अपनी विवशता या चिंता भी व्यक्त करते हैं कि उनके द्वारा भी ऐसा कोई कार्य क्यों संभव नहीं हो पाया जो विभीषण और वानरों द्वारा राम के लिए संभव हो पाया।

व्याख्या : श्रीरामचन्द्रजी धर्म के सेतु (मर्यादा) हैं। उन्होंने संसार का मंगल करने और पृथ्वी का भार हरण करने के लिए (पापियों से कम करने के लिए) मनुष्य (श्री रामचंद्र जी) का अवतार लिया है। नीति, विश्वास और प्रीति का पालन करना रामचंद्र जी का प्रण है। लोक और वेदों की मानरक्षा करना रामचन्द्रजी का प्रण है। तुलसीदास कहते हैं कि हे राम-चन्द्र जी, आप विभीषण और वानरों के ऋणी हैं, यह कथा सुनकर मुझ सेवक को ईर्ष्या होती है (कि मेरे भी ऋणी क्यों न हुए)। अर्थात्त मुझसे ऐसा काम क्यों संभव नहीं हो सका? अतएव, मैं आपकी बलिहारी जाता हूँ, अपने प्रण की रक्षा करके जो हो सके वही कीजिए। मैं तो आपके घर का घरजाया सेवक हूँ। मेरी हर प्रकार से देख-भाल करना आपका दायित्व है।

बोध प्रश्न :

- तुलसी को ईर्षा किस से और क्यों होती है?

ईसन के ईस, महाराजन के महाराज,

देवन के देव, देव प्रान हूँ के प्रान हौ।

काल हू के काल, महाभूतन के महाभूत,

कर्म हूँ के करम, निदान के निदान हौ।

निगम को अगम, सुगम 'तुलसी' हू से को,

एते मान सोस करुनानिधान हौ।

महिमा अपार काहू बोल को न वारापार,

बड़ी साहबी में नाथ बड़े सावधान हौ ॥126॥

शब्दार्थ : महाभूत = पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पंच महा- भूत हैं। महाभूतन के महाभूत = पंच महाभूतों से सम्पूर्ण सृष्टि बनती है उन पंचमहाभूतों के भी आदि कारण। निदान

= कारण। निगम = वेद। अगम = जहाँ कोई न जा सके, जिसकी थाह कोई न ले सके। एते मान = इतने। बोल = वचन। अलंकार = अत्युक्ति।

संदर्भ : उपर्युक्त पद तुलसीकृत कवितावली के उत्तरकाण्ड से उधृत है। इस पद के माध्यम से कवि तुलसी यह कहना चाहते हैं कि जिनके गुण को वेद भी न जान सके ऐसे राम भक्तों को आसानी से प्राप्त हो जाते हैं और भक्तों पर दया करते हैं। इस पद में राम की महानता का बखान है।

व्याख्या : तुलसीदास कहते हैं कि देव रामचन्द्रजी, आप समय के भी स्वामी हैं, महाराजाओं के भी महाराजा हैं, देवताओं के भी देवता हैं, प्राणों के भी प्राण हैं, काल के भी काल हैं, पंच महाभूतों के भी आदि कारण हैं, कर्म के भी कर्म हैं और कारण के भी कारण हैं। आप वेद के लिए भी अगम (जिनके गुण को वेद भी न जन सके) है और मुझ ऐसों को (भक्तों को) आसानी से प्राप्त हैं। इतनी महानता के बाद भी आप शील के समुद्र और करुणा के आगार हैं अर्थात आप में अथाह शील और अनंत करुना है। आपकी महिमा अपार है। आपकी किसी भी वाणी (वेद, पुराण आदि) के विस्तार और सीमा का पता नहीं है। हे स्वामी, आप अपने इस बड़े प्रभुत्व के बावजूद भी निबाहने (किसी के साथ संबंधों का निर्वाह करने) में अत्यंत सावधान रहते हैं। अर्थात भक्तों पर दया ही करते हैं।

बोध प्रश्न :

- तुलसी ने अपने प्रभु राम की म्हणता का बखान कैसे किया?

अवनीस अनेक भए अवनी जिनके डर ते सुर सोच सुखाहीं।
भावन- दानव-देव- सतावन रावन घाटि रच्यो जग माहीं।
ते मिलए घरि घरि, सुजोधन जे चलते बहु छत्र की छांहीं।
बेद पुरान कहै, जग जान, गुमान गोबिंदहि भावत नाहीं ॥132॥

शब्दार्थ : अवनीस (सं0 अवनि = पृथ्वी + ईश) राजा। दानव = कश्यप की दनु नाम्नी स्त्री से उत्पन्न संतान दानव कहलाती है (दानव लोग भी देवताओं के वैरी थे)। सतावन = सतानेवाला। घाटि रच्यो = बुराई का आयोजन किया। ते = वे। जग जान = संसार भी जानता है। जे चलते बहुपत्र की छाँहीं = जिनके ऊपर राजछत्र सदा छाया रहता था, छत्र की छाया में चलने के कारण जिन पर धूल भी नहीं पड़ने पाती थी। गुमान = अभिमान। भावत = अच्छा लगना।

संदर्भ : उपर्युक्त पद तुलसीकृत कवितावली के उत्तरकाण्ड से उधृत है। इस पद के माध्यम से कवि तुलसी यह कहना चाहते हैं कि अभिमान के कारण बड़े-बड़े का अंत हुआ है और यह भी सन्देश देते हैं कि ईश्वर को घमंड या अभिमान कदापि मान्य नहीं है या अच्छा नहीं लगता।

व्याख्या : इस पृथ्वी में अनेक बड़े-बड़े राजा हुए हैं जिनके डर के कारण देवता शोच से सूख जाते थे। मनुष्य, दानव और देवताओं का सतानेवाला रावण, जिसने संसार में बुरा आयोजन किया, और दुर्योधनादिक बड़े-बड़े प्रताप- शाली राजा, जिनके ऊपर सदा राजछत्र तने रहते थे, केवल

अभिमान के कारण धूल में मिल गये। वेद और पुराणों ने भी कहा है, और सारा संसार भी इस बात को जानता है कि भगवान् को घमण्ड अच्छा नहीं लगता।

बोध प्रश्न :

- बड़े-बड़े राजा किस कारण मिट्टी में मिल गए?
- संसार किस बात से अवगत है?

जोग कथा पठई ब्रज को सब सो सठ चेरी की चाल चलाकी।
ऊधो जू! क्यों न कहे कुमरी जो वरी नटनागर हेरि हलाकी।
जाहि लगै पर जाने सोई 'तुलसी' सो सुहागिनि नंदलला की।
जानी है जानपनी हरि की, अब बांधियैगी कछु मोटि कला की।। 134।

शब्दार्थ : पठई = भेजी। सठ चेरी- दुष्टा दासी अर्थात् कुब्जा, कुबड़ी। चाल चलाकी = (मुहावरा) धूर्तता, चालाकी की चाल। कुबरी= (1) कुबड़ी (2) कु (बुरी) +बरी (ब्याहा)। जो = जिसको। बरी= ब्याहा। नटनागर = चतुर खिलाड़ी। हलाकी = मार डालनेवाला, घातक। जाहि लगै पर जाने सोई = जिस पर बीतती है वही जानता है। सुहागिनि = सौभाग्यवती। जानपनी = ज्ञानपना, ज्ञानीपन। हरि = कृष्ण, बांधियैगी= (हम भी) बांधेगी। मोटि =गठरी।

संदर्भ : उपर्युक्त पद तुलसीकृत कवितावली के उत्तरकाण्ड से उधृत है। इस पद में ईश्वर के वियोग से आकुल गोपिकाओं की अवस्था का वर्णन किया गया है।

व्याख्या : हे उद्धवजी ! कृष्ण ने व्रज को (आपके द्वारा हमें सिखलाने को) योग की कथा भेजी है, वह सब उसी दुष्टा कुबड़ी की धूर्तता है, जिसने चतुर खिलाड़ी और घातक कृष्ण को भी एक दृष्टि देखते ही वरण कर लिया, मला वह कुबरी क्यों न ऐसा सन्देश भेजे। परन्तु जिस पर बीतती है वहीं जानता है कि वियोग की व्यथा क्या पदार्थ है। वह तो कृष्ण की सौभाग्यवती (संयो- गनी) है। (हमारे वियोग के दुःख को क्या समझे।) अब हमने कृष्ण का ज्ञानीपन जान लिया है। (वे उसकी कुबड़ी पीठ देखकर लुब्ध हो गये)। अतः हम भी किसी कला की गठरी (बनावटी गठरी) अपनी पीठ पर बाँध लेंगी।

विशेष : गोपी-उद्धव संवाद में कुब्जा का यह प्रसंग सूर आदि कवियों ने भी लिया है परन्तु तुलसी की कल्पना निश्चय ही नयी है।

अलंकार : श्लेष (कुबरी में)

बोध प्रश्न :

- तुलसी ने गोपिकाओं के विरह की व्यंजना किस प्रकार की?
- गोपिकाएँ भी क्या कर कृष्ण को लुभाने की बात कर रही हैं?

11.4 : पाठ सार

कवितावली गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित भक्तिकाल की प्रमुख रचनाओं में है। सोलहवीं शताब्दी में रची गयी कवितावली में राम के इतिहास का वर्णन कवित्त, चौपाई,

सवैया आदि छंदों में की गई है। रामचरितमानस की परिपाटी के अनुसार ही कवितावली में भी सात काण्ड हैं।

कवितावली में लिखे गए छंद ब्रज भाषा में लिखे गये हैं और इनकी रचना प्राय: उसी परिपाटी पर की गयी है जिस परिपाटी पर रीतिकाल का अधिकतर रीति-मुक्त काव्य लिखा गया।

'कवितावली' का काव्य-शिल्प मुक्तक काव्य का है। उक्तियों की विलक्षणता, अनुप्रास की छटा, लयपूर्ण शब्दों की स्थापना कथा भाग के छन्दों में दर्शनीय है। आगे रीति काल में यह काव्य शैली बहुत लोकप्रिय हुई और इस प्रकार तुलसीदास इस काव्य शैली के प्रथम कवियों में से ज्ञात होते हैं फिर भी उनकी 'कवितावली' के छंदो में पूरी प्रौढ़ता दिखाई पड़ती है।

कवितावली से व्याख्या के लिए ली गई पंक्तियां राम के महिमा का वर्णन करती है। भक्तिकाल के प्रमुख विशेषता नाम स्मरण को कई छंदों में आधार बनाया गया है और राम के नाम के महिमा का वर्णन किया गया है। पंक्तियां अपने व्याख्यात्मक स्वरूप में भक्ति काल के सम्पूर्ण चित्र को उपस्थित करती है।

11.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई की अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

- तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली की पंक्तियां हिंदी कविता संसार को न केवल समृद्ध करती है बल्कि उसके वैविध्य को भी दिखलाती है।
- कवितावली से चुनी हुई श्रेष्ठ काव्य पंक्तियां कवितावली के साथ तुलसीदास के रचनात्मक प्रतियाँ को सामने लाने का कार्य करती है।
- तुलसी की राम के प्रति भक्ति दास्य भाव की है, और अनन्य है.
- दास्य भाव की भक्ति में भक्त अपनी तुच्छता और दोषों का अतिश्योक्ति पूर्ण वर्णन करता है, लेकिन इसका यह नहीं है कि व सचमुच गिरा हुआ इंसान है. इसके विपरीत यह भक्त की निरभिमानता का प्रतीक है .

11.6 : शब्द संपदा

1. दार्शनिक - दर्शनशास्त्र का ज्ञाता
2. पथ-प्रदर्शन - मार्गदर्शन
3. निरूपण - विवेचन करना, अच्छी तरह समझाना
4. भवसागर - संसार रूपी समुद्र, भवांबुधि
5. भासित - चमक, दीप्ति
6. ओजस्वी - शक्तिशाली, प्रभावशाली
7. भर्त्सना - निंदा

8. प्रबोधन	-	जागरण, जगाना
9. उदारता	-	दयालुता
10. धनुर्भंग	-	धनुष को तोडना या भंग करना

11.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड – (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए|

1) पठित पाठ के आधार पर राम के प्रति तुलसीदास की भक्ति भावना पर अपने विचार व्यक्त किजए।

2) कवितावली के वर्ण्य विषय को विस्तार से समझाइए।

खंड – (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए ।

1) राम नाम के अवलम्ब के संदर्भ में तुलसी के क्या विचार है?

2) कलियुग के संदर्भ में तुलसी क्या कहना चाहते हैं?

3) तुलसी मनुष्य की किस प्रवृत्ति पर आश्चर्य चकित हैं?

4) तुलसी ने राम की महानता का वर्णन किस प्रकार किया है? राम किसे प्राप्त होते हैं?

5) तुलसी के अनुसार ईश्वर को क्या पसंद नहीं है?

6) जोग कथा पठई ब्रज को सब सो सठ चेरी.... अब बांधियैगी कछु मोटि कला की।। पद की व्याख्या कीजिए।

खंड - (स)

i. सही विकल्प चुनिए:

1. तुलसीदास किस नाम का अवलंब ही सर्वोत्तम मानते हैं?
   अ) राम आ) हरी इ) कृष्ण ई) ब्रह्म
2. तुलसी के अनुसार किसने लोगों का आचार-विचार हर लिया है?
   अ) द्वापर युग ने आ) कलि युग ने इ) त्रेता युग ने ई) सत युग
3. तुलसी के अनुसार किसे त्यागने के पश्चात ही ईश्वर प्राप्ति संभव है?
   अ) कुवासनाओं आ) लोभ एवं मोह इ) रोष ई) इन सभी ततावों को

ii. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. कवितावली ब्रज भाषा में प्रणित .... है जिसे तुलसी ने ब्रज भाषा के अन्यतम छंद कवित्त, सवैयों में लिखा है।
2. तुलसी के अनुसार रामचंद्रजी की भक्ति भूमि सामान है अतः है जिसमें उनकी बुद्धि .... होकर जमी हुई है।
3. 'कवितावली' का काव्य-शिल्प .... काव्य रूप है।

iii. सुमेल कीजिए:

अ) भाव-व्यंजना एवं रस-परिपाक की दृष्टि से	i) अभिधा शब्द शक्ति ही अपनाई है।
आ)'कवितावली' में कवि ने प्रायः	ii) प्रसंग का भी उल्लेख किया है
इ) कवि ने तीन छन्दों में भ्रमरगीत के	iii) 'कवितावली' उत्कृष्ट कोटि की रचना है

11.8 : पठनीय पुस्तकें

1. कवितावली : भक्ति, दर्शन और काव्य : डॉ. मदनलाल शर्मा एवं गीता रानी शर्मा
2. गोस्वामी तुलसी कृत कवितावली : टीकाकार : देवनारायण द्विवेदी
3. कवितावली : गीता प्रेस, गोरखपुर
4. हिंदी की लोकप्रिय भक्त कवि तुलसीदास : सुदर्शन चोपड़ा एवं पी.एस . भाकुनी

इकाई 12 : कवितावली : उत्तरकांड - III : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 मूल पाठ : कवितावली : उत्तरकाण्ड – III : व्याख्या

12.4 पाठ सार

12.5 पाठ की उपलब्धियाँ

12.6 शब्द सम्पदा

12.7 परीक्षार्थ प्रश्न

12.8 पठनीय पुस्तकें

12.1 : प्रस्तावना

तुलसीदास रामकाव्य धारा के प्रमुख कवि हैं। वे सगुणोपासक शाखा से सम्बन्धित हैं। राम काव्य परम्परा को उत्कृष्ट एवं गौरवशली स्थान दिलाने का श्रेय अवधी और ब्रज के महाकवि तुलसीदास को ही प्रमुख रूप से जाता है।। तुलसी की काव्य कला के सम्बन्ध में रामचंद्र तिवारी ने लिखा है कि-"उन्हें काव्य शास्त्र के विविध अंगों का पूर्ण ज्ञान था किन्तु इनका प्रदर्शन उनका ध्येय नहीं था। उन्होंने वर्ण्य–विषय को दृष्टि में रखकर उसके अनुकूल ही छंदों का प्रयोग किया है। उनका एक मात्र उद्देश्य अभिव्यक्ति की पूर्णता है। भाषा,शैली,छंद,गुण,रीति,अलंकार,उक्ति –वैचित्र्य ये सभी उसकी पूर्णता में सहायक हैं।"

तुलसीदास की रचनाओं में लोकमंगल के तत्त्व विद्यमान हैं। उनकी दृष्टि अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक थी। वे सच्चे अर्थों में भारतीय जनमानस के प्रतिनिधि कवि थे। वैयक्तिक साधना का उपदेश देते हुए भी उन्होंने पारिवारिक और सामाजिक आदर्श का भी उपदेश दिया है। तुलसीदास ने भगवान श्री राम को अपना आराध्य मानकर अनन्य भाव की भक्ति की थी, जिसका चिरकाल तक स्मरण किया जाएगा।

प्रस्तुत इकाई के अंतर्गत विषय की आवश्यकतानुसार कवितावली(उत्तरकाण्ड) के चुने हुए 10 छंदों की व्याख्या एवं काव्यगत विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

12.2 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप :

- तुलसीदास की भक्ति एवं उनकी दार्शनिक विचारधारा से अवगत हो सकेंगे,
- कवितावली के कथानक एवं भक्ति भावना को आत्मसात कर सकेंगे।
- पाठ्यक्रम में निर्धारित छंदों की व्याख्या एवं काव्य सौन्दर्य को रेखांकित कर सकेंगे

12.3 : मूल पाठ : कवितावली : उत्तरकाण्ड - III : व्याख्या

136

हनुमान है कृपालु, लाड़िले लखन लाल,
भावते भरत कीजै सेवक सहाय जू।
बिनती करत दीन दूबरो दयावनो सो,
बिगरे तें आपही सुधारि लीजै भाय जू।
मेरी साहिबिनी सदा सीस पर बिलसति,
देबि ! क्यों न दास को देखाइयत पाय जू।
खीझहूँ में रीझबे की बानि, राम रीझत हैं,
रीझे हैव् हैं राम की दुहाई रघुराय जू ॥

शब्दार्थ-लाड़िले = प्यारे, परमप्रिय। लखन= लक्ष्मण भावते प्रिय। दूबरो दुर्बल। दयावानो = दया का भाजन। साहिबिनी = स्वामिनी (सीता माता)। बिलसति = शोभित होती है। खीझहूँ में क्रोध में भी रीझबे की प्रसन्न होने की। बानि स्वभाव, आदत। रीझे हैं = प्रसन्न हुए होंगे।

प्रसंग-प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकालीन रामकाव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' के 'उत्तरकांड' से ली गई हैं। इसमें तुलसीदास प्रमुख राम-सेवकों से श्रीराम तक अपनी प्रार्थना पहुँचाने का अनुनय कर रहे हैं।

व्याख्या – हनुमान जी, प्रिय लक्ष्मण और मनभावन भरत जी थोड़ी इस सेवक पर कृपा करके इसकी सहायता कीजिए। यह दीन, दुर्बल और दया का पात्र दास आपसे विनय करता है। इस दास से यदि कुछ भूल हो जाय तो आप ही उसे देख लें। मेरी स्वामिनी सीता जी हमेशा मेरे मस्तक पर हाथ दिये रहती हैं, इसलिए हे देवी, इस दास तुलसी को अपना चरण क्यों नहीं दिखलाती। श्रीराम जी का तो यह स्वभाव है कि वे क्रोध में भी प्रसन्न होते हैं। अतः मैं श्रीराम जी की शपथ लेकर कहता हूँ कि इस समय भी राम जी अवश्य ही प्रसन्न हुए होंगे।

विशेष – 1. यहाँ तुलसीदास ने दास्य भाव की भक्ति के अनुरूप राम के सेवक हनुमान आदि की भक्ति का वर्णन किया है।

2. इस पद्यांश में एक भक्त की कातरता और विनयशीलता का भाव दर्शनीय है।

3. यहाँ एक भक्त की कारुणिक और विवश स्थिति और अपने आराध्य में अटूट विश्वास को दर्शाया है।

4. इस पद्यांश में व्यंजनों की सहज भाव से आवृत्ति एक आकर्षक लय प्रस्तुत करती है।

5. अलंकार – ‘हनुमान...... .... सहाय जू’ में व्याज स्तुति एवं ‘दीन दूबरो दयावनो’, ‘साहिबिनी सदा........बिलसति’ में वृत्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

बोध प्रश्न :-

- उपर्युक्त छंद में किस प्रकार का भाव वर्णित है।
- हनुमान है कृपालु.... सेवक सहाय जू। में किस अलंकार का प्रयोग है।
- उपर्युक्त छंद की व्याख्या अपने शब्दों में कीजिए।

140

देवधुनि पास मुनिबास श्रीनिवास जहाँ,
प्राकृत हूँ बट बूट बसत पुरारि हैं।
जोग जप जाग को बिराग को पुनीत पुनीत पीठ,
रागिन पै सीठि डीठि बाहरी निहारि हैं।
'आयुस', 'आदेस', 'बाबा', 'भलो भलो', 'भावसिद्ध',
तुलसी बिचारि जोगी कहत पुकारि हैं।
रामभगतन को तौ कामतरु तें अधिक,
सिय बट सेए करतल फलचारि हैं।।

शब्दार्थ - देवधुनि पास =गंगा (देव नदी) के पास। श्री निवास = सीता का निवास। प्राकृत साधारण बूट वृक्ष। पुरारि = त्रिपुर नामक दैत्य का वध करने वाले, शिव। पीठ =स्थान। सीठी = नीरस, फीका डीठि= दृष्टि। रामभगतन= राम के भक्तों के लिए। सेए =सेवन करने से। करतल फलचारि हैं =चार फल हस्तगत हो जाते हैं-चार फल- धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकालीन रामकाव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' के 'उत्तरकांड' से ली गई हैं। इसमें तुलसीदास सीतावट की महिमा का बखान कर रहे हैं।

व्याख्या - साधारण वटवृक्ष में शंकर जी का निवास होता है, फिर इसके समीप तो गंगाजी का तट एवं ऋषि वाल्मीकि का आश्रम है, जहाँ श्री सीता जी ने निवास किया था, इसलिए इसकी महिमा का वर्णन कौन कर सकता है? यह योग, यज्ञ और वैराग्य के लिए तो निश्चय ही बड़ा पवित्र साधना-स्थल है, परंतु सांसारिक माया-मोह में फँसे हुए जो लोग इसे बाह्य दृष्टि से देखेंगे उन्हें यह वृक्ष अत्यंत निरर्थक और साधारण पेड़ ही प्रतीत होगा। तुलसीदास कहते हैं कि यहाँ के लोग विचार पूर्वक 'जो आज्ञा', 'आदेश','भैया' आदि शिष्ट शब्दों का स्वभाव से ही प्रयोग करते हैं। यह सीतावट रामभक्तों के लिए तो कल्पवृक्ष से बढ़कर है और इसकी सेवा करने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष अत्यंत सुलभ हैं। "

विशेष- 1. यहाँ तुलसीदास ने दास्य भाव की भक्ति के अनुरूप राम की पत्नी सीता के महत्त्व को रेखांकित किया है। "

2. यहाँ गंगा को देवताओं की नदी और वट में शिव का निवास बता कर उसे पवित्र और महिमामयी प्रदर्शित किया गया है।

3. सांसारिक दुःखों से मुक्ति के लिए इसे अत्यंत सुलभ मानते हैं।

4. लोक व्यवहृत शब्दों का प्रयोग कर कवि ने लोकसंपृक्ति के भाव का परिचय दिया है।

5. अलंकार - संपूर्ण पद्य में तुलना, वर्णन अलंकार का प्रयोग

<u>बोध प्रश्न :-</u>

- उपर्युक्त पंक्तियों में तुलसीदास किस स्थान की महिमा का वर्णन कर रहे हैं।
- कौन से चार फल हस्तगत हो जाते हैं।
- देवधुनि पास का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

चित्रकूट-वर्णन

141

जहाँ बन पावनो, सुहावनो, बिहंग मृग,
देखि अति लागत अनंद खेत खूँट सो।
सीताराम - लखन-निवास, बास मुनिन को,
सिद्ध साधु साधक सबै बिवेक बूट सो।
झरना झरत झारि सीतल पुनीत बारि,
मंदाकिनी मंजुल महेस जटाजूट सो।
'तुलसी' जौ राम सों सनेह साँची चाहिए,
तौ सेइए सनेह सों बिचित्र चित्रकूट सो ॥

शब्दार्थ -पावनो = पवित्र। बिहंग = पक्षी। मृग = हिरन। अनंद =आनंद। खेत खूँट सो = खेत के टुकड़े के समान हरा-भरा श्यामल। लखन= लक्ष्मण। बिवेक =ज्ञान। बूट = वृक्ष। सो =समान। सीतल = शीतल। पुनीत = पवित्र। बारि = जल। मंजुल = मनोहर। जटाजूट= जटाओं का समूह। सनेह= स्नेह प्रेम। साँची = सत्य। सों = से।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकालीन रामकाव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' के 'उत्तरकांड' से ली गई हैं। प्रस्तुत छंद में तुलसीदास ने चित्रकूट का वर्णन किया है। यहाँ राम ने वनगमन के समय निवास किया था।

व्याख्या - इस छंद में तुलसीदास ने बताया है कि जब राम का वनवास हुआ था तब राम ने चित्रकूट में निवास किया था जहाँ के वन पवित्र होते हैं। उस वन में बहुत सुन्दर और मन को सुहाने वाले पशु-पक्षी हैं। वहाँ के हरे-भरे खेतों के टुकड़ों को देखकर मन को आनंद पहुँचता है। उसी वन में राम, सीता तथा लक्ष्मण ने अपना निवास स्थान बनाया था। उसी वन में अनेक मुनिजन भी रहते थे जो साधु-संतों के लिये विवेकरूपी वृक्ष के समान हैं। वहाँ झरनों से पवित्र जल की वर्षा होती रहती है और मंदाकिनी नदी महादेव शिव के जटा के समान लगती है इसलिये आपके हृदय में राम के प्रति प्रेम की इच्छा है। तो आपको प्रेमपूर्वक इस विचित्र प्रभावमय चित्रकूट में अपना निवास स्थान बना चाहिये।

विशेष- 1. इन पंक्तियों में तुलसीदास ने चित्रकूट का बड़ा ही जीवंत एवं संजीव वर्णन किया है।

2. तुलसी ने चित्रकूट के जो शब्दचित्र खींचे हैं वे कवितावली के मनोरम स्थलों में से है।

3. चित्रकूट में ही उपासना कर राम ने अन्याय व अत्याचार से संघर्ष का संकल्प लिया था।

4. तुलसी ने इस चित्रकूट वर्णन में जो प्राकृतिक उपादान ग्रहण किये हैं वह उनके आराध्य यानि राम के महात्म्य एवं भक्ति भाव को पोषित करते नजर आते हैं।

5. अलंकार-इस पद्य में उपमा, तृतीय / चतुर्थ/पंचम पंक्ति में अनुप्रास एवं अंतिम पंक्ति में उल्लेख अलंकार का प्रयोग है।

<u>बोध प्रश्न :-</u>

- उपर्युक्त पंक्तियों में तुलसीदास ने किस स्थान का वर्णन किया है।
- उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-कौन से अलंकार प्रयुक्त हुए हैं।
- “मंदाकिनी मंजुल महेस जटाजूट सो” का भाव लिखिए।

146

ब्रह्म जो ब्यापक बेद कहैं, गम-नाहिं गिरा गुन- ज्ञान गुनी को।
जो करता भरता हरता सुर साहिब साहब दीन दुनी को।
सोई भयो द्रव रूप सही जू है नाथ बिरंचि महेस मुनी को।
मानि प्रतीति सदा 'तुलसी' जल काहे न सेवत देवधुनी को ॥

शब्दार्थ - गम = गम्य। गिरा = सरस्वती। करता = करने वाला (कर्ता)। भरता = भरण करने वाला (भर्ता)। हरता = हरण कर ने वाला (हर्ता)। सुर साहिब = देवों में श्रेष्ठ। साहब = स्वामी। दुनी = दुनिया। बिरंचि = ब्रह्मा। गुनी =गुणी। देवधुनी = देवनदी। प्रतीति =विश्वास।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकालीन रामकाव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' के 'उत्तरकांड' से ली गई हैं। इस छंद में यह बताया गया है कि ब्रह्मा जो गंगा का महात्म्य थे, जिनके गुण का बखान किया जाता था आज वह सिर्फ जल के समान हो गया, इसलिये तुलसी उसे गंगा की उपासना करने को कहते हैं।

व्याख्या - जिस ब्रह्म का सर्वथा गुणगान किया जाता रहा है तथा यह मान लिया गया है कि संसार की सृष्टि उन्हीं के द्वारा हुई है। उसी ब्रह्म के विषय में तुलसीदास कहते हैं कि ब्रह्मा जो परमात्मा हैं तथा जिसने संसार की सृष्टि की है उसको सभी वेद, पुराण, उपनिषद सर्वव्यापी तथा सर्वश्रेष्ठ बताते हैं। उनके गुण और ज्ञान की बराबरी तो स्वयं शारदा भी नहीं कर सकी अर्थात् उनका गुण और ज्ञान किस कदर प्रभावशाली था। जिसने पूरे संसार की उत्पत्ति की जो सभी देव-देवताओं का स्वामी है, लोक-परलोक उसी के इशारे पर चलते हैं अर्थात् जो सभी का निर्माता दलन करने वाला और संहार करने वाला है, वह सर्वज्ञाता ईश्वर ब्रह्मा - शिव और मुनिजनों का भी स्वामी है ऐसा प्रतीत होता है कि आज वह जल के समान स्वादहीन, रंगहीन और गंधहीन हो गया है। इसलिये उसे भी पवित्र गंगा जल का सेवन करना चाहिये तभी जाकर वह फिर से अपने रंग में आ सकता है क्योंकि गंगा जल सभी विद्रूपताओं को दूर कर देता है।

विशेष - 1. ईश्वर को सर्वगुण सम्पन्न रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसका वर्णन वेद-पुराण भी करते हैं।

2. गंगा के जल को सभी शक्तियों से बढ़कर दिखाया गया है।

3. अलंकार—'गम नाहिं गिरा गुन-ज्ञान-गुनी को' में वृत्यानुप्रास, 'सुर - साहिब, साहब दीन-दुनी को' में यमक अलंकार का प्रयोग दृष्टव्य है।

<u>बोध प्रश्न :-</u>

- किसे गंगा की उपासना करने के लिए कहा गया है ?
- किसके गुण और ज्ञान की बराबरी स्वयं शारदा भी नहीं कर सकीं?
- सभी शक्तियों से बढ़कर किसे दिखाया गया है ?

153

नाँगो फिरै, कहै माँगतो देखि 'न खाँगो कछू' जनि माँगिए थोरो।

राँकनि नाकप रीझि करै, 'तुलसी' जग जो जुरै जाचक जोरो।

'नाक सवारत आयो हौं नाकहिं, नाहिं पिनाकिहिं नेकु निहोरो'।

ब्रह्म कहै 'गिरजा ! सिखवो, पति रावरो दानि है बावरो भोरो' ॥

शब्दार्थ -न खाँगो कछू= किसी प्रकार की कमी नहीं है। माँगिए = भिखारी को। जनि= मत। थोरो =थोड़ा। रॉकनि =रंक (अर्थात् कंगालों को)। नाकप = नाक अर्थात् स्वर्ग के पति (इन्द्र)। जग =संसार। जाचक= याचक। आयो हौं नाकहिं =(मेरी) नाक में दम आ गया है। नाहिं पिनाकिहिं नेकु निहोरो =शिव मेरा तनिक भी अहसान नहीं मानते, मेरा थोड़ा उपकार भी नहीं मानते। गिरजा= पार्वती। सिखवो= समझाया। बावरो= बावरा, पागल। भोरो =भोला, सीधा-सादा।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकालीन रामकाव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी - तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' के 'उत्तरकांड' से ली गई हैं। इसमें तुलसीदास भगवान शिव के भोले एवं दानी स्वभाव का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या - ब्रह्मा जी कहते हैं कि-पार्वती ! तुम अपने पति को समझा दो, क्योंकि यह बड़ा बावला, दानी और भोला है। स्वय तो नग्न घूमते हैं परन्तु याचकों को देखकर कहते हैं कि कुछ कमी नहीं है इसलिए थोड़ा मत माँगना। संसार में जितने याचक जोड़े जुट सकते हैं, उन्हें जुटाकर उन सब कंगालों को प्रसन्न होकर इन्द्र बना देते हैं। उन इन्द्रों के लिए स्वर्ग बनाते-बनाते मेरी नाक में दम हो गया है, परन्तु पिनाकपाणि शिव जी मेरा कुछ भी अहसान नहीं मानते।

विशेष- 1. यहाँ तुलसीदास ने ब्रह्मा के मुख से शिव के विशिष्ट गुणों को रेखांकित करते हुए उनकी विशेषताओं को उद्घाटित किया है।

2. यहाँ तुलसी ने पौराणिक संदर्भों द्वारा उपर्युक्त तथ्यों की पुष्टि कर शिव को और महिमामंडित किया है।

3. रामभक्त होने के बावजूद तुलसी ने शिव को महत्त्व दिया है। मानस में भी कहा है- शिवद्रोही मम दास कहावा।

4. विनयपत्रिका के पद 'बावरो रावरो नाह भवानी' में इसी प्रकार की व्यंजना है।

5. कवि ने शब्दों में व्यंजनों की आवृत्ति सहज भाव से प्रस्तुत की है और ये गीतात्मक लय की सृष्टि करते हैं।

6. अलंकार - प्रथम पंक्ति में वक्रोक्ति एवं तृतीय पंक्ति में व्याज स्तुति अलंकार का प्रयोग है।

<u>बोध प्रश्न :-</u>

- उपर्युक्त पंक्तियों में तुलसीदास ने भगवान शिव के किन रूपों की चर्चा की है ?
- ब्रह्मा ने पार्वती जी को किस प्रकार समझाया है ?
- ‘नाहिं पिनाकिहिं नेकु निहोरो’ का भावार्थ लिखिए।

155

सीस बसै बरदा, बरदानि, चढ्यो बरदा, घरन्यौ बरदा है।

धाम धतूरो बिभूति को कूरो, निवास तहाँ शव लै मरे दा है।

ब्याली कपाली है ख्याली, चहूँ दिसि भाँग की टाटिन को परदा है।

राँक सिरोमनि काकिनिभाग बिलोकत लोकप को करदा है।।

शब्दार्थ- बरदा = (1) वर प्रदान करने वाली गंगा, (2) बैल। बरदानि = वर प्रदान करने वाले, (दानियों में श्रेष्ठ)। घरन्यौ = घरनी भी अर्थात् गृहणी (पार्वती)भी। भीर = धाम स्थान, घर। कूरो =कूड़ा, ढेर। दाहै= जलाये जाते हैं। ब्याली= सर्पों को धारण करने वाले। कपाली = कपाल अर्थात् खप्पर धारण करने वाले। ख्याली = लीलाधारी, अपने विचारों में खोए हुए, (दूसरों के लिए) कुतूहल उत्पन्न करने वाले। राँकसिरोमनि= महारंक, महादरिद्र, रंकों में शिरोमणि। काकिनिभाग = एक कौड़ी की योग्यता वाले। बिलोकत = देखते ही। लोकप= लोकपाल। कौ= कौन, अर्थात् तुच्छ। करदा = धूल |

प्रसंग-प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकालीन रामकाव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' के 'उत्तरकांड' से ली गई हैं। इसमें तुलसीदास भगवान शिव के स्वरूप और शक्ति का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या - शिवजी के सिर पर वरदायिनी गंगा शोभित हैं और स्वयं ये श्रेष्ठ दानी हैं। स्वयं बैल पर सवार हैं तथा इनकी पत्नी भी वरदायिनी हैं। घर में धतूरा और भस्म का ढेर है तथा निवासस्थान वहाँ है जहाँ लोग शव को जलाने के लिये ले जाते हैं। ये सर्प और कपाल धारण करने वाले शिव जी अत्यंत कौतुकी हैं। इनके घर में चारों ओर भाँग की टाटियों के परदे लगे हैं। ये आधी दमड़ी की हैसियत वाले कंगालों के शिरोमणि को भी लोकपाल बना देते हैं।

विशेष - 1. यहाँ तुलसीदास ने ब्रह्मा के मुख से शिव के विशिष्ट गुणों को रेखांकित करते हुए उनके महत्त्व को उद्घाटित किया है।

2. यहाँ तुलसी ने पौराणिक संदर्भों द्वारा उपर्युक्त तथ्यों की पुष्टि कर शिव को और महिमामंडित किया है।

3. रामभक्त होने के बावजूद तुलसी ने शिव को महत्त्व दिया है। मानस में भी कहा है - शिवद्रोही मम दास कहावा। यह तुलसीदास की समन्वय-चेतना को दर्शाता है।

4. यहाँ तुलसीदास शिव को आर्थिक-सामाजिक दृष्टि से दीन-हीन निम्न वर्ग के सहायक के रूप में उपस्थित करते हैं।

5. यहाँ बरदा (बैल, वर देने वाला) में यमक अलंकार दर्शनीय है।

6. अलंकार-‘ब्याली कपाली है ख्याली' में यमक अलंकार है। बरदा, बरदानि में अनुप्रास अलंकार है। पद्य में विशेषोक्ति एवं व्याज स्तुति अलंकार का प्रयोग है।

बोध प्रश्न :-

- सिद्ध कीजिए कि उपर्युक्त पंक्तियों में तुलसी की समन्वय चेतना लक्षित हुई है।
- ‘वरदा’ शब्द की व्याख्या कीजिए।
- तुलसीदास ने ब्रह्मा के मुख से किसका महिमा मण्डन करवाया है।

161

चाहै न अनंग- अरि एकौं अंग मंगन को,
देबोई पै जानिए सुभाव – सिद्ध बानि सो।
बारिबुंद चारि त्रिपुरारि पर डारिए तौ,
देत फल चारि, लेत सेवा साँची मानि सो।
तुलसी भरोसो न भवेस भोलानाथ को तौ,
कोटिक कलेस करौ मरौ छार छानि सो।
दारिद-दमन दुख-दोष- दाह- दावानल,
दुनी न दयालु दूजो दानि सूलपानि सो ॥

शब्दार्थ – अनंग- अरि = कामदेव का शत्रु अर्थात् शिव। एकौं अंग = एक भी अंग (षोड्शोपचार की पूजा में सोलह अंग होते हैं उनमें से एक अंग की भी भगवान् शिव अपेक्षा नहीं करते)। मंगन को= भिखारियों को। देबोई= देना ही, दान करना ही। बानि = आदत। बारिबुन्द = जल की चार बूंदे।सुभाव सिद्ध = स्वभाव सिद्ध,स्वभाविक। त्रिपुरा =महोदव, त्रिपुर नामक दैत्य का नाश करने वाले। भवेस = महादेव, संसार के स्वामी। कोटिक = करोड़ों। कलेस = क्लेश, कष्ट। दारिद दमन =दरिद्रता का दमन करने वाले। दाह = ताप दैहिक, दैविक एवं भौतिक। दुनी = दुनिया, संसार। दूजो = दूसरा, दानि= दानी। सूलपानि = शूलिपाणि, त्रिशूल है हाथ में जिनके अर्थात् भगवान् शिव।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकालीन रामकाव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित ‘कवितावली’ के ‘उत्तरकांड’ से ली गई हैं। तुलसीदासजी इन पंक्तियों में भगवान शिव की दयालुता को प्रकट कर रहे हैं।

व्याख्या – कविवर तुलसीदास कहते हैं कि कामदेव को भस्म कर देने वाले शिव अपने भक्तों से कुछ भी पाने की अपेक्षा नहीं रखते हैं। वे तो सिर्फ देने की ही इच्छा रखते हैं। यही उनका सहज स्वभाव है। वे तो इतने दयालु हैं कि जल की चार बूँदों से भी प्रसन्न होकर भक्त को धर्म, अर्थ,

काम, मोक्ष जैसे चारों फल दे देते हैं। तुलसीदास जी स्पष्ट करते हैं कि जिन्हें भोलेनाथ पर विश्वास नहीं हो, वे अगर करोड़ों कष्ट सहनकर भी धूल छानते हुए मृत्यु को भी प्राप्त हो जाएं तो भी उनका प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता। इस संसार में दरिद्रता का नाश करने वाला, दुख-दोष को हरने वाला शिव के समान और कोई नहीं है। वे उसी प्रकार सांसारिक कष्टों को जला डालते हैं, जैसे वन में लगी आग को नष्ट कर देती है।

विशेष- 1. तुलसीदास जी ने भगवान शिव को अत्यंत दयालु बताया है।

2. तुलसीदास की समन्वयकारी चेतना यहाँ लक्षित होती है। मूलतः रामभक्त तुलसीदास शिव के प्रति भी भक्ति भाव प्रदर्शित करते हैं।

3. तुलसीदास की भक्ति भावना की प्रकृति दास्य-भाव की है जो इन पंक्तियों में लक्षित होती है।

4. अलंकार – इस पद्य की सातवीं पंक्ति में उपमा अलंकार है। संपूर्ण पद्य में रूपकात्मक योजनाएँ दर्शनीय हैं।

बोध प्रश्न :-

- उपर्युक्त पंक्तियों का भाव अपने शब्दों में लिखिए।
- ‘सूलपानि’ एवं अनंग –अरि शब्द की व्याख्या कीजिए।

165

देवसरि सेवौं बामदेव गाउँ रावरे ही,
नाम राम ही के माँगि उदर भरत हौं।
दीबे जोग ‘तुलसी’ न लेत काहू को कछुक,
लिखी न भलाई भाल, पोच न करत हौं।
एते पर हू जो कोऊ रावरो हैव् जोर करै,
ताको जोर, देवे दीन द्वारे गुदरत हौं।
पाइकै उराहनो, उराहनो न दीजै मोहिं,
कला-कला कासीनाथ कहे निबरत हौं ॥

शब्दार्थ- देवसरि = देवनदी (गंगा)। बामदेव= शिव। उदर= पेट। गाउँ - = गाँव। दीबे जोग = देने योग्य। काहू को= किसी को। भाल= मस्तक। पोच न करत हौं = मैं किसी को हानि नहीं पहुँचाता हूँ। एते पर हू इतने पर भी रावरो हैव् = आपका होकर। जोर करै =बल प्रयोग करना। ताको = उसका। गुदरत हौं =(मैं) प्रकट कर देता हूँ। उराहनो = उलाहना। दीजै= दीजिए। मोहिं =मुझे। निबरत हौं= निवृत्त हो जाता हूँ। हौं = मैं

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकालीन रामकाव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' के 'उत्तरकांड' से ली गई हैं। इसमें तुलसीदास भगवान शिव से अपनी व्यथा प्रकट करते हुए रक्षा प्रदान करने की याचना कर रहे हैं।

व्याख्या – हे देवाधिदेव शिव! मैं आपकी नगरी में रहकर गंगाजी का सेवन करता हैं तथा राम के नाम पर याचनापूर्वक जीवन निर्वाह कर रहा हूँ। मुझमें किसी को कुछ देने की शक्ति नहीं है, परंतु मैं किसी का कुछ लेता भी नहीं हूँ, न ही किसी को कोई नुकसान पहुँचाता हूँ। फिर भी आपका कोई भक्त मुझे कष्ट पहुँचाता है, तो मैं आपके सिवा और कहाँ निवेदन करूँगा। अर्थात् हे शिव! आप कृपानिधान हैं, अतः मेरी रक्षा करना। हे काशीनाथ आप तो काल को भी नियंत्रण करने वाले हो और मैंने आपके द्वार पर अपना निवेदन भी प्रस्तुत कर दिया है। यदि श्रीराम आपको उलाहना दें, तो आप मुझे यह उलाहना मत दीजिएगा कि मैंने आपको बताया नहीं था।

विशेष – 1. ये पंक्तियाँ ये दर्शाती हैं कि मध्यकाल में वैष्णव भक्ति एवं शैव भक्ति संप्रदायों में वैमनस्य का भाव था।

2. रामभक्तों एवं शिवभक्तों में समन्वय का संकेत यहाँ मिलता है।

3. अलंकार-पद्य में काशी के विरोधियों के उलहाने के कारण व्यंग्योक्ति अलंकार का प्रयोग है।

बोध प्रश्न :-

- उपर्युक्त पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।
- मध्यकाल में किन दो सम्प्रदायों में वैमनस्य था।
- उपर्युक्त छंद में किसके मध्य समन्वय का संकेत मिलता है।

182

बिरचि बिरंचि की बसति बिस्वनाथ की जो,
प्रानहू तें प्यारी पुरी केसव कृपाल की।
ज्योतिरूप लिंगमई, अगनित लिंगमई,
मोक्ष - बितरनि, बिदरनि जगजाल की।
देवी देव देवसरि सिद्ध मुनिवर, बास,
लोपति विलोकत कुलिपि भोंड़े भाल की।
हाहा करै 'तुलसी' दयानिधान राम! ऐसी,
कासी कदर्थना कराल कलिकाल की ॥

शब्दार्थ - बिरंचि = ब्रह्मा। बसती =वस्ती, नगर। विस्वनाथ= महादेव विश्वनाथ। केसव = विष्णु। अगनित = अगणित, असंख्य। लिंगमई = लिगमयी। मोक्ष बितरनि=मोक्ष प्रदान करने

वाली। जगजाल की बिदरनि= संसार के जाल अर्थात् आडम्बरों को विदीर्ण करने वाली। देवसरि= देवनदी। भोंड़े = अभागा, भाग्यहीन। भाल =ललाट। कुलिपि = दुर्भाग्य की रेखाएँ। कदर्थना = बुरी दशा। कराल = भयंकर। कासी = काशी।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकालीन रामकाव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' के 'उत्तरकांड' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में तुलसीदास काशी की महिमा का बखान करते हुए, उसकी कलिकाल से रक्षा करने की प्रार्थना कर रहे हैं।

व्याख्या- ब्रह्मा द्वारा निर्मित, शिवजी की पूरी काशी, जिसे विष्णु प्राणों से भी अधिक महत्त्व देते हैं, जहाँ बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक ज्योतिर्लिंग विश्वनाथ जी एवं असंख्य शिवलिंग शोभायमान हैं। मोक्षदायिनी, सांसारिक कष्टों को नष्ट करने वाली गंगा, देवी देवता, सिद्ध पुरुष और श्रेष्ठ मुनियों से बसी हुई, अभागों के सिर पर लिखी दुर्भाग्य रेखा को मिटाने वाली काशी की दुर्दशा का जिम्मेदार कलियुग है। अतः दया बरसाने वाले राम कृपा कर काशी की रक्षा करें।

विशेष- 1. काशी के पौराणिक महत्त्व एवं उसके धर्मस्थली होने का वर्णन है।

2. ये पंक्तियाँ एक भक्त की अपने आराध्य में अटूट विश्वास को दर्शाती हैं।

3. वे कलियुग के कष्टों से मुक्ति के लिये भगवान राम की भक्ति में डूबने और रामनाम के जाप के महत्त्व की प्रतिपादित करते हैं।

4. तुलसीदास ने शैव एवं वैष्णव के मध्य समन्वय स्थापित किया है।

5. अलंकार - 'ज्योतिरूप लिंगमई अगनित लिंगमई' में व्याज स्तुति अलंकार का प्रयोग किया गया है।

बोध प्रश्न –

- उपर्युक्त पंक्तियों में किसकी महिमा का बखान किया गया है।
- तुलसीदास कलियुग के कष्टों से मुक्ति के लिए क्या करने की बात करते हैं।
- ज्योतिरूप लिंगमई, अगनित लिंगमई,में कौन सा अलंकार है।

12.4 : पाठ सार

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर तुलसी की भक्ति भावना का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। कवितावली के उत्तरकाण्ड में ही उनकी भक्तिपरक उक्तियों की बहुलता है। एक भक्त के रूप में तुलसी का स्थान कोई भी ग्रहण नहीं कर सकता। श्रीराम के प्रति उनके मन में जो गहरा विश्वास और अटूट आस्था है, वही उनकी भक्ति भावना का प्राणतत्त्व है। इसी के सहारे तुलसी ने कवितावली में अपने आराध्य श्रीराम की स्तुति की है, उन्हें रिझाने का प्रयास किया है। उत्तरकाण्ड में छन्दों की संख्या सबसे अधिक अर्थात् 183 है और इस प्रकार कवितावली में

उत्तरकाण्ड सर्वाधिक विस्तृत काण्ड है। उत्तरकाण्ड में भी राम कथा की एकता और क्रमबद्धता के दर्शन नहीं होते। कवि ने प्रस्तुत काण्ड में राम कथा से जुड़े हुए बाईस प्रसंगों का वर्णन किया है, ये बाईस प्रसंग इस प्रकार हैं- राम की कृपालु वृत्ति, राम ही से याचना, उद्बोधन विनय, राम प्रेम ही मूल सार नवीन आस्था एवं विश्वास, राम नाम की महिमा, राम के गुणों का गान, राम प्रेम ही सर्वोपरि, राम भक्ति की याचना, प्रभु की महत्ता और दयालु वृत्ति, गोपियों के प्रेम की अनन्यता, विनय, सीता वट वर्णन, चित्रकूट की शोभा का वर्णन, तीर्थराज को शोभा श्रीगंगा का महात्म्य वर्णन, अन्नपूर्णा का महात्म्य वर्णन, शंकर स्तुति, काशी में महामारी आदि।

12.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं-

1. तुलसी ने दास्य भक्ति के अनुरूप राम के साथ-साथ हनुमान आदि की भक्ति का भी वर्णन किया है.
2. तुलसी की राम के प्रति अनन्य निष्ठा है इसलिए वे राम की पत्नी सीता और आराध्य शिव की भी पूर्ण मनोयोग से स्तुति करते हैं.
3. कवितावली में लोक भाषा का प्रयोग कवि की लोकसंस्कृति का परिचायक है.

12.6 : शब्द संपदा

1. लोक मंगल -	सारे संसार के कल्याण की कामना
2. शपथ -	कसम
3. कल्प वृक्ष -	इच्छा पूरी करने वाला वृक्ष
4. पिनाक पाणि -	पिनक नामक धनुष को धारण करने वाले अर्थात भगवान शंकर
5. कौतुकी -	विनोदशील, तमाशा करने वाले

12.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. तुलसी की भक्ति भावना पर सारगर्भित लेख लिखिए।
2. कवितावली के उत्तरकाण्ड में वर्णित मूल भाव को अपने शब्दों में लिखिए।

3. सिद्ध कीजिए कि तुलसीदास ने समन्वय की भावना से कवितावली की रचना की है।
4. कवितावली में दार्शनिकता का मूल्यांकन कीजिए।
5. निर्धारित छंदों के अंतर्गत तुलसी की काव्यकला की समीक्षा कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए ।

1.'तुलसीदास के काव्य में भक्ति की प्राचुर्यता है।" इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

2. साहित्य जगत् में तुलसीदास का महत्व प्रतिपादित कीजिए।

3.'कवितावली' मे युगीन चित्रण पर प्रकाश डालिए।

खंड – (स)

I. बहुविकल्पीय प्रश्न

1. राम का स्वाभाव कैसा है ?

(क) सदा क्रोधी (ख) क्रोध में भी प्रसन्न (ग) सदा दुखी (घ) सदा उदास

2.राम ने वनवास में कहाँ निवास किया था ?

(क) प्रयाग (ख) जनकपुर (ग) चित्रकूट (घ) साकेत

3. वट वृक्ष में किसका निवास होता है ?

(क) ब्रह्मा (ख) लक्ष्मी (ग) दुर्गा (घ) शंकर

4. पार्वती से शिवजी को समझाने के लिए किसने कहा ?

(क) ब्रह्मा जी (ख) विष्णु जी (ग) गणेश जी (घ) गंगा जी

II.रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

1. हनुमान है कृपालु, लाडिले______________लाल .
2. सीतावट राम भक्तो के लिए ____________से बढ़कर है .
3. शिव के सर पर वरदायिनी ______________शोभित है.
4. शिवानी _____________को भस्म कर देने वाले हैं.

III. सुमेल कीजिए-

1. भरत	अ) ऋणी
2. वाल्मीकि	आ) कामदेव
3. मंदाकिनी	इ) राम के भाई
4. अनंग	ई) नदी

12.8 : पठनीय पुस्तकें

1. गोस्वामी तुलसीदास - रामचंद्र शुक्ल
2. तुलसीदास - माताप्रसाद गुप्त
3. लोकवादी तुलसीदास - विश्वनाथ त्रिपाठी
4. कवितावली – तुलसीदास
5. कवितावली (उत्तरकाण्ड) - संपादक- अजय गोयल,अर्चना प्रिंटर्स,बोदला,आगरा

इकाई 13 : गीतावली : बालकांड : एक परिचय

इकाई की रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 मूल पाठ : गीतावली: बालकांड : एक परिचय

13.3.1 बधाई

13.3.2 नामकरण

13.3.3 दुलार

13.3.4 ऋषि विश्वामित्र का आगमन

13.3.5 अहिल्या उद्धार

13.3.6 जनकपुर में प्रवेश

13.3.7 पुष्पवाटिका में

13.3.8 रंगभूमि

13.3.9 विवाह की तैयारी

13.3.10 अयोध्या आगमन

13.4 पाठ सार

13.5 पाठ की उपलब्धियाँ

13.6 शब्द संपदा

13.7 परीक्षार्थ प्रश्न

13.8 पठनीय पुस्तकें

13.1 : प्रस्तावना

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित काव्य कृति है गीतावली। गीतावली तुलसीदास द्वारा रचित प्रामाणिक रचनाओं में से एक है। इसमें गीतों के द्वारा भगवान श्री राम की कहानी को कही गई है। संपूर्ण रचना को तुलसीदास जी ने 7 खंडों में बाँटा है। 7 खण्डों में राम कथा का विभाजन प्रायः उसी प्रकार से हुआ है जिस प्रकार से “रामचरितमानस” में हुआ है। लेकिन गीतावली और रामचरितमानस में फिर भी बहुत बड़ा अंतर है और वह अंतर यह है कि गीतावली में किसी कथा के लिए कोई प्रस्तावना या भूमिका नहीं है और न ही मानस की तरह उत्तरकांड में अध्यात्मविवेचन किया गया है। प्रस्तुत खण्ड में 328 पद है। गीतावली का पहला खण्ड है- बालकाण्ड। प्रस्तुत खण्ड को तुलसीदास ने 10 भागों में बाँटा है। राम जन्म की कथा से

लेकर राम के अयोध्या आगमन तक की घटनाओं को राम संगीतबद्ध रूप में प्रस्तुत पुस्तक में तुलसीदास जी ने स्थान प्रदान किया है।

13.2 : उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद –

1. गीतावली का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
2. राम जन्म कथा को आत्मसात कर सकेंगे।
3. राम-सीता विवाह के माध्यम से विवाह जनित रीत-रिवाजों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. राम के शील,शौर्य और सौन्दर्य को समझ सकेंगे।

13.3 : मूल पाठ : गीतावली: बालकाण्ड : एक परिचय

गीतावली का पहला खण्ड है बालकाण्ड। बालकाण्ड नामक खण्ड को तुलसी ने 10 भागों में विभाजित किया है। प्रत्येक खण्ड को तुलसीदास ने अलग-अलग रागों से सजाया है। नीचे संक्षेप में प्रत्येक खण्ड का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

13.3.1 बधाई

बधाई खण्ड में राम जन्म कथा का वर्णन मिलता है। बधाई खण्ड को तुलसीदास ने 5 उपविभागों में बाँटा है। हरेक पद को अलग-अलग रागों से सजाया भी है जैसे कि प्रथम पद का संबंध राग आसावरी के साथ है तो दूसरे और चौथे पद पद का संबंध राग जैतश्री के साथ है। तीसरे पद का संबंध राग बिलावल के साथ है। पाँचवे पद का संबंध राग केदारा के साथ है। अति पवित्र चैत्र मास के शुक्ला नवमी तिथि में जब सूर्य भगवान मध्य आकाश में प्रकाशमान थे उस समय शुभ लग्न, शुभ वार और शुभ योग में राजा दशरथ के घर सौन्दर्य, शील और गुण के परम उदाहरण भगवान राम का जन्म हुआ। यह समाचार पृथ्वी लोक के लिए ही नहीं स्वर्गलोक के लिए भी परम आनंदकारी है। महल में मुनिगण सुमधुर वेद पाठ कर रहे हैं, प्रजागण आनंदमग्न होकर अरगजा, अगर और अबीर उड़ा रहे हैं। राजा दशरथ को तो संपूर्ण संसार का सुख मिल गया है इसलिए वे ह्रदय खोलकर हाथी, घोड़े, गौ, वस्त्र सुवर्ण का दान कर रहे हैं।। अब समय ऐसा आया है कि देवता, साधुजन ओर सज्जन तो अति प्रसन्न हैं लेकिन दैत्यों और दुष्टों का मन भयभीत है। जिस आनंद समुद्र की एक बूंद से ही शिव जी और ब्रम्हा जी का जगत में प्रभुत्व है, वही सुखसागर राम जन्म की पावन वेला में अवध पुरी के दशों दिशाओं में फैला हुआ है। सखियां बधाई के गीत गा रही हैं। राजा दशरथ को 4 पुत्रों के रूप में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति हो गई है ऐसा प्रतीत हो रहा है। झुंड झुंड की स्त्रियां इन बालकों को देखने आ रही हैं उनकी आरती उतार रही हैं और अपने-अपने कुल के अनुसार बधावा लेकर आशीर्वाद देते हुए

यही कह रही हैं कि इन बालकों की उन्नति को सहन न करनेवाले तथा इनसे द्वेष माननेवाले लोग मन ही मन मर जाए और उनके वैरियों के विषाद की वृद्धि हो तथा शिव और पार्वती की कृपा से चारों राजकुमार दीर्घजीवी हो। नट-नटी, नर-नारी अपने-अपने रंग में ऐसे नृत्य कर रहे हैं कि मानो कामदेव और रति तरह-तरह के सुंदर रूप धरकर अपना अद्‌भुत नृत्य श्री राम और उनके भाईयों के मनोरंजन के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। रनिवास में कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा मातृत्व सुख से प्रमुदित वस्त्र, आभूषण, मणि, मुक्ता दान करने से भी नहीं हिचकिचा रही हैं। महाराज दशरथ के सौभाग्य की प्रशंसा तो शिव, ब्रम्हा, मुनि और सिद्धगण भी कर रहे हैं। ऐसे समय में तुलसीदास भी प्रेम से उमंग–उमंग कर प्रभु के लिए सोहिला गा रहे हैं। देखते–देखते राम और उनके भाईयों की छठी का दिन भी आ गया। सखियाँ एक-दूसरे से कह रही हैं कि आज तो पूरी रात जागना चाहिए। गुरूवर वशिष्ठ ने छठी से संबंधित विधि-विधानों का पालन कैसे करना है इसकी संपूर्ण जानकारी दे दी है। सेवक और सज्जन सचिवगण भी सावधान होकर अपना काम कर रहे हैं। आज संपूर्ण अवध में किसी को नींद नहीं आ रही है ऐसा लग रहा है कि मानो निद्रा रूपी स्त्री ने जागरण किया है। तुलसीदास जी कहते हैं कि तीनों तपों से तपे हुए लोक को मानों प्रभु की छठी रूप छाया प्राप्त हो गई है।

बोध प्रश्न

- बधाई खंड को तुलसी ने कितने पदों में बाँटा है?

13.3.2 नामकरण-

नामकरण बालकाण्ड का दूसरा अध्याय है। पद संख्या 6 जो कि राग जैतश्री पर आधारित है। कवि तुलसी ने राम और उनके भाईयों के नामकरण से संबंधित नियमों का तो वर्णन किया है साथ ही साथ अयोध्या के नर-नारियों की प्रसन्नता का सूक्ष्म से सूक्ष्मतर वर्णना किया है।

कवि ने नामकरण संस्कार की तैयारियों की वर्णना करते हुए लिखा है अवध में अत्यंत सुंदर आनंद के बधावे बज रहे हैं। महाराज ने रघुवंश में श्रेष्ठ बालकों के नामकरण की शुभ तिथियों का शोधन कराया है। राजा दशरथ से आज्ञा लेकर ऋषिराज वशिष्ठ ने शिष्य, मंत्री, सेवक, सखाओं को बुलाया है। सभी ने ऋषिराज वशिष्ठ को नतमस्तक होकर प्रणाम किया। ऋषिराज ने भी पूजनोपयोगी सामग्री लाने की ज़िम्मेदारी उन सबों में बांट दिया। गणेश, पार्वती और शिव की पूजा के बाद अब गायों का दोहन किया जा रहा है। घर- घर आनंद मंगल के गीत गाए जा रहे हैं। लोग आनंदित भावना के साथ एक-दूसरे के साथ बात कर रहें हैं और बिना किसी रोक टोक। यहाँ-वहाँ आ जा रहे हैं। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा है कि जैसे इंद्र की आज्ञा से मेघगण पवन के साथ मिलकर दौड़ रहे हैं। घर, आंगन, चौक, गली और बाजारों को सजाया गया। अथर्ववेद के

ज्ञाता तो स्वयं वशिष्ठ जी हैं साथ में उन्होंने दूसरे वेदों के ज्ञाताओं को भी बूला भेजा है। रानी कौशल्या को बालकों को लाने के लिए कहा गया है। सुंदर चौकी में बैठी हुई रानियों की गोद में बैठे आनंदमूर्ति बालकों को देखकर सबका मन प्रसन्न हो रहा है। रानियों और राजा दशरथ के सुख से संपूर्ण स्वर्गलोक आनंदित है। आकाश से जय-जयकार के साथ पुष्प वर्षा हो रही है। लेकिन लंका में अमंगल होने लगे। तरह-तरह की शंकाएं और विपत्तियां उमड़ने लगी। लेकिन 14 भुवनों के बड़े-बड़े दुःख नाश होने लगे। वशिष्ठ ने शंकर को सूचना दी कि ये ही आपके इष्टदेव हैं। शिव जी ने भी उनको पहचानकर उनको प्रणाम करते हुए अपने सर पर हाथ रखा। इस अलौकिक दृश्य को देखकर देवतागण भी उत्साहित होकर आदरपूर्वक “जय जय जय करूणानिधे!” का सस्वर प्रार्थना करने लगे। ऋषि वशिष्ठ ने बहुत मननपूर्वक चारों राजकुमारों का नाम राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न रखा। तुलसीदास का कहना है कि विधाता ने सबके मनोरथ को पूर्ण कर दिया है।

बोध प्रश्न

- राजा दशरथ के बालकों का नामकरण किस ऋषि ने किया?

13.3.3 दुलार-

राग केदारा, राग बिलावल, राग सोरठ, राग आसावरी, राग धनाश्री, राग कान्हरा, राग कल्याण, राग ललित, राग विभास, राग नट, राग टोड़ी पर आधारित तीसरा खण्ड दुलार है। दुलार खण्ड पद संख्या 7 से लेकर 46 तक विस्तारित है। वात्सल्य रस की अद्‌भुत छटा प्रस्तुत खण्ड में देखने को मिला है। कवि तुलसी लिखते हैं महारानी कौशल्या सुंदर बालक राम को गोद में लिए मनोहर शैय्या पर बैठकर अपने नेत्रों को सुंदर चकोर बनाकर बार-बार भगवान का मुख चंद्र निहार रही है। कभी शैय्या पर लेटकर दुग्ध पान कराती हैं तो कभी उन्हें हृदय से लगा लेती हैं। ब्रम्हा, विष्णु, सप्तऋषि और दूसरे देवतागण भी बादलों से छिप-छिप कर इस दृश्य का आनंद उठा रहें हैं। माताएँ बच्चों से पूछ रही है कि तुम लोग कब बड़े हो जाओगे? कब वह दिन आएगा जब तुमलोगों के लिए आभूषण और वस्त्र बनाकर हम तुमको पहनाएंगे। तुम सब बालक ठुमक- ठुमक आंगन में खेलोगे और हमें मां कहकर पुकारोगे। तुलसीदास जी कहते हैं कि जिस सुख की लालसा शिव, सुकदेव और सनकादि विरक्त जन पागल होकर घूमते रहते हैं। उसी सुख समुद्र में कौशल्या और दूसरी माताएं डूबी हुई हैं। तुलसीदास जी का कहना है कि राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न रूपी नदियां के पवित्र प्रेम जल से संपूर्ण अवधवासी स्नान कर रहे हैं। लेकिन माताएं तो अपनी ही प्रेम भरी संसार में मग्न है। बालकों को तेल, उबटन लगाकर स्नान कराने के बाद नेत्रों में काजल लगाकर प्रेमपूर्वक गोरोचन का तिलक लगाती हैं। धीरे धीरे बालक राम और उनके भाई बड़े हो रहे हैं। बालचापल्ययुक्त भगवान राम को देखकर ऐसा लग रहा है कि जैसे सौंदर्य को सुशोभित करने के लिए रूपमय दीपक बालक का रूप धारण करके हवा के

झकोरों से झिलमिला रहे हैं। सत्पुरुषों ने आदरपूर्वक अनुज सहित बालक राम का चरित्र गा सुनकर अपने जन्म का लाभ प्राप्त किया है। तुलसीदास जी कहते हैं कि ब्रम्हा ने राजा दशरथ को छोड़कर और किसी को यह सौभाग्य 14 भुवनों में प्रदान नहीं किया है। बालक राम को गोद में उठाकर राजा दशरथ आनंद विभोर है। महारानी कौशल्या ने लक्ष्मण को, सुमित्रा ने भरत को और कैकेई ने शत्रुघ्न को गोद में बिठा लिया है। चारों बालकों के बालकों के बालों को कंघी करके मोटी लंबी चोटी गूंथी गई है। चोटी में मणि और सुवर्ण के लटकन लटक रहे हैं। बालकों के शरीर को आभूषणों से सजाया गया है। ये तो रानियों और महाराज के पुण्य कार्य ही हैं। उन्होंने अच्छे कर्म रूपी बीज बोए थे। आज उनमें से अच्छे कर्म रूपी फल की उत्पत्ति हो रही है। माताओं के मन की चिंता को भी तुलसीदास ने उद्धृत किया है। जैसे- कई बार राम अनमने से दूध नहीं पीते, पालने में भी नहीं झूलते, हमेशा रोते रहते हैं तो मां को भी चिंता होने लगती है। देव, पितर और ग्रहों की भी पूजा की जाती है। घी का तुलादान किया जाता है। सखियां आपस में बात करती हैं कि कभी कभी जब किसी की कुदृष्टि पड़ती है तो नज़र लगने के कारण से बच्चे यूं ही रोने लगते हैं। ऋषियों ने जब यह सुना तो वे स्वयं पधारे और कुश से नृसिंह मंत्र पढ़कर झाड़-फूंक की। तुलसीदास लिखते हैं कि इसे ही कहते हैं माँ का दुलार। जिनका नाम मात्र सुनते ही शिव-पार्वती, ब्रम्हा, विष्णु, महेश और संपूर्ण भूमंडल का मन शांत हो जाता है ऐसे राम की झाड़-फूंक की जा रही है। सही बात है कि वात्सल्य के सामने देवता भी नतमस्तक हो जाते हैं। जैसे ही झाड़ फूंक के बाद मुनिवर ने राम के मस्तक पर हाथ रखा वे प्रसन्न होकर किलकने लगे। ईश्वर की इस महिमा को देखकर गुरू वशिष्ठ की आँखों में जल भर आया और शरीर पुलकित हो गया, रोमावली खड़ी हो गई। उन्होंने राम को गोद में उठाकर प्रेम करने का प्रयास किया तो नटखट राम तो अब गोद से उतरकर भागने लगे। लेकिन माताएं तो अभी भी चिंतामुक्त नहीं हो पाई हैं। इसी कारण से जैसे सर्प अपनी मणि को छिपा लेता है, उसी प्रकार से सुमित्रा ने बालकों को हृदय से लगा लिया है। माताओं को चिंतामुक्त करने के लिए ही शायद भगवान शिव ज्योतिष का रूप धारण करके आए हैं। माताओं को शिव लीला के बारे में कुछ नहीं पता है वे तो यही सोचकर प्रसन्न हो रही हैं कि अब उन्हें उनके पुत्रों के भविष्य को जानने वाला सुअवसर मिलेगा। ज्योतिष रूपी शंकर ने माताओं को बताया कि भविष्य में उनके बालक संसार को असुरों से मुक्त करेंगे और सीता के साथ राम का विवाह होगा एवं संयोग ऐसा होगा कि सीता की बहनों के साथ राम के भाईयों का विवाह होगा। तुलसीदास जी कहते हैं कि यह सुनकर तो पूरा रनिवास आनंदमग्न हो गया। रानियों ने बूढ़े ब्राम्हण ज्योतिष का खूब सम्मान किया वे भी रानियों और राजकुमारों को आशीर्वाद देते हुए अपने घर चले गए। तुलसीदास कहते हैं राम जगतकल्याणकारी होने के साथ साथ मेरे जीवन धन भी हैं। जैसे सीप से मोती प्रकट होता है, अदिति से सूर्य का जन्म हुआ है, उसी प्रकार से कौशल्या ने गुण, मंगल और रूप के निधान रघुनंदन को जन्म दिया है। चारों राजकुमार अब चलना सीख चूके हैं। अब वे बगीचे में जाकर

खेलना सीख गए हैं। नवल नील मेघ के समान श्याम शरीर वाले भगवान राम अयोध्या की गलियों में विचरण कर रहे हैं। उनकी छवि निहार कर नगर के नर नारी अपने नेत्रों को पवित्र कर रहे हैं। प्रभु अपने भाईयों और सखाओं के साथ नित्य नवीन खेल, खेलते हैं। कभी खेल में हार जाते हैं। भरत की तो बात ही क्या कहना। जब वे खेल में हार जाते हैं तो संकोचवश सर झुकाकर खड़े हो जाते हैं और जब राम जीतते है तो राम से भी अधिक प्रसन्न हो जाते हैं। तुलसीदास कहते हैं कि राम के इन नित्य नवीन रूपों को देखने, उन्हें गीतबद्ध करने का अवसर जिन भक्तों को मिल रहा है वे वास्तव में बहुत भाग्यशाली है।

बोध प्रश्न

- दुलार खण्ड कितने पदों में विभाजित है?

13.3.4 विश्वामित्र का आगमन-

दुलार खण्ड के वात्सल्य से भले ही हमारा मन न निकलना चाहते हो लेकिन राम और उनके परिवार को इस वात्सल्य से बाहर आना ही पड़ा क्योंकि राम का काम तो जगत कल्याण करना है। तभी तो तुलसी ने बालकाण्ड के चौथे अध्याय में तुलसी ने विश्वामित्र जी के आगमन की वर्णना की है। पद संख्या 47 से लेकर 56 तक तक को कवि तुलसी ने राग सारंग, राग नट, राग कल्याण, राग कान्हरा के द्वारा तुलसी ने संगीतमय बनाया है और दर्शाया है कि कैसे राम, माता पिता के आंखों के तारे राम लोकरक्षक हेतु, धर्म रक्षा हेतु बाण चढ़ाए खड़े हैं। महामुनि विश्वामित्र यज्ञ पूर्ण करना चाहते हैं परंतु नीच राक्षस गण किसी भी प्रकार से यज्ञ पूरा नहीं होने देते हैं। यदि वे उन्हें श्राप दे तो फिर उन्हें भी पाप का भागी बनना पड़ेगा और अगर वे चुप रह जाते हैं तो राक्षस उन्हें मार ही डालेंगे। उसी चिंतन के क्षण में उन्होंने सोचा कि श्री हरि ने जगत कल्याण के लिए स्वयं ही तो अवतार लिया है क्यों न उन्हीं के पास जाकर प्रार्थना की जाए। यह सोचते ही वे अयोध्यापुरी के किए निकल पड़े। वे पूरे रास्ते सोचते हुए चलने लगे कि राम के दर्शण होंगे तो वे अपनी बात को कैसे रखेंगे? उनके चेहरे पर रोमांच की भावना साफ देखा जा सकता था। महाराज दशरथ ने जब विश्वामित्र को देखा तो उनका हृदय श्रद्धा भाव से पुलकित हो उठा। चरण वंदना करने के पश्चात् दशरथ ने हाथ जोड़कर ऋषि विश्वामित्र से कहने लगे कि एक राम को छोड़कर इस घर में, इस राज्य में ऐसी कोई वस्तु नहीं जो मैं आपको न दे सकूं। कृपया बताएं आपको क्या। चाहिए? विश्वामित्र ने भी सहर्ष कहा राजा आप तो स्वयं सौभाग्य के मूर्ति हैं क्योंकि आपके पास राम हैं। लेकिन मुझे भी आपके पास से संसार के कल्याण के लिए राम और लक्ष्मण ही चाहिए। विश्वामित्र की इस बात को सुनकर तो जैसे राजा दशरथ ठगे से रह गए। उनके आंखों में आँसू आ गए। धर्मार्थ हेतु राजा दशरथ ने भी अपने प्राण प्रिय पुत्र राम और लक्ष्मण को ऋषि विश्वामित्र जी को सौंप दिया। पिता की आज्ञा लेकर दोनों राजकुमार कर्त्तव्य मार्ग पर चल पड़े। उनके मस्तक पर चोटी, गले में यज्ञोपवीत, शरीर में पीला वस्त्र, हाथ में धनुष बाण सुशोभित है और कमर में तरकस बंधा हुआ है। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा है कि जैसे सूर्यदेव ने अपने दोनों पुत्रों को भेज दिया है। तुलसीदास कहते हैं प्रभू को देखकर मार्ग के

मनुष्य, पक्षी और जानवर भी प्रेम मग्न हो जा रहे हैं। राम लक्ष्मण की सुंदरता के सामने 14 भुवनों की सुंदरता भी तुच्छ जान पड़ रही है। पृथ्वी सुकोमल मार्ग दे रही है, बादल छाया प्रदान कर रहे हैं, देवतागण फूलों की वर्षा कर रहे हैं, फूल सुगंध बिखेर रहे हैं तो वायु शीतलता प्रदान कर रही है। परंतु प्रभु, तो अभी प्रभु नहीं है वे तो शिष्य धर्म निभा रहे हैं इसलिए उनका आचरण संकोच, भय, विनय मिश्रित है। गुरूओं से विद्याधर ने नतमस्तक होकर धनुर्विद्या की महत्वपूर्ण बातों को सीखा और खेल- खेल में ही ताड़का को मार डाला। ईश्वर ने शिष्य बनकर गुरू से आशीर्वाद प्राप्त किया और यह भी सिद्ध कर दिया है गुरू का स्थान ईश्वर से भी ऊंचा होता है।

बोध प्रश्न

- राम और लक्ष्मण को लेने कौन आए ?
- राम और लक्ष्मण को किस काम के लिए ऋषि विश्वामित्र लेने आए?

13.3.5 अहिल्योद्धार-

अहिल्योद्धार रामचरितमानस का महत्वपूर्ण अंग है ही साथ ही बालकाण्ड में भी तुलसी ने 5 वें अध्याय में इस घटना का विश्लेषण प्रारंभ किया है और लगातार पद संख्या 60 तक वर्णना देखने को मिलता है। तुलसी ने इस घटना का विश्लेषण करते हुए लिखा है ऋषि पत्नी अहिल्या के सिर पर जैसे ही भगवान राम के चरण कमलों का पराग पड़ा वैसे ही उनका पत्थर का शरीर मानव रूप धारण कर लिया। पति के श्राप के कठोर अग्नि में जलती हुई निरंतर जिसकी प्रतीक्षा वह कर रही थी। आज उसे अपने आँखों के सामने देखकर अहिल्या तो आज स्वयं को सौभाग्यशालिनी समझ रही है। यह परम आश्चर्य देखकर मुनि पत्नियां प्रसन्न होकर कहने लगी कि यदि रघुनाथ जी पैदल चलेंगे तो पृथ्वीतल पर एक भी शीला नहीं रह सकेंगी। जिन चरणों को स्पर्श करके गंगा जी पवित्र होकर त्रिपथगामिनी होकर सुशोभित हो रही हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि ऐसी क्षमता किसके पास है जो उनकी चरण रज की महिमा का वर्णन कर सके। मार्ग में जाते समय पथिक जन कहते हैं। ये दोनों विश्वामित्र जी के यज्ञ की रक्षा करनेवाले राजकुमार हैं। इन्होंने ही सुबाहु का भी वध किया है। अब ये दोनों ऋषि के साथ जनकपुरी जा रहे हैं स्वयंवर दिखने के लिए। राम-लक्ष्मण ऋषि विश्वामित्र के साथ जनकपुरी जा रहें हैं। यह समाचार पाकर ही उनके साथ दर्शन के लिए लोग आगे बढ़ने लगते हैं ऐसा लग रहा है कि जैसे मूक व्यक्तियों को वाणी और अंधे व्यक्ति को नेत्र ज्योति मिल गई है।

बोध प्रश्न

- राम ने किसका उद्धार किया?
- अहिल्या किस रूप में राम की प्रतीक्षा कर रही थी?

13.3.6 जनकपुर प्रवेश-

आखिर वह दिव्य क्षण आ ही गया राम और लक्ष्मण मुनिवर विश्वामित्र के साथ जनकपुर प्रवेश कर ही गए। तुलसी ने पद संख्या 69 से लेकर 79 तक राम के जनकपुर प्रवेश से संबंधित घटनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यह बालकांड का 6 ठवां खण्ड है। ऋषि विश्वामित्र आएं हैं सुनकर महाराज जनक स्वयं उनके स्वागत हेतु उनके सम्मुख प्रस्तुत हो गए। महाराज जनक ने अपना सिर झुकाकर महाराज जनक से आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने ऋषिवर के पैर पखाड़े, अर्घ्यदान किया तथा उनके भोजन, वस्त्रादि की व्यवस्था करने के साथ-साथ उन्हें उनके विश्राम कक्ष भी लेकर गए। उनके साथ दो सुकुमार बालकों को देखकर जनक महाराज तो उनकी सुंदरता को देखकर आश्चर्य में ही पड़ गए। भले ही दोनों राजकुमार उनके लिए अपरिचित थे तथापि उन्हें वे दोनों प्राणों से भी अधिक प्रिय जान पड़े। तुलसीदास जी कहते हैं कि विदेह राज स्वयं पण्डित हैं उन्हें भी अवश्य ही समझ आ रहा है कि भविष्य में क्या होनेवाला है। दोनों राजकुमारों के माथे पर। चौतनी टोपी, कानों में सुवर्ण कली, कमर में पीतांबर और हृदय पर मणियों की माला शोभायमान है। उनके नेत्र बड़े विशाल हैं। इस प्रकार से वे सीता जी के स्वयंवर में पधारे हैं। यौवन के द्वार पर खड़े भगवान की लीला तो देखिए, सर्वज्ञाता ईश्वर तिरछी निगाह से गली के लड़कों से पूछ रहे हैं कि शिव जी का धनुष कहां हैं? मिथिला की प्रजा भावविभोर होकर राजकुमारों को दिख रही है। जनक को विदेह नाम से भी जाना जाता है क्योंकि वे परमार्थपरायण तथा स्वार्थहीन थे। किंतु, राम लक्ष्मण को देखने के बाद वे अपनी विदेहता भूल गए। प्रभु के शील रूप के सागर में वे डूब-डूब कर थक गए फिर भी उनको किनारा नहीं मिला। महाराज जनक विश्वामित्र से दोनों बालकों का परिचय पूछ ही लेते हैं। विश्वामित्र जी ने आनंद के साथ राम और लक्ष्मण का गुणगान करना प्रारंभ किया। उन्होंने गर्व के साथ बालकों का कुल परिचय देते हुए महाराज जनक को कहा कि ये दोनों महाराज दशरथ के पुत्र है। इनमें से जो श्याम वर्ण हैं उनका नाम राम है और जिनका रंग उज्ज्वल है वे छोटे भाई लक्ष्मण हैं। इनको मैं राक्षसों के विनाश के लिए उनके पिता राजा दशरथ से माँगकर लाया हूँ। ये दोनों ही अपने चरित्र से धीर, वीर, यशस्वी, रणबांकुरे, महाबाहु और बलशाली हैं। ऋषि ने यह भी कहा कि ये दोनों बालक आपके उस धनुष को एक बार अवश्य देखना चाहते हैं जिस धनुष ने सभी राजाओं के गर्व को चकनाचूर कर दिया है। राजा जनक तो यह सुनकर ही आनंदित हो गए। लेकिन प्रजा के मन में चिंता होने लगी कि कैसे ये दोनों बालक धनुष को तोड़ेंगे? इनकी तो आयु भी कम है। प्रातःकाल होते ही राम, लक्ष्मण गुरू के साथ रंगभूमि में पहुँच। गए। विधाता ने स्वयं राम और सीता के मिलन के बारे में सोचा है। तुलसीदास जी कहते हैं अब अन्य राजा गण धनुष के ऊपर अपना गर्व तथा अपने बल को लज्जित कर घर लौट जायेंगे और तुलसी के प्रभु गाजे बाजे के साथ अपना विवाह संपन्न कर मां सीता के साथ प्रस्थान करेंगे।

बोध प्रश्न

- राजा जनक का दूसरा नाम क्या है?

13.3.7 पुष्प वाटिका में-

सप्तम खण्ड के अंतर्गत पद संख्या 70-72 को राग टोड़ी के द्वारा संगीतमय बनाकर तुलसीदास ने पुष्पवाटिका की अद्‌भुत राम सीता के प्रथम दर्शन के मनोहारी दृश्य को भक्तों तक पहुंचाया है। सबेरा होते ही राम और लक्ष्मण फूल तोड़ने के लिए फुलवाड़ी पधारे हैं। उनके सर पर चौतनी टोपी, गले में यज्ञोपवीत और कमर में पीतांबर तथा बाएं हाथ में फूलों के दोने शोभायमान हैं, जिस कारण से उनकी सुंदरता और बढ़ गई है। दोनों भाई रूप और गुण दोनों ही दृष्टि में सौन्दर्यवान हैं। उन्होंने प्रेम और भक्ति भाव से ऋषि विश्वामित्र के हृदय को भी जीत लिया है। ईश्वर की लीला भी अपरम्पार इसी समय पार्वती जी की पूजा करने के लिए सखियों के साथ सीता जी भी आ गई हैं। वहां उन्होंने राम और लक्ष्मण को देखकर उन्हें साक्षात् ऋतुराज वसंत और कामदेव ही समझ लिया। उन्हें देखकर सीता ऐसी मोहित हो गई मानों कामदेव ने उनके मस्तक पर मोहिनी डाल दी हो। सीता ने बड़े जतन से पार्वती जी का पूजन किया। उनके नेत्र सजल हो गए, शरीर शिथिल और पुलकित हो गया। मुख से वचन नहीं निकला, मन प्रेम से भर गया। सीता के मन में राम रूप बस चुका था। माता पार्वती ने सीता के हृदय की आशंका को समझ लिया ओर पार्वती ने अपनी मनोहर माला देकर कहा सीते अपना मनचाहा वर वरण करके अपनी सब कामनाओं को पूर्ण करो। तुम रामरूप कल्प वृक्ष को पाकर, उसे बेल के समान अपना आश्रय बना सुहाग और कोख से संतुष्ट हो, फैल फूलकर फलोगी। देवी का आशीर्वाद सुन सीता जी परम आनंदित हो उन्हें पुनः पुनः प्रणाम किया। देर हो जाएगी यह सोचकर सीता वहां से विदा हुई और साथ ही सहेलियाँ गीत गाते हुए चलने लगी तुलसीदास जी कहते हैं कि सीता तुलसी के प्रभु का चित्त चुराकर राजभवन चली गई।

बोध प्रश्न

- सीता किसकी पूजा करने आई थी?
- माता पार्वती ने सीता को क्या आशीर्वाद दिया था?

13.3.8 रंगभूमि में –

अष्टम खण्ड में रंगभूमि में दशरथ पुत्र पहुँच गए हैं। जनक की स्वयंवर सभा श्रेष्ठ सरोवर के समान है। राम के नयन कमल के समान तथा मुख चंद्रमा के समान है। प्रजा जन चकवा-चकवी के समान राम और लक्ष्मण को देखने आए हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि सीता जी के माता पिता का बहुत बड़ा भाग्य है, भगवान निश्चय ही धनुष को तोड़ेंगे। महादेव का धनुष तो राम के हाथ ही टूटेगा। सखियाँ एक दूसरे से बात करती हुई राम और सीता के रूप और गुण की प्रशंसा कर रहे हैं। शिव जी का धनुष जो कि 'पिनाक' नाम से प्रसिद्ध बड़ा ही कठोर है। इस

धनुष ने शिव भक्त रावण के सिर को भी नीचा कर दिया है। राजा जनक के दरबार में तो सात द्वीपों और नौ खण्डों के राजा लोग एकत्र हुए हैं लेकिन कोई उस धनुष को हिला नहीं सका। विश्वामित्र ने राम को आदेश दिया कि हे जगद्वंद्य बलधाम रघुनाथ जी! तुलसीदास जी कहते हैं कि गुरू का आदेश पाकर प्रभु अपने भक्तों को सुख देने के लिए मृगराज के समान चलते हुए धनुष की तरफ बढ़ने लगे। लक्ष्मण प्रार्थना करने लगे कि हे शेष, पृथ्वी एवं पर्वतगण! आज तुम निश्चल हो जाओ। हे कूर्म! हे वराह! हे दिग्गज जन! तुम सब अंगों से सावधान होकर प्रभु का कार्य संपन्न करो। इसी समय महाराज दशरथ के पुत्र राम ने शिव के धनुष को चढ़ा दिया। प्रलयकाल में जैसे बादल गरजते हैं वैसे ही गर्जना धनुष के टूटने पर हुई। अचानक ऐसा लगा कि जैसे खेल-खेल में राम ने धनुष को उठाकर उसे तोड़ दिया है। संपूर्ण नगर में आनंद की लहर फैल गई। ब्राम्हणों की आज्ञा पाकर सखियाँ सीता को अपने साथ स्वयंवर सभा में लाकर आई। जानकी ने दशरथ पुत्र राम के गले में जयमाला डाल दिया। सीता लज्जावश संकोच के साथ राम के पास खड़ी हो गई। श्री राम और सीता की उस सुंदर जोड़ी को देखकर तुलसीदास कहते हैं कि मेरा तो जीवन धन्य हो गया।

बोध प्रश्न

- शिव के धनुष का नाम क्या था?

13.3.9 विवाह की तैयारी-

9 वें अध्याय में पद संख्या 99 से लेकर 108 तक के पदों को तुलसी ने राग सोरठ, राग केदारा, राग बिलावल के द्वारा न केवल संगीतबद्ध किया है अपितु जनकपुरी में विवाह की तैयारी कैसे चल रही है और अवध में माताएं कैसे चिंतित हैं इनकी भी वर्णना रोचकता के साथ की है। माताओं की चिंता की वर्णना करते हुए तुलसीदास जी लिखते हैं – माता कौशल्या चिंता से आतुर दुखी होकर सखी से कह रही है कि अरि सखी! सुन संसार में वीर पुरूषों की माता का जीवन तो व्यर्थ में ही चला जाता है। राजा दशरथ ने राज धर्म निभाते हुए बालकों को ऋषि के साथ भेज दिया राक्षसों का वध करने के लिए। क्या उन्होंने यह सोचा कि प्रातः होते ही बालकों को उबटन लगाकर कौन स्नान कराएगा? कौन उनको कलेवा देगा? कौन आभूषण पहनाकर उनको सजाएगा? जब से वे दोनों ऋषि के संग गए हैं तब से उनका कोई समाचार नहीं है। सुमित्रा कहती है कि विश्वामित्र तो बड़े ही कृपालु, परम हितकारी, सामर्थ्यवान, सुखदायक और सदाचारी हैं। वे बालकों को मातृ स्वरूप स्नेह अवश्य ही देंगे लेकिन ये बालक भी तो बड़े ही सुकुमार और संकोची है। ये बालक मुनि विश्वामित्र को अपना कष्ट नहीं बताएंगे। इन्हीं चर्चाओं के बीच में भरत भाई शत्रुघ्न के साथ मंगलमय समाचार लेकर आए। भरत के नेत्रों में आसूँ भर आए थे, शरीर रोमांचित था, होंठ फड़क रहे थे। उनकी यह दशा देखकर ही माता कौशल्या समझ गई कि वे कुछ सुखद सामाचार लेकर आएं हैं। उन्होंने भरत को गले से लगा लिया। तब भरत ने भी समाचार सुनाया कि मिथिला नरेश ने अपने पुरोहित शतानंद जी को भेजा है। वे

राम और लक्ष्मण के कुशल क्षेम की पत्रिका लेकर आए हैं। ताड़का वध, अहिल्या उद्धार जैसे अद्‌भुत कार्य करने के बाद रघुनाथ जी ने शिव की धनुष 'पिनाक' को तोड़कर सीता के जयमाला को अपने गले में सुशोभित कर लिया है। तुलसीदास कहते हैं कि चिंता के बादल छत गए और अयोध्या के घर-घर में बधाई के गीत गूंजने लगे। गुरू की आज्ञा पाकर राजा दशरथ गणेश की पूजा के बाद बरात लेकर मिथिला की ओर रवाना हुए। राम की बारात को देखकर सारा मिथिला आनंद विभोर हो उठा। देखने से ही लग रहा है कि राम और सीता के विवाह उत्सव को विधाता ने सारे सुकृत्यों को एकत्र करके ही रचा है। विवाह मंडप के नीचे राम सीता विराजमान हैं अवध की तरफ से गुरु वशिष्ठ और मिथिला की ओर से गुरू शतानंद शंखोच्चार कर रहे हैं। दूल्हा वेष में राम और सीता दूल्हन वेष में विराजमान हैं। दोनों का वर्ण क्रमशः मेघ और बिजली के समान सुंदर दिखाई पड़ रहा है। राम के रूप की वर्णना करते हुए सखियाँ कह रही है कि अरी माई! जानकी जी के पति तो बड़े ही सुंदर हैं। इनका सुंदर शरीर इंद्र नील मणि के समान श्याम वर्ण है तथा अंग-अंग में अनेकों छवि छाई हुई है। इनके चरण अरूण वर्ण, अंगुलियां मनोहर तथा नख कांतिमय और कुछ-कुछ लालिमा लिए हुए है। मानों कमल की पंखुड़ियों पर दस मंगल ग्रह बैठे हुए हैं। इनके घुटने स्थूल वक्ष स्थल सुंदर तथा चरणों में सुंदर ध्वनि करनेवाले मनिमय नूपुर हैं, जो ऐसे जान पड़ते हैं मानो भ्रमर दो पीत पराग भरे हुए कमलों को देखकर उन्हीं में लुभाकर रह गए हैं। भगवान की नाभि गंभीर है, उदर देश में सुंदर रेखाएं हैं, हृदय पर परम सुखदायक भृगु जी का चरण चिन्ह है, अनेकों आभूषणों से युक्त लंबी लंबी भुजाएं तथा पीतांबर की अतिशय शोभा निखार रही है। जिस प्रभु की कल्पना शारदा, शेष और महादेव रात दिन करते हैं फिर भी उनके स्वरुप को अपने हृदय में नहीं बसा पाते हैं। उस प्रभु की छवि की वर्णना मूर्ख तुलसीदास ने जिस प्रकार से की है वह अद्‌भुत है।

बोध प्रश्न

- मिथिला के राजपुरोहित का नाम क्या था?

13.3.10 अयोध्या आगमन-

राग कान्हरा और पद संख्या 109 से लेकर 110 के साथ दशम खण्ड में वह सुखमय क्षण आ ही गया जब राम अयोध्या पहुँच चुके हैं। माता कौशल्या राम की भुजाओं पर बार बार हाथ फेर रही है और कहती है कि इन कोमल हाथों से कैसे तुमने महादेव की भारी धनुष को तुमने तोड़ा। मैं तो आश्चर्य में हूं कि मारीच, सुबाहु और ताड़का को भी तुमने कैसे वध किया? ऋषि विश्वामित्र की बड़ी कृपा रही कि मेरे दोनों पुत्रों राम और लक्ष्मण के ऊपर किसी प्रकार का कोई विपत्ति नहीं आई। परशुराम जैसे क्रोधी मुनि को भी तुमने अपने विनय के द्वारा जीत लिया और उन्होंने अपना धनुष तुमको सौंप दिया यह सब कुछ तुम्हारे गुरूओं का ही आशीर्वाद है। तुलसीदास कहते हैं प्रेम मग्न होकर माता कौशल्या आरती उतारती है और आनंद से उमंग-उमंग कर बधुओं के सहित चार पुत्रों को देखती है। कौशल्या दुल्हनों को अन्य सासों को भी सगी माता

के समान सम्मान और प्रेम देने की बात सिखाती है। सभी माताएं दुल्हनों को आशीर्वाद देती हैं। कि उनका सुहाग करोड़ों वर्ष तक अचल रहे। राम और सीता के सुंदर जोड़ी को देखकर सखियाँ कहती हैं कि विधाता भी बहुत चतुर है सोच समझकर ही जोड़ी बनाते हैं। नगर और आकाश में मंगलगान हो रहा है। सब लोग यही आशीर्वाद दे रहे हैं कि तुलसीदास को सुख देनेवाले अवधेश पुत्र चिरंजीवी हो।

बोध प्रश्न

- परशुराम का स्वभाव कैसा था?
- माता कौशल्या दुल्हनों को क्या सिखा रही थी?

13.4 : पाठ सार

गीतावली तुलसीदास द्वारा रचित प्रामाणिक रचनाओं में से एक है। इसमें गीतों के द्वारा भगवान श्री राम की कहानी को कही गई है। संपूर्ण रचना को तुलसीदास जी ने 7 खंडों में बाँटा है। 7 खण्डों में राम कथा का विभाजन प्रायः उसी प्रकार से हुआ है जिस प्रकार से "रामचरितमानस" में हुआ है। लेकिन गीतावली और रामचरितमानस में फिर भी बहुत बड़ा अंतर है और वह अंतर यह है कि गीतावली में किसी कथा के लिए कोई प्रस्तावना या भूमिका नहीं है और न ही मानस की तरह उत्तरकांड में अध्यात्मविवेचन किया गया है। प्रस्तुत खण्ड में 328 पद है।

गीतावली का पहला खण्ड है- बालकाण्ड। प्रस्तुत खण्ड को तुलसीदास ने 10 भागों में बांटा है। बधाई खण्ड में राम जन्म कथा का वर्णन मिलता है। बधाई खण्ड को तुलसीदास ने 5 पदों में बांटा है। हरेक पद को अलग-अलग रागों से सजाया भी है जैसे कि प्रथम पद का संबंध राग आसावरी के साथ है तो दूसरे और चौथे पद पद का संबंध राग जैतश्री के साथ है। तीसरे पद का संबंध राग बिलावल के साथ है। पांचवे पद का संबंध राग केदारा के साथ है। नामकरण बालकाण्ड का दूसरा खण्ड है। पद संख्या 6 जो कि राग जैतश्री पर आधारित है। कवि तुलसी ने राम और उनके भाईयों के नामकरण से संबंधित नियमों का तो वर्णन किया है साथ ही साथ अयोध्या के नर-नारियों की प्रसन्नता का सूक्ष्म से सूक्ष्मतर वर्णना किया है। राग केदारा, राग बिलावल, राग सोरठ, राग आसावरी, राग धनाश्री, राग कान्हरा, राग कल्याण, राग ललित, राग विभास, राग नट, राग टोड़ी पर आधारित तीसरा खण्ड दुलार है। दुलार खण्ड पद संख्या 7 से लेकर 46 तक विस्तारित है। वात्सल्य रस की अद्‌भुत छटा प्रस्तुत अध्याय में देखने को मिला है। तुलसी ने बालकाण्ड के चौथे खण्ड में तुलसी ने विश्वामित्र जी के आगमन की वर्णना की है। पद संख्या 47 से लेकर 56 तक तक को कवि तुलसी ने राग सारंग, राग नट, राग कल्याण, राग कान्हरा के द्वारा तुलसी ने संगीतमय बनाया है और दर्शाया है कि कैसे राम, माता पिता के आंखों के तारे राम लोकरक्षक हेतु, धर्म रक्षा हेतु बाण चढ़ाए खड़े हैं।

अहल्योद्धार रामचरितमानस का महत्वपूर्ण अंग है ही साथ ही बालकाण्ड में भी तुलसी ने 5 वें खण्ड में इस घटना का विश्लेषण प्रारंभ किया है और लगातार पद संख्या 60 तक वर्णना देखने को मिलता है। तुलसी ने इस घटना का विश्लेषण करते हुए लिखा है ऋषि पत्नी अहिल्या के सिर पर जैसे ही भगवान राम के चरण कमलों का पराग पड़ा वैसे ही उनका पत्थर का शरीर

मानव रूप धारण कर लिया। पति के श्राप के कठोर अग्नि में जलती हुई निरंतर जिसकी प्रतीक्षा वह कर रही थी। आज उसे अपने आंखों के सामने देखकर अहिल्या तो आज स्वयं को सौभाग्यशालिनी समझ रही है। यह परम आश्चर्य देखकर मुनि पत्नियां प्रसन्न होकर कहने लगी कि यदि रघुनाथ जी पैदल चलेंगे तो पृथ्वीतल पर एक भी शीला नहीं रह सकेंगी।

तुलसी ने पद संख्या 69 से लेकर 79 तक राम के जनकपुर प्रवेश से संबंधित घटनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यह बालकांड का 6 ठवां खण्ड है। ऋषि विश्वामित्र आएं हैं सुनकर महाराज जनक स्वयं उनके स्वागत हेतु उनके सम्मुख प्रस्तुत हो गए। महाराज जनक ने अपना सिर झुकाकर महाराज जनक से आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने ऋषिवर के पैर पखाड़े, अर्घ्यदान किया तथा उनके भोजन, वस्त्रादि की व्यवस्था करने के साथ-साथ उन्हें उनके विश्राम कक्ष भी लेकर गए। उनके साथ दो सुकुमार बालकों को देखकर जनक महाराज तो उनकी सुंदरता को देखकर आश्चर्य में ही पड़ गए। भले ही दोनों राजकुमार उनके लिए अपरिचित थे तथापि उन्हें वे दोनों प्राणों से भी अधिक प्रिय जान पड़े। तुलसीदास जी कहते हैं कि विदेह राज स्वयं पण्डित हैं उन्हें भी अवश्य ही समझ आ रहा है कि भविष्य में क्या होनेवाला है। सप्तम खण्ड के अंतर्गत पद संख्या 70-72 को राग टोड़ी के द्वारा संगीतमय बनाकर तुलसीदास ने पुष्पवाटिका की अद्भुत राम सीता के प्रथम दर्शन के मनोहारी दृश्य को भक्तों तक पहुंचाया है। अष्टम खंड में रंगभूमि में दशरथ पुत्र पहुँच गए हैं। जनक की स्वयंवर सभा श्रेष्ठ सरोवर के समान है। राम के नयन कमल के समान तथा मुख चंद्रमा के समान है। प्रजा जन चकवा चकवी के समान राम और लक्ष्मण को देखने आए हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि सीता जी के माता पिता का बहुत बड़ा भाग्य है, भगवान निश्चय ही धनुष को तोड़ेंगे।

9 वें खण्ड में पद संख्या 99 से लेकर 108 तक के पदों को तुलसी ने राग सोरठ, राग केदारा, राग बिलावल के द्वारा न केवल संगीतबद्ध किया है अपितु जनकपुरी में विवाह की तैयारी कैसे चल रही है और अवध में माताएं कैसे चिंतित हैं इनकी भी वर्णना रोचकता के साथ की है। राग कान्हरा और पद संख्या 109 से लेकर 110 के साथ दशम खंड में वह सुखमय क्षण आ ही गया जब राम अयोध्या पहुँच चुके हैं। माता कौशल्या राम की भुजाओं पर बार बार हाथ फेर रही है और कहती है कि इन कोमल हाथों से कैसे तुमने महादेव की भारी धनुष को तुमने तोड़ा। मैं तो आश्चर्य में हूं कि मारीच, सुबाहु और ताड़का को भी तुमने कैसे वध किया? ऋषि विश्वामित्र की बड़ी कृपा रही कि मेरे दोनों पुत्रों राम और लक्ष्मण के ऊपर किसी प्रकार का कोई विपत्ति नहीं आई। नगर और आकाश में मंगलगान हो रहा है। सब लोग यही आशीर्वाद दे रहे हैं कि तुलसीदास को सुख देनेवाले अवधेश पुत्र चिरंजीवी हो।

13.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद अब आप –

1. बालकाण्ड का संपूर्ण परिचय प्राप्त कर लिया है।

2. रामचरितमानस और बालकाण्ड के बीच के अंतर को समझ लिया है।

3. प्रत्येक काण्ड में किन रागों का प्रयोग किया गया है जान चुके हैं।

4. प्रत्येक काण्ड एक दूसरे से कैसे अलग है यह स्पष्ट हो चुका है।

13.6 : शब्द संपदा

1. भयभीत -	डरे हुए
2. द्वेष -	जलन
3. विषाद -	दुःख
4. मातृत्व -	माता बनने का सुख
5. सचिवगण -	मिनिस्टर्स
6. नामकरण -	नाम रखने की प्रथा
7. दोहन -	दूध दोहना (निकालना)
8. मननपूर्वक -	सोच विचार के बाद
9. आभूषण -	गहने
10. नतमस्तक -	सिर को झुकाकर

13.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए ।

1. बधाई खण्ड पर प्रकाश डालिए।
2. नामकरण संस्कार का आयोजन किस प्रकार से किया गया चर्चा कीजिए।
3. राम और उनके भाईयों के साथ दुलार खण्ड में राजा दशरथ और माताओं का दिन कैसे बीत रहा है? विश्लेषण कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए ।

4. सीता ने माता पार्वती से क्या आशीर्वाद प्राप्त किया।
5. रंगभूमि खण्ड का विश्लेषण कीजिए।
6. अहिल्या उद्धार काण्ड पर प्रकाश डालिए।
7. निम्न विषयों पर टिप्पणी लिखिए-

   1. सीता का सौन्दर्य

2. रामचरितमानस और बालकांड में अंतर

3. पिनाक धनुष

खंड (स)

1. सही विकल्प चुनिए-

1. बधाई काण्ड के पहले पद का संबंध किस राग के साथ है?

   (अ) आसावरी (ब) कान्हा (स) यमक (द) जैतश्री

2. बधाई काण्ड के दूसरे पद का संबंध किस राग के साथ है?

   (अ) यमन (ब) बिलावल (स) जैतश्री (द) आसावरी

3. राम का जन्म किस मास में हुआ?

   (अ) ग्रीष्म (ब) श्रावण (स) पंचमी (द) चैत्र

4. शिव के धनुष का नाम क्या है?

   (अ) चक्र (ब) चरक (स) गांडीव (द) पिनाक

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. बालकांड के पांचवें पद का संबंध राग-------- के साथ है।
2. मिथिला के राजपुरोहित का नाम------------- है।
3. राम और लक्ष्मण ऋषि--------------- के साथ वन में गए।
4. विदेह राज, राजा---------------- का ही दूसरा नाम है।

3. सुमेल कीजिए-

1. जनकपुर प्रवेश	(अ) दशम काण्ड
2. अयोध्या आगमन	(आ) तीसरा काण्ड
3. दुलार	(इ) षष्ठ काण्ड
4. अहिल्या	(ई) प्रथम मिलन
5. जनकवाटिका	(उ) श्राप मुक्त

13.8 : पठनीय पुस्तकें

1. गीतावली - तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश।

इकाई 14 : गीतावली : बालकाण्ड – I : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना
14.2 उद्देश्य
14.3 मूल पाठ : गीतावली : बालकाण्ड – I : व्याख्या
14.3.1 पदों की व्याख्या
14.3.2 काव्यगत विशेषताएँ
14.3.3 समीक्षात्मक अध्ययन
14.4 पाठ सार
14.5 पाठ की उपलब्धियाँ
14.6 शब्द संपदा
14.7 परीक्षार्थ प्रश्न
14.8 पठनीय पुस्तकें

14.1 : प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! प्रस्तुत इकाई 'गीतावली' के बालकाण्ड पर केंद्रित है। तुलसीदास ने अपने प्रिय चरित्र रामजी की बाल लीला का वर्णन सूरदास के वात्सल्य वर्णन के समान किया है। 'गीतावली' की भाषा ब्रज मिश्रित अवधी है।

14.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप निम्न बिन्दुओं से परिचित होंगे –

1. तुलसीदास के काव्य रूप से परिचित होंगे।
2. तुलसीदास कृत 'गीतावली' के मूल प्रतिपाद्य से अवगत होंगे।
3. 'गीतावली' के बालकाण्ड के चयनित पदों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगे।
4. 'गीतावली' के बालकाण्ड में प्रयुक्त काव्य के भाव पक्ष का आस्वादन करेंगे।
5. 'गीतावली' के बालकाण्ड के शिल्प पक्ष से अवगत कराया जाएगा।

14.3 : मूल पाठ : गीतावली : बालकाण्ड – I : व्याख्या

14.3.1 अध्येय पदों की व्याख्या

दुलार

राग बिलावल

पद-7

सुभग सेज सोभित कौसिल्या रुचिर राम-सिसु गोद लिये|
चार बार विधुबदन बिलोकति लोचन चारू चकोर किये।|1||
कबहुँ पौढ़ि पयपान करावति, कबहुँ राखति लाइ हिये।

बालकेलि गावति हलरावति, पुलकति प्रेम-पियूष पिये।|2||
बिधि-महेस, मुनि-सुर सिहात सब, देखत अंबुद ओट दिये।
तुलसिदास ऐसो सुख रघुपति पै काहू तो पायो न बिये।|3||

कठिन शब्दार्थ :

सुभग=सौभाग्य, सेज=शय्या, रुचिर=मनोहर, सिसु=शिशु, विधुबदन=चन्द्रमा के समान सुंदर मुख, बिलोकति=देखना, चारू=सुंदर, पौढ़ि=लेटकर, पयपान=दूध पिलाना, बालकेलि=बच्चों का खेल, हलरावति=हिलाना, पुलकति=अति प्रसन्न, अंबुद= बादल, ओट= छिपना।

पद- सुभग सेज.. पायो न बिये||

संदर्भ :

हिंदी साहित्य जगत में लोकनायकत्व की गरिमा से विभूषित तुलसीदास अत्यंत प्रसिद्ध हैं। इनकी रचनाओं का ही प्रताप है कि 'रामचरितमानस' मानव संस्कृति को धारण करने वाले कृति के रूप में पूरे विश्व में जाना जाता है। 'गीतावली' तुलसीदास के द्वारा रचित गीतमय काव्य रचना है। इसकी रचना पर सूरदास के बालकाव्य रचना का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। तुलसीदास द्वारा 'गीतावली' में राम के चरित्र पर मुग्ध होकर प्रकाश डाला गया है।

प्रसंग:

प्रस्तुत पद में तुलसीदास ने माता कौशल्या के भाव-भंगिमाओं द्वारा वात्सल्य रस का सुंदर चित्रण किया गया है। इस सृष्टि में विशुध्द प्रेम का दर्शन माता और उसके संतान के मध्य सहज ही देखा जा सकता है। माता कौशल्या का यही सात्विक प्रेम इस पद में चित्रित हुआ है। बालक राम के शिशु रूप का चित्रण करते हुए तुलसीदास ने वात्सल्य की अजस्र धारा बहा दी है। प्रस्तुत पद में माता कौशल्या के इसी रूप का मनोहारी चित्रण हुआ है।

विस्तृत व्याख्या :

तुलसीदास जी माता कौशल्या के भावविभोर मातृत्व का चित्रण करते हुए कहते हैं कि माता कौशल्या अपने प्राणों से भी प्रिय सुंदर छबि वाले बालक राम को गोद में लिए कोमल शय्या पर सुशोभित हैं। माता कौशल्या अपनी आँखों को सुंदर चकोर बनाकर बार-बार भगवान का मुखचन्द्र देख रही हैं। यहाँ पर तुलसीदास जी कहना चाहते हैं कि चाँद को जिस प्रेम भरी अतृप्त दृष्टि से चकोर पक्षी देखता है, वैसे ही माँ अपने प्रिय पुत्र बालक राम की छबि को बार-बार देख रही हैं। वे कभी शय्या पर लेट कर बालक राम को दूध पिला रही हैं, तो कभी मधुर गीत गुनगुनाती हुई बालक राम को हिलाने-डुलाने लगती हैं। माता कौशल्या तीनों लोकों के स्वामी विष्णु के अवतार राम के दर्शन और सान्निध्य का प्रेमामृत पान कर अति प्रसन्न होती हैं। कवि कहते हैं कि जो सुख माता कौशल्या को सहज ही प्राप्त हो रहा है, वह सुख तो ब्रह्मा,

महादेव, ऋषि और सम्पूर्ण देवगणों को भी नहीं प्राप्त हो पाता है। वे सभी देवगण, बादलों की ओट में छिपे-छिपे प्रसन्न होकर राम की बाल लीला देख रहे हैं। किन्तु तुलसीदास कहते हैं कि रघुनाथ जी का ऐसा सुख तो कौशल्या को छोड़कर और किसी को नहीं प्राप्त हो पाता है।

विशेष :

प्रस्तुत पद में तुलसीदासजी ने मातृत्व की मधुर अनुभूति की सुंदर प्रस्तुति की है। उन्होंने ब्रज एवं अवधी भाषा का मणिकांचन प्रयोग किया है। आँखों को चकोर रूप में चित्रित करते हुए कवि के द्वारा रूपक अलंकार की आयोजना की गयी है। माता कौशल्या के वात्सल्य में अतृप्ति को बताते हुए कवि ने माँ के हृदय में अपने शिशु के प्रति अथाह प्रेम का निरूपण किया है। कवि ने माता कौशल्या को समस्त ब्रह्माण्ड में भाग्यशाली बताया है। कौशल्या को राम का सान्निध्य इतने सहज में प्राप्त हो पाता है, जबकि सुर,नर मुनि के लिए यह सान्निध्य दुर्लभ है। यहाँ तक कि ब्रह्मा, शिव एवं देवगणों को बादलों में छिप कर रामजी की बाललीला का आनंद प्राप्त हो पाता है। इस प्रकार उक्त पद में माता के विशुध्द प्रेम की निर्मल प्रस्तुति कवि के द्वारा की गयी है।

बोध- प्रश्न:

- प्रस्तुत पद में माता कौशल्या के मनोभाव का चित्रण कीजिए।

राग सोरठ

पद-8

ह्वै हौ लाल कबहिं बड़े बलि भैया।
राम-लषन भावते भरत- रिपुदवन चारू चार्यो भैया।।1।।
बाल –विभूषन वसन मनोहर अंगनि विरचि वनैहों।
सोभा निरखि, निछावरि करि, उर लाइ बारने जैहों।।2।।
छगन-मगन अँगना खेलिहौ मिलि, ठुमुकु ठुमुकु कब धैहौ।
कलबल वचन तोतरे मंजुल कहि 'माँ' मोहिं बुलैहो।।3।।
पुरजन-सचिव, राउ-रानी सब, सेवक-सखा-सहेली।
लैहें लोचन-लाहु सुफल लखि ललित मनोरथ-बेली।।4।।
जा सुख की लालसा लटू सिव, सुक-सनकादि उदासी।
तुलसी तेहि सुखसिंधु कौसिला मगन, पै प्रेम-पियासी।।5।।

कठिन शब्दार्थ :

ह्वै हौ= होंगे, चार्यो= चारों, बाल –विभूषन= बालकों के आभूषण, वसन= वस्त्र, निरखि= देखना, निछावरि करि= नजर उतरना, बारने जैहों= न्योछावर होना, धैहौ= दौड़ना, कलबल वचन = अनगढ़े बोल, तोतरे= तुतलाना, मंजुल= मोहक, पुरजन= नगरवासी, तेहि= वही, सुखसिंधु= सुख का सागर, पै= उस पर भी।

पद- ह्वै हौ लाल.. पै प्रेम-पियासी।।

संदर्भ :

हिंदी साहित्य के इतिहास में रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि तुलसीदास की काव्य कला पाठक को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती है। 'रामचरितमानस' को तुलसीदास का अमरकाव्य माना जाता है। तुलसीदास के द्वारा रचित 'गीतावली' उनकी मधुरतम रचनाओं में से एक है। तुलसीदास द्वारा 'गीतावली' के बाललीला कांड में माता के मन में शिशु के प्रति प्रेम की असीमता को चित्रित किया गया है। कवि ने माताओं के मन में बालक राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न आदि के द्वारा बालक्रीड़ा को देखने की अधीरता की बड़ी सुंदर प्रस्तुति की है।

प्रसंग:

प्रस्तुत पद में तुलसीदास ने माता के मन में अपने शिशु की बालक्रीड़ा देखने की आकुलता को प्रकट किया है। एक ओर माँ अपनी संतान के सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए सुंदर वस्त्राभूषण का प्रयोग करने हेतु उत्सुक हैं, तो दूसरी ओर अपनी संतान को सबकी दृष्टि से बचाने का उपाय भी करती रहती हैं। माता कौशल्या के ऐसे ही निर्मल प्रेम निर्झरिणी को इस पद में चित्रित किया गया है। प्रस्तुत पद में तुलसीदास ने मातृ हृदय की ऐसी ही मनःस्थिति को निरुपित किया है।

विस्तृत व्याख्या :

तुलसीदासजी कहते हैं कि माता कौशल्या शिशु राम की बालक्रीड़ा देखने के लिए अति उत्सुक हैं। वे अपने अबोध बालक से कहती हैं कि 'हे लाल! तुम्हारी ये मैया तुम पर बलिहारी जाती है, तुम कब बड़े होगे? प्रिय राम,लक्ष्मण और भरत-शत्रुघ्न ! तुम चारों ही सुंदर भाई कब बड़े होगे ? वह दिन कब आएगा कि मैं तुम्हारे मनोहर अंगों को छोटे-छोटे आभूषण और वस्त्र से सजाऊँगी। वे कहती हैं कि तुम्हें सजाकर जब सबके सामने ले आऊँगी, तो उस सुंदरता पर मैं स्वयं को निछावर कर तुम्हें हृदय से लगाकर अपने जीवन की सार्थकता का अनुभव करुँगी| माता कौशल्या कहती हैं कि तुम सब बालक प्रसन्न होकर, आपस में मिल-जुलकर कब आँगन में खेलोगे, कब ठुमुक-ठुमककर दौड़ोगे और कब अपनी मीठी और मनोहर तोतली वाणी से हमें 'माँ' कहकर बुलाओगे। जिस प्रकार माली को अपने प्रिय लता-पुष्प को हरा-भरा और फलता-फूलता देखकर संतोषजनक प्रसन्नता का अनुभव होता है, वैसे ही अपने मनोरथ रूपी सुंदर बेल को सफल हुआ जान कर नगरवासी, मंत्री-मंडल, राजा, रानी, सेवक, सखा और सहेलियां कब अपने नेत्रों की सार्थकता का अनुभव करेंगी ? तुलसीदास जी कहते हैं कि जिस सुख की लालसा में शिव, शुकदेव और सनकादि विरक्त जन भी मुग्ध हुए रहते हैं, उसी सुख समुद्र में कौशल्या भी मग्न हैं। माता कौशल्या नित दिन राम की बालक्रीड़ा का आनंद ले रही हैं, तो भी उन्हें प्रेम की प्यास लगी हुई है।

विशेष :

प्रस्तुत पद में तुलसीदासजी ने अपने आराध्य राम के बाल लीला को चित्रित किया है। माता कौशल्या के माध्यम से उन्होंने माता का अपने पुत्र के प्रति अथाह प्रेम निरुपित किया है। उन्होंने सुंदर बालक को अधिक सुंदर बनाने की माँ की अधीरता को निर्मल प्रस्तुति दी है। माँ के मन की द्विविधा को व्यक्त करते हुए कवि ने एक ओर उन्हें सजाने-सँवारने की उत्कंठा का चित्रण किया है, तो दूसरी ओर उन्हें नजर से बचाने की अकुलाहट को एक साथ ही व्यक्त किया है।

माता का मन अपनी संतान की बालक्रीड़ा से कभी नहीं भरता है। यही कारण है कि नित राम की बालक्रीड़ा का आनंद प्राप्त करते हुए भी माता कौशल्या अतृप्त रहती हैं।

बोध- प्रश्न:

- प्रस्तुत पद में तुलसीदास ने वात्सल्य के किस पक्ष को चित्रित किया है ?

पद -9

पगनि कब चलिहौ चारौ भैया?
परम-पुलकि, उर लाइ सुवन सब, कहति सुमित्रा मैया।|1||
सुंदर तनु सिसु-वसन-विभूषन नखसिख निरखि निकैया।
दलि तृन, प्रान निछावरि करि करि लैहैं मातु वलैया।|2||
किलकनि, नटनि, चलनि, चितवनि, भजि मिलनि मनोहरतैया।
मनि-खंभनि प्रतिबिंब-झलक, छबि छलकिहै भरि अँगनैया।|3||
बालबिनोद, मोद मंजुल बिधु, लीला ललित जुन्हैया।
भूपति पुन्य-पयोधि उमँग, घर घर आनंद-बधैया।|4||
ह्वैहैं सकल सुकृत-सुख-भाजन, लोचन-लाहु लुटैया।
अनायास पाइहैं जनमफल तोतरे बचन सुनैया।|5||
भरत, राम, रिपुदवन, लषन के चरित सरित-अन्हवैया।
तुलसी तबके-से अजहुँ जानिबे रघुबर-नगर-बसैया।|6||

कठिन शब्दार्थ :

पगनि= पैरों, चलिहौ= चलोगे, सुवन= सुंदर, दलि= तोड़ना, लैहैं= लेंगी, नटनि= नाचना, भजि=भागकर, मनोहरतैया= मनोहारी, मनि= मणि, मोद= आनंद, मंजुल= सुंदर, बिधु= चन्द्रमा, ललित= कोमल, जुन्हैया= चाँदनी, पुन्य-पयोधि= पुण्य सागर, ह्वैहैं= होंगे, लोचन-लाहु= नेत्रों का आनंद, तोतरे= तोतली बोली, सरित= नदी, अन्हवैया= स्नान कराना, जानिबे= जानना।

पद- ह्वै पगनि कब चलिहौ.. रघुबर-नगर-बसैया।|

संदर्भ :

हिंदी साहित्य के इतिहास में रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि तुलसीदासजी अति प्रसिध्द हैं| तुलसीदासजी की 'गीतावली' को कृष्णकाव्य शैली का रामायण माना जाता है। यह उनकी मधुरतम रचनाओं में से एक है। तुलसीदास द्वारा 'गीतावली' में माता के मन में शिशु के प्रति प्रेम की असीमता को चित्रित किया गया है। माताओं के मन में बालक राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न आदि के अति शीघ्र बड़े होने की लालसा है। माताएँ इसी उत्कंठा में मग्न रहा करती हैं कि कब ये शिशु चलना, बोलना आरंभ करेंगे ? वे उन्हें तरह-तरह से सजाना-सँवारना चाहती हैं। प्रस्तुत पद में कवि ने मातृ हृदय की सुंदरतम अभिव्यंजना की है।

प्रसंग:

प्रस्तुत पद में तुलसीदास के द्वारा माता सुमित्रा का अपने शिशुओं के प्रति अविरल प्रेम को व्यक्त किया गया है। माता सुमित्रा राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के शीघ्र बड़े होते देखने के लिए व्यग्र हैं। वे शिशुओं के शीघ्र बड़े होने और उनके मुख से 'माँ' शब्द को सुनने के लिए व्याकुल हैं। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न राजमहल के मणियों से सुसज्जित खंभे के आगे-पीछे स्वयं की परछाई पकड़ने का खेल खेलेंगे, इसी सुखद कल्पना में वे डूबी हुई हैं।

विस्तृत व्याख्या :

कवि कहते हैं कि माता सुमित्रा सभी बालकों को पुलकित होकर तथा अपने हृदय से लगाकर कहती हैं-'तुम चारों भैया कब चलना शुरू करोगे? हम तीनों माताएँ तुम्हारे सुंदर शरीर को छोटे-छोटे सुंदर वस्त्र और आभूषण से सजाएँगी। कवि कहते हैं जब बालकों को खूब सजा-सँवार कर माताएँ उनके नख-शिख की सुंदरता देखती हैं, तो भयभीत हो उठती हैं। उन्हें भय होता है कि कहीं बालकों को अपनी ही माताओं की नजर न लग जाय, इसलिए तिनका तोड़ते हुए नजर उतारती है। वे बालकों पर अपने प्राण निछावर करने की अभिलाषा में उन्हें हर तरह के अनिष्ट से बचाने के लिए उनकी बलैया लेने की लगती हैं। माता सुमित्रा अपनी कल्पनाओं को पर लगाते हुए मन ही मन कहती हैं, हे सुत! तुम्हारे किलकारी मारने, नाचने, चलने, देखने और दौड़कर मिलने की मनोहर छबि को देख कर हम सभी उस सुख के आनंदरस में डूबी रहेंगी। वे आगे कहती हैं मणिमय खम्भों में तुम्हारा प्रतिबिम्ब पड़ने से आँगन में वही प्रतिछबि छलकने लगेगी। तुम्हारे बालविनोद के आनंदरूप मनोहर चन्द्र की सुंदर लीलारूपी चन्द्रिका से महाराज दशरथ का पुण्यरूपी समुद्र उमड़ पड़ेगा और घर-घर में आनंद बधाई बजने लगेगी। नगरवासी अपने नेत्रों से तुम्हारी इन लीलाओं का आनंद लूटकर पुण्य और सुख का अनुभव करेंगे। जो भी नगरवासी तुम्हारी तोतली बोली सुन लेंगे, उन्हें अपने आप ही अपने जन्म के सफल होने की अनुभूति होने लगेगी। तुलसीदास जी कहते हैं कि राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के मनोहारी बाललीलारुपी सरिता में स्नान करने वाले जैसे उनके काल के अवधवासी थे, वैसे ही उनके मंजुल चरित्र को पढ़ने-सुनने वाले आज भी अपने जीवन को धन्य मानेंगे।

विशेष :

प्रस्तुत पद में माता सुमित्रा के मन की कल्पनाओं को कवि ने बड़ी सुंदरता के साथ चित्रित किया है। माता सुमित्रा के माध्यम से उन्होंने माता का अपने पुत्र के प्रति अथाह प्रेम निरुपित किया है। उन्होंने सुंदर बालक को अधिक सुंदर बनाने की माँ की अधीरता को निर्मल प्रस्तुति दी है। माँ के मन की द्विविधा को व्यक्त करते हुए कवि ने एक ओर उसे सजाने-सँवारने की उत्कंठा, तो दूसरी ओर उसे नजर से बचाने की व्याकुलता को प्रकट किया है। माता का मन अपनी संतान की बालक्रीड़ा से कभी नहीं तृप्त होता है। यही कारण है कि नित बालकों की बालक्रीड़ा का आनंद प्राप्त करते हुए भी माता सुमित्रा अतृप्त रहती हैं। कवि के द्वारा रूपक अलंकर की छटा का प्रयोग पद लालित्य के सौंदर्य को और अधिक बढ़ा देता है।

बोध- प्रश्न:

- इस पद में कवि ने माँ की कल्पनाओं का किस प्रकार चित्रण किया है ?

राग केदारा

पद-10

चुपरि उबटि अन्हवाइकै नयन आँजे,
चिर रूचि तिलक गोरोचन को कियो है।
भ्रूपर अनूप मसिबिंदु, बारे बारे बार
विलसत सीस पर, हेरि हरै हियो है।|1||
मोदभरी गोद लिये लालति सुमित्रा देखि
देव कहैं, सबको सुकृत उपवियो है।
मातु, पितु, प्रिय, परिजन, पुरजन धन्य,
पुन्यपुंज पेखि पेखि प्रेमरस पियो है।|2||
लोहित ललित लघु चरन-कमल चारू,
चाल चाहि सो छबि सुकवि जिय जियो है
बालकेलि बाताबस झलकि झलमलत
सोभा की दीयटि मानो रूप-दीप दियो है।|3||
राम-सिसु सानुज चरित चारू गाइ-सुनि
सुजनन सादर जन्म-लाहु लियो है।
तुलसी विहाई दसरथ दसचारिपुर
ऐसे सुखजोग बिधि बिरच्यो न बियो है।|4||

कठिन शब्दार्थ :

चुपरि= लगाना, उबटि= उबटन, अन्हवाइकै= स्नान कराकर, आँजे= काजल लगाना, गोरोचन = एक प्रकार का सुगन्धित तिलक लगाने का पदार्थ, भ्रूपर= भौहों पर, अनूप= अति सुंदर, मसिबिंदु= काली बिंदी, बारे बारे= छोटे-छोटे, विलसत= शोभित, हेरि= पुकारना, लालति= मनोहर, सुकृत= अच्छे कर्म, उपवियो= उपजना, पेखि पेखि=, लोहित=, बाताबस=, दीयटि= मिट्टी का दीया, रूप-दीप= रूप का दीया, सानुज= छोटे भाइयों के साथ, सुजनन= अच्छे लोग, जन्म-लाहु= जन्म सफल होना, विहाई= धारण करना, दसचारिपुर=चौदह भुवन में, बिरच्यो=ब्रह्मा, बियो= रचना।

पद- चुपरि उबटि... बिधि बिरच्यो न बियो है।|

संदर्भ :

लोकनायक तुलसीदास के द्वारा रचित 'गीतावली' के इस पद में राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के अति मनभावन बाललीलारूप का चित्रण किया गया है। कवि ने माताओं के द्वारा अपने प्राणों से भी प्रिय संतान को सजाने-सँवारने के बाद उनकी सुंदर क्रीड़ा को पुलकित होकर देखने का दृश्य प्रस्तुत किया गया है। तुलसीदास ने अपने इष्ट राम जी के बालरूप की अति मोहक छबि को चित्रित किया है।

प्रसंग:

प्रस्तुत पद में तुलसीदास के द्वारा माताओं का अपने शिशुओं के प्रति अथाह प्रेम व्यक्त किया गया है। माताएँ शिशुओं को उबटन लगाकर, स्नानादि कराकर, उनको तरह–तरह से सँवार कर तथा उनकी मनोहर क्रीड़ा से प्रसन्न होकर उन्हें बार-बार गोद में उठाकर उन पर स्नेह वर्षा करती हैं। देवगण चारों भाइयों के बाल रूप के प्रकाश से दीप्त अयोध्यावासियों के भाग्य की सराहना कर रहे हैं।

विस्तृत व्याख्या :

कवि कहते हैं कि माताओं ने बालकों को तेल और उबटन लगाकर स्नान करा दिया है। उन्होंने बालकों के नेत्रों को काजल से आँजकर अति स्नेहपूर्वक गोरोचन का तिलक बालकों के कपोलो पर लगाया है। इसके पश्चात् भृकुटि पर अर्थात उनके भौंहों के बीच अति अनुपम काजल की बिंदी लगायी है। बालकों के शीश पर छोटे-छोटे बाल बड़े ही सुशोभित हो रहे हैं, जो देखने वाले के चित्त को अपने आप ही हर लेते हैं। सुमित्रा को अति आनंदपूर्वक बालकों को गोद में लेकर दुलार करते देख देवगण कहते हैं, 'इस समय सभी का पुण्य प्रकट हुआ है। ये माता, पिता, प्रिय, परिजन और पुरवासी लोग धन्य हैं। ये नगरवासी अपने पुण्यपुंज भगवान राम को देखकर प्रेमरस का आकंठ आनंद प्राप्त कर रहे हैं। बालकों के अति सुंदर और लाल-लाल कोमल नन्हें-नन्हें चरण-कमल तथा मनभावनी चाल की छबि को देखकर ही सुकविजनों का हृदय तृप्त और सजीव बना रहता है। बालकों की चपलता से भरे भगवान राम ऐसे जान पड़ते हैं, मानो शोभारूपी दीपक पर बालकों की रूपमय बाती प्रज्वलित हो, जो सबके मन के अँधेरे को दूर कर रहा है। कवि कहते हैं कि वह बाती रूपी मुख बालक्रीड़ारूपी वायु के झकोरों से झिलमिला रहा है। राम के बाल रूप को देख कर सत्पुरुषों द्वारा आदरपूर्वक अनुज-सहित बालक राम का चरित्र गा-सुनकर अपने जन्म को सार्थक बनाया जाता रहा है। तुलसीदासजी कहते हैं कि ब्रह्मा ने महाराज दशरथ को छोड़कर ऐसे सुख का योग चौदहों भुवन में और कहीं नहीं रचा है। कवि राम जी की अनुज सहित बाललीला का वर्णन करते हुए अति आह्लादित होते हैं। वे अपने आह्लाद को प्रकट करते हुए सभी को इस आनंद दृश्य का लाभ प्रदान करना चाहते हैं।

विशेष :

उक्त पद में कवि ने ब्रज भाषा की मिठास को अपने सुंदर शिल्प-कला के साथ प्रस्तुत किया है। कवि ने अपनी सर्जनात्मक दृष्टि के द्वारा विविध सुंदर बिंबों एवं प्रतीकों का प्रयोग किया है। 'शोभा' को 'दीपक', बालक के मुख को 'बाती' तथा उनकी बालक्रीड़ा को 'वायु के झोंकों' के रूप में कवि की पद प्रस्तुति अत्यंत आकर्षक एवं मृदुल प्रतीत होती है।

बोध- प्रश्न:

- विवेच्य पद में कवि ने बालक्रीड़ा की छबि का किस प्रकार वर्णन किया है?

राग केदारा

पद- 18

पौढ़िये लालन, पालने हौं झुलावौं।

कर पद मुख चख कमल लसत लखि लोचन-भँवर भुलावौं।|1||
बाल-बिनोद-मोद-मंजुलमनि किलकनि-खानि खुलावौं।
तेइ अनुराग ताग गुहिबेकहँ मति-मृगनयनि बुलावौं।|2||
तुलसी भनित भली भामिनि उर सो पहिराइ फुलावौं।
चारू चरित रघुबर तेरे तेहि मिलि गाइ चरन चितु लावौं।|3||

कठिन शब्दार्थ :

पौढ़िये= लेटिये, हौं= मैं, कर=हाथ, लोचन-भँवर=नयनरूपी भौरा, किलकनि-खानि=खुशियों का भंडार, खुलावौं= खुलवाना, तेइ=उसे, अनुराग=स्नेह, तागा=धागा, गुहिबेकहँ=पिरोने के लिए, मति-मृगनयनि= बुध्दिरुपी मृगनयनी, भनित=कविता, भामिनि=स्त्री, पहिराइ=पहनाना, फुलावौं=प्रफुल्लित अथवा खुश होना, चारू=सुंदर, चरित= चरित्र, चितु= मन, लावौं= लगाना।

पद- पौढ़िये लालन.. चरन चितु लावौं।|

संदर्भ :

तुलसीदास की काव्यकला के अनेक पक्ष पाठकों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। आदर्श की उच्चतम भावधारा के साथ तुलसीदास ने 'गीतावली' में अपने आराध्य रामजी के बाललीला के कई अलग-अलग पद प्रस्तुत किए हैं। 'बाललीला' के प्रत्येक पद में भाव-सौंदर्य की अनुपम छटा को अनुभूत किया जा सकता है। शिशु राम के प्रत्येक बालक्रीड़ा पर कवि ने माताओं के वात्सल्य की अजस्र धारा बहा दी है।

प्रसंग:

प्रस्तुत पद में कवि ने माँ के मन की निर्मल झाँकी प्रस्तुत की है। कवि के अनुसार माता के लिए शिशु की प्रत्येक बालक्रीड़ा अमर मणि के समान होती है। माता अपने शिशुओं की उन क्रीडाओं को संजोकर स्मृतियों के भंडारे में सदा के लिए सुरक्षित रखकर आनंदित होते रहना चाहती हैं।

विस्तृत व्याख्या :

कवि के अनुसार इस पद में माता अपने शिशु से कहती हैं – मेरे लाल ! तुम पालने में सो जाओ, तो मैं तुम्हें झुलाऊँगी। वे कहती हैं, मेरे प्रिय पुत्र! तुम्हारे हाथ, पैर, मुख और आँखरूपी सुंदर कमलों को निहार कर मैं अपने आँखरूपी भ्रमरों को तुम्हारे अनुपम रूप सौन्दर्य में स्वयं को भूला देना चाहती हूँ। हे शिशु! तुम्हारे बालक्रीड़ा के आनंदरूपी मंजुल मणि के लिए तथा तुम्हारी किलकती हँसीरूपी रत्न का भंडार बनना चाहती हूँ और उन रत्नों को अनुरागरूपी धागे में पिरोने के लिए बुध्दिरूपी मृगनयनी को बुलाना चाहती हूँ। तुलसीदास जी कहते हैं कि माताओं के द्वारा राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के बालक्रीड़ा रूपी मनोहर माला को मैं अपने कवितारूपी कमनीय कामिनी के कंठ में पहनाकर आनंदित होना चाहता हूँ। कवि कहते हैं, हे रघुश्रेष्ठ ! मैं उस कविता-कामिनी के साथ मिलकर तुम्हारे ही पवित्र चरित्र गाकर, सदा तुम्हारे ही चरणों में चित्त लगाए रखने की अभिलाषा करता हूँ।

विशेष:

प्रस्तुत पद में वात्सल्य रस का निर्मलतम प्रयोग हुआ है। कवि ने उपमा, रूपक जैसे अलंकारों के नवीन प्रयोग किए हैं। उन्होंने बालक्रीड़ा को मंजुल मणि मान कर उसे संचित करने की कामना की है। इस पद में कविता उस समय एक सुंदर स्त्री के रूप में शोभा पाने लगती है, जब कविता के द्वारा रामजी का चरित्र गान किया जाता है। तुलसीदास ने कवियों के काव्य धर्म की सार्थकता को राम चरित के गायन में माना है। उक्त पद में बुध्दिरुपी मृगनयनी का उदाहरण अति सुंदर अर्थ को ध्वनित करता है।

बोध- प्रश्न:

- :उक्त पद में बालक्रीड़ा को किस रूप में कल्पित किया गया है ?

14.3.2. काव्यगत विशेषताएँ:

भारतीय संस्कृति में साहित्य की अविरल धारा सदियों से बहती रही है। तुलसीदास जैसे कवि सहित्याकाश के निर्मल तथा निष्कलुष शशि हैं। तुलसीदास रचित साहित्य की निर्मल चाँदनी में मानवता मुस्काने लगाती है। तुलसीदास के साहित्य का मुख्य केंद्र भक्ति एवं आध्यात्म होते हुए भी उनकी रचनाओं में जीवन के समस्त रंग समाहित हैं। तुलसीदास का साहित्य, जीवन को संतुलन के साथ कैसे जिए? इस ओर भी प्रेरणा देने का कार्य करती है। मानव जीवन की गूढ़ समस्याओं का समाधान तुलसीदास की अनेक रचनाओं में पाया जा सकता है। तुलसीदास की कविताओं में कवि का भाव पक्ष अत्यंत सशक्त रूप में प्रस्तुत हुआ है। भाव के साथ-साथ कला पक्ष के क्षेत्र में भी कवि उत्कृष्ट हैं। भाव पक्ष की प्रस्तुति में स्वयं को दीन-हीन मानते हुए, स्वयं को भगवान राम के चरणों के अर्पित कर देते हैं। जब समर्पण इस सीमा तक हो, तो ऐसे कवि से 'स्वकेंद्रित' कृति रची ही नहीं जा सकती है। यही कारण है कि वे सर्वत्र 'परपीड़ा' से द्रवित होकर अपने आराध्य से सब पर कृपादृष्टि बरसाने का विनय करते हैं। तुलसीदास ने रामजी को अनादि पुरुष तो सीताजी को प्रकृति रूप में अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। तुलसीदास का चातक प्रेम उन्हें अपने इष्ट के प्रति सदैव भरोसे की डोर से बाँधे रखता है।

जीवन में मूल्यों की महत्ता सभी देशकाल में रही है। क्योंकि मानव ने अपनी विकास यात्रा में इन्हीं मूल्यों को जीवन में उतारकर जीवन की सार्थकता सिध्द की है। तुलसीदास ने राम के परमब्रह्म रूप की स्थापना को आदर्श की स्थापना का माध्यम नहीं बनाया है। उन्होंने रामजी को पुत्र, शिष्य, मित्र,राजा, भाई, पति, पिता आदि सभी रूपों में आदर्श की स्थापना एक मानव के रूप में करते हुए चित्रित किया है। तुलसीदास ने अपनी कृतियों में जीवन को समग्रता के साथ प्रस्तुत किया है। उनकी कृतियों में किसी भी पात्र की मन:स्थितियों का समग्रता में चित्रण हुआ है। जब जीवन में ज्ञान, भक्ति और कर्म की त्रिवेणी बहती है, तो समस्याएं स्वतः ही तिरोहित हो उठती हैं। जीवन के चारों आश्रम, वर्णों तथा अनेक पंथों में समन्वय, यह मात्र तुलसीदास की ही साधना से सम्भव हो सकता है।

तुलसीदास के कला पक्ष पर दृष्टि डालते हैं, तो वहाँ भी कवि की कलम अकाट्य है। अपने काव्य में समस्त रसों का अवतरण करते हुए भी उन्होंने संतुलन का सतत ध्यान रखा है।

तुलसीदास की लेखनी से श्रृंगार का संयोग पक्ष भी कोमलता के साथ प्रकट होता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जनभाषा के रूप में प्रचलित अवधी और ब्रज को माध्यम बनाया। उन्होंने कथानक एवं पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग बड़ी सुंदरता के साथ किया है। 'रामचरितमानस' में अवधी तथा 'कवितावली', 'गीतावली' में ब्रज भाषा के परिनिष्ठित प्रयोग को देखा जा सकता है, जिससे उनकी रचनाओं के कलापक्ष में अत्यधिक निखार आ गया है। तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में संस्कृत, भोजपुरी, बुन्देलखंडी ही नहीं, अरबी और फारसी के शब्दों का भी निःसंकोच प्रयोग किया है। जब बात छंद की आती है, तो तुलसीदास ने कई छंदों को बड़ी सिध्दहस्थता के साथ प्रयोग किया है। दोहा, चौपाई, गीतिका, हरिगीतिका, कवित्त, सवैया, सोरठा आदि छंदों का प्रयोग तुलसीदास के द्वारा अपनी रचनाओं में किया गया है। उन्होंने काव्य के प्रबंध एवं मुक्तक दोनों ही शैलियों में रचनाएँ की हैं। 'गीतावली' में प्रगीतात्मक शैली की छटा अत्यंत मनमोहक रूप में प्रस्तुत हुई है। तुलसीदास ने अपनी कृतियों में उपमा,रूपक, अनुप्रास, विभावना, अतिश्योक्ति, दृष्टान्त, उत्प्रेक्षा, यमक तथा विशेषोक्ति आदि अलंकारों को अत्यंत कुशलतापूर्वक प्रयोग किया है। तुलसीदास अपनी उक्त काव्यगत विशेषताओं के कारण ही विश्व साहित्य में कालजयी कवि की गरिमा से विभूषित हैं।

14.3.3. समीक्षात्मक अध्ययन :

हिंदी साहित्य में 'लोकनायकत्व' कवि तुलसीदास के काव्यधर्म की विशेषता रही हैं। उनकी रचनाएँ 'सुरसरी सम सबका हित' साधने की औदात्य साधना के साथ प्रकट हुई हैं। हिंदी साहित्य के वात्सल्य रस के सम्राट कवि सूरदास के द्वारा कृष्ण के बाललीला वर्णन से प्रभाव ग्रहण करते हुए तुलसीदास ने राम के बाल लीला प्रसंग की सर्जना की। साहित्य में आदर्श की प्रतिष्ठापना करने में तुलसीदास का अन्यतम स्थान है। अपने आराध्य के प्रति समर्पण की भावना, उन्हें सदैव श्रध्दावनत रखती है। यही कारण हैं कि जो सखा भाव सूरदास के बाललीला में देखा जा सकता है, उस भाव की अनुभूति तुलसीदास की 'गीतावली' में नहीं प्राप्त होती है। अपने गुरु स्वामी नरहरिदास की शिक्षा से तुलसीदास हिंदी साहित्यजगत की अमूल्य मणि सिध्द होते हैं। माता के हृदय की झाँकी को इतनी सतर्कता के साथ तुलसीदास ने प्रस्तुत किया है, तब भी उन पदों के पाठक को कवि के कोमल मन का आभास हो ही जाता है। तुलसीदास ने अपने युग के समाज को 'रामचरितमानस' जैसा महाकाव्य दिया, जो भारतीय ही नहीं मानवता साहित्य की श्रेणी में रखने योग्य है। अपने समय के समाज की अव्यवस्था को दूर करने के लिए जो माध्यम भाषा कवि ने चुना, वह जनभाषा थी। तुलसीदास ने 'गीतावली' की रचना में ब्रजभाषा तथा अवधी भाषा का अत्यंत सुंदर प्रयोग किया है। 'गीतावली' में कवि ने 'रामचरितमानस' के समान सभी रसों का प्रयोग न करते हुए अपने इष्ट रामजी के माधुर्य गुण को विशेष रूप से प्रकट किया है। 'गीतावली' में कवि ने राम को वीर और रौद्र रस से सर्वथा बचाकर उनके शांत और मर्यादारूप को अधिक प्रकट किया है। कवि ने 'गीतावली' में राम के चरित्र की कुछ घटनाओं, रोचक एवं मधुर क्षणों का प्रगीतात्मक चित्रण किया है। यह रचना मार्मिकता, कारुणिकता तथा राम के जीवन के कोमल पक्षों की गहन प्रस्तुति है। तुलसीदास की भावनाएँ रामलीला-वर्णन में अति तल्लीन एवं भावुकतापूर्ण हो जाती थीं। तुलसीदास को अपने

काल का तत्वज्ञानी कवि माना जाता है। उनके काव्यों में धर्म, दर्शन, भक्ति, शिल्प तथा भारतीय संस्कृति के औदात्य का दर्शन किया जा सकता है। यही धर्म, दर्शन तथा जीवन को लेकर उनकी समन्वयात्मक दृष्टि उन्हें लोकनायकत्व की गरिमा प्रदान करती है।

14.4 : पाठ सार

अध्येय पाठ में तुलसीदास कृत 'गीतावली' के पाँच बाललीला के पदों का विवेचन किया गया है। प्रथम पद में तुलसीदास जी ने माता कौशल्या के वात्सल्य का मनोरम चित्रण किया है। माता कौशल्या बालक राम को गोद में लेकर दूध पिलाते हुए अपनी आँखों को सुंदर चकोर बनाकर पुत्र स्नेह में स्वयं को भूली हुई हैं। तुलसीदास जी कहना चाहते हैं कि चाँद को जिस प्रेम भरी अतृप्त दृष्टि से चकोर पक्षी देखता है, वैसे ही माँ अपने प्रिय पुत्र बालक राम की छबि को बार-बार देख रही हैं। कवि ने माता की मनः स्थिति का बड़ा ही मनोरम चित्रण किया है। कवि कहते हैं, जो सुख माता कौशल्या को सहज प्राप्य है, वह सुख तो ब्रह्मा, महादेव, ऋषि और सम्पूर्ण देवगणों के लिए भी दुर्लभ है। इस दृश्य को सभी देवगण, बादलों की ओट में छिपकर देख रहे थे। किन्तु तुलसीदास कहते हैं कि राम जी के बालक्रीड़ा का सुख तो कौशल्या को छोड़कर और किसी को नहीं प्राप्त हो पाता है। तुलसीदासजी कहते हैं कि माता कौशल्या शिशु राम की बालक्रीड़ा पर बलिहारी जाती है, माताएँ अपने शिशुओं को शीघ्र बड़े होते देखना चाहती हैं| माताएँ अपने अबोध शिशुओं को सुंदर आभूषण और वस्त्र से सजाने की लालसा व्यक्त करती हैं। वे उस सुंदरता पर स्वयं को निछावर कर अपने जीवन को सार्थक मानती हैं। माताएँ चारों बालकों को आपस में मिल-जुलकर खेलते, दौड़ते और तोतली आवाज़ में बतलाते हुए सुनने के लिए और स्वयं को उनके मुख से 'माँ' शब्द पुकारे जाने के लिए व्याकुल हैं। संतान को पाकर माताएँ मानों सर्वस्व प्राप्त होने के भाव से गदगद हैं। बालकों की बालक्रीड़ा से समस्त अयोध्यावासी आह्लादित हैं। उन्हें अपना जीवन की सार्थकता एवं सफलता की प्रतीति होती है। जिस सुख की आकांक्षा में समस्त देवगण, शुक-सनकादि भी मुग्ध हुए रहते हैं, वह सुख अयोध्यावासियों को सहज प्राप्य होने पर भी वे अतृप्त अनुभव कर रहे हैं।

बालक्रीड़ा के अगले प्रसंग में कवि ने तीनों माताओं के मन की कोमल स्थितियों का उल्लेख किया है। माताएँ चारों भाइयों को सुंदर वस्त्र और आभूषण से खूब सजा-सँवार कर मुग्ध भाव में डूब जाना चाहती हैं। माँ के मन की झाँकी की सुंदरता कवि प्रकट करते हुए एक ओर उन्हें अति सुंदर बनाकर उन पर स्नेह लुटाने की बात करते हैं, तो दूसरी ओर माताएँ उन्हें अपने ही नजर से बचाने के लिए तिनका तोड़कर टोटके भी करती हैं। माताएँ बालकों को हर तरह के अनिष्ट से बचाने की कामना करती हैं। कवि कालक्रीड़ा के हर रूप को व्यक्त करने की उत्कंठा में उनके आपसी खेल के चित्र मणिमय खम्भों में उनके प्रतिबिम्ब देख लेने की कल्पना भी कर लेते हैं। कवि के द्वारा बालविनोद को चंद्र तथा उनकी मनोहारी लीला को चाँदनी के सामान कहते हुए सुंदर उपमा का प्रयोग किया है। अयोध्यावासी तो बाललीला को देख स्वयं के जीवन की

सार्थकता के आनंद में आकंठ डूबे हुए हैं। तुलसीदास जी राम,लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के बाललीला को सुनने और पढ़ने वालों को भी अत्यंत भाग्यशाली मानते हैं।

बाललीला की अगली कड़ी में कवि कहते हैं कि माताएँ बालकों को तेल और उबटन लगाकर स्नान कराती हैं। वे उनके नेत्रों को काजल से आँजकर अति स्नेहपूर्वक गोरोचन का तिलक तथा उनके भौंहों के बीच अति सुंदर काजल की बिंदी लगाकर बालकों की छबि देख कर आनंदित होती हैं। बालकों के सिर के छोटे-छोटे बाल देखने वाले के चित्त को अपने वश में कर लेते हैं। सुमित्रा को अति आनंदपूर्वक बालकों को गोद में लेकर दुलार करते देख देवगण भी समस्त अयोध्यावासियों के पुण्यफल को फलित मानने लगते हैं। कवि कहते हैं कि बालकों के अति सुंदर और लाल-लाल कोमल नन्हें-नन्हें चरण-कमल तथा मनभावनी चाल की छबि को देखकर ही सुकविजनों का मन संतुष्ट रहता है। बाल-चापलता से भरे रामजी ऐसे जान पड़ते हैं कि मानो शोभारूपी दीपक पर बालकों की रूपमय बाती प्रज्ज्वलित हो, जो सबके मन के अँधेरे को क्षण भर में दूर कर देता है। तुलसीदास बालक्रीड़ारूपी वायु के झकोरों से तुलना करते हुए बालकों के रूप में बाती को झिलमिलाते हुए अनुभूत करते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि जैसे ब्रह्माजी ने चौदह भुवनों में अयोध्या का चयन किया, वैसे ही सुकविजन बाललीला को वर्णित करके अपनी कृति को अमर बनाना चाहते हैं। तुलसीदास के अनुसार 'गीतावली' के इस पद में माताएँ बालक्रीड़ा के आनंदरूपी मंजुल मणि के लिए भंडार बनाना चाहती हैं। माताएँ उन रत्नों को अपने स्नेह धागे में पिरोने के लिए बुध्दिरूपी मृगनयनी को बुलाना चाहती हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि माताओं के द्वारा राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के बालक्रीड़ा रूपी मनोहर माला से सुकविजन कविता-कामिनी के कंठ को सुशोभित करना चाहते हैं।

14.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

विवेच्य पाठ के माध्यम से निम्नलिखित उपलब्धियों की प्राप्ति हुई –

1. तुलसीदास की काव्यगत विशेषताएँ ज्ञात हुईं।
2. तुलसीदास कृत 'गीतावली' के मूल प्रतिपाद्य की जानकारी मिली।
3. 'गीतावली' के बालकाण्ड के चयनित पदों का समग्र परिचय प्राप्त हुआ।
4. 'गीतावली' के बालकाण्ड में प्रयुक्त काव्य के कोमल भाव पक्ष का आस्वादन प्राप्त हुआ।
5. 'गीतावली' के बालकाण्ड के शिल्प सौन्दर्य का सम्यक ज्ञान प्राप्त हुआ।

14.6 : शब्द संपदा

1. अविरल	=	निरंतर
2. निष्कलुष	=	पवित्र
3.गूढ़	=	कठिन
4. उत्कृष्ट	=	उत्तम

5. स्वकेंद्रित	=	स्वयं को प्रमुख मानना
6. द्रवित	=	दया से भरा हुआ
7. अनादि	=	जिसका कोई आरम्भ न हो
8. तिरोहित	=	छिपा हुआ
9. अकाट्य	=	जिसका खंडन न किया जा सके
10. निखार	=	निर्मल अथवा स्वच्छ
11. सिध्दहस्थता	=	कुशल
12. कालजयी	=	जिसका कभी अंत न हो
13. औदात्य	=	उदात्तता
14. गहन	=	गहरा
15. दुर्लभ	=	कठिनता से प्राप्त होने वाला
16. अबोध	=	अनजान
17. मुग्ध	=	मोहित होना
18. आह्लादित	=	प्रसन्न

14.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न:
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 250 शब्दों में दीजिए।

1.तुलसीदास की काव्य कला पर प्रकाश डालिए|

2.तुलसीकृत 'गीतावली' के बालकाण्ड का प्रमुख प्रतिपाद्य क्या हैं ?

3.तुलसीदास ने वात्सल्य रस को किस प्रकार निरुपित किया है?

4.तुलसीदास के भाव सौन्दर्य को चित्रित कीजिए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न :
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 100 शब्दों में दीजिए।

1.तुलसीदास ने माता कौशल्या के वात्सल्य को किस प्रकार चित्रित किया है ?

2.बालक्रीड़ा के संदर्भ में माता कौशल्या की अतृप्ति को किस प्रकार व्यक्त किया गया है ?

3.कवि के द्वारा माता सुमित्रा की कल्पनाओं को किस प्रकार वर्णित किया गया है ?

4.तुलसीदास के द्वारा काव्योपमा के सौंदर्य को बताइए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए –

1. रामजी को अपने भाइयों सहित बालक्रीड़ा करते ब्रम्हा, शिव, मुनि और देवगण कहाँ से छिप कर देख रहे थे?
   अ) स्वर्ग से आ) बादलों से इ) राजमहल से
2. माताएँ बालकों के मुख से किस शब्द को सुनने के लिए व्याकुल हैं ?
   अ) माँ आ) गीत इ) कंदुक
3. बालकों का प्रतिबिंब खेलते समय कहाँ पड़ता है ?
   अ) शीशे पर आ) पानी में इ) मणियों जड़े खंभों पर
4. माताएँ बालकों की हँसी की तुलना किससे करती हैं ?
   अ) नदियों से आ) रत्नों से इ) बादलों से

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. 'राज्याभिषेक की तैयारी' 'गीतावली' के ....कांड में चित्रित हुआ है।
2. 'शबरी' से रामजी की मुलाकात................. कांड में चित्रित किया गया है|
3. 'गीतावली' में ....भाषा का प्रमुखता से प्रयोग किया गया है।
4. 'गीतावली' के सबसे छोटे कांड का नाम ....है|
5. लव-कुश-जन्म का वर्णन 'गीतावली' के ....कांड में किया गया है।

III. सुमेल कीजिए :

1) रावण की मंत्रणा	अ) किष्किंधाकांड
2) ऋष्यमूक पर राम	आ) सुंदरकांड
3)तुलसीदास की माँ का नाम	इ) हुलसी

14.8 : पठनीय पुस्तकें

---

1. गीतावली- तुलसीदास
2. श्रीकृष्ण गीतावली - तुलसीदास
3. तुलसी : नए संदर्भ में – डॉ रामनरेश मिश्र 'हंस'
4. तुलसीदास- माताप्रसाद गुप्त,

इकाई : 15. गीतावली : बालकांड – II : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

15.1 प्रस्तावना
15.2 उद्देश्य
15.3 मूल पाठ : गीतावली : बालकांड – II : व्याख्या
15.3.1 अध्येय कविता
15.3.2 विस्तृत व्याख्या
15.3.3 समीक्षात्मक अध्ययन
15.4 पाठ सार
15.5 पाठ की उपलब्धियाँ
15.6 शब्द-संपदा
15.7 परीक्षार्थ प्रश्न
15.8 पठनीय पुस्तकें

15.1 : प्रस्तावना

तुलसीदास की प्रमुख रचनाओं में से *गीतावली* एक है। गोस्वामी तुलसीदास की गणना लोकवादी कवि के रूप में की जाती है। उन्होंने रामकथा संबंधी जो गीत समय-समय पर रचे उन्हीं गीतों का संकलन 'गीतवाली' में किया गया है। 'गीतावली' में राम के बाल-मनोहारी छवि का चित्रण उसी ढंग से किया गया है जिस ढंग से सूरदास ने 'सूरसागर' में कृष्ण का किया है। उनकी काव्य-यात्रा के अनेक पड़ाव हैं, रंग वैविध्य है और छवियों की बहुलता भी है; 'गीतावली' इसका अपवाद नहीं है। 'गीतवाली' में भी रंगों की बहुलता, रस, छंद और अलंकारों की बहुलता के साथ प्रसंगों का वैविध्य भी उपस्थित किया गया है। यह कृति अपनी संपूर्णता में बालक राम के छवि के सुंदर वर्णन के कारण अद्वितीय बन पड़ी है। प्रस्तुत इकाई में गीतावली के चुने हुए/निर्धारित पदों की व्याख्या की गई है।

15.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप :

- 'गीतावली' के निर्धारित पदों की व्याख्या कर सकेंगे।
- तुलसीदास की काव्य-कला से परिचित हो सकेंगे।
- गीतावली के महत्व से अवगत हो सकेंगे।
- तुलसीदास की रचनाओं के फलक और उसके वैविध्य से परिचित हो सकेंगे।

15.3 : मूल पाठ : गीतावली : बालकांड – II : व्याख्या

15.3.1 अध्येय कविता :

1. झूलत राम पालने सोहैं। भूरि-भाग जननीजन जोहैं॥
तन मृदु मंजुल मेचकताई। झलकति बाल बिभूषन झाँई॥
अधर-पानि-पद लोहित लोने। सर-सिंगार-भव सारस सोने॥
किलकत निरखि बिलोल खेलौना। मनहुँ बिनोद लरत छबि छौना॥
रंजित-अंजन कंज-बिलोचन। भ्राजत भाल तिलक गोरोचन॥
लस मसिबिंदु बदन-बिधु नीको। चितवत चितचकोर तुलसीको॥

2. आँगन फिरत घुटुरुवनि धाए।
नील-जलद तनु-स्याम राम-सिसु, जननि निरखि मुख निकट बोलाए॥
बन्धुक सुमन अरुन पद-पंकज, अंकुस प्रमुख चिन्ह बनि आए॥
नूपुर जनु मुनिबर-कलहंसनि, रचे नीड़ दै बाँह बसाए॥
कटिमेखल, बर हार ग्रीव-दर, रुचिर बाँह भूषन पहिराए॥
उर श्रीवत्स मनोहर हरिनख, हेम मध्य मनिगन बहु लाए॥
सुभग चिबुक, द्विज, अधर, नासिका, श्रवन, कपोल मोहि अति भाए॥
भ्रू सुन्दर करुनारस-पूरन, लोचन मनहुँ जुगल जलजाए॥
भाल बिसाल ललित लटकन बर, बालदसाके चिकुर सोहाए॥
मनु दोउ गुर सनि कुज आगे करि, ससिहि मिलन तमके गन आए॥
उपमा एक अभूत भई तब जब जननी पट पीत ओढ़ाए॥
नील जलदपर उडुगन निरखत तजि सुभाव मनो तड़ित छपाए॥
अंग-अंगपर मार-निकर मिलि छबि समूह लै-लै जनु छाए॥
तुलसिदास रघुनाथ रूप-गुन तौ कहौं जो बिधि होहिं बनाए॥

3. आँगन खेलत आनँदकन्द। रघुकुल-कुमुद-सुखद चारु चन्द॥
सानुज भरत लषन सँग सोहैं। सिसु-भूषन भूषित मन मोहैं॥
तन दुति मोरचन्द जिमि झलकैं। मनहुँ उमगि अँग-अँग छबि छलकैं॥
कटि किंकिनि पग पैजनि बाजैं। पंकज पानि पहुँचिआँ राजैं॥
कठुला कण्ठ बघनहा नीके। नयन-सरोज-मयन-सरसीके॥
लटकन लसत ललाट लटूरीं। दमकति द्वै द्वै दँतुरियाँ रुरीं॥
मुनि-मन हरत मञ्जु मसि बुन्दा। ललित बदन बलि बाल मुकुन्दा॥

कुलही चित्र बिचित्र झँगूलीं। निरखत मातु मुदित मन फूलीं॥
गहि मनिखम्भ डिम्भ डगि डोलत। कल बल बचन तोतरे बोलत॥
किलकत, झुकि झाँकत प्रतिबिम्बनि। देत परम सुख पितु अरु अंबनि॥
सुमिरत सुखमा हिय हुलसी है। गावत प्रेम पुलकि तुलसी है॥

4. छोटी छोटी गोड़ियाँ अँगुरियाँ छबीलीं छोटी, नख-जोति मोती मानो कमल-दलनिपर॥
ललित आँगन खेलैं, ठुमुकु-ठुमुकु चलैं, झुँझुनु-झुँझुनु पाँय पैजनी मृदु मुखर॥
किङ्किनी कलित कटि हाटक जटित मनि, मञ्जु कर-कञ्जनि पहुँचियाँ रुचिरतर॥
पियरी झीनी झँगुली साँवरे सरीर खुली, बालक दामिनि ओढ़ी मानो बारे बारिधर॥
उर बघनहा, कण्ठ कठुला, झँडूले केश, मेढ़ी लटकन मसिबिन्दु मुनि-मन-हर॥
अंजन-रञ्जित नैन, चित चोरै चितवनि, मुख-सोभापर वारौं अमित असमसर॥
चुटकी बजावती नचावती कौसल्या माता, बालकेलि गावती मल्हावती सुप्रेम-भर॥
किलकि-किलकि हँसैं, द्वै-द्वै दँतुरियाँ लसैं, तुलसीके मन बसैं तोतरे बचन बर॥

5. भोर भयो जागहु, रघुनन्दन। गत-व्यलीक भगतनि उर-चन्दन॥
ससि करहीन, छीन दुति तारे। तमचुर मुखर, सुनहु मेरे प्यारे॥
बिकसित कञ्ज, कुमुद बिलखाने। लै पराग रस मधुप उड़ाने॥
अनुज सखा सब बोलनि आये। बन्दिन्ह अति पुनीत गुन गाये॥
मनभावतो कलेऊ कीजै। तुलसिदास कहँ जूठनि दीजै॥

15.3.2 विस्तृत व्याख्या:

झूलत राम पालने सोहैं .... चितवत चितचकोर तुलसीको॥

शब्दार्थ : सोहैं = सुशोभित होना, भूरिभाग = सौभाग्य, जोहैं = निहारना, मृदु = मृदुल/कोमल, मंजुल = सुंदर, मेचकता = श्यामलता, झलकति = दिखाई पड़ना, बिभूषन = आभूषण, अधर = होठ, पानि = हाथ, लोहित = रक्त/लाल, किलकत = हँसना/मुदित होना, विनोद = कौतूहल/क्रीड़ा, लरत = लड़ना

संदर्भ : प्रस्तुत पद भक्तिकाल के सुविख्यात कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा विरचित है। यह पद तुलसीदास जी की महत्वपूर्ण कृति 'गीतावली' के बालकांड से उद्घृत है।

प्रसंग : विवेच्य पद में कवि गोस्वामी तुलसीदास ने राम के बालछवि का मनोहारी वर्णन किया है। बालक राम के सौंदर्य की अद्भुत छवि का जितना सुरुचिपूर्ण वर्णन यहाँ किया गया है उतना किसी और कृति में दुर्लभ है।

व्याख्या : गोस्वामी तुलसीदास जब श्रीरामचन्द्र के बालछवि का वर्णन करते हैं तब ऐसा लगता है जैसे वे बाल सौंदर्य के सारे उपमान लाकर एक ही जगह रख देना चाहते हों। श्रीरामलला पालने में झूलते हुए अत्यंत शोभनीय लग रहे हैं। उनकी सम्पूर्ण छवि मनोहारी छटा बिखेर रही है। गोस्वामी जी कहते हैं कि वे माताएँ बहुत भाग्यशाली हैं जिन्हें उनको जन्म देने का अवसर मिला है, पालने-पोसने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। ऐसी सौभाग्यशाली माताएँ उनकी ओर स्नेहपूर्ण दृष्टि से निहार रही हैं। राम के सौंदर्य का वर्णन कवि कुछ इस तरह से करता है कि भगवान राम का शरीर श्यामवर्ण का सुंदर और कोमल है। उनके शरीर पर बाल अवस्था के आभूषण झलकते हैं। होठ, हाथ और पाँव लाल रंग के हैं जो देखने में अत्यंत प्यारे लगते हैं। सब शोभा मिलने से ऐसी दिखाई पड़ता है जैसे बालक राम का श्यामवर्णी शरीर श्रृंगार रस का सागर है। उनके शरीररूपी सागर में रक्तवर्णी हाथ, पद और ओठ तो ऐसे शोभा पा रहे हैं जैसे सोने के सारस पक्षी जल में क्रीड़ा कर रहे हैं। खिलौने को हिलता हुआ देखकर वे किलकारी मारते हैं, ऐसा लग रहा है मानो उनकी ही छवि के छोटे-छोटे बालक खेल-खेल मे आपस में लड़ रहे हों। उनकी आँखें कमल के समान आकर्षक हैं जिसमें अंजन लगा हुआ है। उनके ललाट पर गोरोचन का तिलक सुशोभित है। उनका मुख चंद्रमा के समान है जिस पर अति सुन्दर काजल की बिंदी लगी हुई है। उस चंद्रमुख को तुलसी का चित्त रूपी चकोर, जिसकी आस्था केवल और केवल राम में है, निहार रहा है।

विशेष : 1. ब्रज भाषा का सुंदर और सुरुचिपूर्ण प्रयोग किया गया है।

2. सम्पूर्ण पद में मुख्य रूप से अंत्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग दिखाई पड़ता है लेकिन बीच-बीच में कहीं-कहीं उपमा अलंकार के प्रयोग से पद की शोभा बढ़ गई है।

3. चकोर एक पक्षी का नाम है जिसे तीतर या बटेर के नाम से जाना जाता है। कविता में इसका प्रयोग बहुतायत दिखाई पड़ता है। इसे चंद्रमा का प्रेमी माना गया है।

बोध प्रश्न

1. गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचंद्र के किस रूप का वर्णन किया है ?
2. श्रीरामचंद्र के अंगों की तुलना किससे की है ?
3. तुलसीदास जी अपने चित्त की तुलना चकोर से क्यों की है ?

आँगन फिरत घुटुरुवनि धाए .... कहौं जो बिधि होहिं बनाए॥

शब्दार्थ : घुटुरुवनि = घुटनों के बल चलना, नील-जलद = नीले बादल, तनु-स्याम = साँवला शरीर, जननि = माता, निरखि = देखना, सुमन = फूल, अरुन = सूर्य, कटिमेखल = कमरबंद (आभूषण), लोचन = आँखें, भाल = ललाट, रघुनाथ = राम, कहौं = कहना, बिधि = प्रकार,

चिबुक = ठुड्डी, द्विज = वह दंतपंक्ति जो एक बार टूट जाने पर दुबारा उग जाती है, अधर = होठ, नासिका = नाक, श्रवन = कान, कपोल = गाल

संदर्भ : प्रस्तुत पद रामभक्ति शाखा के सुविख्यात कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा विरचित है। यह पद तुलसीदास जी की महत्वपूर्ण कृति 'गीतावली' के बालकांड से उद्धृत है।

प्रसंग : प्रस्तुत पद में राम के बालपन और उनकी बालसुलभ शैतानियों का अद्भुत वर्णन किया गया है। श्रीरामचंद्र की बालछवि और उनका सौंदर्य सम्पूर्ण जगत को मोहित कर रहा है।

व्याख्या : बालक श्रीरामचंद्र की अनुपम छवि सबको आकर्षित कर रही है। वे आँगन में घुटनों के बल दौड़े रहे हैं। बालक रामचंद्र का शरीर नीले मेघ के समान श्यामवर्ण का है। बालक राम का मुख देखकर माता ने उन्हें अपने पास बुलाया। दोपहर में खिलने वाले रक्तवर्णी फूल के समान प्रभु के कमलरूपी लाल चरणों में अंकुश के समान चिह्न सुशोभित हो रहे हैं। उनके पैरों में जो नूपुर हैं वे ऐसे जान पड़ते हैं मानो भगवान ने घोंसले रचकर उनमें मुनिजनरूपी कलहंसों को शरण देकर बसाया है। प्रभु राम के कमर में करधनी, शंख के समान सुंदर गर्दन में बहुमूल्य हार और सुन्दर भुजाओं में आभूषण पहनाये गए हैं। उनके वक्षस्थल पर मनोहर श्रीवत्सचिह्न, बाघनख और अनेक मणियों से जड़ा हुआ सुबर्णमय पदिक (गले का एक आभूषण जिस पर किसी देवता का चरण बना रहता है) सुशोभित हो रहा है। बालक राम की सुन्दर ठोड़ी, दन्तपंक्ति, दोनों होठ, नासिका, कर्ण और उनके नर्म गाल मुझे बड़े ही प्रिय हैं। उनकी मनोहर भृकुटियाँ करुण रस से परिपूर्ण हैं तथा उनके दोनों नेत्र कमल के समान हैं। उनके लालट अत्यंत सुंदर और विशाल हैं। उनके ललाट पर ललित शोभा से युक्त श्रेष्ठ मणियों और हेमतारों से गुथी हुई लटकनी लटक रही है। बाल्यावस्था का सुन्दर केश उनकी सम्पूर्ण छवि को शोभायमान बनाता है। यह सम्पूर्ण दृश्य देखकर ऐसा जान पड़ता है मानो दोनों गुरुओं (बृहस्पति और शुक्र) तथा शनि एवं मंगल को आगेकर अन्धकार के समूह चन्द्रमा से मिलने आये हों। यहाँ लटकन में जो सुवर्ण है वह बृहस्पति, हीरा शुक्र, लाल रंग मंगल और नीलमणि शनि का बिम्ब उकेरता है। अन्धकार के समूह रूपी केश को आगे करके मुखरूपी चंद्रमा उनसे मिलने आया है। जिस समय माता ने बालक राम को पीताम्बर ओढ़ाया उस समय एक अद्‌भुत शोभा बिखर गयी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो नीले मेघ के समान श्यामवर्णी शरीर पर शोभित अनेक चमकीले आभूषण कई नक्षत्रगण को देदीप्यमान कर रहे हैं। ऐसी दीप्ति देखकर पीताम्बररूपी चञ्चला-चपला ने अपना स्वभाव छोड़कर उसे छिपा लिया। उनके प्रत्येक अंग ऐसे लग रहे हैं मानो काम के समूह ने अपनी छवि से उन्हें प्रकाशित कर दिया है। तुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीरघुनाथजी के रूप और गुण यदि विधाता के बनाये हुए हों तो कुछ कहे भी जा सकते हैं लेकिन वे तो स्वयं विधाता हैं तो फिर उनके विषय में कुछ कहना ठीक नहीं।

विशेष : 1. ब्रज भाषा का सुंदर और सुरुचिपूर्ण प्रयोग किया गया है।

2. सम्पूर्ण पद में मुख्य रूप से अंत्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग दिखाई पड़ता है। 'नील जलदपर उडुगन निरखत तजि सुभाव मनो तड़ित छपाए' पंक्ति में उपमा अलंकार के सुंदर प्रयोग से सम्पूर्ण पद की शोभा बढ़ गई है।

3. पदिक शब्द का अर्थ है - गले का एक आभूषण जिस पर किसी देवता का चरण बना रहता है।

बोध प्रश्न

- बालक श्रीरामचंद्र का शरीर कैसा है ?
- श्रीरामचंद्र ने कौन-कौन से आभूषण पहने हुए हैं ?

आँगन खेलत आनँदकन्द .... गावत प्रेम पुलकि तुलसी है॥

शब्दार्थ : खेलत = खेलते हुए, रघुकुल = राजा रघु का वंश (राम), लषन = लक्ष्मण, भूषन = आभूषण अथवा गहना, मोहैं = मोहित करना, तन = शरीर, दुति = चमक अथवा शोभा, जिमि = बिजली, पग = पैर, पंकज = कमल, कठुला = चाँदी का बेरा, बघनहा = बाघ के नाखून से बना हुआ आभूषण, निरखत = देखना, मुदित = अह्लादित होना/प्रसन्न होना, फूलीं = अत्यधिक खुश होना, बचन = वाणी, तोतरे = तोतली, किलकत = किलकारी, सुमिरत = स्मरण करना, गावत = गाना

संदर्भ : प्रस्तुत पद भक्तिकाल के सुविख्यात कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा विरचित है। यह पद तुलसीदास जी की महत्वपूर्ण कृति 'गीतावली' के बालकांड से उद्घृत है।

प्रसंग : राम के बाल रूप का वर्णन करते हुए कवि ने उनके अवर्णनीय छवि का सुंदर अंकन किया है। बालक राम कुछ – कुछ बोलने का प्रयास करते हैं लेकिन ठीक – ठीक शब्द का उच्चारण नहीं कर पाते हैं। वे शब्द का उच्चारण भले ही ठीक ढंग से न करते हों लेकिन अपना मन्तव्य स्पष्ट कर देते हैं, वह भी अपनी तोतली जुबान से। उनकी तोतली बानी सुनकर घर के सभी सदस्य आनंदित होते हैं।

व्याख्या : तुलसीदास बालक राम के मनोहारी सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि समस्त रघुकुल कुमुद के समान है और बालक श्रीराम चंद्रमा के समान। जिस प्रकार कुमुद चंद्रमा को देखकर आनंदित होता है ठीक उसी प्रकार प्रभु राम को आँगन में खेलते हुए देखकर समस्त रघुकुल आनंदित हो रहा है। उनके साथ खेलते हुए शत्रुघ्न, भरत और लक्ष्मण भी उनकी शोभा से सुशोभित हो रहे हैं। चारों भाईयों के शरीर पर बच्चों के पहनने वाले आभूषण विद्यमान हैं और उनके आभूषण वहाँ उपस्थित समस्त जनता के मन को मोहे लेते हैं। राम का शरीर श्याम वर्ण का है इसलिए उसकी कांति ऐसी चमक रही है जैसे बिजली के चमकने पर किसी मोर का शरीर चमकता है। उनका सौन्दर्य किसी भी सहृदय व्यक्ति को अपनी तरफ आकर्षित कर लेता है। उनकी आह्लादकारी मुद्रा देखकर ऐसा लग रहा है मानो उनके शरीर के सम्पूर्ण अंग से उमँग-

उमँगकर सौन्दर्य छलक पड़ता हो। उनके कमर से करधनी की और चरणों से नूपुर की ध्वनि हो रही है। उनके करकमल में पहुँचियाँ शोभा दे रही हैं। कण्ठ में कठुला तथा बाघनख उनकी शोभा को द्विगुणित करते हैं। उनके नेत्र कमाल के समान हैं। उनके नेत्रों की शोभा का वर्णन करना अत्यंत कठिन है। उन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो वे दोनों कामसरोवर से उत्पन्न हुए हों। माथे पर बालों की लटकन और उनके साथ ही उनमें मणि की लटकनी शोभित हो रही है। उनके मुख में दो-दो छोटे-छोटे सुन्दर दाँत दमक रहे हैं। माथे पर लगी हुई काजल की मनोहर बिंदी समस्त मुनिगण का मन चुरा लेती है। चंद्रमा की शोभा के समान मुख वाले इस बालक के चित्ताकर्षक छवि पर माताएँ अपना सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार हैं। रंग-बिरंगी टोपी और अनूठी झगुली (छोटे बच्चों का ढीला-ढाला कुर्ता) देखकर माता प्रसन्न मन से फूली फिर रही हैं। बालक राम रत्न जड़े हुए खंभे को पकड़कर पैरों से डगमगाते हुए चलते हैं। वे अस्पष्ट तथा मनोहर तोतले बचन बोलते हैं। बालक राम झूमते हुए चलते हैं और झुक-झुककर अपने प्रतिबिम्बों की ओर देखते हैं। अपने इस प्रकार के कार्य से वे माता-पिता को खूब आनन्द प्रदान करते हैं। उस सुन्दरता के स्मरण मात्र से हृदय में उल्लास होता है और तुलसीदास भी प्रेम से पुलकित/आनंदित हो उनका गान करने लगते हैं।

विशेष : 1. सम्पूर्ण पद ब्रज भाषा में लिखा गया है।

2. सम्पूर्ण पद में मुख्य रूप से अनुप्रास अलंकार का प्रयोग दिखाई पड़ता है। *तन दुति मोरचन्द जिमि झलकैं। मनहुँ उमगि अँग-अँग छबि छलकैं* पंक्ति में उपमा अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है।

3. झगुली शब्द का अर्थ है - छोटे बच्चों का ढीला-ढाला कुर्ता। यह शब्द ब्रज, अवधी के साथ-साथ भोजपुरी में भी प्रचलित है।

बोध प्रश्न

- प्रस्तुत पद में कवि ने रघुकुल और बालक श्रीराम की तुलना किससे की है ?
- बालक राम के कमर से और चरण से किस आभूषण की आवाज ध्वनित होती है ?

छोटी छोटी गोड़ियाँ अँगुरियाँ .... मन बसैं तोतरे बचन बर॥

शब्दार्थ : गोड़ियाँ = पैर, अँगुरियाँ = अंगुलियाँ, छबीलीं = शोभायुक्त/सुंदर, नख = नाखून, ललित = मनोहर, पैजनी = पाँव में पहनने वाला आभूषण, मृदु = कोमल, कलित = सुसज्जित, कटि = कमर, हाटक = सोना, दामिनि = बिजली, बघनहा = गर्दन में पहने जाने वाला आभूषण, कठुला = माला, अंजन = काजल, रञ्जित = रंगा हुआ, नैन = आँख, चितवनि = दृष्टि, अमित = अपरिमित।

संदर्भ : प्रस्तुत पद भक्तिकाल के सुविख्यात कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा विरचित है। यह पद तुलसीदास जी की महत्वपूर्ण कृति 'गीतावली' के बालकांड से उद्‌धृत है।

प्रसंग : बालक राम के अनिर्वचनीय सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कवि क्षणभर के लिए थकता नहीं है। आभूषण से सुसज्जित राम के रोम-रोम की छवि कवि ने जितनी रोचकता से उकेरी है

वह अकल्पनीय है। राम प्रत्येक दिवस कोई न कोई नया करतब दिखलाते हैं। उनके करतब सम्पूर्ण जनता के मन को आह्लादित करते हैं।

व्याख्या : गोस्वामी तुलसीदास राम के बालस्वरूप का मनोहारी वर्णन करते हैं। वे बालक राम के चरण की शोभा पर बलिहारी जाते हैं। बालक राम के पैर छोटे-छोटे हैं। उनके इन छोटे पैरों में नन्हीं-नन्हीं अँगुलियों अत्यंत सुशोभित होती हैं। उन पर नाखून की चमक मानो कमल दलों पर मोती के समान शोभायमान हो रही हैं। वे जब आँगन में खेलते समय ठुमुक-ठुमुककर चलते हैं उस समय उनसे उत्पन्न होने वाली कान्ति अन्य सभी तरह के सौन्दर्य पर भारी है। उनके इस तरह से चलने के कारण उनके पैरों से पैजनियों की सुमधुर ध्वनि (झुनझुन–झुनझुन) उत्पन्न होती है। उनके कमर में सोने की मणिजड़ित मनोहर किंकिन अथवा करधनी है तथा हाथों में अति सुन्दर पहुँचियाँ है। साँवले शरीर पर अत्यंत पतला पीले रंग की झँगुलिया ऐसी शोभित होती है मानो किसी छोटे बादल ने बिजली की चमक ओढ़ रखी हो। छाती पर सोने का बना हुआ बाघ नख है, कण्ठ में माला पड़ा हुआ है तथा माथे पर मुनियों के मन को चुराने वाले घुँघराले केश, चोटी, लटकन और काजल की बिंदी विराजमान है। बालक राम के नयनों में अंजन लगा हुआ है जो किसी भी सहृदय व्यक्ति के चित्त को चुरा लेती हैं। उनके मुखछवि पर कवि अनन्त कामदेवों को निछावर करना चाहता है। माता कौसल्या चुटकी बजा-बजाकर नचाती हैं और प्रेम में भरकर बाललीला के गीत गाती हुई श्रीराम को दुलारती हैं। भगवान राम किलक-किलककर हँसते हैं। उनके मुख में दो-दो दाँत शोभायमान हैं। तुलसीदास के हृदय में उनके अति मनोहर तोतले वचन बसे हुए हैं।

विशेष : 1. प्रस्तुत पद ब्रज भाषा में लिखा गया है।

2. सम्पूर्ण पद में मुख्य रूप से अनुप्रास अलंकार का प्रयोग दिखाई पड़ता है।

3. सम्पूर्ण पद ललित राग में लिखा गया है।

बोध प्रश्न

- प्रस्तुत पद में कवि ने बालक श्रीराम के पैर और नख की तुलना किससे की है ?
- बालक राम को माता कौशल्या कैसे खेला रही हैं ?

भोर भयो जागहु रघुनन्दन .... तुलसिदास कहँ जूठनि दीजै॥

शब्दार्थ : भोर = प्रभात बेला, जागहु = जगना, रघुनन्दन = रघुकुल के नन्द अर्थात् राम, ससि = चंद्रमा, सुनहु = सुनिए, बिकसित = विकास करना, कुमुद = पुष्प, मधुप = भौंरे, अनुज = छोटे, सखा = मित्र, सब = सभी, बोलनि = बुलाने पर, बन्दिन्ह = वंदन, अति = अत्यंत, पुनीत = पवित्र किया हुआ, कलेऊ = सवेरे का जलपान, गुन = गुण, गाये = गाना, मनभावतो = मनभावन, कहँ = कहाँ, जूठनि = जूठा।

संदर्भ : प्रस्तुत पद सगुण भक्तिधारा के सुविख्यात कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा विरचित है। यह पद तुलसीदास जी की महत्वपूर्ण कृति 'गीतावली' के बालकांड से उद्धृत है।

प्रसंग : कवि गोस्वामी तुलसीदास ने प्रस्तुत पद में राम के बालछवि का मनोहारी वर्णन किया है। इस पद में बालक राम के सौंदर्य की अद्भुत छवि का सुरुचिपूर्ण वर्णन किया गया है। बालक श्रीराम का इस तरह का वर्णन अन्य किसी कृति में मिल पाना संभव नहीं है।

व्याख्या : बालक राम को सुबह-सुबह उनकी माता कौशल्या उठाती हैं। वे कहती हैं - हे रघुनन्दन! सवेरा हो गया, अब उठ जाओ। तुम छल-कपट से मुक्त भक्तों के हृदय के चन्दन (शीतलता प्रदान करने वाले) हो। चन्द्रमा की किरणें फीकी पड़ गयीं और तारे तेजहीन हो गए। हे मेरे प्यारे! सुनो, कुक्कुट (मुर्गे) बोलने लगे। कमल खिल गये, कुमुदगण मुरझा गये तथा भ्रमरों के समूह पराग एवं रस (मकरन्द) लेकर उड़ गये। देखो, तुम्हारे सभी अनुज और मित्रगण बुलाने आये हैं तथा बन्दीजन अति पवित्र गुण गाथा गा रहे हैं। अब तुम उठ भी जाओ और जो मन हो वह खाओ। तुलसीदास कहते हैं कि बालक राम के खाने की थाल में जो भी जूठन बचे वह हमें दे दिया जाए। यह जूठन पाकर ही हम धन्य हो जाएंगे।

विशेष : 1. प्रस्तुत पद ब्रज भाषा में लिखा गया है।

2. सम्पूर्ण पद में मुख्य रूप से अनुप्रास अलंकार का प्रयोग दिखाई पड़ता है।

3. प्रस्तुत पद विभास राग में लिखा गया है।

बोध प्रश्न-

- प्रस्तुत पद में कवि ने किस प्रसंग का वर्णन किया है ?
- तुलसीदास की दास्यभक्ति को विवेचित कीजिए ?

15.3.3 समीक्षात्मक अध्ययन :

गोस्वामी तुलसीदास की रचनाएँ न केवल मध्यकालीन जनता के लिए प्रासंगिक थी बल्कि समकालीन समाज के लिए भी प्रासंगिक बनी हुई है। उनके काव्य की विवेचना के प्रसंग में तथा समस्त भक्त कवियों के बीच उनकी विशिष्टता के संदर्भ में आचार्य शुक्ल का कथन अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने प्रत्येक मानव स्थिति में स्वयं को डालकर उसके अनुरूप भाव का अनुभव, जीवन की प्रत्येक स्थिति के मर्मस्पर्शी अंश का साक्षात्कार, हिंदी के सभी कवियों में उनकी सर्वांगपूर्ण भावुकता, मानव प्रकृति के अधिकाधिक रूपों के साथ उनके हृदय का रागात्मक सामंजस्य और काव्य-सृजन के विशिष्ट उपादानों की व्याख्या प्रस्तुत की है। उनका मत है कि, *यदि कहीं सौंदर्य है तो प्रफुल्लता, शक्ति है तो प्रणति, शील है तो हर्षपुलक, गुण है तो आदर, पाप है तो घृणा, अत्याचार है तो क्रोध, अलौकिकता है तो विस्मय, पाखंड है तो कुढ़न, शोक है तो करुणा, आनन्दोत्सव है तो उल्लास, उपकार है तो कृतज्ञता, महत्व है तो दीनता, तुलसीदास*

के हृदय में बिम्ब - प्रतिबिम्ब भाव से विद्यमान है (त्रिवेणी, पृ. 122)। रामकथा में अंतर्भूत संघर्षशील विराट जीवन का वैविध्य तथा मुगल शासन के अंतर्गत दुर्दशाग्रस्त वैषम्यपूर्ण जनजीवन - ये दोनों परस्पर घुलमिल गए हैं। ध्यातव्य है कि उपरोक्त दोनों पहलुओं के परस्पर संयोग से तुलसी का काव्य इतना मार्मिक और भाव-व्यंजक हो गया है कि समस्त उत्तर भारत के हिंदी भाषी ज्ञानी और अपढ़ जनता दोनों सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, द्वेष-ईर्ष्या के क्षणों में तुलसी के वाक्यों को स्वयंसिद्ध लोकोक्ति के रूप में उद्धृत करते हैं। उनका उल्लेख हमेशा किया जाता है - कभी संत और असंत, सज्जन और दुर्जन का फर्क समझाते हुए, कभी खलों का स्वभाव बतलाते हुए, कभी अन्याय और अत्याचार का हवाला देते हुए, कभी नीति और अनीति, सदाचार और दुराचार की व्याख्या करते हुए। यही कारण है कि तुलसी सामान्य जनता के जनजीवन का अंग बन गए हैं। इसी कारण वे न केवल अत्यंत लोकप्रिय हैं वरन् लोकहृदय के मर्मज्ञ भी हैं। उन्हें धर्म और भक्ति के लिए भी याद किया जाता है। हिंदू गृहस्थ परिवारों में *रामचरितमानस* के नियमित पाठ का चलन आज भी दिखाई पड़ता है। तुलसी *धर्म* और *भक्तिमार्ग के पथ-प्रदर्शक* के नाते बीसवीं सदी के श्रोताओं/पाठकों के लिए प्रासंगिक तो हैं ही साथ ही वे नैतिक लोकानुभव के सूक्तिकोश के रूप में भी मौजूद हैं। जब तक यह उत्पीड़नकारी वैषम्यपूर्ण समाज व्यवस्था है तब तक तुलसी काव्य की वैविध्यपूर्ण व्यंजना की शक्ति कम नहीं होगी। इस व्यंजना में भक्ति, धर्म, नैतिकता, मानवीय मूल्य, संयुक्त परिवार की आचार संहिता, न्याय-अन्याय बोध सब कुछ समाहित रहता है। यदि आप राम के बाल स्वरूप का वर्णन ध्यान से पढ़ें तब आप दीन-दुःखी और दरिद्र जनसाधारण के प्रवक्ता और परामर्शदाता के रूप में गोस्वामी जी के विनय संबंधी पदों और गीतों की संवेदनशीलता में अंतर्निहित गहरी व्यंजना को अवश्य समझ जाएंगे।

तुलसीदास की रचनात्मकता का एक विकास-क्रम है। उनके सृजनात्मक विकास के पहले चरण में *वैराग्य संदीपनी* शांतिपद प्राप्त संत के रूप में आत्म-साक्षात्कार का आरंभिक चरण है। प्रौढ़ विकास का दूसरा पड़ाव रामभक्ति में गहरी अनुरक्ति के फलस्वरूप सामने आई कृति *रामचरितमानस* है। आत्मनिवेदन की व्याकुलता उनके काव्य-विकास का तीसरा चरण है जिसकी परिणति के रूप में *विनय पत्रिका, कवितावली* और *हनुमानबाहुक* में होती है। पहले चरण में तुलसीदास विश्व से अंतःक्रिया का आरंभ करते हैं। वे दूसरे चरण में वैष्णव आध्यात्मिकता और राम-भक्ति के माध्यम से अपने युग के पीड़ितों के एक नायक का अन्वेषण करते हैं जो लौकिक-अलौकिक दोनों हो। तीसरे चरण में वे पीड़ामय संसार के परिवेश में आत्मिक छटपटाहट और मोहभंग को पूरी तरह व्यक्त न कर पाने की अंतर्वेदना है। इससे यह स्पष्ट है कि तुलसी का रचना-संसार तीन चरणों में विभक्त है। ये तीनों चरण बाह्य विश्व से अनुकूलित हैं। यही कारण है कि तुलसीदास अपने युग और समाज के न केवल मुखर प्रवक्ता हैं बल्कि अपने समकालीन कवियों के बीच अद्वितीय हैं। उनका संपूर्ण कृतित्व में मानवतावादी

नैतिकता (*पर हित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई*) अंत:सलिला के रूप में प्रवहमान है। यह नैतिकता तुलसीदास के काव्य-विवेक के रूप में सर्वत्र विद्यमान है।

तुलसीदास की चिंतन-दृष्टि अत्यंत विस्तृत है। उनकी दृष्टि इतनी व्यापक है कि उसके अंतर्गत प्रकृति, संपूर्ण देश, सृष्टि निर्माण का रहस्य, देव मंडल, भारतीय सांस्कृतिक परंपरा, ज्योतिष, तत्कालीन समाज की अवस्था अर्थात् अकाल, दरिद्रता, शोषण, कपट, अत्याचार, कृषक जीवन, तत्कालीन निरंकुश सामंती व्यवस्था, राजा प्रजा संबंधों की वास्तविकता और आदर्श राज्य का स्वरूप, खेत-खलिहान, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदी-नाले, पर्वत, वन्य जीवन, कोल-किरात-भील, नैतिक मूल्य, पाप-पुण्य बोध, वर्णाश्रम व्यवस्था, ब्राह्मण समाज, सज्जन-दुर्जन, छलकपट आदि न जाने कितनी चीजें एक साथ समावेशित हो गई हैं। उन्होंने राम कथा के विभिन्न पात्रों के चारित्रिक वैविध्य के अंकन द्वारा अपने दृष्टि क्षेत्र की व्यापकता और अपने ज्ञान प्रसार का परिचय दिया है। सादृश्य विधान और प्रतीक चयन भी सर्वांगीण जीवन दृष्टि के परिचायक हैं। इसी के अंतर्गत अन्योक्तियाँ भी आती हैं। डॉ. रमेशकुंतल मेघ ने तुलसी पर लिखित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'आधुनिक वातायन से तुलसी' में व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया है। *जैसे मानसरोवर के जल में पली हुई हंसिनी कहीं खारे समुद्र में जी सकती है? कहीं पोखरे का क्षुद्र कछुआ भी मंदराचल उठा सकता है? संसार में जितने भी कामी और लोभी होते हैं वे कुटिल कौवे की तरह सबसे डरते हैं। ऐसे न जाने कितने आलंकारिक वर्णन हैं जो मूलतः रचनाकार के सूक्ष्म पर्यवेक्षण और व्यापक चिंतन-दृष्टि का परिचायक* हैं। कहना न होगा कि तुलसी का काव्य न केवल मध्यकालीन कविता में सबसे ऊपर विद्यमान है बल्कि उनकी रचनाओं से आधुनिक युग का कवि भी प्रेरणा ग्रहण करता है। इस श्रेणी के कवियों में केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, प्रदीप शुक्ल और अनामिका जैसे अनेक नाम शामिल हैं।

बोध प्रश्न :

- तुलसीदास की रचना का विकासक्रम स्पष्ट कीजिए।
- तुलसीदास की चिंतन दृष्टि को विवेचित कीजिए।

15.4 : पाठ सार

भक्तिकाल के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कवियों में तुलसीदास का स्थान है। उन्होंने दरबारी रचनाकारों और पंडितों की पतनशील सांस्कृतिक धारा का अनुसरण नहीं किया। वे उस युग के अन्य भक्तिकालीन कवियों की तरह जनभाषा काव्य को समृद्ध करने का निर्णय करते हैं। अपने युग के जनसाधारण की सांस्कृतिक आकांक्षा और सांस्कृतिक आवश्यकता की पूर्ति के दायित्व को एक चुनौती की तरह लेते हैं। मध्यकालीन सामंती समाज के सांस्कृतिक रूढ़िवाद और पतनशील मूल्य व्यवस्था के विरूद्ध संघर्ष का जो व्यापक आंदोलन मराठी, बंगला, उड़िया, असमिया समेत सभी जनभाषाओं में चल रहा था, तुलसीदास उसी आंदोलन के एक सिपाही थे। इस संबंध में

डॉ. रामविलास शर्मा का मत है कि *इस आंदोलन ने सामंती बंधनों की जकड़बंदी के बरक्स भक्त कवियों के लिए व्यक्तित्व की सापेक्ष मुक्ति का द्वार उन्मुक्त कर दिया।* (भाषा, युगबोध और कविता, पृ. 48) डॉ. शर्मा का मत अत्यंत प्रासंगिक है कि जिस समय समाज में अनेक तरह की विद्रुपताएँ मौजूद थीं उस दौर में समस्त भक्त कवियों ने जन जागरण का कार्य किया। उन्हें सन्मार्ग पर लाने का स्तुत्य प्रयास किया। उनका यह प्रयास सही अर्थों में सांस्कृतिक जागरण ही था।

तुलसीदास की *गीतावली* से चयनित पाँच पद का अध्ययन विवेच्य इकाई में किया गया है। जिन पाँच पदों का अध्ययन इस इकाई में किया गया है उसमें राम के बाल-स्वरूप का वर्णन अत्यंत मनोहारी ढंग से किया गया है। बालक राम के आभूषण, कपड़े, उनका चलना और चलते-चलते गिर जाना तथा इसके साथ ही उनके शरीर के एक-एक कोमल अंग का वर्णन न केवल कवि का मन मुदित करता है बल्कि सम्पूर्ण पाठक वर्ग को आकर्षित करता है। यह अकारण नहीं है कि श्रोता समाज *गीतावली* और *सूरसागर* में सादृश्य विधान देखता है।

15.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

तुलसीदास द्वारा रचित गीतवाली पर केन्द्रित विवेच्य इकाई के अध्ययन के उपरांत यह स्पष्ट हो गया है कि –

- ❖ रामभक्ति शाखा के कवियों में गोस्वामी तुलसीदास का स्थान सर्वोपरि है।
- ❖ सगुणोपासक गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल के एकलौते ऐसे कवि हैं जो अवधी भाषा में जिस अधिकार से काव्य-सृजन करते हैं ठीक उसी अधिकार के साथ ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन करते हैं।
- ❖ तुलसीदास की काव्य-दृष्टि अत्यंत व्यापक है जिसमें प्रकृति, संपूर्ण देश, सृष्टि निर्माण का रहस्य, देव मंडल, भारतीय सांस्कृतिक परंपरा, ज्योतिष, तत्कालीन समाज की अवस्था अर्थात् अकाल, दरिद्रता, शोषण, कपट, अत्याचार, कृषक जीवन, तत्कालीन निरंकुश सामंती व्यवस्था, राजा-प्रजा संबंधों की वास्तविकता और आदर्श राज्य का स्वरूप, खेत-खलिहान, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदी-नाले, पर्वत, वन्य जीवन, कोल-किरात-भील, नैतिक मूल्य, पाप-पुण्य बोध, वर्णाश्रम व्यवस्था, ब्राह्मण समाज, सज्जन- दुर्जन, छलकपट आदि शामिल है।
- ❖ राम के बाल-स्वरूप का जितना चित्ताकर्षक वर्णन तुलसीदास ने किया है ठीक वैसा वर्णन सूरदास ने कृष्ण का किया है।
- ❖ काव्य-सौन्दर्य का समुचित प्रयोग तुलसीदास की कविताओं का निजी वैशिष्ठ्य है जिसमें कविता का न केवल बाह्य पक्ष बल्कि आंतरिक पक्ष भी शामिल है।

- ❖ भक्तिकालीन कवियों ने अपने युग को सन्मार्ग पर लाने के लिए जो प्रयास किया वह सरहनीय है। उनके इस कार्य को सांस्कृतिक आंदोलन की संज्ञा प्रदान की गई।
- ❖ तुलसीदास के भाषायी प्रेम को देखते हुए आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा ने उन्हें हिन्दी का जातीय कवि कहा है।

15.6 : शब्द-संपदा

1. विश्लेषण - गंभीर व्याख्या, सूक्ष्म विवेचन
2. कंठाहार - गले का हार, सर्वाधिक प्रिय
3. लोकवादी - जिसे ज्ञानी/अज्ञानी दोनों की चिंता हो और वह दोनों का प्रिय हो
4. मनोहारी - अत्यंत प्रिय, जो मन को अपनी तरफ खींच ले
5. हस्तलिखित - हाथ द्वारा लिखा हुआ
6. प्राचीनतम - बहुत पुराना
7. वैषम्यपूर्ण - विषमता से भरा हुआ, बहुत कठिन
8. सगुणोपासक - सगुण के उपासक, विष्णु के भक्त

15.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए ।

1. गोस्वामी तुलसीदास की काव्य-कला को विश्लेषित कीजिए।
2. गीतावली की रचना-प्रक्रिया को विवेचित कीजिए।
3. अध्येय कविताओं के आधार पर तुलसीदास के सौन्दर्य-तत्व को स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए ।

1. तुलसीदास द्वारा वर्णित राम के बालस्वरूप का विवेचन कीजिए।
2. गीतावली का सामान्य परिचय दीजिए।

खंड – (स)

I सही विकल्प का चुनाव कीजिए

1. गोस्वामी तुलसीदास की रचना है –

   क) सूरसागर ख) पद्मावत ग) बीजक घ) रामचरितमानस

2. गीतवाली का प्राचीन नाम क्या था?

क) रामायण ख) पदावलीरामायण ग) जानकीमंगल घ) रामाज्ञाप्रश्न

3. गीतवाली की रचना किस भाषा में हुई है ?

क) ब्रज ख) अवधी ग) मैथिली घ) बघेली

4. गोस्वामी तुलसीदास का संबंध किस कालखंड से है ?

क) आदिकाल ख) रीतिकाल ग) आधुनिक काल घ) भक्तिकाल

II रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. 'गीतावली' की हस्तलिखित उपलब्ध प्राचीनतम प्रति सं. ……….. की है।
2. तुलसी का रचना-संसार ……. चरणों में विभक्त है।
3. गोस्वामी तुलसीदास की सर्वाधिक चर्चित कृति का नाम ………………… है।
4. जब तक यह उत्पीड़नकारी वैषम्यपूर्ण समाज व्यवस्था है तब तक तुलसी काव्य की वैविध्यपूर्ण व्यंजना की शक्ति ………… नहीं पड़ेगी।

III सुमेल कीजिए

1. त्रिवेणी	क. तुलसीदास
2. रामविलास शर्मा	ख. आचार्य रामचंद्र शुक्ल
3. रामभक्ति शाखा	ग. रमेश कुंतल मेघ
4. आधुनिक वातायन से तुलसी	घ. भाषा, युगबोध और कविता

15.8 : पठनीय पुस्तकें

1. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र. (2016). हिंदी साहित्य का इतिहास. इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन.
2. शर्मा, रामविलास. (2016). परंपरा का मूल्यांकन. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन.
3. मिश्र, शिवकुमार. (2013). भक्ति-आंदोलन और भक्ति-काव्य. नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन.
4. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र. (2010). तुलसीदास. इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन.
5. त्रिपाठी, विश्वनाथ. (2016). लोकवादी तुलसीदास. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन.

इकाई 16 : गीतावली : बालकाण्ड – III : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

16.1 प्रस्तावना
16.2 उद्देश्य
16.3 मूल पाठ : गीतावली : बालकाण्ड- III : व्याख्या
16.3.1 निर्धारित पदों की व्याख्या
16.3.2 काव्यगत विशेषताएँ
16.5 पाठ सार
16.6 पाठ की उपलब्धियाँ
16.7 परीक्षार्थ प्रश्न
16.8 पठनीय पुस्तकें

16. 1 : प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! इस इकाई में हम 'गीतावली' (बालकाण्ड) की पद संख्या- 44, 73, 95, 97 एवं 101 की व्याख्या एवं विशेषताओं को विश्लेषित करेंगे। 'गीतावली' राम कथा से संबंधित पदावली है। यह गीत पद्धति पर लिखी गई है। इसमें सात कांड हैं। रामचंद्र शुक्ल की बातों को उधार लेकर कहें तो, गीतावली की रचना तुलसीदास ने सूरदास के 'सूरसागर' के अनुकरण पर ही की है, ऐसा जान पड़ता है।

गीतावली के संदर्भ में यह बात कही जा सकती है कि गीतावली रामचरित्र को गीतिकाव्य में प्रस्तुत करने वाली एक महत्त्वपूर्ण कृति है। तुलसीदास ने इस कृति के लिए काफी गंभीरता से वर्ण-विषय का चयन किया हुआ है। रावण के जन्म, परशुराम- प्रसंग, शूर्पणखा-प्रसंग, रावण-वध आदि प्रसंगों को गीतावली में स्थान नहीं दिया गया है। ऐसे में उनके विषय चुनाव एवं काव्य के अनुरूप उसके सृजनात्मक कौशल का अंदाजा लगाया जा सकता है। गीतावली गीतिकाव्य होने के कारण उसमें बाललीला, पुष्प वाटिका, विवाह आदि के प्रसंगों की पूरी तन्मयता से अभिव्यक्ति उनके सृजन सामर्थ्य का परिचायक बनती है। तुलसीदास के काव्य सृजन का प्रमुख उद्देश्य रामचरित या रामचरित्र का वर्णन एवं विवेचन रहा है।

16.2 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- ❖ तुलसीदास की भक्ति-पद्धति एवं काव्य-सृजन का उद्देश्य समझ सकेंगे।
- ❖ गीतावली के काव्य सौंदर्य से साक्षात्कार कर सकेंगे।
- ❖ गीतावली के चुनिंदा पदों की व्याख्या एवं विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

16.3 : मूल पाठ : गीतावली : बालकाण्ड – III : व्याख्या

16.3.1 बालकाण्ड पदों की व्याख्या

इस इकाई में गीतावली के कुछ चुनिंदा पदों की व्याख्या की जाएगी। इनमें दशरथ पुत्र राम की बाल्यावस्था, उनके जीवन, उनके शौर्य एवं साहस, उनके सौंदर्य, उनके भविष्य/वर्तमान को लेकर चिंतित होती माताओं (रानियों) का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। गीतावली तुलसीदास के काव्य सौंदर्य का एक अनुपम उदाहरण है।

(पद 44)

छोटिऐ धनुहियाँ, पनहियाँ पगनि छोटी,
छोटिऐ कछौटी कटि, छोटिऐ तरकसी।
लसत झँगूली झीनी, दामिनिकी छवि छीनी,
सुंदर बदन, सिर पगिया जरकसी।।1।।
बय-अनुहरत बिभूषन बिचित्र अंग,
जोहे जिय आवति सनेहकी सरक सी।
मूरतिकी सूरति कही न परै तुलसी पै,
जानै सोई जाके उर कसकै करक सी।।2।।

शब्दार्थ : पगनि – खडाऊँ, जूता, **तरकसी** – तूणीर, चोंगा, **झँगूली** – छोटे बालकों के पहनने का झगा, ढीला कुरता, **जरकसी** – जिसमें सोने या चाँदी के तार लगे हों, **बिभूषण** – अलंकार, गहना, **उर** – हृदय, छाती

संदर्भ : प्रस्तुत पद 'गीतावली' के 'बालकाण्ड' में से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।

प्रसंग : बाल्यावस्था की भगवान की सुंदर मूर्ति को देखकर तुलसीदास कितने सुंदर ढंग से उनके रूप का साक्षात्कार कराते हैं। और यह भी कि इस सुंदर रूप को जस का तस न कह पाने की सीमाएँ कवि के रूप में तुलसीदास व्यक्त करते हैं। दूसरे अर्थ में कह सकते हैं कि भगवान के रूप की अभिव्यक्ति नहीं बल्कि अनुभव करने की बात है।

व्याख्या : हाथों में छोटा-सा धनुष, पैरों में छोटी-सी जूतियाँ हैं। कमर में छोटी-सी धोती और एक छोटा-सा तीर रखने का चोंगा (तूणीर) अत्यंत शोभायमान है। सुंदर शरीर पर पीले रंग का महीन कुर्ता है, जिसने मानो तो बिजली की चमक छीन ली है। चेहरा सुंदर है तथा सर पर जरी के काम की पगड़ी विराजमान है। शरीर पर आयु के अनुसार अनेक प्रकार के आभूषण हैं, जिन्हें देखकर हृदय में प्रेम की लहर आ जाती है। भगवान के सुंदर मूर्ति की सूरत तुलसीदास से नहीं कही जाती है। उसे वही जान सकता है, जिसके हृदय में वह पीड़ा के समान कसकती है।

विशेष :

- कवि, बालक राम के सौंदर्य पर रीझे हुए हैं।

- भगवान की बाल्यवस्था एवं वेशभूषा का सूक्ष्म वर्णन मिलता है।
- भगवान के सुंदर मूर्ति की सूरत इतनी मनमोहक है कि कवि उसे अभिव्यक्ति का नहीं बल्कि अनुभूत करने की बात कहते हैं।
- 'लसत झँगूली झीनी, दामिनिकी छवि छीनी' में व्यतिरेकी अलंकार का प्रयोग किया गया है।
- इस पद में श्रृंगार रस का संयोग देखने को मिलता है।

बोध प्रश्न

- भगवान की सूरत किन कारणों से मनमोहक जान पड़ती है?
- कौन-से आभूषण हैं जो भगवान ने आयु के अनुरूप धारण किए हुए हैं?

(पद 73)

रंगभूमि आए दसरथके किसोर हैं।
पेखनो सो पेखन चले हैं पुर-नर-नारि,
बारे-बूढ़े, अंध-पंगु करत निहोर हैं।।1।।
नील पीत नीरज कनक मरकत घन-
दामिनि-बरन तनु, रूपके निचोर हैं।
सहज सलोने, राम-लषन ललित नाम,
जैसे सुने तैसेई कुँवर सिरभौर हैं।।2।।
चरन-सरोज, चारु जंघा जानु ऊरु कटि,
कंधर बिसाल, बाहु बड़े बरजोर हैं।
नीकेकै निषंग कसे, करकमलनि लसै
बान-बिसिषासन मनोहर कठोर हैं।।3।।
काननि कनकफूल, उपबीत अनुकूल,
पियरे दुकूल बिलसत आछे छोर हैं।
राजिव-नयन, बिधुबदन, टिपारे सिर,
नख-सिख अँगनि ठगौरी ठौर ठौर हैं।।4।।
सभा-सरवर लोक-कोकनद-कोकगन
प्रमुदित मन देखि दिनमनि भोर हैं।
अबुध असैले मन-मैले महिपाल भये,
कछुक उलूक कछु कुमुद चकोर हैं।।5।।
भाईसों कहत बात, कौसिकहि सकुचात,
बोल घन घोर-से बोलत थोर थोर हैं।
सनमुख सबहि, बिलोकत सबहि नीके,
कृपासों हेरत हँसि तुलसीकी ओर हैं।।6।।

शब्दार्थ : पेखन – देखने की क्रिया, दृश्य, तमाशा, **नीरज** – कमल, **निषंग** – तुण, तूणीर, तरकण, **ठगौरी** – मोहित कर देने वाली क्रिया, **प्रमुदित** – आनंदित, **दिनमनि** – सूर्य

संदर्भ : प्रस्तुत पद 'गीतावली' के 'बालकाण्ड' में से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।

प्रसंग : दशरथ जी के पुत्र रंगभूमि आए हैं। यह बात सुनकर जनता की उत्सुकता, सभा सदस्यों की स्थिति, स्वयं भगवान की हाव-भाव एवं स्वयं कवि की मनस्थिति का सजीव चित्रण इस पद में देखने को मिलता है।

व्याख्या : रंगभूमि में दशरथ जी के पुत्र आए हैं। यह सुनकर नगर के स्त्री- पुरुष सभी देखने के लिए निकल पड़े हैं। बालक, वयोवृद्ध, अंधे और पंगु भी स्वयं को साथ ले चलने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। दोनों भाई नीले और पीले कमल, सोने तथा मरकत रत्न, बादल और बिजली के जैसे रंग वाले और रूप के साक्षात रूप हैं। वे स्वभाव से ही सुंदर हैं। 'राम' और 'लक्ष्मण' ये उनके सुंदर नाम हैं। जैसे सुनने में आया था ठीक वैसे ही राजकुमारों में सरताज हैं। उनके पाँव कमल के समान हैं। जंघा, घुटना और कटिप्रदेश बड़ा सुंदर है। कंधे विशाल और भुजाएँ बड़े शक्तिशाली हैं। वे अति सुंदर और तीर रखने का चोंगा (तूणीर) कसे हुए हैं। उनके हाथों में अति सुंदर और कठोर धनुष-बाण शोभायमान् हैं। उनके कानों में सोने के कर्णफूल, गले में सुंदर यज्ञोपवीत तथा शरीर पर अच्छे पीले वस्त्र सुशोभित हैं। उनकी आँखें कमल और मुँह चाँद के समान हैं। सर पर टोपियाँ हैं और नख से लेकर चोटी तक प्रत्येक अंग मन को ठग लेनेवाला है। सभाश्रेष्ठ सरोवर के समान है और वहाँ एकत्र हुए लोग कमल एवं चकवा-चकवी के समान हैं। वे राम सूर्यदेव को उदित हुआ देखकर मन में परम आनंदित हो रहे हैं तथा अज्ञानी और द्वेष मानने वाले राजाओं के चित्त, जिनमें से कुछ उल्लू के समान, कुछ कुमुद और चकोरवत् जान पड़ते हैं, कलुषित हो रहे हैं। भगवान् राम जब भाई से बातें करते हैं तो विश्वामित्र जी से सकुचाकर और बादल के समान गंभीर शब्द बोलते हैं (अधिक बात नहीं करते)। प्रभु सभी के अनुकूल हैं, सभी को अच्छी दृष्टि से देखते हैं और तुलसीदास की ओर भी कृपापूर्वक हँसकर देख रहे हैं।

विशेष :

- रंगभूमि में दशरथ जी के पुत्रों का आगमन हुआ है। इसका सजीव चित्रण इस पद में देखने को मिलता है।
- इस पद में राम-लक्ष्मण के नाम से लेकर उनके पहनावे तक का सूक्ष्म वर्णन किया गया है।
- भगवान के व्यवहार की सूक्ष्मता को देखा जा सकता है।
- तुलसी इस पद में अपने 'महत्त्व की अनुभूति' (अर्थात् यहाँ ईश्वर के सामने अपने लघुत्व की भावना का उदय होता है) को प्रकट करते हैं।

- 'रंगभूमि आए दसरथके किसोर हैं। / पेखनो सो पेखन चले हैं पुर-नर-नारि' इस पंक्ति में यमक अलंकार का प्रयोग देखने को मिलता है। पेखन का अर्थ है- देखने की क्रिया, पेखनो – देखने योग्य, दृश्य, तमाशा
- 'अबुध असैले मन-मैले महिपाल भये, / कछुक उलूक कछु कुमुद चकोर हैं' इस पंक्ति में म, क वर्ण की बार-बार आवृत्ति के कारण यहाँ अनुप्रास अलंकार है।
- इस पद में तुकांत शब्दों का सार्थक प्रयोग देखने को मिलता है। जैसे – किसोर – निहोर
- इस पद में बहुब्रीहि समाज जैसे – राजिवनयन, द्वंद्व समाज जैसे - बारे-बूढ़े, अंध-पंगु का प्रयोग देखने को मिलता है।

बोध प्रश्न :

- भगवान की सभा में उपस्थिति एवं व्यवहार कैसा है, संक्षेप में लिखिए।
- रंगभूमि की जनता में भगवान के प्रति कैसी भावना दिखाई देती है?

(पद 95)

लाज तोरि, साजि साज राजा राढ़ रोषे हैं।
कहा भौ चढ़ाए चाप, ब्याह ह्वै है बड़े खाए,
बोलैं, खोलैं सेल, असि चमकत चोखे हैं।।1।।
ज्ञानि पुरजन त्रसे, धीर दै लषन हँसे,
बल इनको पिनाक नीके नापे-जोखे हैं।
कुलहि लजावैं बाल, बालिस बजावैं गाल,
कैघौं कूर कालबस, तमकि त्रिदोषे हैं।।2।।
कुँवर चढ़ाई भौंहैं, अब को बिलोकै सोहैं,
जहँ तहँ भे अचेत, खेतके-से धोखे हैं।
देखे नर-नारि कहैं, साग खाई जाए माइ,
बाहु पीन पाँवरनि पीना खाइ पोखे हैं।।3।।
प्रमुदित-मन लोक-कोकनद कोकगन,
रामके प्रताप-रवि सोच-सर सोखे हैं।
तबके देखैया तोषे, तबके लोगनि भले,
अबके सुनैया साधु तुलसिहु तोषे हैं।।4।।

शब्दार्थ : राढ़ – झगड़ा, विरोध, **रोष –** क्रोध, गुस्सा, **कोकनद –** लाल कमल, **तोषे –** तृप्ति, तुष्टि

संदर्भ : प्रस्तुत पद 'गीतावली' के 'बालकाण्ड' में से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।

प्रसंग : स्वयंवर में नाकाम रहे राजा युद्ध पर आमद हुए और युद्ध करने की बात करने लगे। वहीं एक ओर लक्ष्मण इन नाकाम राजाओं की बातों को व्यर्थ की बात या डींग हाँकना कहने लगे। तो दूसरी ओर इन नाकाम राजों को जनता अपशब्द कहने लगी इसी बीच राम का प्रतापी रूप

सामने आता है। यह देख सभी खुश होते हैं। तुलसीदास यह प्रसंग सुनने वालें साधुजन और स्वयं को भी संतुष्ट पाते हैं।

व्याख्या : निकम्मे राजा लज्जा त्यागकर युद्ध का साज सजा रण के लिए क्रोध में भर गये और कहने लगे - 'अरे, धनुष चढ़ा लेने से ही क्या होता है, अभी विवाह तो बहुत बड़ी कठिनाई से होगा!' ऐसा कहकर वे भाले निकालते हैं और तलवारों को खूब चमकाते हैं। यह जानकर पुरवासी तो भयभीत हो गए लेकिन लक्ष्मण जी उन्हें धैर्य बँधाकर हँसने लगे और बोले– 'अरे, इनका बल तो इस धनुष ने अच्छी तरह जाँच लिया है। ये मूर्ख अपने कुल को लजाते और व्यर्थ डींग हाँकते हैं। या कहे, क्रूर काल के वश में होकर, तमककर, त्रिदोष में पड़कर व्यर्थ की बात कर रहे हैं' ऐसा कह राजकुमार लक्ष्मण ने भौंहें चढ़ा लीं। अब उनको सामने से कौन ठहर सकता है? खेत के धोखों के समान सब जगह-जगह बेहोश हो गये। उन्हें देखकर नगर के स्त्री-पुरुष कहने लगे 'इनकी माताओं ने साग सब्ज़ी खाकर इन्हें जना है और इन दुष्टों की मोटी-मोटी भुजाएँ भी खली खा-खाकर ही पुष्ट हुई हैं।' इस प्रकार राम के प्रताप रूप सूर्य के उदय होते ही संपूर्ण लोक रूप कमल, चकवा-चकवी प्रसन्नचित्त हो गए और दुःख रूपी सरोवर सूख गये। उस समय के सब चरित्र देखनेवाले भले लोग तथा इस समय ये सब बातें सुनने वाले साधुजन एवं तुलसीदास भी संतुष्ट हुए हैं।

विशेष :

- राम के प्रताप का वर्णन किया गया है।
- लक्ष्मण अपने भाई के बल से भली-भाँति परिचित हैं, इस बात का सूक्ष्म वर्णन किया गया।
- जनता/नगर निवासी अपने सत्य (ईश्वर) के पक्ष में हैं और उनकी विजय में अपनी खुशी जाहिर करते हैं।
- तुलसी इस पद में राम के बल एवं शौर्य की गाथा को सुनने और देखने वालों के अंतरिक सुख को प्रकट करते हैं।
- इस पद में शास्त्रीय गेयता का ध्यान रखा गया है।
- बजावैं गाल (डींग हाँकना) जैसे मुहावरों का प्रयोग, पद का सौंदर्य अधिक बढ़ाते हैं।
- वीर रस का संयोग इस पद में देखने को मिलता है।
- इस पद में तुकांत शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। जैसे, रोषे-चोखे, धोखे-पोखे, सोखे-तोषे आदि।

बोध प्रश्न :

- राम-लक्ष्मण का संबंध अधिक गहरा है, उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

- तुलसीदास ने अपने आराध्य की दुख भंजक छवि प्रस्तुत की है, इस बात को प्रमाणित कीजिए।

(पद 97)

लेहु री लोचननिको लाहु।
कुँवर सुंदर साँवरो, सखि सुमुखि! सादर चाहु।।1।।
खंडि हर-कोदंड ठाढ़े, जानु-लंबित-बाहु।
रुचिर उर जयमाल राजति, देत सुख सब काहु।।2।।
चितै चित हित-सहित, नखसिख अंग-अंग निबाहु।
सुकृत निज, सियराम-रूप, बिरंचि-मतिहि सराहु।।3।।
मुदित मन बरबदन-सोभा उदित अधिक कछाहु।
मनहु दूर कलंक करि ससि उमर सूद्यो राहु।।4।।
नयन सुखमा-अयन हरत सरोज-सुंदरताहु।
बसत तुलसीदास-उरपुर जानकीकौ नाहु।।5।।

शब्दार्थ : कोदंड – धनुष, **जानु** - घुटना, **राजति** – शोभित होना, **ससि** – चंद्रमा, **उरपुर** – हृदय

संदर्भ : प्रस्तुत पद 'गीतावली' के 'बालकाण्ड' में से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।

प्रसंग : यह पद दो सुंदर सखियों की बातचीत है। जिसमें एक, दूसरी को राम के सौंदर्य को देखकर मोहित होने और उसे अभिव्यक्त करती हुई दिखाई देती है। उसकी सौंदर्य दृष्टि से राम के रूप का अति मनमोहक रूप सामने आता है।

व्याख्या : अरी वो सुंदरी सखि! थोड़ा आँखों का लाभ तो ले। साँवले कुँवर बड़े ही सुंदर हैं, इन्हें तनिक आदरपूर्वक देख ले। देख, ये महादेव जी का धनुष तोड़कर घुटनों तक बाँह लटकाए खड़े हैं। इनके गले में मनोहर जयमाल सुशोभित है, जो सभी को आनंद देती है। इन्हें हार्दिक प्रेमसहित देख। नख से शिखापर्यंत इनका प्रत्येक अंग यथायोग्य रूप से सुशोभित है। इन्हें देखकर अपने पुण्य, सीता-राम के रूप तथा इन मूर्तियों को रचनेवाले विधाता की बुद्धि की सराहना कर। प्रसन्न मन के कारण सुंदर मुखमंडली शोभा पर और भी अधिक उत्साह उदित हो रहा है; मानो चंद्रमा ने अपना कलंक दूर कर युद्ध में राहु को मार डाला हो। इनकी अति सुंदर आँखें कमल की भी सुंदरता को हर लेते हैं। ऐसे ये जानकी के पति तुलसीदास के हृदय में आसीन हैं।

विशेष :

- इस पद में श्रृंगार/प्रेम रस का संयोग हुआ है।
- 'मुदित मन बरबदन-सोभा उदित अधिक कछाहु। / मनहु दूर कलंक करि ससि उमर सूद्यो राहु' इन पंक्तियों में अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग देखने को मिलता है।
- तुलसीदास ने एक सखि को माध्यम बनाकर भगवान के सौंदर्य का वर्णन किया है।

➢ हृदय में स्थिति भगवान के मनोहर रूप की पद के माध्यम से प्रतिष्ठा की है।
➢ यह पद सुंदर सखियों के माध्यम से भगवान के सौंदर्य को प्रकट करने, उन पर मोहित होना का अनोखा उदाहरण पेश करता है।
➢ इस पद में तुलसीदास अपने आराध्य को 'जानकी के पति' के रूप में हृदय में स्थान देते हैं या आसीन मानते हैं।

बोध प्रश्न :

- सुंदर सखियों के दृष्टिकोण से राम का चरित्र एवं सौंदर्य कैसा है, स्पष्ट कीजिए।
- कवि हृदय में भगवान का रूप सौंदर्य कैसा है, विश्लेषित कीजिए।

(पद 101)

जबतें लै मुनि संग सिधाए।
राम-लखनके समाचार, सखि! तबतें कछुअ न पाए।।1।।
बिनु पानही गमन, फल भोजन, भूमि सयन तरुछाहीं।
सर-सरिता जलपान, सिसुनके संग सुसेवक नाहीं।।2।।
कौसिक परम कृपालु, परमहित, समरथ, सुखद, सुचाली।
बालक सुठि सुकुमार सकोची, समुझि सोच मोहि आली।।3।।
बचन सप्रेम सुमित्राके सुनि सब सनेह-बस रानी।
तुलसी आइ भरत तेहि औसर कही सुमंगल बानी।।4।।

शब्दार्थ : संग – साथ, **पनही** – जूता, **सिधाए** – जाना, **सकोची** – संकोची, **औसर** – समय

संदर्भ : प्रस्तुत पद 'गीतावली' के 'बालकाण्ड' में से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।

प्रसंग : सुमित्रा एवं अन्य रानियों के बीच का यह संवाद है। जिसमें राम-लक्ष्मण (जो कि सुकुमार एवं संकोची हैं।) के प्रति उनका स्नेह एवं साथ ही उनके प्रति चिंता प्रकट होती हुई दिखाई दे रही है।

व्याख्या : 'अरी सखि! जब से मुनी अपने साथ लेकर गये हैं तबसे मुझे राम-लक्ष्मण का कुछ भी समाचार नहीं मिला। उन्हें बिना जूतियों के चलना, फलाहार करना, वृक्ष की छाया में जमीन पर सोना और नदी एवं तालाबों का जल पीना पड़ेगा। उन बालकों के साथ कोई अच्छा सेवक भी नहीं है। विश्वामित्र जी तो बड़े कृपालु, परमहितकारी, सामर्थ्यवान, सुखदायक और सदाचारी हैं परंतु ये शुद्धचित बालक भी बड़े ही कोमल और संकोच करने वाले हैं- अरी आली! यह जानकर ही मुझे बड़ा चिंता हो रही है।' सुमित्रा के ये प्रेमपूर्ण वचन सुनकर सब रानियाँ स्नेहवश हो गयीं। तुलसीदास कहते हैं, इसी समय भरत जी ने आकर शुभ वचन सुनाये।

विशेष :

➢ इस पद में राम-लक्ष्मण के प्रति सुमित्रा का स्नेह एवं चिंता दिखाई देती है।

- ➢ राम-लक्ष्मण के वृत्ति एवं मुनि के साथ जाने पर उनके साथ होने वाले कष्टों का वर्णन दिखाई देता है।
- ➢ इस पद में विश्वामित्र के व्यक्तित्व को प्रकट किया गया है।
- ➢ सुमित्रा एवं अन्य रानियों के हृदय के भावों का सजीव चित्रण तुलसीदास ने किया है।
- ➢ इस पद में स्वयं कवि प्रथमदर्शी के रूप में दिखाई पड़ते हैं।
- ➢ यह पद गीतावली के अन्य पदों की तरह ही गेयता की दृष्टि से सर्वोत्तम है।

बोध प्रश्न :

- सुमित्रा की चिंता एवं भावनाओं पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।
- विश्वामित्र के चरित्र को स्पष्ट कीजिए।

16.3.2 काव्यगत विशेषताएँ :

रामचंद्र शुक्ल की सूरदास और तुलसीदास के संबंध में एक महत्त्वपूर्ण टिप्पणी है, जो सूर और तुलसी के काव्य प्रतिभा को रेखांकित करती है। शुक्ल लिखते हैं- 'सूर और तुलसी को हमें उपदेशक के रूप में न देखना चाहिए। वे उपदेशक नहीं हैं, अपनी भावुकता और प्रतिभा के बल से लोक-व्यापार के भीतर भगवान की मनोहर मूर्ति प्रतिष्ठित करने वाले हैं।' (तुलसी का भक्ति मार्ग (निबंध) – आ. रामचंद्र शुक्ल)

उपरोक्त उद्धरण को विशेषतः गीतावली को विवेचित करने की कसौटी माना जाए तो सत्य प्रतीत होता है। वे मूलतः लोक-व्यापार के भीतर भगवान की मनोहर मूर्ति को प्रतिष्ठित करने वाले हैं। रामकथा को गीतिकाव्य में प्रस्तुत करने का कार्य 'गीतावली' के माध्यम से तुलसी करते हैं। विशेष बात यह कि इसमें भगवान की सुंदर, मनोहर मूर्ति ही प्रतिष्ठित होती हुई दिखाई देती है। व्याख्या, विश्लेषण के उपरोक्त पद इस बात के उत्तम उदाहरण हैं।

'भक्ति का मूल तत्त्व है महत्त्व की अनुभूति। इस अनुभूति के साथ ही दैन्य अर्थात् अपने लघुत्व की भावना का उदय होता है।' जैसे –

'राम सों बड़ों है कौन, मोसों कौन छोटो?
राम सों खरो है कौन, मोसों कौन खोटो?'

एक और उदाहरण गीतावली के उपरोक्त पदों से देखा जा सकता है, जिसमें अपने लघुत्व की भावना कवि में दिखाई देती है –

'तबके देखैया तोषे, तबके लोगनि भले,
अबके सुनैया साधु तुलसिहु तोषे हैं।'

गीतावली में गीतिकाव्य के अनिवार्य तत्त्व दिखाई देते हैं। यह कवि के सृजन का कौशल प्रकट करते हैं। कोमल अनुभूति, कोमल अभिव्यक्ति और संगीतात्मकता यह गीतिकाव्य के अनिवार्य तत्त्व हैं। क्रमानुसार 'छोटिऐ धनुहियाँ, पनहियाँ पगनि छोटी', 'रंगभूमि आए दसरथके

किसोर हैं।' एवं 'जबतें लै मुनि संग सिधाए।' ये गीतिकाव्य के अनिवार्य तत्त्वों के सुंदर उदाहरण हैं। गीतावली की पद संख्या 44, 73, 95, 97 और 101 में कवि की तन्मयता को भली-भाँति देखा जा सकता है।

गीतावली के प्रमुख रसों में प्रेम के बाद वात्सल्य और करुण रहे हैं। सुमित्रा का वात्सल्य 'जबतें लै मुनि संग सिधाए।' इस पद में अनुभव किया जा सकता है। तुलसीदास ने गीतावली में उन्हीं रसों को प्रधानता दी जो गीतिकाव्य के अनुरूप एवं गेयता की दृष्टि से योग्य हों।

रस और अलंकार की अद्भुत मैत्री तुलसीदास की कविता में दृष्टिगोचर होती है वैसी हिंदी साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है। गीतावली में भी रस और अलंकार का अद्भुत मिश्रण दिखाई देता है। जिससे काव्य का सौंदर्य द्विगुणित हो जाता है।

तुलसीदास ने गीतावली की रचना केदारा, सोरठ, आसावरी आदि रागों में करके उसे उच्चता के सोपान पर खड़ा किया है। एक बात विशेष रूप से यह कि व्यावहारिक गेयता गीतावली में थोड़ी-सी कम हो सकती है पर शास्त्रीय गेयता से यह रचना अति संपन्न है।

16.4 : पाठ सार

तुलसीदास के व्यक्तित्व, कृतित्व के साथ ही गीतावली के चुनिंदा पदों की संदर्भ सहित व्याख्या एवं विशेषताओं से आप परिचित हुआ जा सकता है। उनके रचना संसार के साथ ही साथ उनकी काव्यगत विशेषताओं से साक्षात्कार किया जा सकता है।

गीतावली की पद संख्या 44, 73, 95, 97 और 101 में तुलसीदास की कोलम अनुभूति, कोमल अभिव्यक्ति एवं संगीतात्मकता को स्पष्ट रूप से जाना गया। यह तीनों गीतिकाव्य के अनिवार्य तत्त्व हैं। गीतावली की रचना ही गेयता के अनुरूप की गई इसलिए इसमें स्थित सूक्ष्म बातों जैसे राग, रस, अलंकार आदि को समझने एवं काव्य सौंदर्य को देखा जा सकता है।

तुलसीदास की भक्ति एवं आराध्य की मनोहर मूर्ति प्रतिष्ठित करने की काव्य सृजन की क्षमता को समझाने का प्रयास पाठकों के लिए किया गया है। इन पदों के माध्यम से यह बात समझ में आई होगी कि तुलसीदास का रचना के लिए वर्ण्य विषय का सार्थक चुनाव, अभिव्यक्ति और अपने आराध्य की सुंदर सौंदर्य अनुभूति की सक्षम प्रस्तुति बड़ी सार्थक, मार्मिक एवं तन्मयतापूर्ण बन पडी है।

16.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष मिलते हैं-

- तुलसीदास का व्यक्तित्व एवं कृतियों का परिचय प्राप्त किया गया।
- 'गीतावली' के चुनिंदा पदों की व्याख्या एवं विशेषताओं का विश्लेषण प्राप्त किया गया।
- 'गीतावली' के काव्यगत सौंदर्य से परिचय प्राप्त हुआ।
- तुलसीदास के काव्यगत विशेषताओं का विश्लेषण प्राप्त हुआ।
- पदों का संदर्भ सहित व्याख्या करने का स्वरूप समझने को मिला।

16.6 : शब्द संपदा

1. तूणीर - तरकश

2. कटिप्रदेश - कमर

3. प्रतापी - इकबालमंद, यशस्वी

4. शिखापर्यंत - चोटी तक

5. समार्थ्यवान - सक्षम, शक्तिशाली

6. द्विगुणित - दो गुना

16.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए ।

1) गीतिकाव्य के अनिवार्य तत्त्वों के आधार पर गीतावली का मूल्यांकन कीजिए।

2) 'गीतावली' के काव्यगत विशेषताओं को विश्लेषण कीजिए।

3) 'गीतावली' के संदर्भ में वर्ण्य-विषय के चुनाव की भूमिका या महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए ।

1) पठीत पदों के आधार पर राम के सौंदर्य का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

2) सुमित्रा को राम-लक्ष्मण की चिंता क्यों हुई, संक्षिप्त विश्लेषण कीजिए।

3) पठीत पदों के आधार पर रंगभूमि की प्रजा का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

4) पठीत पदों के आधार पर राम व्यक्तित्व को रेखांकित कीजिए।

निम्नलिखित पदों की स प्रसंग व्याख्या कीजिए

1) "कौसिक परम कृपालु, परमहित, समरथ, सुखद, सुचाली।

बालक सुठि सुकुमार सकोची, समुझि सोच मोहि आली।।"

2) "प्रमुदित-मन लोक-कोकनद कोकगन, / रामके प्रताप-रवि सोच-सर सोखे हैं।"

खंड – (स)

i) सही विकल्प चुनिए

1) गीतावली की पद संख्या 44 के अनुसार भगवान के सुंदर पीले वस्त्रों ने किसकी शोभा हर ली है?

अ) कमल की आ) बादल की इ) रत्नों की ई) बिजली की

2) राम अपने भाई से सकुचाते हुए कहाँ बात करते हैं?

अ) घर में आ) वाटिका में इ) सभा में ई) युद्ध में

3) गीतावली की पद संख्या 95 के अनुसार रामकथा सुनकर कौन संतुष्ट हो रहा है?

अ) लक्ष्मण आ) कवि इ) ईश्वर ई) राजा

4) सुमित्रा की वाणी से कौन-सा भाव प्रकट होता है?

अ) विनय का आ) क्रोध का इ) चिंता का ई) शांति का

ii) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1) सुमित्रा, राम-लक्ष्मण का .... न मिलने के कारण अशांत है।

अ) खड़ाऊ आ) व्यवहार इ) समाचार ई) धनुष

2) कुँवर .... का धनुष तोड़कर खड़े हैं।

अ) रावण आ) कृष्ण इ) महादेव ई) भरत

3) लक्ष्मण ने .... की बातों को डींग हाँकना कहा है।

अ) अकुशल प्रजा आ) नाकाम राजाओं इ) विनयी भक्तों ई) शक्तिमान राजा

iii) सुमेल कीजिए .

1. निषंग	अ) धनुष
2. चाप	आ) जूता
3. जानु	इ) तरकश
4. पनही	ई) घुटना

16.8 : पठनीय पुस्तकें

1. गीतावली – गीता प्रेस
2. त्रिवेणी – आ. रामचंद्र शुक्ल
3. गोस्वामी तुलसीदास – आ. रामचंद्र शुक्ल,
4. चिंतामणि (भाग पहला) – आ. रामचंद्र शुक्ल
5. हिंदी साहित्य की भूमिका – हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. तुलसीदास और उनका काव्य – रामनरेश त्रिपाठी
7. लोकवादी तुलसी – विश्वनाथ त्रिपाठी
8. परंपरा का मूल्यांकन – रामविलास शर्मा

इकाई : 17 : 'गीतावली' : बालकाण्ड – IV : व्याख्या

ई की रूपरेखा

17.1 प्रस्तावना
17.2 उद्देश्य
17.3 मूल पाठ : गीतावली : बालकाण्ड – IV : व्याख्या
17.3.1अध्येय पदों की व्याख्या
17.3.2 काव्यगत विशेषताएँ
17.4 पाठ सार
17.5 पाठ की उपलब्धियाँ
17.6 शब्द संपदा
17.7 परीक्षार्थ प्रश्न
17.8 पठनीय पुस्तकें

17.1 : प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! प्रस्तुत इकाई आज ''गीतावली'' (बालकाण्ड) के पद संख्या 104,105, 106, 107 और 110 का अध्ययन करेंगे।

'गीतावली' तुलसीदास द्वारा रचित रामकथा संबंधी पदावली का ग्रंथ है। लेकिन इसका कथानक शृंखलाबद्ध नहीं है। यह काण्ड क्रम से संकलित है। सूरदास के 'सूरसागर' के अनुकरण पर इसकी रचना होने के कारण यह भी वैसी ही सरस और मनोरम है। इसमें भी बाललीला और रामराज्य के सुख, ऐश्वर्य का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है, लेकिन अन्य घटनाओं का भी संक्षिप्त वर्णन है। इस ग्रंथ में कुछ गीतों में कथा की पुनरावृत्ति भी देखने को मिलती हैं। इस पदावली में तुलसीदास ने राम के मानवीय सौंदर्य का वर्णन किया है। इसमें कथानक और चरित्र उतना प्रधान नहीं है, जितना राम के अलौकिक सौंदर्य का दर्शन है।

17.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप :

- ❖ तुलसीदास की भक्ति के वैशिष्ट्य के विभिन्न पक्षों को रेखांकित कर पाएँगे।
- ❖ सगुण भक्ति धारा की रामोपासक भक्ति का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- ❖ 'गीतावली' की भाषा और काव्य सौंदर्य की विशिष्टता से अवगत होंगे।
- ❖ तुलसीदास की दार्शनिक चेतना और भक्ति पद्धति की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कर सकेंगे।
- ❖ पाठ्यक्रम में निर्धारित तुलसीदास की कविताओं की व्याख्या कर पाएँगे।

17.3 : मूल पाठ : गीतावली : बालकाण्ड – IV : व्याख्या

17.3.1 अध्येय पदों की व्याख्या

इस इकाई में निर्धारित पदों में तुलसीदास ने राम-सीता के विवाह प्रसंग का वर्णन किया है। इस प्रसंग में वर-वधू की शोभा उपस्थित जन समूह को किस प्रकार से प्रभावित करती है, इसका अत्यंत हृदयस्पर्शी वर्णन किया गया है।

104

मनमें मञ्जु मनोरथ हो, री !

सो हर-गौरि-प्रसाद एकतें, कौसिक, कृपा चौगुनो भो, री !॥

पन-परिताप, चाप-चिन्ता निसि, सोच-सकोच-तिमिर नहिं थोरी।

रबिकुल-रबि अवलोकि सभा-सर हितचित-बारिज-बन बिकसोरी ॥

कुँवर-कुँवरि सब मङ्गल मूरति, नृप दोउ धरमधुरधर धोरी।

राजसमाज भूरि-भागी, जिन लोचन लाहु लह्यो एक ठौरी ॥

ब्याह-उछाह राम-सीताको सुकृत सकेलि बिरञ्चि रच्यो, री।

तुलसिदास जानै सोइ यह सुख जेहि उर बसति मनोहर जोरी ॥

संदर्भ : प्रस्तुत पद तुलसीदास द्वारा रचित "गीतावली" के बालकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग : इस पदावली में कवि ने सीता के स्वयंवर के प्रसंग का वर्णन किया है। धनुष के न टूटने की स्थिति में उपस्थित राजसभा चिंतित है और ऐसे स्थिति में वहाँ राम का आगमन होता है और वे प्रतिज्ञा पूर्ण करते हैं। उसके बाद राम-सीता के विवाह के प्रसंग सविस्तार का वर्णन किया है।

व्याख्या : बारात देखकर जनकपुर की स्त्रियाँ कहने लगीं अरी सखि ! हमारे मन में जो एक मनोहर इच्छा थी। वह भगवान शंकर और पार्वती के आशीर्वाद से तथा विश्वामित्र की कृपा से चार गुना अधिक हो गयी है। प्रतिज्ञा करने का पछतावा और धनुष्य न टूटने की चिंता की उस रात में प्रतिज्ञा को छोड़ने की दुविधा और संकोच रूपी अंधकार कुछ कम नहीं था, लेकिन सूर्यकुल के सूर्य की तरह तेजस्वी रामचन्द्र को देखकर ही इस राजसभा रूपी सरोवर में चित्तरूप कमलों के फूलों का वन विकसित हो गया है। राम आदि राजकुमार और जानकी आदि सभी राजकुमारियाँ पवित्रता की साक्षात मूर्ति हैं और दोनों महाराज भी धर्मधुरंधरों में भी धुरंधर हैं। यहाँ देश-प्रदेश के राज-समाज की सहभागिता है, जिसने भी अपनी आंखों से यह दृश्य देखा उन सभी की दृष्टि एक स्थान पर नहीं रुक रही है। राम और सीता के विवाह का यह उत्साह विधाता

ने सारे सत्कर्म को एकत्र कर के रचा है। तुलसीदास कहते हैं, इस सुख को वही जान सकता है, जिसके हृदय में यह मनोहर जोड़ी विराजमान रहती है।

विशेष :

1. राम-सीता की जोड़ी को देख लोगों में उत्साह का संचार होता है।
2. प्रस्तुत पद में राम-सीता के विवाह के प्रसंग का वर्णन किया है।
3. प्रस्तुत पद में शृंगार रस के संयोग पक्ष का चित्रण हुआ है।
4. "रविकुल-रबि......बारिज बन बिकसोरी" में उपमा अलंकार का सुंदर प्रयोग कवि ने किया है।
5. 'पन-परिताप', 'कुँवर-कुँवरि' में द्वंद्व समास का प्रयोग हुआ है।

<u>**बोध प्रश्न**</u>

- धनुष्य न टूटने के अवसर पर राजसभा की स्थिति का मूल्यांकन कीजिए।
- प्रस्तुत पद में राम-सीता के विवाह के आरंभ का वर्णन किस प्रकार से हुआ है? स्पष्ट कीजिए।

105

राजति राम-जानकी-जोरी।
स्याम-सरोज जलद सुन्दर बर, दुलहिनि तड़ित-बरन तनु गोरी ॥
ब्याह समय सोहति बितानतर, उपमा कहुँ न लहति मति मोरी।
मनहुँ मदन मञ्जुल मण्डपमहँ छबि-सिँगार-सोभा इक ठौरी ॥
मङ्गलमय दोउ, अंग मनोहर, ग्रथित चूनरी पीत पिछोरी।
कनककलस कहँदेत भाँवरी, निरखि रुप सारद भै भोरी ॥
इत बसिष्ठ मुनि, उतहि सतानँद, बंस बखान करैं दोउ ओरी।
इत अवधेस, उतहि मिथिलापति, भरत अंक सुखसिन्धु हिलोरी ॥
मुदित जनक, रनिवास रहसबस, चतुर नारि चितवहिं तृन तोरी।
गान-निसान-बेद-धुनि सुनि सुर बरसत सुमन, हरष कहै कोरी?॥
नयननको फल पाइ प्रेमबस सकल असीसत ईस निहोरी।
तुलसी जेहि आनन्दमगन मन, क्यों रसना बरनै सुख सो री ॥

संदर्भ : प्रस्तुत पद तुलसीदास द्वारा रचित "गीतावली" के बालकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग : प्रस्तुत पद में राम-सीता के विवाह के पावन अवसर पर उपस्थित जन समुदाय तथा दोनों राज परिवारों के उत्साह का प्रसंग यहाँ चित्रित हुआ है। राम और सीता की जोड़ी विवाह के पवित्र बंधन में बंधने जाने के प्रसंग को कवि ने इस पद में वर्णित किया है।

व्याख्या : राम और जानकी की जोड़ी विराजमान है। वर नीलकमल एवं श्याममेघ के समान सुन्दर है तथा वधू बिजली के समान गोरे शरीर की है। विवाह के समय वे मण्डप के नीचे शोभायमान हैं। कवि कहते हैं कि इस समय मेरी बुद्धि को कहीं पर उसके लिए उपमा नहीं मिलती। मानो कामदेव के मण्डप में छबि और शृंगार रस की शोभा ही एकत्र हो गयी हो। दोनों ही परम मंगलमय और मनोहर अंगवाले हैं तथा चूनरी और पीताम्बरी के ग्रंथिबन्धन के सहित सुवर्णमय कलश की भँवरी दे रहे हैं। उस रूप माधुरी को देखकर शारदा की बुद्धि भी चकरा गयी। इधर वशिष्ठ और उधर मुनिवर शतानन्दये दोनों ओर से वर और वधू के वंश का बखान कर रहे हैं। तथा इधर अयोध्यापति दशरथ और उधर मिथिलाधिपति जनक आनन्दसिन्धु हिलोरकर अपनी गोद में भर रहे हैं। इस समय जनक जी परम प्रसन्न हैं, रनिवास स्नेहविवश हो रहा है तथा चतुर नारियाँ नज़र न लग जाये, इसलिए तिनका तोड़कर निहार रही हैं उस समय गान, निशान और वेदों की ध्वनि सुनकर देवता लोग फूलों की वर्षा करते हां। उस हर्ष का भला कौन बखान कर सकता है? इस प्रकार नेत्रों का फल पाकर सब नर-नारी प्रेमवश श्रीमहादेव का निहोरा देकर आशीर्वाद देते हैं। तुलसीदास कहते हैं, जिस सुख में मन भी आनन्द में डूब जाता है उसका जिह्वा भला कैसे वर्णन कर सकती है ?

विशेष :

1. कवि ने तत्सम शब्दावली का सुंदर प्रयोग किया है।
2. प्रस्तुत पद में राम-सीता के विवाह के प्रसंग का वर्णन किया है।
3. प्रस्तुत पद में शृंगार रस के संयोग पक्ष का चित्रण हुआ है।
4. 'राम-जानकी', 'गान-निसान-बेद-धुनि' (द्वंद्व समाज), 'मिथिलापति' (संबंध तत्पुरुष समास) आदि का प्रयोग किया है।

बोध प्रश्न

- वधु-वर के रूप सौंदर्य का वर्णन कीजिए।
- 'प्रस्तुत पद अलंकार का उत्तम उदाहरण है' इस वाक्य हो स्पष्ट कीजिए।

106

दूलह राम, सीय दुलही री

घन-दामिनि बर बरन, हरन-मन सुन्दरता नखसिख निबही, री ॥

ब्याह-बिभूषन-बसन-बिभूषित, सखि अवली लखि ठगि सी रही, री।

जीवन-जनम-लाहु, लोचन-फल है इतनोइ, लह्यो आजु सही, री ॥

सुखमा सुरभि सिँगार-छीर दुहि मयन अमियमय कियो है दही, री।

मथि माखन सिय-राम सँवारे, सकल भुवन छबि मनहु मही, री ॥

तुलसिदास जोरी देखत सुख सोभा अतुल, न जाति कही, री।

रुप-रासि बिरची बिरञ्चि मनो, सिला लवनि रति-काम लही, री ॥

संदर्भ : प्रस्तुत पद तुलसीदास द्वारा रचित "गीतावली" के बालकाण्ड से उद्‌धृत है।

प्रसंग : राम और सीता विवाह के इस मंगलमय वातावरण में दोनों के रूप-सौंदर्य का प्रसंग कवि ने उपर्युक्त पद में वर्णित किया हैं। दोनों वर-वधू का सौंदर्य उपस्थित जन के नेत्रों का तृप्त कर रहा है। वे इस मंगलकार्य में अपने आपको पा कर धन्य समझ रहें हैं।

व्याख्या : राम दूल्हा और सीता दुल्हन हैं। दोनों का मेघ और बिजली के समान सुन्दर वर्ण है तथा नख से लेकर शिखा-पर्यन्त मन को चुराने वाली सुन्दरता छायी हुई है। इन्हें विवाह के वस्त्राभूषणों से अलंकृत देख सारा सखी समाज ठगा-सा रह गया है। वास्तव में जीने का और जन्म का लाभ तथा नेत्रों का फल तो इतना ही है, जो आज पूरा-पूरा प्राप्त कर लिया है। कामदेव रूप ग्वाले ने मानो शोभारूप सुरभि से शृंगार रूप दूध दुहकर जो अमृतमय दही तैयार किया था उसे मथकर ही मक्खन रूप राम और सीता रचे हैं तथा सारे लोकों की शोभा उससे रहा-सहा मट्ठा है। तुलसीदास कहते है, उस जोड़ी को देखने से बड़ा सुख होता है; उसकी अतुलित शोभा कही नहीं जाती। उन्हें विधाता ने मानो रूप की राशि ही बनाया है तथा रति और काम को तो उनका केवल सीला (अनाज के वे दाने जो फसल कटने पर खेत में पड़े रह जाते हैं) और लवनी (अनाज का वह भाग जो फ़सल काटने का पारिश्रमिक के रूप में मजदूरी को दिया जाता है।) ही मिला है।

विशेष :

1. प्रस्तुत पद में नायक नायिका के रूप सौंदर्य का नख-शिख वर्णन किया है।
2. कवि ने तत्सम शब्दावली का सुंदर प्रयोग किया है।
3. प्रस्तुत पद में राम-सीता के विवाह के प्रसंग का वर्णन किया है।
4. प्रस्तुत पद में शृंगार रस के संयोग पक्ष का चित्रण हुआ है।
5. 'ब्याह-बिभूषन-बसन-बिभूषित', 'जीवन-जनम-लाहु' आदि शब्दों में समास का प्रयोग किया है।

बोध प्रश्न

- विवाह के समय राम-सीता के रूप सौंदर्य का वर्णन कीजिए।
- उपर्युक्त पद में कवि ने उपमाओं का प्रयोग किस प्रकार से किया है? स्पष्ट कीजिए।

107

जैसे ललित लषन लाल लोने।

तैसिये ललित उरमिला, परसपर लषत सुलोचन कोने ॥

सुखमासार सिगाँरसार करि कनक रचे हैं तिहि सोने।
रुपप्रेम-परमिति न परत कहि, बिथकि रही मति मौने ॥
सोभा सील-सनेह सोहावनो, समौ केलिगृह गौने।
देखि तियनिके नयन सफल भये, तुलसीदासहूके होने ॥

संदर्भ : प्रस्तुत पद तुलसीदास द्वारा रचित "गीतावली" के बालकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग : प्रस्तुत पद में कवि ने उर्मिला के रूप सौन्दर्य के प्रसंग का वर्णन हुआ है। उर्मिला और लक्ष्मण दोनों के मिलन का यह प्रसंग है।

व्याख्या : जैसे सुन्दर लावण्यधाम श्रीलषणलाल हैं वैसी ही सुन्दरी उर्मिला भी हैं। वे दोनों एक दूसरे को नेत्रों की कनखियों से देख रहे है। सुषमा और शृंगार के सार का सुवर्ण बनाकर फिर उसे सुवर्ण से ही मानो ये मूर्तियाँ रची हैं। इनके रूप और प्रेम की सीमा का वर्णन नहीं किया जा सकता; बुद्धि थककर मौन हो गयी है। जिस समय वे क्रीड़ा भवन में गये उस समय उनकी शोभा, शील और सुहावना स्नेह देखकर स्त्रियों के नेत्र सफल हो गये और अब तुलसीदास के भी होनेवाले है।

विशेष :

1. प्रस्तुत पद में उर्मिला के माध्यम से शृंगार रस के संयोग पक्ष का चित्रण हुआ है।
2. 'सुलोचन' शब्द का समास विग्रह है- सुंदर लोचन है जिसके (कर्मधारय समास) है।
3. 'रुपप्रेम-परमिति न परत कहि, बिथकि रही मति मौने॥' में अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया है।

<u>बोध प्रश्न</u>

- उर्मिला चरित्र-चित्रण कीजिए।
- उर्मिला के रूप सौंदर्य का चित्रण कीजिए।

110

मुदित-मन आरती करैं माता।
कनक-बसन-मनि वारि-वारि करि पुलक प्रफुल्लित गाता ॥
पालागनि दुलहियन सिखावति सरिस सासु सत-साता।
देहिं असीस ते बरिस कोटि लगि अचल होउ अहिबाता ॥
राम सीय-छबि देखि जुबतिजन करहिं परसपर बाता।
अब जान्यो साँचहू सुनहु, सखि! कोबिद बड़ो बिधाता ॥
मङ्गल-गान निसान नगर-नभ आनँद कह्यो न जाता।
चिरजीवहु अवधेस-सुवन सब तुलसिदास-सुखदाता ॥

संदर्भ : प्रस्तुत पद तुलसीदास द्वारा रचित "गीतावली" के बालकाण्ड से उद्धृत है।

प्रसंग : प्रस्तुत पद में माता कौशल्या नव विवाह् वधुओं को मंगल समय उपस्थित अन्य लोगों से मिलाती हैं, उस प्रसंग का चित्रण हुआ है।

व्याख्या : माता कौशल्या सुवर्ण, वस्त्र और मणि निछावर कर प्रेम से पुलकित और प्रफुल्लित हो प्रसन्न मन से आरती करती हैं। वे दुलहिनों को अपने ही समान अन्य सात सौ सासुओं के भी पाँवों लगना सिखाती हैं और वे सब आशीर्वाद देती हैं कि 'तुम्हारा सुहाग करोड़ों वर्ष तक अजेय रहे'। राम और सीता के सौंदर्य की आभा देखकर युवतियाँ आपस में बातें करती हैं कि 'अरी सखि! सुन, हम ने तो अब जाना है कि विधाता बड़ा ही चतुर है'। नगर और आकाश में मंगलगान हो रहा है और बाजे बज रहे हैं, उस समय का आनन्द शब्दों में बताया नहीं जा सकता। सब लोग यही आशीर्वाद दे रहे हैं कि तुलसीदास को सुख देनेवाले अयोध्या के राजा के सभी पुत्र चिरजीवी हों।

विशेष :

1. प्रस्तुत पद में शृंगार रस के संयोग पक्ष का चित्रण हुआ है।
2. प्रस्तुत पद में विवाह संस्कार का चित्रण हुआ है।
3. 'नगर-नभ' शब्द में इतरेतर द्वंद्व समास का प्रयोग हुआ है।

बोध प्रश्न

- विवाह को अवसर पर निभाई जाने वाली विधियों का वर्णन कीजिए।
- राम और सीता को वर-वधु के रूप में देखकर युवतियाँ आपस में क्या और क्यों वार्तालाप करती हैं। स्पष्ट कीजिए।

17.3.2 काव्यगत विशेषताएँ

'गीतावली' एक प्रगीतात्मक मुक्तक काव्य है जिसमें रामकथा को आधार बनाकर गीतों का संग्रह है। इसमें संग्रहित गीत विभिन्न राग-रागिनियों पर आधारित हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, "'गीतावली' की रचना गोस्वामी जी ने सूरदास जी के अनुकरण पर की है। बाललीला के कई एक पद ज्यों के त्यों 'सूरसागर' में भी मिलते हैं, केवल 'राम' 'श्याम' का अंतर है।.... उत्तरकाण्ड में जाकर सूर पद्धति के अतिशय अनुकरण के कारण उनका गंभीर व्यक्तित्व तिरोहित-सा हो गया है। जिस रूप में राम को उन्होंने सर्वत्र लिया है, उनका भी ध्यान उन्हें नहीं रह गया। सूरदास ने जिस प्रकार गोपियों के साथ श्रीकृष्ण हिंडोला झूलते हैं, होली खेलते हैं, वही करते राम भी दिखाए गए हैं।... राम की नखशिख शोभा का अलंकृत वर्णन भी सूर की शैली पर बहुत-से पदों में लगातार चला गया है। सरयू तट के इस आनंदोत्सव को आगे चलकर रसिक लोग क्या रूप देंगे इसका ख्याल गोस्वामी जी को न रहा।"

'गीतावली' में सौंदर्य वर्णन अत्यंत मार्मिक है। बालक राम, युवा राम, वर के रूप में राम, वधू के रूप में सीता, वनवासी राम-लक्ष्मण, सीता तथा राम के सौंदर्य वर्णन से सराबोर यह काव्य ग्रंथ है। बेहद मनोरम कल्पनाओं से मंडित चित्र प्रस्तुति में भावपक्ष अत्यंत प्रबल हुआ है।

बालक राम को देखकर माता-पिता के हृदय की मधुर भावनाओं का वर्णन आरंभ में किया गया है। जिस प्रकार से 'सूरसागर' में माता यशोदा श्रीकृष्ण की बाल चेष्टाओं को देखकर आनंद विभोर हो जाती हैं ठीक उसी प्रकार बालकाण्ड के शुरुआती पदों में माता कौशल्या श्रीराम की बाल चेष्टाओं को देखकर आनंद विभोर हो जाती हैं। तुलसीदास ने जन्म से लेकर क्रमशः प्रत्येक अवस्था के सौंदर्य का जो वर्णन किया है, वह दुर्लभ है। इसमें दास्य भाव की भक्ति होने के बावजूद वर्णन में दास और स्वामी की दूरी तथा मर्यादा का पालन किया है।

'गीतावली' में शृंगार रस के दोनों पक्षों का कवि ने मनोयोग से चित्रण किया है। जब राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ चले जाते हैं, उसके बाद वियोग वात्सल्य का आरंभ होता है। माता कौशल्या उनके लिए चिंतित हो जाती हैं। जहाँ विश्वामित्र के लिए राम अजेय बालक, वीर शूर एवं भगवान के अवतार हैं होने के बावजूद वहीं माता कौशल्या के लिए वे बच्चे ही हैं। वियोग का दूसरा मौका राम वन गमन के बाद आता है। यहाँ राम किशोरावस्था को पार कर चुके हैं लेकिन माँ के लिए वे अभी भी बालक ही हैं। राम माँ को व्याकुल देख शीघ्र लौट आने का आश्वासन देकर माता को तसल्ली देते हैं। फिर जब माता कौशल्या चित्रकूट से लौटकर आती है तब उनकी वेदना दुगुनी हो जाती है। इस दृश्य का कवि ने बड़ा ही हृदयद्रावक वर्णन किया है। शृंगार रस के चित्रण का एक प्रसंग यहाँ हम देख सकते हैं। यह वर्णन राम और सीता के विवाह के अवसर का है। कवि लिखते हैं –

> दूलह राम, सीय दुलही री
> घन-दामिनि बर बरन, हरन-मन सुन्दरता नखसिख निबही, री ॥
> ....
> रुप-रासि बिरची बिरञ्चि मनो, सिला लवनि रति-काम लही, री ॥

संयोग पक्ष की अपेक्षा वियोग पक्ष का वर्णन 'गीतावली' में अधिक मार्मिक है। हो सकता है कि स्वामी भाव के कारण अपने आराध्य का प्रेम वर्णन करने में तुलसी अपने आपको कुछ असमर्थ पाते हो। विवाह के बाद कवि ने संयोग शृंगार का ज्यादा वर्णन नहीं किया है। तुलसीदास ने अपनी मर्यादा का उल्लंघन किसी स्थान पर नहीं किया है। मर्यादा के अनुकूल जितना भी वर्णन कवि ने किया है वह बेजोड़ है, जिससे तुलसी की कवि प्रतिभा का दर्शन होता हैं। तुलसीदास के विरह वर्णन के विषय में रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है कि "भारत की कुलवधू का विरह आवारा आशिकों-माशूकों का विरह नहीं है वह जीवन के गांभीर्य को लिये हुए रहता है। यह पृथ्वी का भार उचारने वाला विरह है।" वियोग पक्ष के अन्तर्गत अशोक वाटिका में सीता का

विरह वर्णन दर्शनीय है। विरह में सीता दिन-रात राम-राम नाम रटती रहती है। सीता की इस व्यथा का वर्णन करते हुए तुलसीदास लिखते हैं –

कबहूँ कपि ! राघव आवहिंगे ?

मेरे नयन-चकोर प्रीतिबस राका-ससि-सुख बिखरावहिंगे।

विरह-अगिनि जरि रहील ता ज्यौं कृपा दृष्टि जल पलुहावहिंगे।।

शृंगार रस के अलावा 'गीतावली' में करुण रस को भी तुलसीदास ने महत्त्व दिया है। राजा दशरथ की मृत्यु, जटायु राम भेंट, लक्ष्मण शक्ति भेद तथा सीता को जब राम त्याग देते हैं यह सभी प्रसंग करुण रस से सराबोर हैं।

'गीतावली' की भाषा ब्रजभाषा है। भाषा-सौंदर्य की रक्षा के लिए तुलसीदास ने संस्कृत तत्सम शब्दों को अपनाया है। जैसे- माता, नयन, नृप आदि तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं समासों का भी प्रयोग किया है। जैसे- कनक-बसन-मनि, ब्याह-बिभूषन-बसन-बिभूषित, गान-निसान-बेद-धुनि, सुलोचना आदि। संस्कृत के अलावा अरबी-फारसी के प्रचलित शब्दों का भी निस्संकोच प्रयोग किया है। 'गीतावली' में वाच्यार्थ की प्रधानता के साथ-साथ लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ का भी प्रयोग किया है।

तुलसीदास ने अपने भावों की संप्रेषणीयता के लिए यथा-तथा अलंकारों का सहारा लिया है। इन अलंकारों में अनुप्रास अलंकार की अधिकता है लेकिन यमक शब्दालंकार के प्रयोग में तुलसी जितने सफ़ल रहे हैं वैसे अर्थालंकार में भी उन्हें सफ़लता मिली है -

मथि माखन सिय-राम सँवारे, सकल भुवन छबि मनहु मही, री ॥

बोध प्रश्न

- ''गीतावली'' के माध्यम से तुलसीदास की काव्य कला की समीक्षा कीजिए।
- "''गीतावली'' के माध्यम से तुलसीदास ने रसों का परिपाक किया है।" इस अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

17.4 : पाठ सार

प्रिय छात्रों! अब तक आप समझ ही गए होंगे कि भक्तिकालीन राम काव्य की यह उपलब्धि रही है कि वह अपने इष्ट के वर्णन का इस प्रकार से करते हैं कि भक्त, भक्ति के विविध रंगों में डूब जाता है। वैसे यह बात है कि रामकाव्य की अधिकतर रचनाएँ अवधी में लिखी गयी हैं लेकिन 'गीतावली' तुलसीदास की ब्रजभाषा में लिखी हुई अप्रतिम काव्य कृति है।

प्रस्तुत पदों के माध्यम से आप तुलसीदास का सूरदास वाला रूप देख सकते हैं। जिसमें तुलसीदास ने रामजन्मोत्सव से लेकर राम की सभी बाल लीलाओं का वर्णन बड़ी मार्मिक एवं

शालीनता के साथ किया है। इस ग्रंथ के अध्ययन से आप यह भी समझ गए होंगे की तुलसीदास अवधी के साथ ब्रजभाषा में भी अभिव्यक्ति की समान क्षमता के दर्शन पाठकों को कराते हैं।

17.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं –

1. इस इकाई के माध्यम से आपने राम-सीता विवाह के प्रसंगों का आस्वाद प्राप्त किया।
2. सगुण भक्ति धारा की रामोपासक भक्ति का परिचय प्राप्त कर पाए हैं।
3. 'गीतावली' की भाषा और काव्य सौंदर्य की विशिष्टता से अवगत हो गए हैं।
4. तुलसीदास की दार्शनिक चेतना और भक्ति पद्धति की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन प्राप्त किया है।
5. पाठ्यक्रम में निर्धारित तुलसीदास की कविताओं के भावार्थ को समझ गए है।

17.6 : शब्द संपदा

1. मनोरथ = अभिलाषा,इच्छा
2. कौसिक = इंद्र और शिव के लिए एक और नाम
3. परिताप = दु:ख, क्लेश,पीड़ा, व्यथा,दर्द, तकलीफ़
4. धोरी = धुरा (भार) धारण करने या वहन करने वाला, मुख्य; प्रधान
5. हितचित = चित्त की दो अवस्थाएँ, द्विविधि या अनिश्चय की अवस्था
6. उछाह = उत्साह
7. सकेलि = बहुत सारा
8. निहोरा = प्रार्थना या विनती करना
9. पालागनि = आदर-पूर्वक किसी पूज्य व्यक्ति के पैर छूने की क्रिया या भाव
10. अहिबात = सौभाग्य, सोहाग
11. तड़ित-बरन = बिजली के समान
12. तिमिर = अंधकार
13. बिकसोरी = विकसित
14. निसान = नगाड़ा, बाजा

17.7 : परिक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए ।

1. 'गीतावील' के आधार पर तुलसीदास के सौंदर्य वर्णन पर प्रकाश डालिए।
2. 'गीतावली' की काव्यात्मकता का मूल्यांकन कीजिए।
3. गीति काव्य की दृष्टि से 'गीतावली' की समीक्षा कीजिए।
4. 'गीतावली' के पठितांश के आधार पर राम-सीता के विवाह् का वर्णन कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए ।

1. पठीत पदावली के आधार पर तुलसीदास की भाषा पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।
2. तुलसीदास द्वारा राम की बाल लीलाओं का वर्णन पर लघु टिप्पणी लिखिए।
3. पठीत पदावली के आधार पर 'गीतावली' के कला-पक्ष पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
4. सीता स्वंयवर पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

स प्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. मुदित-मन आरती करैं माता।........अवधेस-सुवन सब तुलसिदास-सुखदाता ॥
2. दूलह् राम, सीय दुलही री........ सिला लवनि रति-काम लही, री ॥

खंड- (स)

I. सही विकल्प चुनिए (objective)

1. कवि ने किसके विवाह् का वर्णन प्रस्तुत पदावली में किया है ? ()

   अ) राम-सीता   आ) कृष्ण-रुक्मिणी   इ) लक्ष्मण- उर्मिला   ई) शिव-पार्वती

2. सीता किसकी पूत्री है ? ()

   ii. विश्वामित्र   आ) राजा दशरथ   इ) राजा जनक   ई) वासुदेव

3. राम की माता का नाम क्या है ? ()

   अ) सुमित्रा   आ) कौशल्या   इ) कैकेयी   ई) सुनयना

4. प्रस्तुत पद 'गीतावली' के किस काण्ड से लिए गए है ? ( )

   अ) बालकाण्ड   आ) अयोध्यकाण्ड   इ) अरण्यकाण्ड   ई) उत्तरकाण्ड

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. सो हर-गौरि-प्रसाद एकतें, ..., कृपा चौगुनो भो, री !॥
2. .... फल पाइ प्रेमबस सकल असीसत ईस निहोरी।
3. घन-दामिनि बर बरन, हरन-मन सुन्दरता .... निबही, री ॥

III. सुमेल कीजिए .

1. राजति राम	अ) सीय दुलही री
2. दूलह राम	आ) राघव आवहिंगे ?
3. मुदित-मन आरती	इ) जानकी, जोरी
4. कबहूँ कपि	ई) करै माता

17.8 : पठनीय पुस्तकें

1. गोस्वामी तुलसीदास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल प्रकाशन संस्थान, दिल्ली
2. लोकवादी तुलसी- विश्वनाथ त्रिपाठी; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
3. तुलसी काव्य मीमांसा- उदयभानु सिंह; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. तुलसी दर्शन- डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र; हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
5. तुलसी का मानस- डॉ. मुंशीराम शर्मा; ग्रंथम, रामबाग, कानपुर
6. तुलसीदास- डॉ. माताप्रसाद गुप्त; हिंदी साहित्य प्रेस, प्रयाग
7. हिंदी साहित्य की भूमिका- डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. ‘गीतावली’- गीता प्रेस, गोरखपुर
9. तुलसीदास और उनका काव्य- डॉ. रामनरेश त्रिपाठी; राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

इकाई 18 : विनय पत्रिका : एक परिचय

इकाई की रूपरेखा
18.1 प्रस्तावना
18.2 उद्देश्य
18.3 मूल पाठ : विनय पत्रिका : एक परिचय
18.3.1 'विनय-पत्रिका': सृजन की पृष्ठभूमि
18.3.2 'विनय-पत्रिका' नाम का औचित्य
18.3.3 'विनय-पत्रिका': भाव पक्ष
18.3.4 'विनय-पत्रिका': कला पक्ष
18.4 पाठ सार
18.5 पाठ की उपलब्धियाँ
18.6 शब्द-संपदा
18.7 परीक्षार्थ प्रश्न
18.8 पठनीय पुस्तकें

18.1 : प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के इतिहास में एक कालखंड ऐसा भी रहा है जिसे 'स्वर्णयुग' की संज्ञा प्रदान की गई है। सामान्यतया इसे भक्तिकाल के नाम से जाना जाता है। इस कालखंड के कवियों ने साहित्य सर्जन के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा से समस्त जनता को चमत्कृत कर दिया। इन्हीं कवियों की परंपरा में एक महत्वपूर्ण सगुण भक्त कवि हुए जिन्हें गोस्वामी तुलसीदास के नाम से जाना जाता है। उल्लेखनीय है कि गोस्वामी तुलसीदास का जीवन संघर्षपूर्ण रहा है। जीवन के आरंभिक वर्षों में ही माता-पिता से विछोह, वैराग्य की कथा या काशी के पंडितों द्वारा विरोध आदि ऐसी अनेक घटनाएं हैं जिससे उनके जीवन संघर्ष का पता चलता है। यह संघर्ष उनके कुछ ग्रंथों में भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है। राम-काव्य की सर्जना में जितनी सफलता तुलसीदास को मिली उतनी किसी अन्य कवि को नहीं। राम-भक्ति काव्य परम्परा में तुलसीदास अतुलनीय हैं। उनके द्वारा रचा गया साहित्य आज भी जनता में सर्वाधिक लोकप्रिय है। उन्होंने मर्यादा, नीति, त्याग, स्नेह, और विनयशीलता जैसे उदात्त आदर्शों को प्रतिष्ठित करने वाले अनेक ग्रंथों की सर्जना की है। उनके प्रमुख ग्रंथों में वैराग्य-संदीपनी, रामाज्ञा-प्रश्न, रामललानहछू, जानकी-मंगल, रामचरितमानस, पार्वती-मंगल, श्रीकृष्ण-गीतावली, गीतावली, विनय-पत्रिका, दोहावली, बरवै रामायण, कवितावली और हनुमानबाहुक आदि हैं। उपरोक्त सभी ग्रंथों में से

सर्वाधिक प्रसिद्धि रामचरितमानस, विनय-पत्रिका और कवितावली को मिली। गोस्वामी तुलसीदास की रामभक्ति का दर्शन रामचरितमानस में होता है जबकि उनकी विनयशीलता का प्रमाण विनय-पत्रिका में मौजूद है। चूँकि यह इकाई विनय-पत्रिका पर केंद्रित है इसलिए इस इकाई में हम विनय-पत्रिका के सभी पक्षों पर विचार-विमर्श करेंगे।

18.2 : उद्देश्य

प्रिय छात्रो! प्रस्तुत इकाई को पढ़कर आप :

- ❖ तुलसीदास के साहित्यिक वैशिष्ट्य की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- ❖ विनय-पत्रिका के वर्ण्य विषय की जानकारी हासिल कर सकेंगे।
- ❖ विनय-पत्रिका का विवेचन कर सकेंगे।
- ❖ तुलसीदास की काव्य-कला से अवगत हो सकेंगे।

18.3 : मूल पाठ : विनय पत्रिका : एक परिचय

18.3.1 विनय-पत्रिका : सृजन की पृष्ठभूमि

ऐसा जनविश्वास है कि गोस्वामी तुलसीदास जी के पवित्र और प्रभावोत्पादक उपदेशों के कारण शिव की नगरी काशी में राम-भक्ति का प्रभाव फैलने लगा। यह शैवजनों के लिए अप्रिय एवं असह्य बात थी। शैव अनुयायियों के बीच इसका बड़ा क्षोभ हुआ था। क्षोभ और असन्तोष का माहौल दिन-प्रति-दिन बढ़ता ही गया। तुलसीदास के ऊपर शैवसंप्रदाय के अनुयायियों के अनेक प्रकार के आक्रमण होते रहे। एक घटना इसी बीच घटित हुई, 'एक दिन एक हत्यारा, जिसे गोहत्या लगी थी, इधर-उधर पुकार कर कह रहा था कि राम के नाम पर कोई मेरे हाथ का भोजन खाकर मुझे गोहत्या से मुक्ति दिला दे।' यह पुकार जब तुलसी के कान में पड़ी तब उनसे न रहा गया। वे दयावश उस व्यक्ति को अपने पास बुलाए। उसके हृदय में राम के प्रति उद्भूत प्रेम को देखकर उसे बुलाकर प्रेमपूर्वक भोजन किया। इस भोजन के कारण वह व्यक्ति तो मुक्त हुआ किन्तु तुलसीदास के सामने अत्यंत विकट समस्या खड़ी हो गई। काशी के ब्राह्मणों ने बड़ा उपद्रव मचाया। सबने मिलकर गोस्वामी जी से पूछा कि, 'तुमने इसके साथ भोजन क्यों किया? क्या प्रमाण है कि यह हत्या से मुक्त हो गया?' इस प्रश्न को सुनकर तुलसीदास ने सामान्य रूप से इसका उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि रामनाम का प्रभाव ही ऐसा है जिससे इसे हत्या लग ही नहीं सकती। लेकिन काशी का अभिमानी पंडित समाज इतने से भला कब मानने वाला था? उन्होंने कहा कि यह बात स्वीकार नहीं की जा सकती है। यदि बाबा विश्वनाथ का नन्दी इस हत्यारे के हाथ से खा ले तो ऐसा समझा जा सकता है कि वह हत्या से मुक्त हो गया। अतः इस कार्य हेतु समय निश्चित करके पूरा आयोजन किया गया। समस्त जनता के देखते-देखते पत्थर के नन्दी ने राम-नाम के पुण्य- प्रभाव से उस हत्यारे के हाथ से दिया गया भोजन खा लिया। इस चमत्कार को देखकर पंडितों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। राम-नाम का प्रत्यक्ष प्रभाव देख कर

सभी राम की भक्ति में लीन हो गये। काशी शिवपुरी से रामपुरी का रूप धारण करने लगी। कलि का प्रभाव थोड़े से रामनाम के उच्चारण मात्र द्वारा दिनोंदिन क्षीण होने लगा। यह बात कलि के लिए असह्य थी। वह गोस्वामी जी को अनेक प्रकार की पीड़ा देने लगा। उसके भय से वे काँप गये। जब प्रत्यक्ष होकर उसने इन्हें डाँटना आरम्भ किया तब इन्होंने भी हनुमान जी की स्मृति की और अपनी समस्त अन्तर्वेदना का निवेदन किया। हनुमान जी प्रकट हुए और कहने लगे कि इस समय कलि का ही राज्य है। वह प्रबल है। मैं इसमें कुछ भी नहीं कर सकता हूँ। इसके लिए एक उपाय है और उसी से आपका काम बन जायगा। यदि आप एक पत्रिका विवरण सहित भगवान् श्री राम जी की सेवा में लिखे तो मैं उसे श्रीराम के समक्ष प्रस्तुत करके कराल कलिकाल को दण्ड दिला सकता हूँ तथा वह आपका मार्ग छोड़ देगा। यही मूल प्रेरणा और प्रवृत्ति है जिसे प्राप्त कर तुलसीदास जी ने कलि से मुक्ति पाने के लिए श्री रघुनाथ जी की सेवा में यह 'विनय-पत्रिका' लिखी जो ‘मुदित माथ नावत, बनी तुलसी अनाथकी, परी रघुनाथ हाथ सही है’ पर समाप्त हुई है। तुलसी की तो बन गई और तब से बनती रही है उनके साथ ही अनेक नर-नारी की भी बनती रही है जो श्रद्धा-विश्वास और विनय भावना से इसका मनन करते हैं।

विनय-पत्रिका हिंदी भक्ति साहित्य में विनय भावना का अन्यतम ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ भक्ति भावना ही नहीं, काव्य-कला की दृष्टि से भी उत्कृष्ट रचना है। इसमें कुल 279 पद हैं। यद्यपि यह स्फुट पदों का संग्रह है, किन्तु उसमें भी कवि ने एक सूक्ष्म कथा का संयोजन किया है। इसमें उनकी कवित्व शक्ति पूर्ण रूप से प्रकटित हुई है। उनके अगाध पाण्डित्य, काव्य-कौशल, शब्द-शक्ति आदि का पूरा परिचय मिलता है। यह पत्रिका प्रार्थना के रूप में सजाई गई है और अकृत्रिम गहरी आस्था के साथ लिखी गई है। कवि की आस्था को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इस पत्रिका को अवश्य ही आराध्य श्रीरामचन्द्र ने स्वीकार कर लिया होगा। यह ग्रंथ ‘रामचरितमानस’ के समान कलियुग की कुचाल से पीड़ित हृदय की एक अरजी या प्रार्थना-पत्र के रूप में अत्यंत प्रसिद्ध है।

‘विनय-पत्रिका’ में सबसे पहले मंगलाचरण के रूप में गणेश वन्दना तथा सूर्य, शिव, देवी, गंगा, यमुना, हनुमान, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता तथा राम एवं नर-नारायण की स्तुतियाँ हैं। यह भक्तों का कंठहार है। इसमें तुलसी की निजी भक्तिभावना का विकास देखने को मिलता है। भक्ति के विभिन्न भावों का जिस सच्चाई और स्वाभाविकता के साथ इसमें वर्णन हुआ है वह उत्कृष्ट गीतिकाव्य का नमूना है। इसमें भक्ति की सरल धारा असंख्य भावों के तरंगों से तरंगित होती हुई प्रवाहित हुई है। इसमें दैन्य, विश्वास, आत्मभर्त्सना, निर्वेद, बोध, दृढ़ता, हर्ष, गर्व, उपालंभ, मोह, चिंता-विषाद, प्रेम आदि विविध भाव अपने सजीव रूप में विद्यमान हैं। इसमें भक्तिरस का ही प्रवाह है। प्रस्तुत ग्रंथ में गोस्वामी जी ने गीतिकाव्य का शुद्ध और उत्कृष्ट नमूना रखा है। इसके माध्यम से कवि ने विभिन्न दार्शनिक मतभेदों के झमेले में न पड़कर एक भक्तिमार्ग को अपनाने का संकेत किया है।

बोध प्रश्न

- तुलसीदास के बढ़ते हुए प्रभाव और उनके रचनात्मक संघर्ष को वर्णित कीजिए?
- 'विनय-पत्रिका' के केंद्रीय को स्पष्ट कीजिए?

18.3.2 'विनय-पत्रिका' नाम का औचित्य

भारतीय चिंतकों द्वारा विकसित अनेक अवधारणाओं में से एक है - विनय। यह लोकनीति, नीति, धर्माचरण, आत्मानुशासन, लोक व्यवहार से जुड़कर ही विनयी को अहं की भावना से मुक्त करती है। लोक में उत्पन्न होने वाले मिथ्या और अभिमान के ठीक विपरीत यह आत्मा का नम्रतापूर्ण निवेदन है। यह आत्मज्ञान जन्य एक संस्कार है।

ह्रदय की एक विशेष दशा का नाम विनय है। इस दशा की प्राप्ति के लिए अहंकार का त्याग परम आवश्यक है। विनय उसी व्यक्ति में पाया जाता है जो सच्चा साधक होता है। विनय अध्यात्म की सर्वोच्च ऊँचाई है। 'पत्रिका' का अर्थ है - सामान्य जीवन में पत्र लेखन; व्यक्तिगत सुख-दुःख, संकट, कुशल, क्षोभ आदि के विषय में। साहित्य में दूत या दूती के द्वारा गुप्त संदेश पत्र के माध्यम से प्रेषित करने की परिपाटी मिलती है। सूर भी पत्र लेखन द्वारा आत्मकथ्य निवेदित करने की चर्चा करते हैं। यहाँ पत्रिका तुलसीदास का आत्मलेखन है। वह इस पत्रिका के माध्यम से अपनी निजी पीड़ा तथा आत्मकथ्य को श्रीराम तक पहुँचाना चाहते हैं। पत्रिका इसलिए लिखी गई है कि जीव की दीनता ईश्वर की केवल कृपा मात्र से, एक बार देख लेने से दूर हो जाएगी। जीव को वियोग, अपनी तुच्छता तथा दीनता से मुक्त करके अपनाए जाने की कामना ही इस पत्रिका का उपसंहार है। उनकी कृपादृष्टि मात्र से जीव का उद्धार और कल्याण निश्चित है। जीव के प्रति आराध्य का क्षणभर के लिए आत्मीयता भरा दृष्टिपात करना ही इस पत्रिका का मूल उद्देश्य है।

बोध प्रश्न

- 'विनय' को परिभाषित कीजिए।
- 'विनय-पत्रिका' के मूल उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

18.3.3 'विनय-पत्रिका' : भाव-पक्ष

विनय भावना की दृष्टि से तुलसीदास की सर्वाधिक प्रौढ़ रचना 'विनय-पत्रिका' है। डॉ. माताप्रसाद गुप्त ने इस विषय में लिखा है कि, "मानस यदि उनकी साधना का आदर्श रूप प्रस्तुत करता है तो विनय पत्रिका उन आदर्शों की अपने जीवन में स्थापना।" आचार्यों ने विनय-पत्रिका को श्रीरामचरितमानस का साधना रूप स्वीकार किया है। इसमें स्वानुभव की प्रामाणिकता, उक्तियों एवं कथनों की प्रौढ़ता परम्परा के माध्यम से अपने सृजन को जोड़कर तुलसी ने विनय-पत्रिका के जिस रचना रूप को प्रस्तुत किया है वह हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठ निधि सिद्ध होती है।

इस कृति की तुलना रामचरितमानस से ही की जा सकती है। यह कृति कुछ क्षेत्रों में मानस से भी बढ़कर है। श्रीरामचरितमानस में एक निर्दिष्ट कथा विधान है; विनय-पत्रिका में कोई निर्दिष्ट कथा विधान नहीं है। विनयपत्रिका में कई पद हैं जिनमें देवताओं के स्वरूप का गुण कथन है। ये पद वैष्णव, शैव और शाक्त सभी साहित्य में मिलते हैं। वे उनके गुण कथन द्वारा उन्हें प्रसन्न करके अपने अभीष्ट की याचना करते हैं लेकिन उनकी निष्ठा जैसी श्रीराम में है वैसी सूर्य, गणेश, गौरी, ब्रह्मा, विष्णु और शिव में नहीं। उनके पद उदार वैष्णवी आस्था के प्रतीक हैं।

विनय-पत्रिका में आध्यात्मिक अनुभव की दिव्यता है। उसमें वस्तुविन्यास का दुहरापन दिखाई पड़ता है। इसके वस्तु विन्यास में विशिष्टद्वैत के प्रपत्तिवाद का संशोधित स्वरूप दिखाई देता है। जीव के प्रति ईश्वर की अहेतुकी कृपा ही उसकी मूल अवधारणा है। भक्त कर्मकांड, ज्ञान, उपासना, योग आदि के द्वारा आराध्य का कृपा पात्र बनता है। इन सभी के मूल में भक्ति का होना अनिवार्य है। इसका वस्तुविधान कथात्मक न होकर भावात्मक है। विनय पत्रिका के अंतिम पदों में तुलसी ने जीव और ब्रह्म के पारस्परिक संबंध को व्यक्त करने की कोशिश की है। ये पद तुलसी की गूढ़ आध्यात्मिक साधना एवं भक्ति की रहस्यमयी सृष्टि से ओतप्रोत हैं।

विनय-पत्रिका का भावात्मक वातावरण श्रीरामचरितमानस से भिन्न है। इसमें एक भावात्मक परिवेश की सृष्टि की गई है जिसमें भक्ति की धारा स्वत: प्रवाहित है। इसमें अजस्र करुणा, गहन दैन्य, आवेगपूर्ण समर्पण तथा शरणागत के प्रति प्रतिबद्धता के भाव सर्वत्र दिखाई पड़ते हैं। विनय-पत्रिका में आध्यात्मिक आस्वादन की जो परिस्थिति चित्रित है वह एकान्तिक होते हुए भी रचना के स्तर पर सार्वजनीन है। कवि का कथन है -

आखर अरथ मंजु मृदु मोदक राम-प्रेम-पगि पागिहै।

× × × × × ×

राम-प्रसाद दास तुलसी राम-भगति-जोग जागि है।

श्रीराम भक्तियोग की तन्मयावस्था का वातावरण सृजन विनय-पत्रिका का लक्ष्य है। यह संसार प्रत्येक भाँति नश्वर और तत्त्वहीन है। इसलिए सबको मिथ्या आभास रूप समझ कर एकमात्र ईश्वर की शरण में आ गिरता है। तुलसी कहते हैं -

परम कठिन भव-व्याल-ग्रसित हौं त्रसित भयो अति भारी।
चाहत अभय भेंक सरनागत, खगपति-नाथ बिसारी॥

व्यक्ति द्वारा उत्पन्न किया हुआ शोक विनय-पत्रिका में सर्वत्र मिलता है। प्रत्येक मनुष्य इस संसार में अकेलेपन और पीड़ा का अनुभव करता है। छटपटाते और परेशान मनुष्य की ईश्वरीय सत्ता से एकता स्थापित करने की अनन्य निष्ठा भरी गाथा विनय-पत्रिका में मौजूद है।

विनय-पत्रिका में विविध विषयों की व्याख्या की गई है। इसमें तुलसीदास द्वारा वर्णित कुछ प्रमुख विषयों पर उनकी मान्यता की चर्चा यहाँ अपेक्षित है। अतः कुछ प्रमुख विषयों पर तुलसी की मान्यताओं का विवेचन निम्नरूप में किया गया है।

धर्म : सनातन का सिद्धान्त मर्यादा है। यह मर्यादा कुछ नियमों के द्वारा स्थिर रहती है। समय-समय पर आचार्यों ने इन नियमों की व्याख्या की है। मनुस्मृति से लेकर गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस तक में इसकी व्याख्या की गई है। इस संबंध में मनु ने लिखा है :

धृति: क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रह:।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

आशय यह है कि धैर्य (धृति), क्षमा (अपना अपकार करने वाले का भी उपकार करना), दम (हमेशा संयम से धर्म में लगे रहना), चोरी न करना (अस्तेय), शौच (भीतर और बाहर की पवित्रता), इन्द्रिय-निग्रह (इन्द्रियों को हमेशा धर्माचरण में लगाना), धी (सत्कर्मों से बुद्धि को बढ़ाना), विद्या (यथार्थ ज्ञान लेना), सत्यम (हमेशा सत्य का आचरण करना) और अक्रोध (क्रोध को छोड़कर हमेशा शांत रहना) ही धर्म के दस लक्षण हैं। इन्हें मौलिक या सनातन सत्य कहते हैं, जो प्रत्येक समाज और काल के लिए अटल, अचल हैं। कुछ नियम ऐसे भी हैं जिनका समाज की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं और परिस्थितियों के कारण, देशकाल के अनुसार परिवर्तन आवश्यक हो जाता है। इसी आवश्यकता के अनुसार भिन्न-भिन्न समयों के लिए भिन्न-भिन्न स्मृतियाँ रची गईं।

हमारे शास्त्रों में 'धर्म-ग्लानि' शब्द का प्रयोग अनेक स्थलों पर आता है, यथा 'यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत' या 'जब-जब होइ धरम की हानी।' इसका तात्पर्य क्या है? 'मर्यादा भंग' के अर्थ में इसका प्रयोग हुआ है। धर्म की हानि किस प्रकार हुई इसका चित्र खींचते हुए तुलसीदास ने इसी मर्यादा-भंग का चित्र खींचा है। इसका उदाहरण देखिए -

आश्रम-बरन-धरम-बिरहित जग, लोक-बेद-मरजाद गई है।
प्रजा पतित, पाखंड-पापरत, अपने अपने रंग रई है॥

भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवतगीता में स्वधर्म पालन पर सर्वाधिक बल दिया है। समाज को सुचार रूप से चलाने के लिए ही श्रम-विभाग अर्थात् वर्णों और आश्रमों की व्यवस्था की गई थी और उन्हें अलग-अलग दायित्व दिए गए। श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं कि –

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्।

उपरोक्त चारों वर्णों के अलग-अलग कार्य निर्धारित किए गए थे। उनके निश्चित कर्त्तव्य के साथ-साथ अधिकार थे। किन्तु एक व्यक्ति यदि अपना कर्त्तव्य न पालन करे और अधिकारों के लिए लड़ता रहे तो मर्यादा भंग हो जायगी। अधिकारों की प्राप्ति के साथ कर्त्तव्यों का पालन आवश्यक है। इनका सामंजस्य बिगड़ जाने से समाज की मर्यादा भंग हो जाती है और उसी को 'धर्म-ग्लानि' कहते हैं। तुलसीदास के समय में देश की स्थिति कुछ ऐसी ही थी, जिसका 'विनय-पत्रिका' में वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त उनकी अन्य रचनाओं में भी इस पर पूरा प्रकाश डाला गया है।

समकालीन समस्याएँ : गोस्वामी तुलसीदास जिस समय में मौजूद थे उस समय में देश में लोगों का आदर्श नष्ट-भ्रष्ट हो गया था। वे आचरण-हीन हो गए थे। व्यक्तियों के पतित हो जाने से किसी भी परिवार का पारिवारिक संबंध सही नहीं रह गया था। वर्णाश्रम व्यवस्था टूट चुकी थी। देश पर वे ही राज कर रहे थे जिनका धर्म से कोई सरोकार नहीं था। स्वधर्म और स्वजाति पर अत्याचार हो रहा था। धर्म का स्वरूप शिथिल/संकीर्ण हो चुका था। अलग-अलग संप्रदायों और मतों के चक्कर में सामान्य जनता को कोई भी व्यक्ति सरल और सीधा मार्ग सुझाने वाला न था। लोग नियमों को ही धर्म समझ बैठे थे। देश की आत्मा गुलाम हो चुकी थी। तलवार के सामने अपने धर्म और उसकी मर्यादा का पालन करना कठिन हो गया था। न केवल धर्म का पालन कठिन हो गया था बल्कि उस धर्म के पालन करने वालों का अस्तित्व भी संदेहजनक हो गया था। उस समय की परिस्थिति का वर्णन तुलसीदास ने 'विनय-पत्रिका' में निम्नलिखित ढंग से किया है :

दीनदयाल, दुरित दारिद दुख दुनी सकल तिहुँ ताप तई है।
देव! दुवार पुकारत आरत, सबकी सब सुख हानि भई है॥

उल्लेखनीय है कि तुलसीदास केवल अपने दुख के लिए भगवान राम के पास अपनी अर्जी नहीं भेजते हैं। वे जिस समाज में रह रहे हैं उसमें चारों ओर दुःख और अभाव का बोलबाला है। इस दुःख और दारिद्र्य से सबकी मुक्ति हेतु वे प्रतिनिधि बनकर ईश्वर के पास सबकी अर्जी भेजते हैं। उन्होंने अपने समय की राज-व्यवस्था का यथार्थ वर्णन किया है। समाज का वर्णन करने के क्रम में उन्होंने लिखा है कि राजा भूमिचोर (भूमिचार भूव भये) तथा प्रजा का भक्षण करने वाले (भूप प्रजाशन) हो गए हैं। इस प्रसंग का एक पद द्रष्टव्य है :

राज-समाज कुसाज कोटि कटु कलपित कलुष कुचाल नई है।
नीति प्रतीति प्रीति परमिति पति हेतुबाद हठि हेर हई है॥

देश की सामान्य जनता पर ऐसे शासन का जो प्रभाव पड़ सकता था वह पड़ा। देश की साधारण प्रजा भी अत्यंत पतित तथा संगठन-हीन हो गई थी। उनकी यह अवनति इस गुलामी का ही फल था। इस संदर्भ में तुलसीदास ने लिखा है :

सांति, सत्य, सुभ, रीति गई घटि, बढ़ी कुरीति, कपट-कलई है।
सीदत साधु, साधुता सोचति, खल बिलसत, हुलसति खलई है॥

उस समय में अनेक दुर्गुणों का बोलबाला था। उन्होंने रावण आदि राक्षसों के अत्याचारों का वर्णन किया है। समाज के नेता ब्राह्मणों की दशा इस रूप में थी :

प्रभु के बचन वेद-बुध-सम्मत मम मूरति महिदेवमई है।
तिनकी मति रिस राग मोह मद, लोभ लालची लीलि लई है॥

समाज के रक्षक वर्ग (क्षत्रिय समाज) आपस की फूट में मस्त था। ऐसी स्थिति में दुष्टों की प्रबलता और सज्जनों को कष्ट होना स्वाभाविक ही है। श्रम तथा मर्यादा का तो लोप सा हो गया था। इसका प्रतिफल यह हुआ कि जो स्वाभाविक रूप से निम्न सोच रखने वाले थे वे सिर पर चढ़ गए। इस संबंध में तुलसीदास ने लिखा है :

त्यों-त्यों नीच चढ़त सिर ऊपर ज्यों-ज्यों सीलबस ढील दई है॥

आशय यह है कि गोस्वामी तुलसीदास ने अपने युग के यथार्थ को सम्यक रूप से वर्णित किया है। उन्होंने अपने युग की सामाजिक समस्या को बहुत बारीक निगाह से देखने का प्रयास किया है।

देश-भक्ति : तुलसीदास की निगाह में देश की सामान्य जनता की सेवा देश-भक्ति का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। उन्होंने कहा कि 'परहित-निरत सो पारन बहुरि न ब्यापत सोक।' 'परहित' को तुलसीदास राम-भक्ति का ही अंग समझते हैं। भारत में जन्म लेना भी वे गौरव की बात समझते हैं। 'विनय पत्रिका' में उनकी देश-हितैषी प्रार्थना का स्वरूप निम्न पंक्तियों में देख सकते हैं-

सरुष बरजि तरजिये तरजनी, कुम्हिलैहै कुम्हड़े की जई है।
दीजै दादि देखि ना तौ बलि, मही मोद-मंगल रितई है॥

'विनय-पत्रिका' प्रारम्भ से अन्त तक जगत् पिता के प्रति एक दुःखी देश-हितैषी का प्रार्थना-पत्र है। यह विश्व सम्राट के सम्मुख उपस्थित किया गया है और उन्होंने प्रसन्न होकर उसे स्वीकार भी कर लिया है। इस संबंध में एक पद द्रष्टव्य है :

राम-राज भयो काज, सगुन सुभ, राजा राम जगत-बिजई है।
समरथ बड़ो सुजान सुसाहब, सुकृत सैन हारत जितई है॥

शील, स्वभाव और सौंदर्य : तुलसीदास जी राम के सौंदर्य पर बार-बार मुग्ध हुए हैं। उनकी अद्भुत शक्ति (धनुषयज्ञ आदि में) देखकर श्रद्धा से विनत हुए हैं। राम के विचित्र शील-स्वभाव को देख कर गोस्वामी जी ने अपना सारा हृदय ही समर्पित कर दिया है। किसी भी सहृदय व्यक्ति पर उनके अद्भुत शील का प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। शरणागत वत्सलता, दीनों पर दया तथा पतितों पर करुणा देखकर पापी से पापी हृदय भी द्रवीभूत हो जाता है। उनका एक पद द्रष्टव्य है :

जानत प्रीति-रीति रघुराई।
नाते सब हाते करि राखत, राम सनेह-सगाई॥

नेह निबाहि देह तजि दसरथ, कीरति अचल चलाई।
ऐसेहु पितु तैं अधिक गीधपर ममता गुन गरुआई॥
तिय-बिरही सुग्रीव सखा लखि प्रानप्रिया बिसराई।
रन परयों बंधु बिभीषन ही को, सोच ह्रदय अधिकाई॥
घर गुरुगृह प्रिय सदन सासुरे, भइ जब जहँ पहुनाई।
तब तहँ कहि सबरीके फलनिकी रुचि माधुरी न पाई॥
सहज सरुप कथा मुनि बरनत रहत सकुचि सिर नाई।
केवट मीत कहे सुख मानत बानर बंधु बड़ाई॥
प्रेम-कनौड़ो रामसो प्रभु त्रिभुवन तिहुँकाल न भाई।
तेरो रिनी हौं कह्यो कपि सौं ऐसी मानिहि को सेवकाई॥
तुलसी राम-सनेह-सील लखि, जो न भगति उर आई।
तौ तोहिँ जनमि जाय जननी जड़ तनु-तरुनता गवाँई॥

ऐसे उदार चरित्र की कीर्ति को सुनकर सभी का हृदय द्रवित हो जाता है। उसके ऊपर जो भी प्रभाव पड़ेगा, उससे संपूर्ण विश्व का कल्याण होना सुनिश्चित है।

साधना-पद्धति : गोस्वामी तुलसीदास के साधना का स्वरूप समन्वयवादी था। जीवन के साधनों के साथ समाज के सभी पक्षों का तुलसीदास ने समन्वय किया है। उन्होंने अपने समय में प्रचलित सभी आत्मप्राप्ति के मार्गों का सम्यक मूल्यांकन किया। उनके मूल्यांकन का परिणाम यह हुआ कि उन्होंने प्रचलित सभी मतों को व्यर्थ पाया या कष्टसाध्य। निम्नलिखित पद में उन्होंने सबकी परीक्षा की है तथा अन्त में राम की भक्ति को ही सर्वश्रेष्ठ सिद्ध पाया है :

बहु मत मुनि बहु पंथ पुराननि जहाँ-तहाँ झगरो सो।
गुरु कह्यो राम-भजन नीको मोहिँ लगत राज-डगरो सो॥
तुलसी बिनु परतीति प्रीति फिरि-फिरि पचि मरै मरो सो।
रामनाम-बोहित भव-सागर चाहै तरन तरो सो॥

इससे यह स्पष्ट है कि तुलसीदास ने तप, व्रत, दान, यज्ञ, योग, ज्ञान, वैराग्य आदि सब मार्गों के बीच पड़े हुए संसारी लोगों की दशा बतलाकर सबकी कठिनाई सिद्ध कर भक्ति ही को सबसे सरल मार्ग बतलाया है। सब मतों की एकता और सबका आदर करते हुए भी वे अपने विशेष मत को नहीं छोड़ते हैं। वे किसी की निन्दा नहीं करते हैं, केवल अपने प्रेम धर्म का सर्मथन करते हुए चलते हैं। इस प्रकार तुलसीदास ने सभी सम्प्रदायों के प्रति समादर की भावना रखते हुए उसका मण्डन किया है और उसकी कठिनाइयों को बतलाया है। उसमें शैव और वैष्णव आदि भिन्नमत वाले एक हो गये हैं। गोस्वामी तुलसीदास सभी देवताओं से समझौता कर सकते थे किन्तु ऐसे देवता से वे कभी भी मेल नहीं रखते थे, जिसके आचरण में पवित्रता न आ सके। वे

क्षुद्र कामनाओं को पूर्ण करने वाले भूत-प्रेतादि तथा अन्यान्य क्षुद्र देवताओं को स्वार्थी समझते हैं और उनकी पूजा की गणना महापापों में करते हैं। वे यहाँ तक कहते हैं कि जिनकी प्रीति श्रीरामचंद्र जी से नहीं है वे इस संसार में भटकते हुए जीवों के समान हैं :

जो पै रहनि राम सो नाहीं।
तौ नर खर कूकर सूकर सम बृथा जियत जग माहीं॥

प्रेम-धर्म और उसकी सीमा: तुलसीदास ने धर्म को 'प्रेम-धर्म' भी कहा है। उनका यह कथन निरधार नहीं है, क्योंकि भक्ति-मार्ग कहने से भक्ति के सभी पंथों का बोध होता है। यही कारण है कि उन सभी भक्तिमार्गों से अलग करने के लिए तुलसीदास की भक्ति-पद्धति को 'तुलसी-मत' या 'प्रेम-धर्म' कहा जाता है। उनका संपूर्ण जीवन इसी के प्रचार-प्रसार में लगा रहा। इनमें प्रेम की पराकाष्ठा, भक्ति-तल्लीनता तथा प्रीति-प्रतीति आदि जिस कोटि में पाई जाती है, उतनी दूसरे किसी भी महात्मा में नहीं मिलती। इनकी रचना प्रेम की विकसित वाटिका है। विनय-पत्रिका में इनके प्रेम का उद्गार स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ता है :

श्रवन कथा, मुख नाम, हृदय हरि, सिर प्रनाम, सेवा कर अनुसरु।
नयननि निरखि कृपा-समुद्र हरि अग-जग-रूप भूप सीताबरु॥

गोस्वामी तुलसीदास जी अपने इसी प्रेम की तल्लीनता के कारण प्रेम को नाम से श्रेष्ठ समझते हैं। बाहरी दिखावा या नाम की चिन्ता न करके वे प्रेम की सरसता को अधिक रुचिकर समझते हैं।

तुलसीदास का प्रेम अपरिमित था। निम्नस्तर से लेकर उच्चस्तर तक के जीवों के लिए गोस्वामी जी इसका विस्तार मानते हैं। वे व्यक्ति-परिवार से लेकर जाति, देश आदि की सीमा से पार विश्व की अनंत सीमा तक प्रेम का प्रसार मानते हैं। प्रेम जिस शरीर में हो, उसके लिए समादर की भावना रखते हैं। इस विषय में छूत-अछूत का कोई प्रश्न नहीं है। वे प्रेमी के हृदय की पूजा करते हैं। निषाद और चाण्डाल को भी प्रेम के कारण हृदय से लगाते हैं और प्रेम को जीवन का अनिवार्य रस समझते हैं। प्रेम के संबंध को संसार के सभी संबंधों से अधिक प्रिय मानते हैं :

नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं।
अंजन कहा आँखि जेहि फूटै, बहुतक कहौं कहाँ लौं॥
तुलसी सो सब भाँति परम हित पूज्य प्रानते प्यारो।
जासों होय सनेह राम-पद, एतो मतो हमारो॥

स्पष्ट है कि प्रेम को ही इन्होंने धर्म का रूप प्रदान किया है। संसार के सम्बन्ध जहाँ पर प्रेम में बाधक होते हैं तुलसीदास उसे छोड़ देने का उपदेश देते हैं।

जाके प्रिय न राम-बैदेही।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही॥

तुलसीदास जी प्रेम के महत्व और उसके सौन्दर्य को समझकर उसे राम के चरणों में समर्पित कर देते हैं। उसकी परिधि में सम्पूर्ण विश्व को आलिंगित कर लेते हैं। गोस्वामी जी ने इसी प्रेम के आधार पर संपूर्ण विश्व में फैली हुई उदासीनता का लोप करने का मार्ग सुझाया है।

विभिन्न देवी-देवताओं का समन्वय : तुलसीदास ने 'विनय-पत्रिका' में सभी देवी-देवताओं के बीच समन्वय का मार्ग सुझाया है। यह सर्वविदित है कि भारतीय धर्म की चित्तवृत्ति आरम्भ ही से सर्वदेव समन्वय की रही है। समस्त नदियाँ जिस प्रकार समुद्र में ही जाती हैं, उसी प्रकार सभी मार्ग उस एक की खोज में रहते हैं। उपनिषदों तथा गीता के विराट रूप को भागवत आदि पुराणों में भी यही स्वीकार किया गया है।

ध्यातव्य है कि श्रीमद्भागवत वैष्णव धर्म का प्रमुख ग्रंथ है। तुलसीदास वैष्णव धर्म की उपासना तो करते ही हैं साथ ही शिव की उपासना को भी मानते हैं। भर्तृहरि ने तो शैव, वेदांती, नैयायिक, मीमांसक, जैन सभी के उपास्य को उसी एक ही 'हरि' को बताया है। इसी उदारता के कारण ही बौद्धों के 'बुद्ध' और जैनों के 'ऋषभ देव' को हिन्दू अवतारों में सम्मिलित कर लिया गया। अन्य अवतारों की भाँति उनकी भी स्तुतियों की गई हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने ईश्वर का स्वरूप उपनिषदों के अनुरूप ही माना है तथा उसके ही समान भिन्न-भिन्न देवताओं को उन्हीं का रूप अथवा अंग माना है। गीता में जिस तरह श्रीकृष्ण के बृहद स्वरूप का वर्णन किया गया है ठीक उसी प्रकार तुलसीदास ने राम के विश्वरूप में सभी देवताओं को एकाकार कर दिया है। 'विनय-पत्रिका' में उन्होंने सभी अवतारों की स्तुति की है, साथ ही उन सभी अवतारों में राम के ही स्वरूप का विस्तार बताया है। उन्होंने मत्स्य, बाराह, कूर्म, नृसिंह, बामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध की स्तुति के साथ-साथ कल्कि अवतार का भी वर्णन किया है। बौद्धमत के विषय में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। कुछ लोगों के मत से बौद्धमत नास्तिक मत है, किन्तु कुछ आलोचक इससे असहमत हैं। स्वयं बुद्ध भगवान् ने कहा है कि 'ब्रह्म का अंश है, पूर्ण प्रज्ञ परमात्मा स्वरूप है।' तुलसीदास ने बुद्ध भगवान् का स्मरण बड़ी ही श्रद्धा एवं प्रेमास्पद विशेषणों के साथ किया है। यह उनकी उदारता का परिचय है। वैदिक देवताओं में उनकी विशेष श्रद्धा न थी। उनके द्वारा राम की स्तुति की गई है। यही कारण है कि विनय-पत्रिका में उन्होंने गणेश, सूर्य, पार्वती, शिव आदि की स्तुतियाँ की है। इसमें उनकी विशेषता यह है कि इन देवताओं की स्तुति करते हुए भी राम की भक्ति के लिए ही याचना की गई है :

माँगत तुलसिदास कर जोरे। बसहु राम सिय मानस मोरे॥ (गणेश स्तुति)

बेद-पुरान प्रगट जस जागै। तुलसी राम-भगति बर माँगै॥ (सूर्य-स्तुति)

स्पष्ट है कि तुलसीदास के सर्वाधिक प्रिय राम हैं। वे राम का जितना महिमगान करते हैं वैसा कोई अन्य रामभक्त नहीं हुआ।

बोध प्रश्न

- विनय-पत्रिका में वर्णित सर्वदेव समन्वय की भावना पर प्रकाश डालिए।
- विनय-पत्रिका में वर्णित समकालीन समस्याओं को संक्षित रूप में बताएं।

18.3.4 विनय-पत्रिका: कला पक्ष

साहित्य का एक अनिवार्य अंग उसका कला-पक्ष होता है। विनय-पत्रिका का कला-पक्ष प्रौढ़, प्रांजल एवं मार्जित है। गोस्वामी तुलसीदास का शब्द-भंडार बहुत विशाल है। उसमें भाषा-शैली की विविधता और बहुलता समावेशित है। प्रस्तुत रचना की भाषा ब्रज है जिसमें संस्कृत और सामासिक पदावली का मणिकांचन संयोग है। इसमें ब्रज भाषा के सरलतम रूप के साथ-साथ उसका क्लिष्टतम रूप भी दिखाई पड़ता है। गोस्वामी जी ने सीधी-सादी व्यावहारिक संस्कृतनिष्ठ ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। विनय-पत्रिका के सरलतम और क्लिष्टतम पद का एक-एक उदाहरण क्रमशः प्रस्तुत है :

1. ऐसे राम दीन-हितकारी।
अति कोमल करुना निधान बिनुकारन पर उपकारी॥

2. मोह-तम-तरणि, हर, रूद्र, शंकर, शरण, हरण-मम शोक, लोकाभिरामं।
बाल-शशि-भाल, सुविशाल लोचन-कमल, काम-सतकोटि-लावण्य-धामं।।
कंबु-कुंदेदु-कर्पूर-विग्रह रूचिर, तरूण-रवि-कोटि तनु तेज भ्राजै।
भस्म सर्वांग अर्धांग शैलात्मजा, व्याल-नृकपाल-माला विराजै।

गोस्वामीजी की भाषा भाव के अनुरूप है। देवताओं के महिमा-गान की भाषा संस्कृत गर्भित है। उनका भगवान के प्रति आवेदन अत्यंत राजकीय आवेदन-पत्र शैली में हुआ है। इसमें फारसी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे- गच, गुलाम, महल, सौदा, साहिब, लायक, सरस आदि शब्द। उनकी एक विशेषता यह भी है कि वे समसामयिक प्रचलित भाषाओं से शब्दों को ग्रहण करते हैं और सफलता के साथ उसका प्रयोग भी। उन्होंने लोकोक्ति और मुहावरों का भी आश्रय लिया है। जैसे 'नहिं कुंजरो नरो' 'गाड़ी के स्वान की नाहीं' आदि लोकोक्तियों तथा 'सतरंज कौ सौ राज', 'पेट खयालो', 'लोचन जनिफेरो' आदि मुहावरों के प्रयोग द्रष्टव्य हैं। इनकी भाषा सर्वत्र प्रसाद गुणभुक्त है। कुछ पद माधुर्य गुण से युक्त है। शिव हनुमान आदि की स्तुति इसका उदाहरण है :

जयति मरुदंजनामोद-मंदिर नतग्रीव, दुखैक-बन्धो।

रस- अभिव्यक्ति : 'विनय पत्रिका' में भक्ति रस की प्रधानता है। भक्ति रस का स्थायी भाव 'देव रति' है। काव्य में जहां ईश्वर के प्रति प्रेम या अनुराग का वर्णन होता है वहां भक्ति रस की ओजस्र धारा प्रवाहित होती। भक्ति रस का संचारी भाव- भक्ति भावना और उद्दीपन- धर्म स्थल व ईश्वर प्रतिमा/मूर्ति/ स्वरूप इत्यादि है। आलंबन- ईश्वर, गुरु, साधु, संन्यासी आदि तथा अनुभाव- शरणागत होना व समर्पित होना है। विनय-पत्रिका में उक्त भाव का निरूपण बखूबी

हुआ है। इस ग्रन्थ के आरम्भ में गणेश, सूर्य, शिव सहित अन्यान्य देवी-देवताओं का आलंबन रूप में वर्णन किया गया है किन्तु उन पदों में भी राम से ही याचना की गई है। भक्तिरत तुलसीदास के आलंबन राम हैं। वे सर्वत्र राम का ही स्मरण, याचना और यशोगान करते हैं। यहाँ तक कि 'राम' से विमुख होने वालों की भर्त्सना करते हैं। कुछ पदों में उनके आराध्य परम दयालु हैं। वे कहते हैं-

देव! दूसरो कौन दीनको दयालु।
सीलनिधान सुजान-सिरोमनि, सरनागत-प्रिय प्रनत-पालु॥
को समरथ सरबज्ञ सकल प्रभु, सिव-सनेह-मानस मरालु।
को साहिब किये मीत प्रीतिबस खग निसिचर कपि भील भालु॥

राम नाम को महत्व देते हुए उन्होंने कहा है कि यही भव संसार से उद्धारक हैं -

कलि नाम कामतरु राम को।
दलनिहार दारिद दुकाल दुख, दोष घोर घन घामको॥

इस ग्रन्थ में अनेक पदों में शांत रस (स्थायी भाव-निर्वेद) के साथ कभी-कभी अन्य रस-करुण,अद्‌भुत आदि की भी उद्भावना हुई है। शांत रस को निम्न पंक्तियों में देख सकते हैं-

केसव! कहि न जाइ का कहिये।
देखत तव रचना विचित्र हरि! समुझि मनहिं मन रहिये।

अलंकार-योजना : गोस्वामी तुलसीदास ने अपने भावों और उनकी अभिव्यक्ति को सुन्दर स्वरूप देने के लिए विनय-पत्रिका में प्राय: शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों का आश्रय लिया है। अनुप्रास, यमक, रूपक, श्लेष, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, तुल्ययोगिता, विषम, ब्याजस्तुति आदि अनेक अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है। विनय-पत्रिका में कई जगह अलंकार स्वत:स्फूर्त प्रतीत होते हैं। यथा -

1. राम राम रमु, राम राम रटु, राम राम जपु जीहा। (अनुप्रास)
2. सिव! सिव! होई प्रसन्न करु दाया। (यमक)
3. पुष्पकारूढ़ सौमित्र-सीता-सहित, भानु-कुलभानु-कीरति-पताका। (रूपक)

रचना शैली एवं छंदविधान की दृष्टि से देखा जाय तो विनय-पत्रिका एक सफल भावपूर्ण काव्य है। इसमें तुलसी की अभिव्यक्ति आत्मप्रधान है। अधिकांश पद उनके आवेग के क्षणों में रचित हैं। प्रत्येक पद में लगता है कि एक ही भाव केन्द्रित है – आत्मनिवेदन का। भावों की गहनता के कारण कई जगह संक्षिप्तता भी है। विनय-पत्रिका में लगभग तेईस रागों का प्रयोग हुआ है। जैसे धनाश्री, वसन्त, मारु, भैरव, सारंग, गौरी, केदार, ललित मलार, सोरठ, कल्याण आदि। इससे उनकी भाषा में लालित्य है और माधुर्य भी। मानस की तरह पाठकों में विनय-पत्रिका का भी बहुत आदर है। इसकी पदावलियाँ अधिकांश गेय होने के कारण अत्यंत आकर्षक

एवं रोचक हैं। भाषा, भाव, छंद तथा लय की दृष्टि से यह भक्ति रस की सर्वोत्कृष्ट कृति बन पड़ी है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

बोध प्रश्न

- 'विनय-पत्रिका' की रसाभिव्यक्ति को स्पष्ट कीजिए।
- तुलसीदास की अलंकार-योजना पर टिप्पणी कीजिए।

18.4 : पाठ सार

हिंदी साहित्य के इतिहास में जिसे स्वर्णयुग की संज्ञा प्रदान की गई उसे सामान्यतया भक्तिकाल के नाम से जाना जाता है। भक्तिकाल के अनेकशः कवियों ने साहित्य सर्जन के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा से समस्त जनता को अपनी तरफ आकर्षित कर दिया। इन्हीं कवियों में से एक महत्वपूर्ण कवि तुलसीदास हैं। राम-कथा के क्षेत्र में जितनी सफलता तुलसीदास को मिली उतनी किसी अन्य कवि को शायद ही मिली हो। उनके द्वारा रचा गया साहित्य आज भी जनता में सर्वाधिक लोकप्रिय है। उन्होंने अनेक ग्रंथों की सर्जना की, जिनमें से प्रमुख ग्रंथों के नाम इस प्रकार से हैं – वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न, रामलालनहछू, जानकी-मंगल, रामचरितमानस, पार्वती-मंगल, कृष्ण-गीतावली, गीतावली, विनय-पत्रिका, दोहावली, बरवै रामायण, कवितावली और हनुमानबाहुक। तुलसीदास की रामभक्ति का विराट-दर्शन रामचरितमानस में होता है और उनकी विनयशीलता का प्रमाण विनय-पत्रिका में।

विनय-पत्रिका तुलसीदास की महत्वपूर्ण कृति है। आचार्यों ने विनय पत्रिका को श्रीरामचरित मानस का साधना रूप स्वीकार किया है। इसमें स्वानुभव की प्रामाणिकता, उक्तियों एवं कथनों की प्रौढ़ता परम्परा के माध्यम से अपने सृजन को जोड़कर तुलसी विनय-पत्रिका के जिस रचना रूप को प्रस्तुत करते हैं वह हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठ निधि सिद्ध होती है। विनय-पत्रिका में कुल मिलाकर 279 पद है। इसमें उनकी कवित्व शक्ति पूर्णरूपेण प्रकट हुई है। उनके अगाध पाण्डित्य, काव्य-कौशल और शब्द-शक्ति आदि का पूरा परिचय मिलता है। यह पत्रिका प्रार्थना के रूप में सजाई गई है और गहरी आस्था के साथ लिखी गई है। यह ग्रंथ 'रामचरितमानस' के समान अत्यंत प्रसिद्ध है। गोस्वामी तुलसीदास की विनय-पत्रिका कलियुग की कुचाल से आहत/पीड़ित होकर प्रेषित की गई एक सामान्य व्यक्ति की अरजी या प्रार्थना है। इसमें सम्पूर्ण जगत के मनुष्य का दुःख समावेशित है और उस दुःख से मुक्ति की कामना है।

विनय-पत्रिका में सबसे पहले मंगलाचरण को रखा गया है। इसमें गणेश वन्दना तथा सूर्य, शंकर, देवी, गंगा, यमुना, हनुमान, लक्ष्मण, भरत, सीता तथा राम एवं नर-नारायण की स्तुतियाँ हैं। इसमें तुलसी की भक्ति-भावना का सम्यक विकास दिखाई पड़ता है। इसमें भक्ति के विभिन्न भावों का सच्चाई और स्वाभाविकता के साथ वर्णन हुआ है। यही कारण है कि आज भी वह उत्कृष्ट गीतिकाव्य का अप्रतिम उदाहरण है। इसमें भक्ति की सरलधारा असंख्य भावों के

तरंगों से तरंगित होती हुई प्रवाहित हुई है। इसमें दैन्य, विश्वास, आत्मभर्त्सना, निर्वेद, बोध, दृढ़ता, हर्ष, गर्व, उपालंभ, मोह, चिंता-विषाद, प्रेम आदि विविधभाव अपने सजीव रूप में विद्यमान हैं। सम्पूर्ण काव्य में भक्तिरस का ही प्रवाह है। प्रस्तुत ग्रंथ में गोस्वामी जी ने गीतिकाव्य का शुद्ध और उत्कृष्ट नमूना रखा है। इसके माध्यम से कवि ने विभिन्न दार्शनिक मतभेदों के झमेले में न पड़कर एक भक्तिमार्ग को अपनाने का संकेत किया है।

विनय-पत्रिका की भाषा ब्रज है। इसमें संस्कृत और सामासिक पदावली का मणिकांचन संयोग है। ब्रज भाषा के सरलतम रूप के साथ-साथ उसका क्लिष्टतम रूप भी इस कृति में दिखाई पड़ता है। गोस्वामी जी ने सीधी-सादी व्यावहारिक संस्कृतनिष्ठ ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। इस कृति में ब्रज भाषा में प्रचलित लोकोक्तियों और मुहावरों का सुंदर प्रयोग तुलसीदास ने किया है। ब्रज भाषा के साथ ही साथ तत्सम, तद्भव, देशज, आगत आदि शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। अपने भावों और उनकी अभिव्यक्ति को सुन्दर स्वरूप देने के लिए विनय-पत्रिका में प्राय: शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों का आश्रय लिया है। अनुप्रास, यमक, रूपक, श्लेष, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, तुल्ययोगिता, विषम, व्याजस्तुति आदि अनेक अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है।

18.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

प्रस्तुत इकाई में तुलसीदास द्वारा रचित 'विनय-पत्रिका' का परिचयात्मक विवरण दिया गया है। इस इकाई के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि -

1. तुलसीदास ने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया जिनमें से बारह ग्रन्थों को प्रामाणिक माना जाता है। उनके द्वारा रचित प्रामाणिक बारह ग्रंथों के नाम इस प्रकार से हैं – वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न, रामललानहछू, जानकी-मंगल, रामचरितमानस, पार्वती-मंगल, कृष्ण-गीतावली, विनय-पत्रिका, दोहावली, बरवै रामायण, कवितावली और हनुमानबाहुक।

2 . तुलसीदास द्वारा रचित सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ रामचरितमानस है। रामचरितमानस के बाद उनके किसी ग्रंथ को प्रसिद्धि प्राप्त हुई तो वह ग्रंथ 'विनय-पत्रिका' ही है। 'विनय-पत्रिका' में कुल मिलाकर 279 पद है। इसमें उनकी कवित्व शक्ति पूर्णरूपेण प्रकट हुई है। 'विनय-पत्रिका' में सबसे पहले मंगलाचरण के रूप में गणेश वन्दना तथा सूर्य, शंकर, देवी, गंगा, यमुना, हनुमान, लक्ष्मण, भरत, सीता तथा राम एवं नर-नारायण की स्तुतियाँ हैं लेकिन इन सभी स्तुतियों में भी श्रीराम से याचना की गई है।

3 . 'विनय-पत्रिका' का कला-पक्ष प्रौढ़, प्रांजल एवं मार्जित है। वे अत्यंत उच्चकोटि के शब्द-भंडार के स्वामी हैं। प्रस्तुत रचना की भाषा संस्कृतगर्भित, सामासिक पदावली से युक्त है। इसमें

क्लिष्टतम भाषा भी प्रचुर मात्रा में मिलती है। गोस्वामी जी ने सीधी-सादी व्यावहारिक संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग किया है।

18.6 : शब्द-संपदा

1. संस्कृतनिष्ठ - जिसमें संस्कृत के शब्दों की अधिकता हो
2. क्लिष्टतम - बहुत कठिन
3. स्वर्णयुग - सर्वाधिक महत्वपूर्ण युग, सुनहरा युग
4. परिगणित - जिसकी गणना की जा रही हो
5. अमंगलकारी - जो शुभ करने वाला न हो
6. वैराग्य - उदासीनता, विषय-वासना और सांसरिक संबंधों से मन का उचट जाना

18.7 : परिक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए ।

1. तुलसीदास ने विनय-पत्रिका में कलि के प्रभाव का वर्णन किस रूप में किया है?
2. 'विनय-पत्रिका' के भाव-पक्ष को विवेचित कीजिए।
3. 'विनय-पत्रिका' का परिचयात्मक विवरण दीजिए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए ।

1. 'विनय-पत्रिका' के कला-पक्ष पर प्रकाश डालिए।
2. तुलसीदास की रचनात्मकता पर टिप्पणी कीजिए।

खंड : (स)

I सही विकल्प का चुनाव कीजिए :

1. गोस्वामी तुलसीदास की रचना नहीं है –
   रामचरितमानस ख) गीतावली ग) बीजक घ) विनय-पत्रिका
2. विनय-पत्रिका में कुल पदों की संख्या कितनी है?
   क) 279 ख) 250 ग) 368 घ) 700

3.विनय-पत्रिका में सर्वप्रथम किस देवता की वंदना की गई है ?

क) शिव　　ख) गणेश　　ग) वरुण　　घ) हनुमान

4.'राम राम रमु, राम राम रटु, राम राम जपु जीहा' में अलंकार है?

क) श्लेष　　ख) रुपक　　ग) अनुप्रास　　घ) उपमा

II रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. हिंदी साहित्य के इतिहास जिस कालखंड को स्वर्णयुग की संज्ञा प्रदान की गई है, उसे सामान्यतया .... के नाम से जाना जाता है।
2. तुलसीदास जी के पवित्र और प्रभावोत्पादक उपदेशों के कारण शिव की नगरी...... में राम-भक्ति का प्रभाव फैलने लगा।
3. 'बरवै रामायण' ग्रंथ के रचनाकार .... हैं।
4. विनय एक विशेष चित्त दशा है जिसके लिए .... का त्याग आवश्यक है।

III सुमेल कीजिए

1. भक्तिकाल	क. जॉर्ज ग्रियर्सन
2. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास	ख. स्वर्णयुग
3. द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिट्रेचर ऑफ हिंदुस्तान	ग. तुलसीदास
4. विनय-पत्रिका	घ. काशी नागरी प्रचारिणी सभा

18.8 : पठनीय पुस्तकें

5. तुलसीदास. (2004). विनय-पत्रिका. गोरखपुर : गीता प्रेस
6. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र. (2006). हिंदी साहित्य का इतिहास. काशी : काशी नागरी प्रचारिणी सभा.
7. गुप्त, माताप्रसाद. (1996). तुलसीदास. प्रयाग : हिन्दी साहित्य प्रेस.
8. मिश्र, शिवकुमार. (2002). भक्ति-काव्य और लोकजीवन. नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन.
9. त्रिपाठी, विश्वनाथ. (2010). लोकवादी तुलसीदास. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन.

इकाई 19 : विनय पत्रिका – I : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

19.1. प्रस्तावना

19.2. उद्देश्य

19.3. मूल पाठ : विनय पत्रिका – I : व्याख्या

19.3.1 निर्धारित पदों की विस्तृत व्याख्या -

19.3.2 काव्यगत विशेताएँ

19.3.3 समीक्षात्मक अध्ययन(भक्ति एवं दार्शनिक परिप्रेक्ष्य)

19.4 पाठसार

19.5 पाठ की उपलब्धियाँ

19.6 शब्द संपदा

19. 7 परीक्षार्थ प्रश्न

19.8 पठनीय पुस्तकें

19.1 : प्रस्तावना

इस इकाई में विनय पत्रिका के 10 पदों को लिया गया है जिसमें गोस्वामी तुलसीदास ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम को अपना इष्ट मानते हुए इस संसार रूपी सागर से उद्धार की कामना की है। विनय पत्रिका के पदों में संगीतात्मकता के तत्व समाहित हैं यही कारण है कि ये पद भक्तों के लिए गेय हैं। इन पदों को पढ़कर विद्यार्थी यह समझ पाएंगे कि इनकी विषय वस्तु और रचना विधान इस ग्रंथ को अपने लक्ष्य की सिद्धि में सहायकसिद्ध होते हैं। हिंदी काव्य धारा के रामभक्त तुलसीदासअपनी इस रचना में युग का वैशिष्टय व्यक्त करते हैं।

19.2 : उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के पश्चात आप -

- तुलसीदास के चिंतन को समझ सकेंगे।
- विनय पत्रिका के पठित पदों के आधार पर भक्ति की विशिष्टताएँ जान सकेंगे।
- विनय पत्रिका के लेखन का उद्देश्य समझ पाएँगे।
- विनय पत्रिका में प्रयुक्त भाषिक प्रयोग से उत्पन्न सौंदर्य को समझ पाएंगे।
- विनयपत्रिका के विनय के पदों के आधार पर तुलसी के संदेश को समझ पाएंगे।

19.3 : मूल पाठ : विनय पत्रिका – I : व्याख्या

19.3.1 निर्धारित पदों की विस्तृत व्याख्या-

पद संख्या- 1

गाइए गणपति जगबन्दन। संकर सुवन भवानी नन्दन।।
सिद्धि- सदन, गजबदन, बिनायक। कृपा-सिंधु, सुंदर सब लायक।।
मोदक-प्रिय मुद मंगल दाता। विद्या -बारिधि बुद्धि बिधाता।।
मांगत तुलसिदास कर जोरे। बसहिं रामसिय मानस मोरे।।

शब्दार्थ: गणपति - गणों के स्वामी, संकर - कल्याण करने वाले शिव, नन्दन - आनंद बढ़ाने वाले, पुत्र, मोदक - लड्डू, सिद्धि - अलौकिक शक्ति।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास की प्रसिद्ध रचना विनय पत्रिका से ली गयी हैं। इनकी प्रसिद्ध रचनाओं में रामचरितमानस,विनय पत्रिका रामलला नहछू,वैराग्य संदीपनी, बरवै रामायण, दोहावली, पार्वती मंगल, रामाज्ञा प्रश्न आदि महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।विनय पत्रिका का मूल रस शांत रस है जिसका स्थाईभाव निर्वेद है।

प्रसंग: यह विनय पत्रिका का पहला पद है जिसमें तुलसीदास गणपति का गुणगान करते हुए उनसे वंदना करते हैं कि उनके हृदय में सदैव सीता और राम का निवास हो।

व्याख्या: संसार के वंदनीय श्री गणेश का गुणगान कीजिए। वह शिव और पार्वती जी के पुत्र हैं, उन्होंने अपने माता-पिता को प्रसन्न किया है। वह अष्ट सिद्धियों को प्रदान करने वाले हैं। उनका मुख हाथी के समान है। वह समस्त विघ्नों के नायक हैं अर्थात उनकी कृपा से सब विघ्न बधाएं दूर हो जाती हैं। वह कृपा के सागर हैं, सुंदर हैं और हर तरह से योग्य हैं। उन्हें मोदक अत्यंत प्रिय है, वह आनंद और कल्याण देने वाले हैं। वह विद्या के सागर और बुद्धि के विधाता हैं। ऐसे मंगलमय गणेश जी से यह तुलसी हाथ जोड़कर केवल यही वर मांगते हैं कि उनके हृदय में श्रीराम जानकी के साथ निवास करें।

विशेष: गणपति की वंदना

अनुप्रास अलंकार

उपमा अलंकार

रूपक अलंकार

बोध प्रश्न:

- गणों के स्वामी कौन हैं ?
- मोदक प्रिय किसे कहा गया है ?

- तुलसीदास अपने हृदय में किसे बसाना चाहते हैं ?

पद संख्या- 5

बावरो रावरो नाह भवानी।
दानि बड़ो दिन देत दये बिनु, वेद वड़ाई भानी।।
निज घर की बर बात बिलोकहु, हौ तुम परम सयानी।
सिव की दयी संपदा देखत, श्री सारदा सिहानी।।
जिनके भाल लिखी लिपि मेरी, सुख की नहीं निसानी।
तिन रंकन को नाक सँवारत, हौ आयऊँ नकवानी।।
दुख दीनता दुखी इनके दुख, जाचकता अकुलानी।
यह अधिकार सौंपिये औरहि, भीख भली मैं जानी।।
प्रेम-प्रसंसा-विनय-व्यंगजुत, सुनि बिधि की बर बानी।
तुलसी मुदित महेस मनहिं मन, जगत मातु मुसुकानी।।

शब्दार्थ: बावरो-पागल, रावरो - आपके, नाह-स्वामी, सिहानी – सिहाती है, नाक - स्वर्ग, नकवानी - नाक में दम, दयी - दी, तिन - उनको, भाल - मस्तक, रंकन - गरीब, संपदा - धन संपत्ति, अकुलानी व्याकुल होना, व्यंगजुत - व्यंग्ययुक्त, बिधि - ब्रम्हा, मुदित - प्रसन्न, महेस - शिव, जगत मातु - माता पार्वती।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियां तुलसीदास द्वारा रचित विनय पत्रिका से उद्धृत हैं। गोस्वामी तुलसीदास भक्ति काव्य की सगुण काव्य धारा के दूसरे महत्वपूर्ण कवि माने जाते हैं।

प्रसंग: इस पद में शिव स्तुति की गई है।

व्याख्या: एक बार कैलाश पर्वत पर आकर ब्रह्मा जी ने पार्वती जी से प्रार्थना की कि हे भवानी! आपके स्वामी बावले हैं, बड़े दानी हैं कि बिना दिए हुए को भी नित्य ही देते हैं, इन्होंने वेदों के मर्यादा को भी तोड़ डाला है। आप तो अत्यंत सयानी हैं, अपने ही घर की अच्छी बात देखिए कि शिव की दी हुई दूसरों की संपत्ति को देखकर लक्ष्मी और सरस्वती सिहाती हैं। जिनके ललाट पर मेरे हाथ से सुख का चिन्ह तक नहीं लिखा गया, उन कंगालों को स्वर्ग प्रदान करते हैं जिससे मेरी नाक में दम आ गया है। इनके दु:ख से दु:ख और दीनता दु:खी हैं और याचकता घबरा गई है। यह ब्रह्मा के पद का अधिकार दूसरों को दीजिए, मैं भीख मांगना अच्छा समझता हूं। तुलसीदास जी कहते हैं कि प्रेम, प्रशंसा, विनती और व्यंग्य से मिली हुई ब्रह्मा की श्रेष्ठ वाणी को सुनकर शिवजी मन ही मन प्रसन्न हुए और जगत माता पार्वती जी मुस्कुराने लगीं।

विशेष: इस पद में ब्याज स्तुति अलंकार है। यहां सीधे अर्थ को छोड़कर घुमा फिरा कर दूसरे भाव से अर्थ को प्रकट किया गया है और यह अर्थ व्यंग्य के द्वारा व्यक्त हुआ है। निंदा में स्तुति प्रकट करने को ही ब्याज स्तुति कहा जाता है। स्तुति में निंदा का भाव प्रकट करने को ब्याज निंदा कहते हैं। यही इस अलंकार के दो भेद हैं। ब्याज स्तुति का उदाहरण इस पद में दिखाई देता है।

अनुप्रास अलंकार
रूपक अलंकार
लाक्षणिक भाषा सौंदर्य
मुहावरा प्रयोग

बोध प्रश्न -

- शिव जी की उदारता का बखान कौन करता है ?
- शिवजी की संपत्ति को देख कर कौन सिहाता है ?
- किनके ललाट पर सुख का नामों निशान नहीं है ?

पद संख्या- 17

जय भागीरथ- नंदिनी, मुनि चय चकोर चंदिनि,
नर नाग बिबुध बंदिनी जय जलु - बालिका।
विष्णु पद सरोजजासि, ईस सीस पर बिभासि,
त्रिपथगासि पुण्यराशि पाप-छालिका।।
बिमल बिपुल बिहसि बारि, सीतल त्रय ताप हारि,
भंवर बर बिभंग तर तरन मालिका।
पुरजन पूजोपहार, सोभित ससि-धवल-धार,
भँजन भुबि भार भक्त-कल्प - थालिका।।
निज- तट- बासी बिहंग,जल-थल-चर पसु पतंग,
कीट जटिल; तापस सब सरिस पालिका।
तुलसी तव तीर तीर,सुमिरत रघुबंस-बीर,
बिचरत मति देहि मोह-महिष-कालिका।।

शब्दार्थ: नंदिनि - पुत्री, चय -समूह, त्रिपथगासि - तीन मार्गो से गमन करने वाली, पाप छालिका - पापों को धोनेवाली, विभंगतर - अत्यंत चंचल, थालिका - थाल्हा, विभासि - शोभा पाना, निज -अपने, चर - विचरण करने वाले, सुमिरत - स्मरण करना, त्रय ताप - तीन ताप,

तटवासी - तट पर रहने वाले, बिमल - निर्मल, बारि - जल, इंडिया पुरजन - पुरवासी, ससि- चंद्रमा, भँजन - नष्ट करने वाली, बिहँग - पक्षी, मति - बुद्धि।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ विनय पत्रिका से उद्धृत हैं। गोस्वामी तुलसीदास सगुण भक्ति धारा के अंतर्गत राम भक्ति शाखा के कवि माने जाते हैं। भाषा,भक्ति,दर्शन आदि में समन्वय का परिचय देने के कारण उन्हें समन्वयवादी माना जाता है।

प्रसंग: पावन पवित्र गंगा हिंदू धर्म में अलग स्थान रखती है। तुलसीदास पावन गंगा का विभिन्न प्रकार से गुणगान करते हुए यह विनती करते हैं कि श्रीराम का स्मरण करते हुए वह गंगा के किनारे भ्रमण करते हैं और अपने लिए बुद्धि मांगते हैं।

व्याख्या: हे भागीरथ पुत्री!आपकी जय हो। मुनिवृंद रूपी चकोर के लिए आप चंद्रमा की किरण के समान हैं,मनुष्य नाग और देवताओं की वंदनीय हैं,भगवान विष्णु के चरण कमलों से उत्पन्न, शिव जी के मस्तक पर सुशोभित, आकाश- पाताल- धरती इन तीन मार्गों से गमन करने वाली,पुण्य की राशि और पापों को धोने वाली हैं। निर्मल, शीतल, गंभीर गुण धारण किए बहते हुए तीनों तापों का हरण करने वाली अत्यंत सुंदर भंवर और ऊंची लहरों से युक्त हैं। पुरवासियों द्वारा पूजा की सामग्री पुष्प- चंदन- धूप- दीप- नैवेद्य आदि के सहित आपकी उज्जवल धारा चंद्रमा के समान शोभायमान है, पृथ्वी से पाप के बोझ को नसाने वाली और भक्त के लिए कल्पवृक्ष रूपी थाल के समान हैं। आप अपने किनारे पर रहने वाले पक्षी, जलचर, थलचर, पशु, कीड़े, हिंसक जीव और तपस्वी सबका बराबर पालन करने वाली हैं। मोह रूपी महिषासुर की कालिका! तुलसी आपके किनारे रघुकुल के वीर अर्थात श्री रामचंद्र जी का स्मरण करते हुए भ्रमण करता है, आप उसे बुद्धि प्रदान कीजिए।

विशेष: भाव यह है कि तुलसीदास भागीरथी जो पृथ्वी से पाप के बोझ को समाप्त करने वाली हैं और भक्त के लिए कल्पवृक्ष हैं। ऐसी पवनगंगा से वह सदैव यही विनती करते हैं कि उनके मन में सदैव श्री रामचंद्र विराजमान रहें।

प्रतीक शब्दों का प्रयोग

मुहावरा प्रयोग

अनुप्रासअलंकार

उपमा अलंकार

रूपक अलंकार

बोध प्रश्न:

- तुलसीदास भागीरथी से क्या विनती करते हैं?
- भागीरथी का जन्म कहां से होता है?

- भागीरथी कितने मार्गो से गमन करती हैं ?
- त्रिताप को हरने वाली कौन हैं ?

पद संख्या- 30

जा के गति है हनुमान की।
ताकी पैज पूजिआई यह रेखा कुलिस पखान की।।
अघटित -घटन सुघट-विघटन अस, बिरदाबली न आन की।
सुमिरत संकट सोच बिमोचन,मूरति मोद -निधान की।।
ता पर सानुकूल गिरिजा हर, लखन राम अरु जानकी।
तुलसी कपि की कृपा-बिलोकनि, खानि सकल कल्यान की।।

शब्दार्थ: जाके-जिसको, ताकी-उसकी, पैज-प्रतिज्ञा, कुलिस-वज्र,पखान-पत्थर, अघटित-असंभव, घटित-संभव, बिरदावली-यश, आन की-दूसरे की, सुमिरत-स्मरण करना, बिमोचन-नाश हो जाना, ता पर-उस पर, सानुकूल-अनुकूल या प्रसन्न, हर-शिव, कपि-वानरअर्थात हनुमान, बिलोकनि-देखना, सकल-संपूर्ण।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथ विनय पत्रिका से ली गई हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने विनय पत्रिका में अपनी समन्वयवादी दृष्टि का परिचय दिया है। उनकी अनेक प्रसिद्ध रचनाएं हैं,जिनमें विभिन्न प्रकार की विषय वस्तु लेते हुए गोस्वामी जी ने समसामयिक परिवेश को उजागर किया है।

प्रसंग: प्रस्तुत पद में गोस्वामी जी ने राम भक्त हनुमान की वंदना की है। उनका दृढ़ विश्वास है कि जो सभी प्रकार से श्री हनुमान पर विश्वास करते हैं उनके सभी असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं क्योंकि,सभी उन पर प्रसन्न रहते हैं,इसीलिए वह स्वयं पर भी हनुमान की कृपा दृष्टि चाहते हैं।

व्याख्या: जिसको सभी प्रकार से हनुमान जी का सहारा है, उसकी हर प्रतिज्ञा पूरी हो गई, यह बज्र से खींची हुई पत्थर की लकीर है। असंभव को संभव और संभव को असंभव करने वाला जैसा यश हनुमान जी का है वैसा यश और किसी का नहीं है। हनुमान जी की आनंदमयी मूर्ति का स्मरण करते ही समस्त कष्ट और पापों का नाश हो जाता है। हनुमान जी की भक्ति पर पार्वती, शिव, लक्ष्मण, श्रीरामचंद्र और जानकी जी सदैव प्रसन्न रहते हैं। तुलसीदास कहते हैं कि हनुमान जी की कृपा दृष्टि संपूर्ण कल्याणों की खान है।

विशेष: हनुमान जी की विनती

अनुप्रास अलंकार

लाक्षणिक भाषा प्रयोग

उदाहरण अलंकार

बोध प्रश्न:

- असंभव को संभव और असंभव को संभव कौन करता है?
- हनुमान जी की भक्ति पर कौन प्रसन्न रहते हैं?
- हनुमान जी की कृपा को तुलसीदास किस रूप में मानते हैं?

पद संख्या- 36

मंगल मूर्ति मारुति नंदन।
सकल अमंगल- मूल निकंदन।।
पवन-तनय सन्तन्ह हितकारी, हृदय बिराजत अवध-बिहारी।
मातु पिता गुरु गनपति सारद, सिवा समेत संभु सुक नारद।।
चरन बन्दि बिनवउँ सब काहू,देहु राम -पद नेहु निबाहू।
बन्दउँ राम लखन बैदेही, जे तुलसी के परम सनेही।।

शब्दार्थ: मंगल-आनंद दायिनी,मारुति नंदन-हनुमान, सकल-सभी,अमंगल-अनिष्ट,हितकारी-भलाई करने वाला,विराजत-निवास करते हैं,संभु -शिव,सुक-शुकदेव,बिनवउँ-विनती,नेहु -स्नेह,परम सनेही-परम स्नेही

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ विनय पत्रिका से ली गई हैं जिसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं। यह इनकी एक प्रसिद्ध रचना है। राम का नाम तुलसी के लिए चिंतामणि के समान है जिसे वह अपने हृदय में संभाल कर रखना चाहते हैं।

प्रसंग: मारुति नंदन अर्थात हनुमान श्री राम के परम भक्त हैं और तुलसी यह जानते हैं कि हनुमान संतों के हितकारी हैं। उनके हृदय में श्री रामचंद्र विराजमान हैं।तुलसी बारंबार हनुमान से यही विनती करते हैं कि उनकी कृपा दृष्टि हो जाए तो श्री राम, जानकी और लक्ष्मण सहित उनके हृदय में विराजमान हो जाएंगे।

व्याख्या : तुलसीदास कहते हैं कि वायु पुत्र हनुमान सबका मंगल करने वाले हैं और समस्त अमंगलों का समूल नाश करने वाले हैं। वह संतों का हित करने वाले हैं और उनके हृदय में श्री राम विराजते हैं। माता-पिता, गुरु, गणेश, सरस्वती, पार्वती जी के सहित शंकर, सुकदेव और नारद मुनि आदि सभी के चरणों की वंदना करते हुए मैं विनती करता हूं कि मुझे श्री रामचंद्र जी के चरणों में स्नेह निभाने की शक्ति दें। श्री रामचंद्र, लक्ष्मण और जानकी जी को प्रणाम करता हूं जो तुलसी के परम प्रेमी और सर्वस्व हैं।

विशेष: पद का भाव यह है कि तुलसी श्री राम के चरणों को छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं जाना चाहते, इसीलिए वह हनुमान से केवल यही विनती करते हैं कि वह उन पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें।

उपमा अलंकार
अनुप्रास अलंकार
विशेष भाषा प्रयोग
मुहावरों का प्रयोग
प्रतीक शब्दों का प्रयोग
रूपक अलंकार

बोध प्रश्न:

- मारुत नंदनकौन हैं?
- श्री रामचंद्र का निवास किसके हृदय में है?

पद संख्या- 41

कबहुँक अम्ब अवसर पाइ।
मेरियो सुधि द्याइबी कछु, करुन कथा चलाई।।
दीन सब अंग-हीन छीन, मलीन अघी अघाइ।
नाम लेइ भरे उदर एक प्रभुदासी दास कहाइ।।
बूझिहँ सो कौन कहिबी,नाम दसा जनाइ।
सुनत राम कृपाल के मम, बिगरियो बनि जाइ।।
जानकी जग-जननि जन की, किए बचन सहाइ।
तरइ तुलसीदास भव तव, नाथ गुन-गन गाइ ।।

शब्दार्थ : कबहुँक-कभी भी, अम्ब -माता सीता, मेरिओ-मेरी,द्याइबी- लाइयेगा, अघीअघाइ-पापों से भरा हुआ, मेरियो-मेरी, सुधि-याद, मालिन-गंदा, उदर-पेट, बूझिहँ-जान पड़ता है, कहिबी-कहेगा सहाइ-सहायता तरइ-तर जाना,भव-संसार।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियां गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित विनय पत्रिका से ली गई हैं। यह एक भक्तिपरक ग्रंथ है जिसमें तुलसी ने पूरी तरह से श्री राम के चरणों में अपनी भक्ति का परिपाक किया है।

प्रसंग : सभी देवी-देवताओं की वंदना करने के पश्चात तुलसी माता सीता की वंदना करते हैं और अपनी एकमात्र इच्छा व्यक्त करते हैं कि मां जानकी को जब कभी भी अवसर मिले वह श्री

रामचंद्र से उनकी चर्चा चला कर इस भक्त पर दया दृष्टि बनाए रखने को कहें। उनके इतना कर देने भर से यह तुलसीदास संसार रूपी सागर से पार उतर जाएगा।

व्याख्या : हे माता जानकी! कभी भी समय पाकर श्री रामचंद्र जी से कुछ दया भरी चर्चा चला कर मेरी भी सुधि दिलाइएगा। कहिएगा एक दीन और साधन के सभी अंगों से हीन,खिन्न, मालिन और पापों से भरा हुआ मनुष्य आपका दास तुलसी है जो केवल पेट भरने के लिए आपका नाम लेता है। जब स्वामी पूछें कि वह कौन है तब आप मेरा नाम लेकर मेरी दशा सूचित कर दें। कृपालु रामचंद्र जी के इतना सुन लेने से ही मेरी बिगड़ी हुई बात बन जाएगी। हे जगत माता जानकी! यदि आप इस दास की वचनों से सहायता करेंगी तो तुलसीदास आपके स्वामी श्री रामचंद्र जी का गुणगान करके संसार से पार उतर जाएगा।

विशेष : भाव यह है कि तुलसी स्वयं को मालिन और पापों से भरा हुआ दास मानते हैं जो केवल राम का नाम अपना पेट भरने के लिए लेता है। उन्हें स्वयं पर ग्लानि होती है इसीलिए माता सीता से अपनी बिगड़ी हुई बात बनाने की प्रार्थना करते हैं।

अनुप्रास अलंकार

दास्य भावना की पराकाष्ठा

बोध प्रश्न :

- तुलसीदास माँ सीता से कैसी सहायता मांगते हैं?
- इस पद में अंब का संबोधन किसके लिए हुआ है

पद संख्या- 45

श्री रामचंद्र कृपालु भजु मन, हरन भव भय दारुनं।

नव कंज लोचन कंज-मुख, करकंज पद-कंजारुनं।।

कंदर्प अगनित अमित छबि,नव नील नीरज सुंदरं।

पट पीत मानहुँ तड़ित रुचि सुचि,नौमि जनक-सुता-बरं।।

भजु दीनबंधु दिनेस दानव दैत्य बंस निकन्दनं।

रघुनंद आनदकंद कोसल-चंद दसरथ- नंदनं।।

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु,उदार अंग विभूषनं।

आजानु-भुज सर चाप धर, संग्रामजित खर दूषनं।।

इति वदत तुलसीदास सँकर, सेष मुनि मन रंजनं।

मम हृदयकंज निवास करि, कामादि खल दल गंजनं।।

शब्दार्थ: हरन -दूर करने वाले, भव-संसार, दारुनं -भयंकर, लोचन-नेत्र, नव कंज -नवीन कमल, कंजारुनं -लाल कमल, कंदर्प-कामदेव, अगनित-असंख्य, अमित-अपार, छबि -सुंदरता,नीरज -

कमल,पट -वस्त्र,पीत -पीला,तड़ित-चपला,सुचि -सुंदर,निकन्दनम -समूल रूप से नाश करने वाले,दिनेस -सूर्य,विभूषनं-शोभायमान,आनदकन्द-आनंद के मूल,आजानु भुज -लंबी भुजायें,सर चाप धर -धनुष बाण धारण किए हुए,संग्राम जित -युद्ध को जीतने वाले,वदत -कहना,रंजनं -प्रसन्न करने वाले,मम -मेरे,कामादि -काम,क्रोध, लोभ,गंजनं-नाश करना।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास द्वारा लिखी गई विनय पत्रिकासे ली गई हैं। तुलसीदास की प्रसिद्ध रचनाओं में रामचरित मानस,कृष्ण गीतावली, विनय पत्रिका,रामलाल नहछु,वैराग्य संदीपनी आदि मानी जाती हैं।

प्रसंग: तुलसीदास अपने मूर्ख मन को समझाते हुए उसे यही संदेश देते हैं कि इस संसार रूपी सागर से उसे मुक्ति तभी मिलेगी जब वह श्री रामचंद्र के चरणों में अपना मन लगाएगा।

व्याख्या: तुलसीदासअपने मन को संबोधन देते हुए कहते हैं कि हे मन! श्री रामचंद्र जी, जो कृपालु हैं; उनका भजन कर। वह भयंकर संसार के जन्म-मरण के चक्र से सबको मुक्त कर देते हैं। उनके नेत्र नवीन कमल के समान हैं। मुख, हाथ और चरण भी लाल कमल के समान हैं। वह श्याम कमल के समान सुंदरशरीर वाले, असंख्य कामदेव की अपार शोभा से युक्त हैं। उनकेमेघ समान तन पर पीतांबर बिजली के समान चमक रहा है। ऐसे पावन रूप जानकीनाथ श्री राम जी को मैं नमस्कार करता हूं। हे मन! दुखी जनों के सहायक, सूर्य के समान तेजस्वी, दानव और दैत्य कुल के वंश का संपूर्ण नाश करने वाले, रघुकुल को प्रसन्न करने वाले, आनंद के मूल, अयोध्या नगरी के चंद्रमा, दशरथ नंदन श्री रामचंद्र जी का भजन कर। सिर पर मुकुट, कानों में कुंडल, मस्तक पर सुंदर तिलक और अंगों में श्रेष्ठ आभूषण शोभायमान हैं, जिनकी भुजाएं लंबी हैं और जो धनुष बाण धारण किए युद्ध में खर और दूषण को जीतने वाले हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि वह शिवजी,शेषनाग जी और मुनियों को प्रसन्न करने वाले हैं। मेरे कमल रूपी हृदय में निवास करके काम, क्रोध, लोभ आदि दुष्ट समूह का नाश करें; मैं ऐसी आपसे विनती करता हूँ।

विशेष : भाव यह है कि तुलसीदास इस पद में विभिन्न प्रकार से श्री राम के सौंदर्य और गुणों का बखान करते हुए मन को यही संदेश देने का प्रयास करते हैं कि वह श्री राम के चरणों में अपने मन को लगाएं ताकि कलिकाल से उसे मुक्ति मिल सके।

अनुप्रास अलंकार
उपमा अलंकार
रूपक अलंकार
श्री राम के सौंदर्य का वर्णन

भाषिक सौंदर्य
भक्ति की पराकाष्ठा
संगीतात्मकता

बोध प्रश्न :

- श्री राम के नेत्र कैसे हैं?
- तन पर पीतांबर धारण किए हुए वह कैसे दिखाई देते हैं?
- विनय पत्रिका का मूल भाव क्या है?

पद संख्या- 72

मेरा भलो कियो राम आपनी भलाई।
हौं तो साँइ-द्रोही पै सेवक-हित साँइ।।
राम सौं बड़ो है कवन मो सौं कवन छोटो।
राम सौं खरो है कवन मो सौं कवन खोटो।।
लोग कहें राम को गुलाम हाँ कहाऔं।
एतो बड़ो अपराध भौ न मन वाऔं।।
पाथ माथे चढ़ई तन तुलसी ज़्याँ नीचो।
बोरत न वारि ताहि जानि आप सींचो।।

शब्दार्थ: हौं -मैं,साँइ-द्रोही -स्वामी द्रोही,पै -परंतु, कवन -कौन,खरो-खरा,एतो-इतना,भौ -हुआ,बोरत -डुबाना,वारि -जल,ताहि -वही।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियां विनय पत्रिका से ली गई हैं जिसके रचयिता भक्ति काल के सगुण भक्ति धारा के संत तुलसीदास माने जाते हैं राम भक्ति शाखा एक ऐसी शाखा है जिसमें आने वाले सभी संतो ने श्री राम को इष्ट मान कर उनका गुणगान करते हुए संसार रूपी सागर से स्वयं के उद्धार की कामना की है।

प्रसंग: तुलसीदास स्वयं को खोटा मानते हुए श्री रामचंद्र जी से यह विनती करते हैं कि वह उनके गुलाम हैं। श्री रामचंद्र जी ने अपने सेवक पर दया करके इस नीच सेवक को ऊंचा पद दे दिया है।

व्याख्या: तुलसीदास जी कहते हैं कि अपनी भलाई से श्री रामचंद्र जी ने मेरा भला किया। मेरे जैसे स्वामी द्रोही सेवक पर स्वामी हितकारी हैं। श्री रामचंद्र जी के समान कौन बड़ा और मेरे सामान कौन छोटा है? रामचंद्र जी के सामान खरा और मेरे सामान खोटा कौन है? लोग मुझको श्री रामचंद्र जी का दास कहते हैं और मैं उनका दास कहलाता भी हूं किंतु आज तो में मैं गुलाम बना हुआ हूं। काम, क्रोध, लोभ आदि अनेक प्रकार के मेरे अपराध पर भी स्वामी का मन टेढ़ा नहीं हुआ। तुलसी वैसा ही नीच है जैसे कि तृण पानी के सिर पर चढ़ता है किंतु पानी उसको

अपने द्वारा सींचा हुआ समझकर डुबोता नहीं है बल्कि सर पर धारण करता है; उसी प्रकार रघुनाथ जी ने मुझ जैसे नीच सेवक को ऊंचा पद दे दिया है।

विशेष : भाव यह है कि तुलसी ने स्वयं को खोटा मानते हुए अपने अवगुणों का बखान करते हुए श्री राम से यह विनती की है कि वह सदैव उन पर अपनी कृपा बनाए रखें।

उदाहरण अलंकार

बोध प्रश्न :

- गोस्वामी तुलसीदास जी खरे और खोटे की उपमा किस देते हैं?
- तुलसीदास किसके गुलाम होते हैं?
- पानी और तृण का क्या संबंध है।

पद संख्या- 78

दीन को दयाल दानि दूसरो ना कोई।
जाहि दीनता कहउँ मैं देखउँ दीन सोई।।
सुर मुनि नर नाग असुर साहब तौ घनेरे।
तो लौं जो लौं रावरे न नेकु नयन फेरे।।
त्रिभुवन तत्काल बिदित बदत वेद चारी।
आदि मध्य अंत राम साहिबी तिहारी।।
तुम्हहिं माँगि माँगनों न माँगनों कहायो।
सुनि सुभाव सील सुजस जाचन जन आयो।।
पाहन पसु ब्याध बिहँग अपनो करि लीन्हे।
महाराज दसरथ के रंङ्क् राय कीन्हे।।
तू गरीब को निवाज हाँ गरीब तेरो।
बारक कहिए कृपाल तुलसिदास मेरो।।

शब्दार्थ: को -कौन, जाहि -जिससे, सोई -वही, सुर -देवता, नर -मनुष्य, असुर -राक्षस, रावरे -आप,नेकु -थोड़ा,तत्काल -तुरंत,बिदित -ज्ञात है,बदत -कहना,चारी -चार,आदि -प्रारंभ,तिहारी -तुम्हारी,सील -शील,सुजस -सुयश,पाहन -पत्थर,पसु -पशु,ब्याध-शिकारी,बिहँग -पक्षी,बारक -एक बार,राय -राजा।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास जी द्वारा रचित विनय पत्रिका से ली गई हैं। विनय पत्रिका एक भक्तिपरक ग्रंथ है जिसमें तुलसीदास जी ने समसामयिक स्थितियों को राम को लिखी गई विनय की पाती द्वारा अभिव्यक्त किया है।

प्रसंग : श्री राम का यशोगान सुनकर दास तुलसी उनसे स्वयं पर दया की दृष्टि डालने की विनती करते हैं।

व्याख्या: दीनों पर दया करने वाला दानी कोई अन्य नहीं है। जिससे दीनता कहता हूं मैं उसी को दीन देखता हूं। देवता, मुनि, मनुष्य, नाग और दैत्य आदि स्वामी तो बहुत से हैं पर जब तक आप थोड़ी दया की दृष्टि नहीं फेरते तब तक कोई बड़प्पन नहीं पाते। हे रामचंद्र! तीनों लोक और तीनों काल में आप प्रसिद्ध हैं और चारों वेद कहते हैं कि आदि, मध्य और अंत में आपकी ही मलिकाई है। आपसे मांग कर मांगने वाले याचक नहीं कहलाए, ऐसा स्वभाव, शील और सुयश सुनकर यह दास आपसे मांगने आया है। पत्थर (अहिल्या), पशु (गजेंद्र), व्याध (वाल्मीकि), पक्षी (जटायु) को आपने अपना बना लिया है। हे महाराज दशरथ नंदन! आपने गरीबों को राजा बना दिया। आप गरीब नवाज हैं और मैं आपका गरीब सेवक हूं। हे कृपालु! एक बार कहिए कि तुलसीदास मेरा है।

विशेष : भाव यह है कि भक्त तुलसी श्री राम ईश्वर से अपने उद्धार की प्रार्थना करते हैं।

अनुप्रास अलंकार

मुहावरेदार भाषा

उदाहरण अलंकार

बोध प्रश्न:

- श्री राम किसके स्वामी हैं?
- चारो वेदों में किसका गुणगान किया गया है?

पद संख्या- 79

तू दयाल दीन हौं, तू दानि हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी तू पाप-पुंज हारी।।
नाथ तू अनाथ को अनाथ कौन मो सौं।
मो समान भारत नहिं आरति-हर सौं।।
ब्रह्मा तू हौं जीव तू ठाकुर हौं चेरो।
तात मात गुरु सखा तू सब विधि हित मेरो।।
तोहि मोहि नातो अनेक मानिए जो भावै ।
ज्या त्याँ तुलसी कृपाल चरण सरन पावै।।

शब्दार्थ: दीन -गरीब,पातकी -पापी,पाप पुंज -पाप राशि,हारी -नाश करने वाले, मो साँ -मेरे समान,आरत -अनाथ,तो साँ -आप के समान,हित -भलाई करने वाला, ठाकुर -स्वामी,चेरो -दास,सखा -मित्र,तोहि -आपका,मोहि -मेरा,नातो-संबंध,भावै -अच्छा लगे, ज्या -जिस,सरन -सहारा।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियां तुलसीदास द्वारा लिखे ग्रंथ विनय पत्रिका से ली गई हैं। यह एक भक्ति परक ग्रंथ है जिसमें गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने उद्धार के लिए श्री राम से विनती की है।
प्रसंग : कई पदों में तुलसीदास जी ने श्री राम को दीनों का हितकारी मानते हुए स्वयं को पापी और अनाथ मानते हुए कलिकाल से अपनी मुक्ति की प्रार्थना की है और केवल उनके चरणों का सहारा ही चाहते हैं।

व्याख्या: तुलसीदास कहते हैं कि आप दयालु हैं मैं दीन हूँ, आप दानी हैं मैं भिक्षुक हूँ, मैं प्रसिद्ध पापी और आप पाप की राशि का विनाश करने वाले हैं। आप अनाथों के नाथ हैं और मेरे सामान अनाथ और कौन है? मेरे सामान दुखी और कोई नहीं है और आपके समान दुख का हरण करने वाला भी कोई नहीं है। आप ब्रह्म है मैं जीव हूँ आप ठाकुर हैं तो मैं आपका चाकर हूँ, आप सब तरह से मेरे हितकारी पिता, माता, गुरु और मित्र हैं। आपसे मेरे बहुत से नाते हैं,जो अच्छा लगे वही मानिए। हे कृपालु! जिस किसी प्रकार से तुलसी चरणों का सहारा पावे।
विशेष : तुलसीदास स्वयं को अत्यंत दीन मानते हुए हमेशा यही चाहते हैं कि श्री राम जिस नाते से उनका उद्धार करना चाहें, वह उस नाते को मानने को तैयार हैं। उन्हें केवल श्री राम के चरणों का सहारा चाहिए।
अनुप्रास अलंकार
मुहावरेदार भाषा
बोध प्रश्न :

- श्री राम का चरित्र कैसा है?

19.3.2 काव्यगत विशेषताएं

काव्यगत विशेषताओं में भाव पक्ष और कला पक्ष को लिया जाता है। इन दोनों का संतुलन ही काव्य में सौंदर्य और संप्रेषण उत्पन्न करता है।

भाव सौन्दर्य

विनय पत्रिका का मूल भाव दास्य भाव है। इसमें गुरु की महिमा,समन्वय भाव,आत्म निवेदन, जीवन संघर्ष आदि के सजीव चित्र भी दिखाई देते हैं। विनय पत्रिका पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। राम नाम की विराटता,गरिमा और प्रभाव ही विनय पत्रिका का प्रतिपाद्य है और यही गोस्वामी जी का सर्वस्व है। मानव चेतना का जागरण विनय पत्रिका का प्रयोजन है। इस रचना के मूल में भक्ति के माध्यम से मनुष्य जीवन के परम लक्ष्य के स्वरूप और उसकी प्राप्ति के अत्यंत सहज भाव दिखाई पड़ते हैं। तुलसी राम काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। उनके समस्त काव्यों में राम के प्रति अनन्य भक्ति भाव दिखाई देता है। यही कुछ भावना विनय पत्रिका में भी व्यक्त हुई है। विनय पत्रिका का स्थाई रस शांत रस है जिसका स्थाई भाव निर्वेद है। विनय पत्रिका आध्यात्मिक जीवन को परिलक्षित करती है। नवम स्वर्ग में उर्मिला के

विरह वर्णन द्वारा आध्यात्मिक भावना को दर्शाया गया है। प्रकृति के आलंबन और उद्दीपन दोनों रूपों को विनय पत्रिका में देखा जा सकता है जिसके द्वारा अनेक प्रकार के भाव अभिव्यक्त हुए हैं।

कला सौंदर्य

गोस्वामी तुलसीदास ने अपने काव्य में विभिन्न भाषाओं का समन्वय किया है। कुछ रचनाएं ब्रज में भी लिखी गई हैं। काव्य भाषा की दृष्टि से जिस प्रकार अवधी भाषा में लिखी गई रामचरितमानस का जनमानस में विशेष महत्व है उसी प्रकार ब्रजभाषा में लिखी विनय पत्रिका एक फेंटेसी है जिसमें तुलसी ने अपने समय के परिवेश को बड़े ही सटीक और सुंदर ढंग से यथार्थपरक शैली में भक्ति के द्वारा अभिव्यक्ति दी है। राम की विनय करने से पहले वह विभिन्न देवी- देवताओं की स्तुति करते हैं और अंततः माता सीता से यह निवेदन करते हैं कि यदि वह तुलसी की विनय की पाती को राम तक पहुंचाती हैं तभी राम उन जैसे सेवक को स्वीकार करेंगे। 16वीं शताब्दी में लिखी गई विनय पत्रिका एक अलग प्रकार की अनुभूति कराती है। काव्य में प्रयुक्त भाषा के साथ-साथ उसमें विभिन्न प्रकार के अलंकारों का समावेश भाषा और कथ्य के सौंदर्य को बढ़ाता है। इसी प्रकार प्रतीक और बिंबो का अनेक स्थानों पर प्रयोग हुआ है। रामकाव्य धारा के प्रतिनिधि कवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने विनय पत्रिका के द्वारा अपनी सामाजिक चेतना का प्रसार किया है। उनकी सामाजिक और लोकवादी दृष्टि मध्यकाल के अन्य कवियों से अधिक व्यापक और गहरी है। कविता रूपी पत्र के माध्यम से अपनी दीनता और पीड़ा को श्री राम के चरणों में पहुंचाना ही कवि का उद्देश्य रहा है तथा उसमें सामाजिक परिवेश अपने आप समाहित हो गया है।

19.3.3 समीक्षात्मक अध्ययन (भक्ति एवं दार्शनिक परिप्रेक्ष्य)

तुलसी की भक्ति सेवक-सेव्य भाव की भक्ति है। इस प्रकार की भक्ति में भक्त भक्ति एवं तन्मयता भाव की प्रधानता रखता है और अपने अंतर्मन के भावों को इष्ट के चरणों में रख देता है। तुलसी के राम दशरथ नंदन हैं जो शील - सौंदर्य और शक्ति से संपन्न हैं ; वही तुलसी के आराध्य हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम को अपना इष्ट मान कर उन्हें आदर्श मानव, आदर्श राजा, आदर्श पति, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श वीर, आदर्श पिता के रूप में चित्रित किया है। समस्याओं की निरंतरता के साथ-साथ तुलसी की प्रासंगिकता उनके दृष्टिकोण की मौलिकता का परिचायक है। उन्होंने तत्कालीन समाज की समस्याओं के निराकरण के लिए जिस रामराज्य की कल्पना की थी वैसे आदर्श राज्य की आवश्यकता आज के परिवेश में भी आवश्यक है। उनके काव्य का दार्शनिक आधार भी भक्ति है। संसार सत्य है, प्रभु भक्ति ही सत्य है, संसार के प्रति आसक्त होना मोह है, प्रभु की ओर उन्मुख होना प्रेम या भक्ति है। कविता की दर्शनिकता का प्रतिपादन करते हुए गोस्वामी जी ने ईश्वर, जगत, संसार और जीव के स्वरूप तथा उनके पारस्परिक संबंधों का विवेचन किया है। विनय पत्रिका के एक पद में वह कहते हैं- कोई इस

संसार को सत्य कहता है, कोई असत्य कहता है और कोई दोनों मानता है किंतु जो इन सबसे परे होकरआगे बढ़ता है वही सत्य का परिचय प्राप्त करता है-

कोउ कह सत्य झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल करि माने।

तुलसीदास परिहरइ तीनि भ्रम,सो आपन पहिचाने।।

यह राम-नाम विनयावली है जिसमें 21 रागों का प्रयोग हुआ है। इसमें आध्यात्मिक जीवन परिलक्षित होता है।विनय पत्रिका के प्रारंभ में 63 स्तोत्र हैं जिनमें विभिन्न देवी-देवताओं की वंदना की गई है। उनकी वंदना करते हुए श्री राम की भक्ति की याचना की गई है। कालिकाल के द्वारा सताए जाने पर वह हनुमान का स्मरण करते हैं और हनुमान ही उन्हें विनय की पाती लिखने की सलाह देते हैं जिसे लिखकर वह श्री राम के चरणों में समर्पित कर देते हैं.

19.4 : पाठ सार

गोस्वामी तुलसीदास भक्ति काव्य की सगुन काव्य धारा के महत्वपूर्ण भक्त कवि हैं। उनकी अनेक प्रमुख रचनाएं हैं किंतु रामचरितमानस और विनय पत्रिका ने इन्हें शीर्ष स्थान पर लाकर खड़ा कर दिया। विनय पत्रिका ब्रजभाषा में लिखित राम के नाम एक विनय की पाती है। इसमें उस समय की प्रचलित सभी शैलियाँ दिखाई देती हैं वास्तव में विनय पत्रिका एक फेंटेसी है जिसके माध्यम से तुलसीदास जी ने समसामयिक परिस्थितियों को चित्रित करने के लिए राम का सहारा लिया है। राम के जीवन चरित्र को विनय पत्रिका का आधार बनाकर उसका गायन किया है। उनकी भक्ति सेवक सेव्य भाव पर आधारित है। इन्होंने विनय पत्रिका के द्वारा लोक मंगल की भावना को अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनका यह विश्वास था कि जब-जब धर्म का ह्रास होता है और पाप बढ़ते हैं, सज्जन कष्ट उठाते हैं और दुष्टों का अनाचार बढ़ता है तब तब भगवान मनुष्य का रूप धारण कर अवतरित होते हैं और अपनी लीलाओं के द्वारा धर्म की रक्षा करते हुए पाप का अंत करते हैं। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने राम कथा पर आधारित काव्य ग्रंथ की रचना की और अपनी मुक्ति के साथ-साथ लोक मंगल की कामना भी व्यक्त की,जिसका सबसे उत्कृष्ट उदाहरण विनय पत्रिका है। इसमें तुलसीदास ने अपने दैन्य भाव को व्यक्त किया है। ईश्वर दयालु हैं। वह पपियों का उद्धार करने वाले हैं और तुलसी यह मानते हैं कि उनसे बड़ा पापी और कोई नहीं है, इसीलिए वह बार-बार अपने हाथ जोड़कर उद्धार की कामना करते हैं। यही भाव विनय पत्रिका का आधार है।

19.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

- गोस्वामी तुलसीदास की काव्य प्रवृतियाँ स्पष्ट हुई हैं।

- जीवनोपयोगी मूल्यों की शिक्षा प्राप्त हुई है।
- तुलसीदास के ज्ञानवर्धक और जीवन को उत्कृष्ट बनाने वाले पद सूक्ष्म व्यंग्य को समेटे हुए एक अलग प्रकार का संदेश देते दिखाई देते हैं।
- यह ज्ञात हो सका है कि नवधा भक्ति के बारे में जानकारी मिली है।
- विनय पत्रिका के काव्य सौष्ठव से परिचय हुआ है।

19.6 : शब्द संपदा

1. सकल - सभी
2. परिलक्षित - दिखाई देता है
3. जड़ताई - मूर्खता या जड़ता
4. प्रतिपाद्य - वर्णित होने वाला विषय
5. समष्टिगत - संपूर्ण
6. स्तुति - प्रार्थना
7. व्यथा - पीड़ा
8. मूढ़ता - मूर्खता

19.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए ।

1. तुलसीदास का कवि परिचय दीजिए|
2. विनय पत्रिका के भाषिक सौंदर्य पर प्रकाश डालिए|
3. विनय पत्रिका के आधार पर तुलसीदास की भक्ति पर विचार कीजिए।
4. विनय पत्रिका के आधार पर तुलसीदास के दर्शन को स्पष्ट कीजिए|
5. तुलसी की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए|

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए ।

1. विनय पत्रिका के वर्ण्य विषय पर प्रकाश डालिए।

2. राम स्वभाव से कैसे हैं, पठित पदों के आधार पर समझाइए।

3. विनय पत्रिका का मूल भाव क्या है समझाइए?

4 तुलसीदास श्री राम से सीधे विनती ना कर सीता माता से अपनी विनती क्यों करते हैं? स्पष्ट कीजिए।

5. विनय पत्रिका में गोस्वामी तुलसीदास ने ब्रह्म और जीव को किस प्रकार व्याख्यायित किया है? स्पष्ट कीजिए।

खंड- (स)

बहुविकल्पीय प्रश्नः

I सही विकल्प चुनिए-

(1) विनय पत्रिका में अंब का संबोधन है -

(अ) सीता (ब) अंबिका (स) सरस्वती

(2) तुलसीदास राम को मानते हैं-

(अ) त्यागी (ब) कठोर (स) दयानिधान

II रिक्त स्थानों की पूति करें -

(क) नवधा भक्ति के प्रकार ....हैं ।

(ख) विनय पत्रिका का मूल भाव ....है।

(ग) वीर रस का स्थायी भाव----------- होता है|

(घ) विनय पत्रिका में हनुमान की स्तुति............ पदों में की गई है

III सुमेल कीजिए -

(क) तुलसीदास के हृदय में डर है	(अ) भक्ति रूपी अमृत की
(ख) तुलसीदास ने राम की कल्पना की है	(ब) शान्ता
(ग) तुलसी को भूख है	(स) रामबोला
(घ) दशरथ और कौशल्या की पुत्री का नाम	(द) कलिकाल का
(च) तुलसीदास के बचपन का नाम था	(य) शत्रुघ्न की
(छ) श्रुतिकीर्ति पत्नी हैं	(र) मानव और मानवेतर

19.8. पठनीय पुस्तकें

(1) तुलसी साहित्य विवेचन और मूल्यांकन - आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा, डॉ. वचन देव कुमार

(2) सूर तथा तुलसी के विनय पदों का तुलनात्मक अनुशीलन - प्रो. निर्मला एस मौर्य।

(3) तुलसी: आधुनिक वातायन से- रमेश कुंतल मेघ

(4) हिन्दी साहित्य का इतिहास- रामचन्द्र शुक्ल

(5) मध्यकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियां - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

(6) हिंदी साहित्य के बहुआयामी कोण -प्रो. निर्मला एस मौर्य

(7) राम भक्ति साहित्य में मधुर उपासना-डॉ.भुवनेश्वरनाथ मिश्र

इकाई 20: विनय पत्रिका – II : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

20.1 प्रस्तावना
20.2 उद्देश्य
20.3 मूल पाठ : विनय पत्रिका – II : व्याख्या
20.3.1 पदों का सामान्य परिचय
20.3.2 विस्तृत व्याख्या
20.3.3 काव्यगत विशेषताएं
20.4 पाठ सार
20.5 पाठ की उपलब्धियाँ
20.6 शब्द संपदा
20. 7 परीक्षार्थ प्रश्न -
20.8 पठनीय पुस्तकें

20.1 : प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है। भक्ति काल की रचनाएँ इसीलिए श्रेष्ठ मानी जाती हैं कि उनमें अपने समय और परिवेश का बड़ा ही यथार्थपूर्ण चित्रण दिखाई देता है और ये कविताएं मानवता का संदेश देने के लिए लिखी गई हैं। भक्ति का प्रचार और प्रसार करना ही इन कविताओं का उद्देश्य रहा है। विनय पत्रिका गोस्वामी तुलसीदास की दास्य भाव की रचना है जिसमें उन्होंने अपने दैन्य भाव को व्यक्त किया है।

20.2 : उद्देश्य

आप तुलसीदास द्वारा लिखित विनय पत्रिका की पाँच कविताओं का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- तुलसीदास के चिंतन को समझ सकेंगे।
- तुलसीदास के काव्य के आधार पर भक्ति काव्य की विशेषताएं जान सकेंगे।
- विनय पत्रिका के लेखन का उद्देश्य समझ पाएँगे।
- विनय पत्रिका में प्रयुक्त भाषिक अभिव्यक्ति को समझ पाएँगे|

- तुलसी के दार्शनिक चिंतन को समझ पाएंगे।

20.3 : मूलपाठ : विनय पत्रिका – II : व्याख्या

20.3.1 पदों का सामान्य परिचय

मन सदैव चलायमान है। भक्त तुलसीदास मन को अनेक प्रकार से समझाते हुए उसे ईश्वर के चरणों में वंदना करने का आग्रह करते हैं। मूर्ख मन सांसारिकता को छोड़कर केवल ईश्वर के चरणों में मन लगाएगा तभी उसका उद्धार होगा। श्री राम ज्ञान और गुणों के मंदिर हैं। श्रीराम संतों को प्रसन्न करने वाले हैं और वही सब पापों का नाश करने वाले हैं, अतः बिना योग और उपवास के संयम के साथ उनके चरणों में मन लगाने से जीव का उद्धार होगा। मन हठी है। अनेक प्रकार से शिक्षा देने के बावजूद वह अपने मन की ही करता है। जैसे किसी नारी को शिशु को जन्म देते समय कष्ट होता है फिर भी पुनः प्रसन्न होकर शिशु को जन्म देती है और जैसे कोई लालची धनिकों के दरवाजे पर घूमता फिरता रहता है, अपमानित होता है कुछ वैसी ही स्थिति मूर्ख मन की है वह केवल अपने मन की करता है। मूर्ख मन रामभक्ति रूपी गंगा को छोड़कर ओस के कणों की आशा करता है। वह सदैव गलत राह पर चलता है। कई बारतुलसी बहुत दुखी हो जाते हैं और वह ईश्वर से केवल यही पूछते हैं कि उन्होंने किस कारण उन्हे भुला दिया और उनकी रक्षा नहीं की। श्री राम को पतित पावन और दीनों की रक्षा करने वाला कहा जाता है फिर वह तुलसीदास की रक्षा क्यों नहीं करते? इसके लिए वह हाथी याद गीत आज का उदाहरण देते हुए ईश्वर से केवल यही प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी रक्षा करें। कालिकाल अत्यंत प्रबल है, तुलसी श्रीराम से कलि से अपनी रक्षा की विनती करते हैं। वह संसार को नरक के समान मानते हैं और इस नर्क से स्वयं का उद्धार करने की विनती श्री राम से करते हैं।
राम के सरल और शील स्वभाव का गुणगान करते हुए तुलसीदास ने हर पद में अपने उद्धार की कामना की है।श्री राम ने अहिल्या का उद्धार किया,शिवजी के धनुष को तोड़कर घमंडी राजाओं का तिरस्कार किया और परशुराम जी केक्रोध में आने पर उनसे क्षमा भी मांग ली, पिता के द्वारा वनवास दिए जाने पर खुशी से उनकी आज्ञा का पालन किया।सुग्रीव और विभीषण को बड़ी खुशी से अपना लिया। जो एक बार प्रणाम करने से प्रसन्न हो जाते हैं उन्ही श्रीराम के चरणों में भक्तिकरनी चाहिए।

20.3.2 विस्तृत व्याख्या

पद संख्या-85

मन माधव को नेकु निहारहि।
सुनु सठ सदा रँक के धन ज़्याँ, छिन छिन प्रभुहि संभारहि।।

सोभा सील ज्ञान गुन मंदिर, सुंदर परम उदारहि।
रजन संत अखिल अघ गंजन, भंजन विषय- विकारहि।।
जौं बिनु जोग यज्ञ व्रत संजम, गयउ चहहि भव पारहि।
तो जनि तुलसीदास निसि बासर, हरिपद-कमल बिसारहि।।

शब्दार्थ:
माधव-कृष्ण, नेकु-जरा सा, निहारहि -देखना, सठ-मूर्ख, रंक-गरीब, ज़्याँ-जिस प्रकार, संभारहि -संभालना, सील-शीलवान, उदारहि-उदार, रजन-प्रसन्न करना, अखिल-सम्पूर्ण, अघ-पाप, गंजन-नाश करना, भंजन-तोड़ना, जौं-यदि, जोग -योग, व्रत-उपवास, संजम-संयम, भव-संसार, पारहि-पार उतरना, जनि-मत /नहीं, निसि-बासर-रात और दिन, हरिपद-कमल-हरि के कमल रूपी चरणों में, बिसारहि-भुलाना।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास की प्रसिद्ध रचना विनय पत्रिका से ली गयी हैं। इनकी प्रसिद्ध रचनाओं में रामचरितमानस,विनय पत्रिका रामलला नहछू,वैराग्य संदीपनी, बरवै रामायण, दोहावली, पार्वती मंगल, रामाज्ञा प्रश्न आदि महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।विनय पत्रिका का मूल रस शांत रस है जिसका स्थाईभाव निर्वेद है।

प्रसंग: बड़े ही दैन्य भाव से गोस्वामी तुलसीदास श्री राम से अपने उद्धार की प्रार्थना करते हैं। इस पद में उनका दैन्य भाव देखा जा सकता है।वह श्रीराम के चरणों में सदैव अपने मन को लगाए रखना चाहते हैं।

व्याख्या: तुलसीदास जी कहते हैं हे मन ! तनिक माधव को देख सुन। सदा दरिद्र के धन की तरह छन-छन प्रभु का स्मरण किया कर। जो शोभा शुद्ध आचरण, ज्ञान और गुण के मंदिर हैं, अतिशय श्रेष्ठ व सुंदर हैं, संतों को प्रसन्न करने वाले हैं, समस्त पापों का नाश करने वाले और विषयों के दोष को नष्ट करने वाले हैं, ऐसे श्रीराम का भजन कर। यदि बिना योग- उपवास और संयम के संसार रूपी समुद्र के पार जाना चाहता है तो हे मन दिन-रात कभी भी भगवान के कमल चरणों को मत भूल उन्हीं में रम जा।

विशेष: श्रीराम के गुणों का बखान
अनुप्रास अलंकार
उपमा अलंकार
रूपक अलंकार
मुहावरों का प्रयोग
प्रतीक शब्दों का प्रयोग

बोध प्रश्न:

- श्रीराम के चरणों का स्मरण करने के लिए तुलसीदास मन को किसकी उपमा देते हैं?
- जीव के समस्त पापों का नाश करने वाले कौन हैं ?
- संसार रूपी सागर को पार करने के लिए जीव को क्या प्रयत्न करना होगा?

पद संख्या- 89

मेरो मन हरिजू हठ न तजै।
निसि दिन नाथ दे सिख बहु विधि, करत सुभाव निजै।।
ज़्याँ जुबती अनुभवति प्रसव अति, दारुन दुःख उपजे।
होइ अनुकूल बिसरि सूल सठ, पुनि खलु पतिहि भजे।।
लोलुप भ्रमत गृहप ज़्याँ जहँ तह,सिर पदत्रान बजै।
तदपि अधम विचरत तेहि मारग, कबहुँ न मूढ़ लजै।।
हाँ हारेउँ करि जतन विविध विधि, अतिसय प्रबल अजै।
तुलसिदास बस होइ तबहि जब, प्रेरक-प्रभु बरजै।।

शब्दार्थ: हरिजू -हे हरि, तजै -छोड़ना, निसि - दिन-रात और दिन, दे सिख -सीख देना, बहु विधि-अनेक प्रकार से, निजै -अपने, ज़्याँ -जैसे, दारुण-भयानक, उपजे है-उत्पन्न होता है, बिसारि-भुलाना, सूल-दुख, सठ-मूर्ख, पुनि-फिर से,खलु -दुष्ट, भजे-भजन या सेवा करना, लोलुप-लालची, भ्रमत-घूमता है, गृहप-गृहस्थ, ज़्याँ-तहँ-जहां-तहां, तदपि-यद्यपि, अधम-नीच, विचरत -घूमता है, तेहि-उसी, जतन-प्रयास,बरजे-मना करना।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियां तुलसीदास द्वारा रचित विनय पत्रिका से उद्धृत हैं। गोस्वामी तुलसीदास भक्ति काव्य की सगुण काव्य धारा के दूसरे महत्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। रामचरितमानस, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, बरवै रामायण, दोहावली, वैराग्य संदीपनी, हनुमान बाहुक,विनय पत्रिका आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं।

प्रसंग: तुलसीदास सगुण मार्गी थे। उन्होंने राम के जीवन चरित को काव्य का आधार बनाया और उनकी लोक लीलाओं का गायन किया। उनकी भक्ति सेवक- सेव्य भाव पर आधारित थी।तुलसीदास मन को अनेक प्रकार से समझाते हुए प्रभु श्री राम के चरणों में अपना मन लगाने को कहते हैं क्योंकि,उनकी भक्ति करने से ही जीव का उद्धार होगा।

व्याख्या: मेरा मन कभी भी हठ को नहीं छोड़ता। दिन-रात अनेक प्रकार से शिक्षा देता हूं परंतु वह अपने ही स्वभाव के अनुसार कार्य करता है। जैसे किसी स्त्री को शिशु जन्म के समय अत्यंत

दुख और पीड़ा उत्पन्न होती है यह जानते हुए भी वह मूर्ख पीड़ा को भुलाकर पुनः प्रसन्न होकर पति की फिर उसी भाव से सेवा करती है। जैसे अत्यंत लालची गृहस्थ यहां वहां धनिकों के दरवाजे पर घूमता फिरता है उनका अपमान होता है तब भी वह मूर्ख उसी रास्ते पर चलता है, उसे कभी भी लज्जा का अनुभव नहीं होता। मेरे मन की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है। मैं अनेक प्रकार उपाय करके हार गया। यह मन अत्यंत बलवान है, जीतने के योग्य नहीं है। तुलसीदास जी कहते हैं कि वह वशीभूत तो तभी होगा जब आज्ञा करने वाले श्री रामचंद्र उसको मना करेंगे और उसे अपने चरणों में लगाएंगे।

विशेष: अनुप्रास अलंकार

रूपक अलंकार

प्रतीक शब्दों का प्रयोग

लाक्षणिक भाषा सौंदर्य

मुहावरा प्रयोग

बोध प्रश्न -

- तुलसीदास अपने मन की तुलना किससे करते हैं?
- तुलसीदास ने कल्पतरु और मुक्ति का धाम किसे बताया है?
- तुलसी की दृष्टि में अत्यंत बलवान कौन है?

पद संख्या- 90

ऐसी मूढ़ता या मन की।
परिहरि रामभगति- सुरसरिता,आस करत ओसकन की।।
धूम समूह निरखि चातक ज्यों, तृषित जानि मति घन की।
नहिं तहँ सीतलता न पानि पुनि, हानि होत लोचन की।।
ज्यों गच - कांच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तन की।
टूटत अति आतुर अहार बस, छति बिसारि आनन की।।
कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि, जानत हौ गति जन की।
तुलसिदास प्रभु हरहु दुसह दु:ख, करहु लाज निज पन की।।

शब्दार्थ: मूढ़ता -मूर्खता, या-इस, परिहरि-छोड़ना, आस -आशा, ओसकन -ओस के कण, धूम -धुआँ, निरखि-देखकर, चातक ज्यों -पपीहे के समान, तृषित-प्यासा, घन -बादल, तहँ -वहाँ, पुनि -फिर से, लोचन-नेत्र, गच-बाज, बिलोकि -देखकर, छाँह -परछांही, आतुर -व्याकुल, बिसारि -

भुलाकर, आनन -मुख, कहौं -कहूँ, कहँ लौं -कहाँ तक, कृपानिधि -दया के सागर, जन -भक्त, हरहु -दूर करो, दुसह -कठिन, करहु -करें, निज -अपने, पन -प्रण।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ विनय पत्रिका से उद्धृत हैं। गोस्वामी तुलसीदास सगुण भक्ति धारा के अंतर्गत राम भक्ति शाखा के कवि माने जाते हैं। भाषा,भक्ति, दर्शन आदि में समन्वय का परिचय देने के कारण उन्हें समन्वयवादी माना जाता है।

प्रसंग: तुलसीदास श्रीराम के चरणों में अपना मन लगाना चाहते हैं किंतु मन उनकी बात नहीं मानता और विषय वासनाओं में लीन रहता है,इससे व्यथित होकर वह बार-बारअपने इष्ट राम से विनती करते हैं कि वह उन पर दया की दृष्टि रखें जिससे तुलसीदास की सभी कठिनाइयाँ और दुख दूर हो पाएं।

व्याख्या: इस मन की ऐसी मूर्खता है कि यह श्री राम भक्त रूपी गंगा जी को छोड़कर ओस की बूंदों से तृप्त होने की आशा करता है। जैसे प्यासा पपीहा बहुत सा धुआँ देखकर उसे मेघ समझ लेता है, परंतु वहां ना तो उसे शीतलता मिलती है ना ही जल मिलता है।धुएं से उसकी आंखें फूट जाती हैं। यही दशा इस मन की है। जैसे मूर्ख बाज कांच की फर्श में अपने ही शरीर की परछाई देखकर उसपर चोंच मारने से वह टूट जाती है, इस बात को भूख के मारे भूल कर जल्दी से उस पर टूट पड़ता है, वैसे ही यह मेरा मन भी विषय वासनाओं पर टूट पड़ता है। हे कृपा के भंडार इस कुचाल का मैं कहां तक वर्णन करूं? आप तो दास की दशा जानते ही हैं। हे स्वामी तुलसीदास का दारुण दु:ख हर लीजिए और अपने शरणागत-वत्सलता के प्रण की रक्षा कीजिए।

विशेष: प्रतीक शब्दों का प्रयोग

मुहावरा प्रयोग

संगीतात्मकता

अनुप्रासअलंकार

उपमा अलंकार

भक्त के जीवन की सच्चाई का उद्घाटन

बोध प्रश्न:

- मूर्ख मन किसकी आशा करता है?
- पपीहे की क्या गति होती है?
- शरणागत वत्सल कौन है?

पद संख्या -94

काहे तँ हरि मोहि बिसारो।

जानत निज महिमा मेरे अघ, तदपि न नाथ संभारो ।।
पतित पुनीत दीन-हित असरन,सरन कहत सुति चारो।
हाँ नहिं अधम समीत दीन विधाँ,वेदन्ह मृषा पुकारो।।
खग गनिका गज व्याध पाँति जह,तहँ हाँ हूँ बैठारो।
अब केहि लाज कृपानिधान परसत पनवारो फारो।
जौ कलिकाल प्रबल होतो अति, तुव निदेस त न्यारो।।
तो तजि रोस भरोस दोष गुन,तेहि भजते तजि गारो।
मसक विराचि बिरश्चिलसक सल,करहु प्रभाउ तिहारो।
अस सामर्थ्य अक्षत मोहि त्यागहु, नाथ तहाँ कछु चारो।।
नाहि न नरक परत लोकह डर,जद्यपि हाँ अति हारो।
यह वड़ि त्रास दासतुलसी प्रभु, नाम पाप न जारो।।

शब्दार्थ: बलि जइहौं-बलि जाता हूं, कहइ -कहता है, मोहि -मुझे, बिसारो -भुलाना, निज -स्वयं, अघ -पाप, तदपि -यद्यपि, संभारो-संभालना, पतित -गिरा हुआ, पुनीत -पवित्र, दीन हित -गरीब की भलाई, सरन -शरण में, हाँ -मैं, अधम -नीच, मृषा -असत्य, खग -पक्षी, गनिका -गणिका, गज -हाथी, व्याध -शिकारी, जह तहँ -यहाँ वहाँ, केहि -किसके, कृपानिधान, परसत -परोसना, पनवारो-पत्तल, फारो -फाड़ना, जौ -यदि, प्रबल -शक्तिशाली, तुव -तुव -आपका, निदेस -आज्ञा, अति -अत्यंत, तजि -छोड़ना, रोस -क्रोध, भरोस -भरोसा, तेहि -उसका, भजते -भजन करना, गारो -गर्व, मसक-मच्छर, करहु -करते हैं, प्रभाउ-प्रभाव, मोहि -मुझे, हारो -थक गया हूँ, परत -गिरना, वड़ि -बड़ा, त्रास -डर, जारो -जलाना।

संदर्भ: प्रस्तुत पक्तियाँ विनय पत्रिका से ली गई हैं। विनय पत्रिका ब्रजभाषा में लिखित एक ग्रंथ है जिसमें विभिन्न प्रकार के रागों का प्रयोग किया गया है। प्रमुख रस शांत रस है। इसमें तुलसीदास ने स्वयं को जीव मानते हुए श्री राम के चरणों में जीव को अपना मन लगाने का संदेश देते हैं। विनय पत्रिका के प्रारंभ में विभिन्न देवी-देवताओं की स्तुति की गई है। उसके पश्चात श्री राम से जीव के उद्धार की याचना की गई है। विनय पत्रिका भगवान श्री राम के चरणों में समर्पित है।

प्रसंग: तुलसीदास बड़े ही दीन भाव से अपने इष्ट श्रीराम से अपनी रक्षा करने की विनती करते हैं और उनका गुणगान करते हुए उन्हें पतित-पावन, दीन हितकारीऔर शरणागत वत्सल की

उपमा देते हैं। वह बार-बार यही कहते हैं कि कलिकाल से तुलसी की रक्षा करें क्योंकि, एक श्रीराम ही हैं जो बड़े से बड़े कार्य को छोटा और छोटे से छोटे कार्य को बड़ा बना सकते हैं।

व्याख्या: हे भगवान! किस कारण आपने मुझे भुला दिया है? हे नाथ! अपनी महिमा और मेरे पापों को आप जानते हैं तब भी मेरी रक्षा नहीं करते। चारो वेद आपको पतित पावन, दीन, हितकारी और आश्रितों का शरणागति शरण कहते हैं, तो क्या मैं पतित, भयभीत और दीन नहीं हूं या फिर वेदों ने मिथ्या कहा है। गिद्ध, गणिका, हाथी और व्याध की पंक्ति में मुझे बैठाकर हे कृपानिधान! अब आप किसकी शर्म से पत्तल फाड़ रहे हैंअर्थात मेरा उद्धार नहीं कर रहे हैं। यदि कलिकाल आपकी आज्ञा को न मानने वाला अत्यंत प्रबल होता तो सभी आपके गुणों पर भरोसा छोड़ देते और उस पर क्रोध करने तथा उसे दूषित ठहराने की अपेक्षा उसका भजन करते। आप तो मच्छर को ब्रह्म और ब्रह्म को मच्छर बना सकते हैं, इतनी विशाल आपकी महिमा है। ऐसी शक्ति रहते हुए मुझे आपने त्याग दिया है। श्रीराम तब वहां मेरा वश ही क्या है? यद्यपि मैं नरक भोगते भोगते बहुत थक गया हूं और मुझे उसमें गिरने का भी डर नहीं है। हे प्रभु! मुझे सबसे बड़ा डर लगता है कि तुलसीदास के पाप को प्रभु का नाम भी भस्म नहीं कर पाया।

विशेष: दास्य भक्ति की पराकाष्ठा

अनुप्रास अलंकार

लाक्षणिक भाषा प्रयोग

मुहावरों का प्रयोग

उदाहरण अलंकार

कलिकाल के प्रभाव का वर्णन

बोध प्रश्न:

- चारो वेद किसका बखान करते हैं?
- गिद्ध, गणिका, व्याध का उद्धार किसने किया था?
- कलिकाल किसको सताता है?

पद संख्या- 100

सुनत सीतापति सील सुभाउ।

मोद न मन तन पुलक नयन जल, सो नर खेहर खाउ।।

सिसुपन तँ पितु मातु बंधु गुरु, सेवक सचिव सखाउ।

कहत राम बिधु -बदन रिसौहैं, सपनहुँ लखेउ न काउ।।

खेलत संग अनुज बालक नित, जोगवत अनट अपाउ।

जीति हारि चुचकारि दुलारत- डेत दियावत दाउ।।
सिला साप संताप बिगत भइ, परसत पावन पाउ।
दई सुगति सो न हेरि हरष हिय, चरन छुए को पछिताही।।
भव-धनु भजि निदरि भूपति, भृगुनाथ खाइ गए ताउ।
छमि अपराध क्षमाय पाँय परि, इतो न अनत समाउ।।
कहेउ राज वन दियेउ नारि-बस, गरि गलानि गए राउं।
ता कुमातु को मन जोगवत ज़्याँ, निज तन मरम-कुघाउ।।
कपि सेवा बस भये कनौड़े, कहेउ पवनसुत श्राउ।
देवे को न कछु रिनियाँ हाँ, धनिक तू पत्र लिखाउ।।
अपनायउ सुग्रीव विभीषन, तिन्ह न तजेउ छल छाउ।
भरत सभा सनमानि सराहत, होत न हृदय अघाउ।।
निज करुना करतूति भगत पर, चपत चलत चरचाउ।
सकृत प्रनाम प्रनत जस बरनत, सुनत कहत फिर गाउ।।
समुझि समुलि गुन ग्राम राम के, उर अनुराग बढ़ाउ।
तुलसिदास अनयास राम-पद, पइहै प्रेम पसाउ।।

शब्दार्थ: सील -शील, सुभाउ-स्वभाव, मोद-आनंद, पुलक -प्रसन्न, नयन -नेत्र, सो नर-वह मनुष्य, खेहर खाउ-धूल खाने वाले, सिसुपन -बचपन, तँ -से, बंधु -भाई, सचिव -मंत्री, सखाउ-मित्र, बिधु-चंद्रमा, बदन -शरीर, रिसौहैं-क्रोधयुक्त, लखेउ-देखा, काउ-कभी, अनुज -भाई, नित -रोज, जोगवत-खेलते हुए, अनट -अत्याचार, अपाउ -अन्याय, चुचकारि दुलरात -पुचकार कर प्यार के साथ, दियावत -दिलवाना, दाउ-दांव, सिला -पत्थर, साप -श्राप, संताप -दु:ख, बिगत भई -छूट गई, परसत -स्पर्श, पावन -पवित्र, सुगति -अच्छी गति, हेरि -देखकर, हिय -हृदय, भवधनु -शिवधनुष, भजि-तोड़ना, निदरि-तिरस्कार, भूपति-राजा, भृगुनाथ-परसुराम, ताउ-ताव, समाउ -सहनशीलता, अनत -दूसरे में, गलानि-ग्लानि, राउँ-राजा, मरम -हृदय, कनौड़े-उपकार, रिनियाँ -ऋण, तजेउ -छोड़ा, चरचाउ-चर्चा, जस -यश, बरनत -वर्णन, फिर -बार-बार, समुझि-समझकर, अनयास-बिना परिश्रम, पइहै पाओगे

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ विनय पत्रिका से ली गई हैं जिसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं। यह इनकी एक प्रसिद्ध रचना है।इसमें विभिन्न प्रकार के रसों का प्रयोग हुआ है। राम का नाम तुलसी के लिए चिंतामणि के समान है जिसे वह अपने हृदय में संभाल कर रखना चाहते हैं। वह

अपने मन को श्री रघुनाथ के चरण-कमल में ही का रखना चाहते हैं और श्री राम नाम का जप छोड़कर मन को कहीं और जाने देना नहीं चाहते। इसी भावना को विनय पत्रिका में लाक्षणिक भाषा और प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्ति मिली है।

प्रसंग: श्री राम सबके मन को आनंदित करने वाले हैं। वह शील स्वभाव के हैं। वह सबके मन को सदा आनंदित करते हैं। किसी ने कभी भी उन्हें क्रोध में नहीं देखा। उन्होंने शिला रूपी अहिल्या का उद्धार किया। शिव के धनुष को तोड़कर घमंडी राजाओं का तिरस्कार किया। हनुमान की भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें अपने गले लगाया। सुग्रीव और विभीषण को भी अपनाया। जिन्होंने उनके साथ छल किया उन पर भी उन्होंने दया कर माफ कर दिया। ऐसे श्री राम का यशोगान करते हुए तुलसी बार-बार स्मरण दिलाते हैं कि उन्हें तुलसी पर भी अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखनी है।

व्याख्या: सीतानाथ के शील स्वभाव को सुनते ही जिसका मन आनंदित ना हो, शरीर पुलकित, मन और नेत्रों में प्रेम के आंसू नहीं उमड़े तो वह मनुष्य धूल खाने वाले कीड़े मकोड़े के समान निषिद्ध जीव है। बचपन से ही पिता, माता, भाई, गुरु, सेवक, मंत्री और मित्र ने भी रामचंद्र जी के मुख-चंद्र को सपने में भी क्रोधयुक्त नहीं देखा, सब ऐसा कहते हैं। छोटे भाइयों और बालक मित्रों के साथ नित्य खेलते हुए उन्हे अत्याचार और अन्यायों से बचाते थे। अपनी जीती हुई बाजी हार कर प्यार के साथ दांव देते और दूसरों को दिलवाते थे। शिला रूपी अहिल्या पवित्र चरणों के स्पर्श से श्राप के दु:ख से छूट गई। उसको अच्छी गति दी यह देखकर उनके हृदय में हर्ष नहीं हुआ बल्कि ऋषि पत्नी को पांव से छूने का पछतावा हुआ। शिवजी के धनुष को तोड़कर घमंडी राजाओं का तिरस्कार किया जिससे परशुराम जी क्रोध से उबल पड़े। उनके अपराध को क्षमा करके उल्टे पांव पड़ कर स्वयं क्षमा प्रार्थी हुए, इतनी सहनशीलता दूसरे में नहीं है। राजा दशरथ ने राज्य देने की बात कहकर स्त्री के अधीन होने के कारण वनवास दे दिया और उसके संताप से उनकी मृत्यु भी हो गई। ऐसी नीच माता के मन को भी आप ऐसे बचाते रहे जैसे अपने शरीर के मर्मस्थल के घाव को लोग बचाते हैं। हनुमान जी की सेवा से उपकार के बोझ से दबकर उनके वश में हुए और कहा हे पवन कुमार! आओ, मैं तुम्हारा ऋणी हूं और तुम मेरे साहूकार हो, मेरे पास देने को कुछ नहीं है तुम मुझे दस्तावेज लिखा लो जब तुम्हारे उपकार के योग्य सामग्री मेरे पास प्रस्तुत होगी तब प्रत्युपकार करके ऋण से मुक्त हो जाऊंगा। सुग्रीव और विभीषण को आपने अपनाया परंतु उन्होंने छल नहीं छोड़ा। सभा में उनका सम्मान करके भरत से बड़ाई करते हुए हृदय की तृप्ति ही नहीं होती थी। अपनी दया की करनी है जो भक्तों पर आप करते हैं और उसकी चर्चा चलने से लज्जित होते हैं। एक बार प्रणाम करने से विनीत जनों का यश वर्णन करते हैं, सुनते हैं और बार-बार गान करके कहते हैं। ऐसे करुणा हृदय श्री रामचंद्र जी के गुण समूह समझकर हृदय में उनके लिए प्रेम बढ़ाओ। तुलसीदास जी कहते हैं कि बिना परिश्रम ही श्री रामचंद्र जी के चरणों के प्रेम से स्वामी की प्रसन्नता पाओगे अर्थात प्रेम से प्रभु अवश्य प्रसन्न होते हैं।

विशेष: पद का भाव यह है कि तुलसी ने अपना जीवन यूं ही नष्ट कर दिया। उन्हें ऐसा लगता है कि अब तक उनका जो नुकसान हुआ कोई बात नहीं किंतु आगे से वह श्री राम के चरणों को छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं जाएंगे।

उपमा अलंकार

अनुप्रास अलंकार

विशेष भाषा प्रयोग

मुहावरों का प्रयोग

प्रतीक शब्दों का प्रयोग

रूपक अलंकार

बोध प्रश्न:

- लोकनायक किसे कहा जाता है?
- विनय पत्रिका में कितने रागों का प्रयोग हुआ है?
- जीव को सांसारिकता से मुक्ति कैसे मिलती है?

20.3.3 काव्यगत विशेषताएं

कविता के दो महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं भाव पक्ष और कला पक्ष अर्थात भाव सौंदर्य और कला सौंदर्य। जिसमें कवि की कल्पना, रस, विचार, संदेश शामिल होते हैं उसे भाव पक्ष कहते हैं और छंद, अलंकार, भाषा, शैली आदि कला पक्ष के अंतर्गत आते हैं। विनय पत्रिका राम विनयावली है जिसमें विनय के पद हैं और इसमें 21 रागों का प्रयोग हुआ है। भाव पक्ष एवं कला पक्ष की दृष्टि से विनय पत्रिका सशक्त है।

20.3.3.1भावगत विशेषताएं

भावगत विशेषताओं में प्रकृति सौंदर्य, रस निरूपण, विषय वस्तु, जैसी विशेषताओं को लिया जाता है। इस ग्रंथ में प्रमुख रस शांत रस है, जिसका स्थाई भाव 'निर्वेद' होता है। इस रस के अतिरिक्त विनय पत्रिका में नवधा भक्ति का निरूपण हुआ है और उसके लिए अन्य कई रसों को सहायक के रूप में लिया गया है। तुलसी ने स्वयं को जीव मानते हुए बार-बार उसे यह संदेश दिया है कि उसे अपने मन को कहीं अन्यत्र भटकने नहीं देना है और अपने इष्ट श्रीराम के चरणों में यदि वह अपने मन को लगाता है तभी उसे संसार रूपी सागर से मुक्ति मिलेगी। इस संग्रह में काव्य, भक्ति और संगीत का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। वास्तव में विनय पत्रिका भक्ति के हृदय का आत्मोद्गार है। मूलत जो कवि अधिक भावुक होता है उसके काव्य का भाव पक्ष अत्यंत स्निग्ध और सहज सौंदर्य से मंडित होता है। तुलसीदास जी का भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों ही समृद्ध है। तुलसी का सामान्य व्यावहारिक ज्ञान इतना विस्तृत और मँजा हुआ था कि उन्होंने कविता के भाव पक्ष और कला पक्ष की बराबर रक्षा की।तुलसीदास जी का भाव पक्ष भक्ति से

प्रेरित है। उनके भाव पक्ष में हमेशा भक्ति भाव ही दिखाई देता है। उनकी भक्ति भावना एकदम सरल और आसान रेखा की तरह है। तुलसीदासअपने मन को यह संदेश देते हैं कि यह शरीर चमड़े से बना हुआ है जो कि नश्वर है फिर इससे इतना मोह क्यों? श्रीराम के नाम में यदि वह अपना ध्यान लगाएगा तो भवसागर से पार हो जाएगा। तत्कालीन समाज में जो विषमताएं व्याप्त थीं, गोस्वामी जी ने दर्शन और भक्ति के माध्यम से अपने भावों को जिस रूप में व्यक्त किया है, अपने उस दृष्टिकोण के कारण वह समन्वयवादी और समाज सुधारक भी माने गए।

20.3.3.2 कलागत विशेषताएं :

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का यह मानना था कि 'भाषा पर जैसा अधिकार गोस्वामी तुलसीदास जी का था वैसा और किसी हिंदी कवि का नहीं।' कला पक्ष की समृद्धि और सौंदर्य भाषा अधिकार पर आश्रित होती है। महाकवि तुलसीदास जी का भाषा पर विशेष अधिकार था। उन्होंने जितना अवधी भाषा का प्रयोग किया है उतना ही प्रयोग ब्रजभाषा का भी किया है। विनय पत्रिका ब्रजभाषा में लिखी गई है। भक्ति, दर्शन और भाषा के समन्वय के कारण ही उन्हें समन्वयवादी कवि माना जाता है। कवितावली, गीतावली और विनय पत्रिका तीनों की भाषा ब्रज है।विनय पत्रिका में विभिन्न प्रकार के अलंकारों का सौंदर्य भाषा को सौन्दर्य प्रदान करता है।विनय पत्रिका में गुरु की महिमा, समन्वय भाव, आत्म निवेदन, जीवन संघर्ष आदि के सजीव चित्र दिखाई देते हैं। यही कारण है कि यह ग्रंथ पाठकों को प्रबलता से अपनी ओर आकर्षित करता है।

20.4 : पाठ सार

गोस्वामी तुलसीदास की विनय पत्रिका से यह संदेश मिलता है कि ईश्वर के प्रति अनुराग सांसारिकता से जीव को मुक्ति दिलाता है। विनय पत्रिका में279 पदहैं और विभिन्न राग - रागिनियों का प्रयोग विनय पत्रिका को सौंदर्य प्रदान करता है। विनय पत्रिका का प्रमुख रस शांत रस है और इसमें भक्ति का परिपाक दिखाई देता है। यह आध्यात्मिक जीवन को परिलक्षित करती है। इसमें जितने भी देवी देवताओं से संबंधित पद और स्तोत्र आते हैं उन सभी का गुणगान करते हुए उनसे राम की भक्ति की याचना की गई है। वास्तव में यह राम के चरणों में विनय की पत्रिका है जिसमें तुलसी रूपी जीव अपने ईष्ट से इस संसार रूपी सागर से पार उतरने की याचना करता है। काव्य कृतियों की दृष्टि से कवि तुलसीदास का भाव पक्ष एवं कला पक्ष काफी मजबूत है। जीवन के मर्मस्पर्शी पक्षों की अभिव्यक्ति इसकी विशेषता है। अपनी व्यक्तिगत सत्ता से अलग हटकर जो सबके लिए कुछ सोचता है और वर्तमान के धरातल पर भविष्य की ओर संकेत करता है वही लोकनायक हो सकता है। संत तुलसीदास इसीलिए लोकनायक कहलाए। संसार के वास्तविक दृश्यों और जीवन की वास्तविक दशाओं में जो हृदय समय-समय पर रमता है वही सच्चा कवि हृदय होता है। तुलसीदास जैसे संत ही भावों की व्यंजना अत्यंत

उत्कर्ष पर कोई और नहीं पहुंचा सकते हैं और वास्तविकता का आधार भी नहीं छोड़ते हैं। वह अपने भावों को उसी रूप में व्यंजित करते हैं जिस रूप में उनकी अनुभूति जीवन में होती है। तुलसीदास की दृष्टि सदैव वास्तविक जीवन दशाओं के मार्मिक पक्षों के उद्घाटन की ओर रही है। वह सांसारिक जीवन में रहने वाले मनुष्यों की अधिक चिंता करते हैं। विनय पत्रिका में भावों की व्यंजना दिखाई देती है और कला पक्ष की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के अलंकारों के प्रयोग के साथ मुहावरों से भाषा सुंदर बन पड़ी है। लाक्षणिक शब्दोंका प्रयोग करते हुएबिंबों की स्थापना की गई है। प्रतीक शब्दों की भरमार दिखाई देती है।

तुलसीदास ने अपने पदों के द्वारा मानव को यह संदेश दिया है कि मानव का जन्म बड़ी मुश्किल से मिलता है, इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि इस संसार रूपी सागर से पार उतरने के लिए ईश्वर की भक्ति की जाए।विनय पत्रिका का प्रमुख रस शांत रस है और इस रस का स्थाई भाव निर्वेद होता है। यह आध्यात्मिक जीवन को परिलक्षित करती है। इसके प्रारंभ के पदों मेंगणेश, शिव, पार्वती, गंगा, जमुना, चित्रकूट, हनुमान, सीता की स्तुतियां दी गई हैं और उसके पश्चात राम की वंदना की गई है।विनय पत्रिका के पदों की भाषा ब्रजहै।

20.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

- जो मनुष्य अपने जीवन में बदलाव लाना चाहते हैं और सन्मार्ग पर चलना चाहते हैं उनके लिए विनय पत्रिका कई तरह से उपयोगी है।
- जीवन में सफलता हासिल करने के लिए विनयपत्रिका में पर्याप्त मार्गदर्शन निहित है।
- तुलसीदास के ज्ञानवर्धक और जीवन को उत्कृष्ट बनाने वाले पद सूक्ष्म व्यंग्य को समेटे हुए हैं।
- नवधा भक्ति के स्वरुप को समझने के लिए विनय पत्रिका एक उपयोगी काव्य है।

20.6 : शब्द संपदा

1. अभिव्यक्ति	-	व्यक्त करना
2. उपलब्धि	-	प्राप्ति
3. ज्ञानवर्धक	-	ज्ञान बढ़ाने वाला
4. उत्कृष्ट	-	श्रेष्ठ
5. परिलक्षित होना	-	दिखाई देना
6. सन्मार्ग पर	-	सही रास्ते पर

20.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. विनय पत्रिका के भाषिक सौंदर्य पर प्रकाश डालिए|
2. विनय पत्रिका के आधार पर तुलसीदास जी की भक्ति पर विचार कीजिए।
3. विनय पत्रिका के आधार पर तुलसीदास के दर्शन को स्पष्ट कीजिए|
4. तुलसी की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए|

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. अपने पदों में तुलसी ने 'मन' को क्या-क्या निर्देश दिए हैं?
2. पठित पदों के आधार पर तुलसी द्वारा वर्णित मन के स्वाभाव का वर्णन कीजिए.
3. 'सुनत सीतापति सील सुभाउ' पद का भाव अपने शब्दों में लिखिए.

खंड- (स)

I सही विकल्प चुनिए-

(क) रामाज्ञा प्रश्नावली रचना है -

(अ) सूरदास (ब) नाभादास (स) तुलसीदास

(ख) समन्वयवादी कहा जाता है -

(अ) तुलसीदास (ब) अग्रदास (स) सूरदास

(ग) वेद कितने होते हैं -

(अ) चार (ब) दो (स) पाँच

(घ) तुलसीदास के गुरु का नाम है -

(अ) रामानंद (ब) नरहरिदास (स) शंकराचार्य

(च) विनय पत्रिका में पद हैं-

(अ) 220 (ब) 279 (स) 280

II रिक्त स्थानों की पूति करें -

(क) रस के प्रकार ....हैं।

(ख) वेदांग …………..प्रकार के होते हैं।

(ग) शृंगार रस का स्थाई भाव----------- होता है|

(घ) विनय पत्रिका की भाषा……………..है।

(च) विनय पत्रिका में हनुमान की स्तुति।।।। पदों में की गई है

III सुमेल कीजिए -

1.	विनय पत्रिका मूल रस है	(अ) हुलसी
2.	विनय पत्रिका लिखी गई है	(ब) हनुमान
3.	तुलसी की माता का नाम	(स) शेषनाग के
4.	अर्जुन के रथ की पताका पर बैठे रहते हैं	(द) शांत
5.	लक्ष्मण अवतार हैं	(य) बृज भाषा में
6.	मांडवी पत्नी है	(र) भरत की

20.8 : पठनीय पुस्तकें

(1) तुलसी साहित्य विवेचन और मूल्यांकन-आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा, डॉ. वचन देव कुमार

(2) सूर तथा तुलसी के विनय पदों का तुलनात्मक अनुशीलन-प्रो. निर्मला एस मौर्य

(3) तुलसी: आधुनिक वातायन से- रमेश कुंतल मेघ

(4) हिन्दी साहित्य का इतिहास- रामचन्द्र शुक्ल

(5) मध्यकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियां-आचार्य परशुराम चतुर्वेदी,

(6) हिंदी साहित्य के बहुआयामी कोण -प्रो. निर्मला एस मौर्य

इकाई 21 : विनय पत्रिका – III : व्याख्या

काई की रूपरेखा

21.1 प्रस्तावना

21.2 उद्देश्य

21.3 मूल पाठ : विनय पत्रिका – III : व्याख्या

21.3.1 पदों का सामान्य परिचय

21.3.2 विस्तृत व्याख्या -

21.3.4 काव्यगत विशेषताएँ

21.4 पाठ सार

21.5 पाठ की उपलब्धियाँ

21.6 शब्द संपदा

21.7 परीक्षार्थ प्रश्न

21.8 पठनीय पुस्तकें

21.1 : प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के चारो कालों में भक्तिकाल काअपना विशेष महत्व रहा है क्योंकि, उसे समय के समाज में जो विषमताएं व्याप्त थीं और आम आदमी जिस तरह शोषण का शिकार था उन परिस्थितियों में राम और कृष्ण की लोक रक्षक तथा लोक रंजन रूप में परिकल्पना करते हुए उसे काल के संतों ने जो कुछ लिखा वह सदा के लिए अमर हो गया। जब तक मानवता रहेगी तब तक उनके यह ग्रंथ मनुष्य को रास्ता दिखाते रहेंगे इसी प्रदेयता के कारण भक्तिकाल को स्वर्ण युग कहा गया है| इस काल में जो भी रचनाएं लिखी गयीं, उनका साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं अपितु मानवता की दृष्टि से भी का विशेष महत्व रहा है। विश्व में भारतीय संस्कृति का अपना अलग महत्व रहा है और गोस्वामी तुलसीदास जी ने इसी भारतीय संस्कृति को अपनी रचनाओं में जिया है| विनय पत्रिका के पद आज भी मानव जीवन की सार्थकता से जुड़े हुए हैं|

21.2 : उद्देश्य

इस इकाई मेंआप तुलसीदास कृत विनय पत्रिका की कुछ कविताओं का अध्ययन करेंगे। प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के पश्चात आप -

. तुलसीदास की काव्यगत विशेषताएं जान सकेंगे।

- तुलसीदास के चिंतन को समझ सकेंगे।
- गोस्वामी तुलसीदास का साहित्यिक परिचय पा सकेंगे|
- विनय पत्रिका के लेखन का उद्देश्य समझ पाएंगे।
- विनय पत्रिका के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास के दार्शनिक चिंतन को समझ पाएँगे।
- विनय पत्रिका में प्रयुक्त भाषिक अभिव्यक्ति से परिचित हो सकेंगे|

21.3 : मूलपाठ : विनय पत्रिका – III : व्याख्या

21.3.1 पदों का सामान्य परिचय:

भक्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी के द्वारा रचित विनय पत्रिका में कुल 279 पद हैं जो विभिन्न विषयों को लेकर रचित हैं। इन पदों में दिखाई देने वाली भक्ति दास्य भाव की भक्ति है। इसमें तुलसीदास जी ने अपने दैन्य भाव को व्यक्त किया है। उनका मानना है कि ईश्वर दयालु हैं वह सभी पपियों का उद्धार करने वाले हैं। उनका यह मानना है कि उनके जैसा पापी कोई नहीं है इसीलिए वह अपने उद्धार के लिए अपने इष्ट राम से प्रार्थना करते हैं। यही भाव विनय पत्रिका के पदों में व्यक्त हुआ है।वह श्री राम के चरणों को छोड़कर कहीं और जाना नहीं चाहते क्योंकि उन्हें पूरा विश्वास है कि उनके समान पतितों का उद्धार करने वाला अन्य कोई देवी देवता नहीं है। देवता, दानव, मुनि, नाग, मानव सभी माया के बस में होकर इस संसार में विचरण करते रहते हैं और इन सभी का उद्धार केवल श्री राम के हाथों ही संभव है।मानव देह मिलना अपने आप में ईश्वर की कृपा हैक्योंकि, यह देवताओं के लिए भी बड़ा दुर्लभ होता है। वह अपने इष्ट राम से केवल इतनी ही विनती करते हैं कि उनका जो मन विषय रूपी जल से कभी अलग नहीं होना चाहता और अनेक प्रकार की विपत्तियां सहता है, अपनी कृपा रूपी डोरी से उसका उद्धार करें।

तुलसी रूपी जीव श्री राम से केवल यही चाहते हैं कि उनके चरणों में उनका प्रेम बढ़ता जाए और जिस प्रकार कोई कछुआ अपने अंडों को एक पल के लिए भी नहीं छोड़ता उसी प्रकार वह भी उन्हें न त्यागें। श्री रामऔर सीता के चरणों में अडिग आस्था रखते हुए वह शरीर के निवासियों को केवल यही शिक्षा देना चाहते हैं कि राम से विमुख होकर उन्हें सपने में भी सुख की प्राप्ति नहीं होगी।उन्हें राम के नाम की चिंतामणि प्राप्त हो गई है जिसे वह हृदय से नहीं जाने देना चाहते और पूरी तरह से अपने मन में उन्हीं के नाम का स्मरण करना चाहते हैं।

21.3.2 विस्तृत व्याख्या-

पद संख्या-101

जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे।

काको नाम पतित पावन जग,

केहि अति दीन पियारे।।

कौने देव बराइ बिरद-हित, हठी हठी अधम उधारे।

खग, मृग, ब्याध पषन बिटप जड़, जवन-कवन सुर तारे।।

देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज सब, माया बिबस बिचारे।

तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे।।

शब्दार्थ: तजि -छोड़कर, चरण-पैर, पतित-पावन-पपियों का उद्धार करने वाले, जग-संसार, केहि -किसको, अति दीन-अत्यंत दुखी, पियारे- प्यारे, बराइ-चुन चुन कर, बिरद -यश, हठि -हठि -हठ पूर्वक, अधम-नीच, खग- मृग-पक्षी और हिरण पषन -पत्थर, बिटप-वृक्ष, जवन-यवन, देव-देवता, दनुज-दानव, मनुज-मनुष्य माया बिबस-माया के वश में, तिनके-उनके, अपनपौ-स्वयं को

संदर्भ: प्रस्तुत पद गोस्वामी तुलसीदास की प्रसिद्ध रचना विनय पत्रिका से लिया गया है।उन्होंने अपनी रचनाओं में भक्ति, सामाजिक विषमताओं आदि को वर्ण्य विषय बनाया है। उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में रामचरितमानस, विनय पत्रिका रामलला नहछू, वैराग्य संदीपनी, बरवै रामायण, दोहावली, पार्वती मंगल, रामाज्ञा प्रश्न आदि महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।विनय पत्रिका का मूल रस शांत रस है।

प्रसंग: गोस्वामी जी श्री राम से यही प्रार्थना करते हैं कि वह इस संसार रूपी सागर से उनका उद्धार करें। वह उनके चरणों को छोड़कर कहीं अन्यत्र जाना नहीं चाहते क्योंकि संसार मेंकोई ऐसा नहीं है जो पापियों को पवित्र करने वाला हो और दीन-दुखियारों का उद्धार करते हुए उन्हें अपना प्रिय बना ले।

व्याख्या: हे नाथ! आपके चरणों को छोड़कर मैं और कहां जाऊं? संसार में पतित पावन नाम और किसका है?और कौन ऐसा है जिसे दीन- दुखियारे बहुत प्यारे हैं?ऐसे कौन से देवता हैं जिन्होंने अपने यश को रखने के लिए हठपूर्वक चुन-चुन कर नीचों का उद्धार किया हो?किस देवता ने पक्षी अर्थात जटायु, पशुअर्थात रीछ -वानर, व्याधअर्थात वाल्मीकि, पत्थर(अहिल्या), जड़ वृक्ष(यमलार्जुन), और यवनों का उद्धार किया है? देवता, दानव, मुनि, नाग, मनुष्य आदि सभी बेचारे माया के वश में हैं अर्थात स्वयं बंधे हुए हैं तो यह दूसरों के बंधन कैसे खोल सकते हैं। इसलिए हे प्रभु! यह तुलसीदास स्वयं को उन लोगों के हाथों में सौंप कर क्या करेगा?

काव्यगत विशेषता: बड़े ही दैन्य भाव से गोस्वामी तुलसीदास श्री राम से अपने उद्धार की प्रार्थना करते हैं। इस पद में उनका दैन्य भाव देखा जा सकता है।

अनुप्रास अलंकार

अन्योक्ति अलंकार

मुहावरों का प्रयोग

प्रतीक शब्दों का प्रयोग

लाक्षणिक भाषा प्रयोग

बोध प्रश्न:

- गोस्वामी तुलसीदास जी पतित-पावन किसको मानते हैं?
- देवता, दैत्य, मनुष्य, मुनि आदि किसके वश में है?
- जटायु, वाल्मीकि, वानर, अहिल्या, यमलार्जुन आदि का उद्धार किसने किया था?

पद संख्या- 102

हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हा।
साधन-धाम विबुध दुर्लभ तनु, मोहित कृपा करि दीन्हा ॥
कोटिहु मुख कहि जाइ न प्रभु के, एक एक उपकार।
तदपि नाथ कछु और माँगिहऊँ, दीजे परम उदार॥
विषयवारि मन मीन भिन्न नहिं, होत कबहुँ पल एक।
ता तँ सहिय विपति अति दारुन, जनमत जोनि अनेक॥
कृपा डोरि बंसी पद-पंकज, परम प्रेम मृदु चारो।
यहि विधि बेधि हरहु मेरो दुख, कौतुक राम तिहारो॥
है सुति बिदित उपाय सकल सुर, केहि केहि दीन निहोरे।
तुलसीदास यह जीव मोह रजु, जो बाँधइ सोइ बोरै ॥

शब्दार्थ: अनुग्रह-दया या कृपा, कीन्हा -किया, साधन धाम-साधनों का स्थान, दुर्लभ-कठिन, तनु-शरीर, मोहि-मुझे, कृपा करि -कृपा करके, कोटिहु-करोडों, कछु और-कुछ और, दीजे-दीजिए, तदपि-यद्यपि, माँगिहउँ-मांगूंगा, विषय वारि -विषय रूपी जल, मीन-मछली, कबहुँ - कभीभी, तातैं-इसीलिए, दारुण-भीषण, जनमत-जन्म लेना, जोनि अनेक-अनेक योनियों में, कृपा डोरि -कृपा रूपी डोर, पद-पंकज-चरण कमल, यहि विधि-इसी विधि से, हरहु - दूर कर देना,

बिदित-ज्ञातहै, सकल-सभीके, केहि - केहि -किस-किस को, निहोरे -देखना, मोह राजु -मोह रूपी रस्सी, सोइ-वही, बोरै -डुबाना।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियां तुलसीदास द्वारा रचित विनय पत्रिका से उद्धृत हैं। यह ज्ञान के सागर के समान है।वैसे तो विनय पत्रिका में विभिन्न प्रकार के रसों का परिपाक हुआ है किंतुमूल रस शांत रस है।विनय पत्रिका में 279पद हैं।

प्रसंग: संत तुलसीदास का यह मानना है कि शरणागत और शरणागति दोनों का महत्व है। भारतीय पुराणों में अनेक बार शरणागत की विशेषताओं का उल्लेख हुआ है। गोस्वामी जी की सभी रचनाओं के विषय वस्तु भले ही अलग-अलग हों किंतु सब के ईस्ट राम ही हैं। सगुण भक्त भक्ति की रामभक्ति शाखा काअपना विशेष महत्व है।जो मानव शरीर देवताओं के लिए भी दुर्लभ है उस मानव शरीर को पा कर जीव रूपी तुलसी अति प्रसन्न हैं और वह राम से केवल कृपा का दान मांगते हैं।

व्याख्या: हे हरि! आपने बड़ी कृपा की जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ साधनों का स्थान यह मनुष्य देह है मुझको दया करके दिया। यद्यपि स्वामी के एक-एक उपकार करोड़ मुख से भी नहीं कहे जा सकते किंतु मैं तो और कुछ भी मांगता हूं, आप तो दानी हैं मुझे कृपा करके दें। विषय रूपी जल से मन रूपी मछली कभी एक पल भर के लिए अलग नहीं होती इसलिए अनेक योनियों में जन्म लेकर अत्यंत भीषण विपत्ति सहती रहती है। कृपा रूपी डोर और चरणों के प्रकाश रूपी अंकुश में प्रेम रूपी मुलायम चारा मिला कर ही श्री राम आप इस तरह मेरे मन को भेद कर मेरे दुख का हरण कीजिए। यह तो आपके लिए एक खेल है। वेदों मेंअनेक उपाय प्रसिद्ध हैं पर यह दीन तुलसी समस्त देवताओं में से किस- किस से विनती करेगा, इसलिए इस जीव को अज्ञान की रस्सी से जिसने बांधा है, वही छुड़ा सकता है। यही मेरी आपसे विनती है।

विशेष: अनुप्रास अलंकार

रूपक अलंकार

प्रतीक शब्दों का प्रयोग

लाक्षणिक भाषा सौंदर्य

मुहावरा प्रयोग

बोध प्रश्न -

- तुलसीदास देवताओं के लिए क्या दुर्लभ बताते हैं?
- जीव किस प्रकार की रस्सी से बंधा हुआ है?
- मन रूपी मछली किस से अलग नहीं होती

पद संख्या- 103

यह बिनती रघुबीर गोसाईं।
और आस बिश्वास भरोसो, हरो जी की जड़ताई॥
चहउँ न सुगति सुमति संपति किछु, रिधि सिधि विपुल बड़ाई।
हेतु रहित अनुराग नाथ-पद, बढ़उ अनुदिन अधिकाई ॥
कुटिल करम लेइ जाइ मोहि जहँ, जहँ अपनी बरि आई।
तहाँ तहाँ जनि छोह छाडिये, कमठ-अंड की नाई ॥
है जग में जहँ लगि या तनु की, प्रीति प्रीतीति सगाई।
ते सब तुलसिदास प्रभुही सौं, होहिं समिटि एक ठाई ॥

शब्दार्थ: गोसाई-गोस्वामी, आस-आशा, हरो-दूर करना, जड़ताई-मूर्खता, भरोसो -भरोसा, जिय-मन, सुगति -अच्छी गति, सुमति-अच्छी बुद्धि, किछु-कुछ, रिधि -समृद्धि, विपुल-विशाल, हेतु रहित-बिना किसी कारण के, अधिकाई-बढ़ता जाए, मोहि-मुझे, बरियाई -बलपूर्वक कमठ -कछुआ, छोह -मोह, सगाई-नाते, समिटि -सिमट कर, एक ठाई-एक स्थान पर।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियां गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित विनय पत्रिका से ली गई हैं। पत्रिका में विभिन्न देवी देवताओं के साथ श्री राम से अपने उद्धार के लिए विनती की गई है।

प्रसंग: गोस्वामी तुलसीदास श्री राम से जीवन में और कुछ नहीं चाहते मात्र इतनी आशा रखते हैं कि उनके जीवन में जितने भी कष्ट हैं और उनके मन में जो मूर्खता है श्री राम उसको दूर करें और जिस तरह से कछुआ अपने अंडों को नहीं छोड़ता है उसी प्रकार वह भी इस जीव रूपी तुलसी को न छोड़ें।

व्याख्या: है रघुवीर! मेरी विनती यह है कि दूसरों पर आशा, विश्वास और भरोसा करने की जो मूर्खता मेरे मन में समायी है, आप उसका हरण कर लें। मैं अच्छी गति, अच्छी बुद्धि, संपत्ति, समृद्धि, सिद्धि और विशाल महिमा कुछ भी नहीं चाहता हूं। हे नाथ! मैं केवल यही चाहता हूं कि आपके चरणों में दिनों दिन मेरा प्रेम बढ़ता जाए। मेरा कुटिल कर्म अपनी प्रबलता से मुझे जिस-जिस योनि में ले जाए, वहां-वहां जिस प्रकार कछुआ अपने अंडों को एक पल के लिए भी नहीं छोड़ता उसी प्रकार आप भी मुझे ना त्यागें। इस शरीर से संसार में जहां तक प्रीति और विश्वास के नाते हैं, वह सभी सिमट कर आपके साथ जुड़ जाएं, यही मेरी प्रार्थना है।

विशेष: प्रतीक शब्दों का प्रयोग

मुहावरा प्रयोग

संगीतात्मकता

अनुप्रासअलंकार

उपमा अलंकार

भक्त के जीवन की सच्चाई का उद्घाटन

बोध प्रश्न:

- तुलसीदास अपने इष्ट से क्या चाहते हैं ?
- कौन अपने अंडों को एक पल के लिए भी नहीं छोड़ता ?
- संसार में प्रीति और विश्वास के नाते किसके साथ होते हैं?

पद संख्या- 104

जानकी जीवन की बलि जइहऊँ।
मन कहइ सीयाराम-पद परिहरि, अब न कहूँ चलि जइहौं ॥
उपजी उर प्रतीति सपनेहुँ सुख, प्रभु-पद-बिमुख न पइहौं ।
मन समेत या तनु के बासिन्ह, इहइ सिखावन दइहौं ॥
स्रवनन्ही और कथा नहिं सुनिहऊँ, रसना और न गइहौं।
रोकिहउँ नयन विलोकत औरहिं, सीस ईसही नइहौं।।
नातो नेह नाथ सौं करि सब, नातो नेह बहइहौं ।
यह छरभार ताहि तुलसी जग जा को दास कहइहौं।।

शब्दार्थ: बलि जइहौं-बलि जाता हूं, कहइ -कहता है, पद परिहरि-चरणों को त्याग कर, कहूं-कहीं भी, उपजी-उत्पन्न हुई, उर -हृदय, या तनु-इस शरीर के, बासिन्ह-निवासी, रसना-जीव, गइहौं -गाऊंगा, नातो -नाता, नेह –स्नेह छरभार -कुबोझ, सिखावन-सीख देना, ताहि -उन्ही पर, जा को -जिनका, प्रतीति -विश्वास, बिलोकत -देखना, औरहिं -दूसरों को

संदर्भ: प्रस्तुत पक्तियाँ विनय पत्रिका से ली गई हैं।विनय पत्रिका श्री राम के चरणों में एक भक्त द्वारा लिखी गई विनय की पाती है जिसमें तुलसी रूपी जीव श्री राम से अपने जीवनके उद्धार की विनय करते हैं। गोस्वामी जी की कई प्रसिद्ध रचनाएं हैं जैसे रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली, कृष्ण गीतावली, रामलला नहछू आदि।

प्रसंग: इस पद में गोस्वामी तुलसीदास की दास्य भक्ति व्यक्त हुई है वह श्रीराम और सीता से सदैव अपना नाता जोड़े रखना चाहते हैं, यहां तक कि वह ना तो कानों से दूसरों की कथा सुनना चाहते हैं और ना अपनी जिह्वा से किसी का गुणगान करना चाहते हैं।अपने नेत्रों से भी वह

किसी और ईश्वर के दर्शन नहीं करना चाहते हैं। भक्ति की यही पराकाष्ठा गोस्वामी जी की भक्ति को एक उत्कर्ष पर ले जाती है।

व्याख्या: तुलसीदास जी कहते हैं कि मैं जानकी जी के प्राणाधार श्री रामचंद्र जी की बलि जाता हूं। मेरा मन कहता है कि सीता जी और श्री रामचंद्र जी के चरणों को छोड़कर अब कहीं चलकर नहीं जाऊंगा। स्वामी के चरणों के प्रति हृदय में जो विश्वास उत्पन्न हुआ है वह सुख विमुख होने पर सपने में भी नहीं पाऊंगा, मन के सहित इस शरीर के निवासियों को भी मैं यही शिक्षा दूंगा। कानों से दूसरों की कथा नहीं सुनूंगा और जीभ से दूसरे का गुणगान नहीं करूंगा। आंखों को दूसरों को देखने से रोकूँगा और मस्तक ईश्वर के सामने ही नवाऊंगा। स्नेह का नाता स्वामी से करके अन्य सब प्रेम के संबंध को दूर बहा दूंगा। तुलसी कहते हैं कि यह कुबोझ उन पर है जिनका मैं जगत में दास कहाऊंगा। इस तरह तुलसी स्वयं को पूरी तरह से श्री राम और सीता के चरणों में न्योछावर कर देते हैं।

विशेष: दास्य भक्ति की पराकाष्ठा

अनुप्रास अलंकार

लाक्षणिक भाषा प्रयोग

मुहावरों का प्रयोग

बोध प्रश्न:

- तुलसीदास किसके चरणों में अपना सब कुछ न्योछावर करना चाहत हैं?
- तुलसीदास किसको सीख देना चाहते हैं?
- तुलसीदास कानों से किसकी कथा सुनना चाहते हैं?

पद संख्या- 105

अबलौ नसानी अब ना नसइहौं।

राम-कृपा भव-निसा सिरानी, जागे फिरि न डसइहौं।।

पायेउँ नाम चारु चिंतामनि, उर कर ते न खसइहौं।

स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं कसइहौं।।

परबस जानि हँसेउ निज इंद्रिन्ह, इन्ह बस होइ न हँसइहौं।

मन मधुकर पन करि तुलसी रघुपति-पद-पदुम बसइहौं।।

शब्दार्थ: अब लौं-अब तक, नसानी-व्यर्थ कर दिया, भव-संसार, निसा -रात्रि सिरानी-समाप्त होना, उर-हृदय, खसइहौं -खिसकने दूंगा, सुचि-सुंदर रुचिर -रुचिकर, चित-मन, कंचनहि-स्वर्ण

के समान, परबस-दूसरे के वश में, निज-अपने, मधुकरमन- मन रूपी भ्रमर, पद-पदुम-चरण कमल।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ विनय पत्रिका से ली गई हैं जिसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं। यह इनकी एक प्रसिद्ध रचना है जिसमें तुलसी रूपी जीव ने श्री राम अर्थात अपने इष्ट से विनय की है कि वह उन्हें इस संसार रूपी सागर से पार उतारे। वह पूरी तरह से उनके चरणों में भक्ति करना चाहते हैं। इनकी रचनाओं में विषय वस्तु के रूप में श्रीराम के साथ-साथ कृष्ण की भी भक्ति की गई है। ब्रज और अवधी दोनों भाषाओं का प्रयोग इनकी रचनाओं में दिखाई देता है। विनय पत्रिका ब्रजभाषा में लिखी गई है।

प्रसंग: तुलसीदास जी को हमेशा ऐसा लगता है कि जीवन में केवल श्री राम का नाम ही सब कुछ है। वही गुणों के भंडार और सर्व ज्ञाता हैं। श्री राम की कृपा से ही उनके कठिन दिन बीत गए हैं अब वह पुनः सांसारिकता में लीन नहीं होना चाहते, इसीलिए कहते हैं कि अब तक मैंने अपना जीवन व्यर्थ ही व्यतीत कर दिया किंतु अब आगे ऐसा नहीं होगा।

व्याख्या: तुलसीदास जी कहते हैं कि अब तक जो बिगड़ी सो बिगड़ी; परंतु अब कुछ भी नहीं बिगड़ने दूंगा। श्री रामचंद्र जी की कृपा से संसार रूपी रात्रि बीत गई है और उससे मैं जाग गया हूं। अब मैं पुनः माया रूपी बिस्तर नहीं बिछाऊंगा। मुझे राम नाम रूपी सुंदर चिंतामणि प्राप्त हो गई है उसको हृदय रूपी हाथ से नहीं गिरने दूंगा। सुंदर सांवली मूर्ति रूपी पवित्र कसौटी पर चित्र रूपी सुवर्ण को कसवाऊंगा। श्यामल मूर्ति पर कसौटी पत्थर का आरोप करके वह अपने चित्त पर स्वर्ण का आरोपण इसलिए करते हैं कि कसौटी पर कसने से जिस प्रकार सोने के खरे-खोटे होने का अनुमान किया जाता है, उसी प्रकार मन की भी स्थिति होती है। तात्पर्य यह है कि श्याम रूप में मन लग गया तो खरा और नहीं लगा तो खोटा। आगे वह कहते हैं मेरी इंद्रियाँ मुझे पराधीन जानकर हंसती हैं, किंतु उनके अधीन होकर अब मैं अपनी हंसी नहीं करवाऊंगा। तुलसीदास जी कहते हैं कि मन रूपी भ्रमर को प्रतिज्ञा करके श्री रघुनाथ जी के चरण-कमल में टिका लूंगा अर्थात श्री राम नाम का जाप छोड़कर अब मैं अपने मन को अन्यत्र कहीं नहीं जाने दूंगा।

विशेष: पद का भाव यह है कि तुलसी ने अपना जीवन यूं ही नष्ट कर दिया। उन्हें ऐसा लगता है कि अब तक उनका जो नुकसान हुआ कोई बात नहीं किंतु आगे से वह श्री राम के चरणों को छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं जाएंगे।

उपमा अलंकार
अनुप्रास अलंकार
विशेष भाषा प्रयोग
मुहावरों का प्रयोग
प्रतीक शब्दों का प्रयोग
रूपक अलंकार

बोध प्रश्न:

- किसकी कृपा से संसार रूपी रात्रि बीत गई?
- विनय पत्रिका का एक अन्य नाम क्या है?
- तुलसीदास किसको चिंतामणि की उपमा देते हैं?
- तुलसीदास की इंद्रियां किसके वश में हो जाती हैं?

21.3.4 काव्यगत विशेताएँ

विनय पत्रिका राम विनयावली है जिसमें विनय के पद हैं और इसमें 21 रागों का प्रयोग हुआ है। इसमें स्वामी की सेवा में अपनी दीनता का निवेदन किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने स्वामी के सम्मुख स्वयं को सभी प्रकार से हीन- मालिन और निराश्रय कहा है जिससे करुणा सागर द्रवित होकर दास को अपने चरणों में शरण दें। भाव पक्ष एवं कला पक्ष की दृष्टि से विनय पत्रिका सशक्त है। इसके पदों से यह स्पष्ट दिखाई देता है कि इसमें केवल कोरा उपदेश नहीं दिया गया है बल्कि तुलसी के राम से आत्म निवेदन के संबंध में जो पद हैं उसमें एक उदात्त संदेश दिया गया है। विनय पत्रिका के प्रारंभ में उन्होंने विभिन्न देवी देवताओं की स्तुति करके उन्हें प्रसन्न करते हुए श्री राम के चरणों में अपने विनय की पाती प्रस्तुत कर दी है। विनय पत्रिका में गोस्वामी तुलसीदास की दास्य भावना की भक्ति दिखाई देती है। गुरु महिमा, समन्वय भाव, आत्म निवेदन, जीवन संघर्ष आदि के सजीव चित्र विनय पत्रिका में वर्णित हुए हैं। यह पाठकों को प्रबलता से अपनी ओर आकर्षित करती है। विनय पत्रिका की भाषा बज है।तुलसी के राम शील, सौंदर्य और शक्ति से परिपूर्ण हैं। यह मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। उन्होंने श्री राम को एक आदर्श मानव के साथ-साथ, आदर्श राजा, आदर्श पति, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, वीर और आदर्श पिता के रूप में चित्रित किया है। इसमें आध्यात्मिक जीवन को विशेष महत्व दिया गया है। विभिन्न प्रकार के मुहावरोंऔर लाक्षणिक भाषा का प्रयोग कई स्थानों पर रचना को और सुंदर बनाता है।इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार के अलंकारों का प्रयोग परिलक्षित होता है।

21.4 : पाठ सार

गोस्वामी तुलसीदास की विनय पत्रिका से यह संदेश मिलता है कि ईश्वर के प्रति अनुराग सांसारिकता से जीव को मुक्ति दिलाता है। विनय पत्रिका में279 पदहैं औरविभिन्न राग - रागिनियों का प्रयोग विनय पत्रिका को सौंदर्य प्रदान करता है। विनय पत्रिका का प्रमुख रस शांत रस है और इसमें भक्ति का परिपाक दिखाई देता है। यह आध्यात्मिक जीवन को परिलक्षित करती है। इसमें जितने भी देवी देवताओं से संबंधित पद और स्तोत्र आते हैं उन सभी का

गुणगान करते हुए उनसे राम की भक्ति की याचना की गई है। वास्तव में यह राम के चरणों में विनय की पत्रिका है जिसमें तुलसी रूपी जीव अपने ईष्ट से इस संसार रूपी सागर से पार उतरने की याचना करता है। काव्य कृतियों की दृष्टि से कवि तुलसीदास का भाव पक्ष एवं कला पक्ष काफी मजबूत है। जीवन के मर्मस्पर्शी पक्षों की अभिव्यक्ति इसकी विशेषता है। अपनी व्यक्तिगत सत्ता से अलग हटकर जो सबके लिए कुछ सोचता है और वर्तमान के धरातल पर भविष्य की ओर संकेत करता है वही लोकनायक हो सकता है। संत तुलसीदास इसीलिए लोकनायक कहलाए। संसार के वास्तविक दृश्यों और जीवन की वास्तविक दशाओं में जो हृदय समय-समय पर रमता है वही सच्चा कवि हृदय होता है। तुलसीदास जैसे संत ही भावों की व्यंजना अत्यंत उत्कर्ष पर पहुंचा सकते हैं और वास्तविकता का आधार भी नहीं छोड़ते हैं। वह अपने भावों को उसी रूप में व्यंजित करते हैं जिस रूप में उनकी अनुभूति जीवन में होती है। तुलसीदास की दृष्टि सदैव वास्तविक जीवन दशाओं के मार्मिक पक्षों के उद्घाटन की ओर रही है। वह सांसारिक जीवन में रहने वाले मनुष्यों की अधिक चिंता करते हैं। विनय पत्रिका में भावों की व्यंजना दिखाई देती है और कला पक्ष की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के अलंकारों के प्रयोग के साथ मुहावरों से भाषा सुंदर बन पड़ी है। लाक्षणिक शब्दोंका प्रयोग करते हुएबिंबों की स्थापना की गई है। प्रतीक शब्दों की भरमार दिखाई देती है।

तुलसीदास ने अपने पदों के द्वारा मानव को यह संदेश दिया है कि मानव का जन्म बड़ी मुश्किल से मिलता है, इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि इस संसार रूपी सागर से पार उतरने के लिए ईश्वर की भक्ति की जाए।विनय पत्रिका का प्रमुख रस शांत रस है और इस रस का स्थाई भाव निर्वेद होता है। यह आध्यात्मिक जीवन को परिलक्षित करती है। इसके प्रारंभ के पदों मेंगणेश, शिव, पार्वती, गंगा, जमुना, चित्रकूट, हनुमान, सीता की स्तुतियां दी गई हैं और उसके पश्चात राम की वंदना की गई है।विनय पत्रिका के पदों की भाषा ब्रजहै।

21.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई का अध्ययन करने पर निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं -

- जो मनुष्य अपने जीवन में बदलाव लाना चाहते हैं और सन्मार्ग पर चलना चाहते हैं उनके लिए विनयपत्रिका कई तरह से उपयोगी है।
- तुलसी भक्ति में एक निष्ठा और सर्वस्व समर्पण की भावना निहित है। तुलसी ने भक्ति निरूपण करते हुए भी मानव मनोविज्ञान तथा सामजिक वातावरण को उभरने में सफलता पाई है।
- विनय पत्रिका में निहित जीवन मूल्य वर्तमान विषम परिस्थितियों में मानव के जीवन में नैतिकता और नैतिक संबंधों की स्थापना की प्रेरणा दे सकते हैं ।

21.6 : शब्द संपदा

1. मूल - जड़ या आधार
2. अभिमान - गर्व
3. घट - शरीर
4. सरनागत - शरण में आने वाले
5. पाँवर - मूर्ख
6. बसीकरन - वशीकरण
7. याचना करना - प्रार्थना करना

21.7 : परिक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. विनय पत्रिका के पद 'हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हा' का भाव स्पष्ट कीजिए|
2. विनय पत्रिका के आधार पर तुलसीदास के दर्शन को स्पष्ट कीजिए|
3. तुलसी की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए|
4. विनय पत्रिका के आधार पर भक्ति काल की सामाजिक परिस्थितियों पर विचार कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. विनय पत्रिका में किस प्रकार की भक्ति भावना निरूपित है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीरजिए।
2. नवधा भक्ति क्या है?पठित पदों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
3. विनय पत्रिका में प्रयुक्त ब्रजभाषा के प्रयोग पर प्रकाश डालिए।
4. गीति तत्वों के आधार पर विनय पत्रिका का विश्लेषण कीजिए?

खंड- (स)

I सही विकल्प चुनिए-

(क) तुलसीदास के इष्ट हैं-

(अ) कृष्ण (ब) राम (स) शिवा

(ख) समन्वयवादी कहा जाता है -

(अ) सूरदास (ब) तुलसीदास (स) जायसी

(ग) ‘ कवितावली’ रचना है -

(अ) तुलसीदास (ब) कबीरदास (स) कुंभनदास

II रिक्त स्थानों की पूति करें -

(ख) जाऊँ कहाँ ___________तुम्हारे।

(ग) हरि तुम बहुत___________किन्हां।

(घ) यह ___________________रघुवीर गोसाईं।

(ङ) अब लौ ________________अब न नसइ हैं।

III सुमेल कीजिए -

1. (क) विनय पत्रिका का मूल भाव (अ)रत्नावली
2. (ख) विनय पत्रिका लिखी गई है (ब) या मन की
3. (ग) तुलसी की पत्नी का नाम (स) शिव के
4. (घ) ऐसी मूढ़ता (द) भक्ति
5. (च) हनुमान जी अवतार हैं (य)16वीं शताब्दी में

21.8 : पठनीय पुस्तकें

(1) गोस्वामी तुलसीदास- रामचंद्र शुक्ल

(2) सूर तथा तुलसी के विनय पदों का तुलनात्मक अनुशीलन-प्रो निर्मला एस मौर्य

(5) भक्ति काव्य और हिंदी आलोचना- मैनेजर पांडेय ।

(6) हिंदी साहित्य के बहुआयामी को-प्रो. निर्मला एस मौर्य

इकाई 22 :   विनय पत्रिका – IV : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

22.1 प्रस्तावना
22.2 उद्देश्य
22.3 मूल पाठः विनयपत्रिका – IV : व्याख्या
22.3.1 अध्येय पदों की विस्तृत व्याख्या
22.3.2 समीक्षात्मक अध्ययन
22.4 पाठ सार
22.5 पाठ की उपलब्धियाँ
22.6 शब्द सम्पदा
22.7 परीक्षार्थ प्रश्न
22.8 पठनीय पुस्तकें

22.1 : प्रस्तावना

भक्ति काल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है। इसी स्वर्ण युग में हम राम भक्ति काव्यधारा का अध्ययन करते हैं। जहाँ पर तुलसीदास जी जैसे महान कवि से हमारा परिचय होता है। तुलसीदास राम भक्ति काव्य धारा के सबसे महत्वपूर्ण प्रतिनिधि कवियों में से एक है। इनका साहित्य आध्यात्मिकता, दार्शनिकता और भक्ति के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। साहित्य की दृष्टि से तुलसीदास जी का काव्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। तुलसीदास ने भक्ति के साथ-साथ शील, आचार, मर्यादा और लोक संग्रह का संदेश जनता तक पहुँचाया है। भारतीय लोकजीवन में अनपढ़ से लेकर बुद्धिजीवी तक उनके काव्य का पाठ करते हैं। इतनी सदियाँ बीत जाने पर भी तुलसीदास का काव्य भारत में ही नहीं विदेशों में भी काफी लोकप्रिय है।

22.2 : उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई में आप तुलसीदास जी द्वारा रचित विनय पत्रिका के पद 111, 113, 114, 115 और 121 का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप

- विनय पत्रिका के पदों की सप्रसंग व्याख्या कर सकेंगे।
- विनय पत्रिका के पदों की विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- तुलसीदास की भक्ति के प्रौढ़ रूप को समझ सकेंगे।
- सांसारिकता के विविध रूप-रंगों से अपने आप को बचाने का मार्ग जान सकेंगे।
- भक्ति द्वारा जीवन में संयम हेतु भक्ति का महत्त्व समझ सकेंगे।
- सज्जन व्यक्ति के लिए आवश्यक गुणों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

22.3 : मूल पाठः विनयपत्रिका : एक परिचय

22.3.1 अध्येय पदों की विस्तृत व्याख्या

111

केशव! कहि न जाइ का कहिये।

देखत तव रचना विचित्र अति, समुझि मनहि मन रहिये।

सून्य भीति पर चित्र, रंग नहि तनु बिनु लिखा चितेरे।

धोये मिटे न मरइ भीति, दुख पाइय एहि तनु हेरे।

रविकर नीर बसै अति दारुन, मकर रुप तेहि माहीं।

बदन हीन सो ग्रसै चराचर, पान करन जे जाहीं।

कोउ कह सत्य, झूठ कहे कोउ जुगल प्रबल कोउ मानै।

तुलसीदास परिहरै तीन भ्रम, सो आपन पहिचानै।

कठिन शब्दः भीति- दीवार, तनु-शरीर, चितेरे- चित्रकार, हेरे-ढूँढने से, वदन- मुख, आपन- अत्मा को, मकर- मगरमच्छ, रविकर नीर- ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की किरणों से मरुभूमि पर पानी का भ्रम उत्पन्न होता है।

संदर्भः प्रस्तुत पद तुलसीदास द्वारा रचित विनयपत्रिका से लिया गया है।

प्रसंगः प्रस्तुत पंक्तियों में कवि इस मायावी संसार की व्याख्या एक चित्र के रूप में करते हैं। मानव शरीर पंचतत्वों से बना है किन्तु उसे सदैव नष्ट होने का भय सताता है। सब कुछ जानते बूझते भी वह मरीचिका के पीछे भागता है। सत्य-असत्य और शून्य में उलझा रहता है।

व्याख्याः मनुष्य आजीवन किसी न किसी उद्देश्य के पीछे भागता रहता है। अंत में वह ब्रह्म में लीन हो जाता है। तुलसीदास इस संसार को एक विचित्र रचना कहते हैं। उनके अनुसार यदि इस संसार को चित्र मान लिया जाए। जो बिना किसी आधार के आकाश में शून्य में बना है। अर्थात यह पूरी सृष्टि शून्य पर आधारित है(यह इसकी विशेषता है)। इस संसार रूपी चित्र के चित्रकार का कोई शरीर नहीं है (चित्रकार अव्यक्त निराकार ब्रह्म है)। इस चित्र को चित्रकार ने आकाश रूपी दिवार पर अपनी संकल्प शक्ति से बिना किसी रंग के बनाया है। ऐसा लगता है कि इसे बनाते समय किसी रंग का प्रयोग नहीं हुआ है। इस चित्र का रंग धोने से नहीं मिटता लेकिन इसे मृत्यु का भय बना रहता है। साधारण चित्र को धोने से वह नष्ट हो जाता है किंतु यह पंचभौतिक चित्र धोने पर खराब नहीं होता। साधारण चित्र को मृत्यु का भय नहीं होता परंतु पंचभौतिक चित्र को सदैव अपनी मृत्यु का दुख सताता रहता है। मनुष्य का शरीर ही एकमात्र चित्र है जिसमें यह विशेषताएँ दिखाई देती है। इस चित्र की दूसरी विशेषता यह है कि जैसे सूर्य

की किरणों को पानी समझकर मृग उसके पीछे भागता है लेकिन उसमें मगरमच्छ रूपी तृष्णा रहती है। जो मुख विहीन है अर्थात उस मगरमच्छ रूपी तृष्णा का चेहरा नहीं है। मृग जब वहाँ जल पीने जाता है (चाहे वह जड़ हो या चैतन्य) तो वह उसे खा लेती है। (जिस प्रकार गर्मी के मौसम में सूर्य की किरणों को जल समझ कर मृग उन किरणों के पीछे दौड़ता है और अंत में पानी नहीं मिलने पर प्यासा ही मर जाता है।) इसी प्रकार मनुष्य भी जीवन भर इच्छाओं, आकांक्षाओं और महत्वकांक्षाओं के पीछे भागता है किन्तु उसका अंतिम सत्य मृत्यु होता है। यह संसार माया से भरा है। व्यक्ति जिन वस्तुओं और अनुभूतियों को सुख समझता है, जिनके पीछे भागता है। वही रूप रसादि पांचो विषय इस मृगजल तुल्य भ्रममय संसार का आधार है। जो लोग इसमें रम जाते हैं, वह खाली हाथ कल के मुँह में चले जाते हैं। यह सांसारिक सुख क्षण भंगुर होते हैं तथा जीवन को वास्तविक सत्य से दूर ले जाते हैं। कुछ लोग इस संसार को सत्य मानते हैं तो कुछ लोग संसार को मिथ्या समझते हैं। कुछ लोग दोनों को ही प्रबल मानते हैं अर्थात यह सत्य भी है और असत्य भी। तुलसीदास जी कहते हैं जो मनुष्य इन तीनों विचारों को त्याग कर ऊपर उठेगा वही अपने आप को पहचान पाएगा और उसे ही आत्मज्ञान का प्राप्ति होगी।

विशेषताः

1. काल को मकर कहा है।
2. "धोये मिटे न मरइ भीति" पंक्ति में विरोधाभास है।
3. परिहरै तीनि भ्रम पंक्ति में कवि इस जगत को न सत्य मानते हैं, न असत्य और न दोनों का समिश्रण।
4. केशव! कहि न जाइ का कहिये। पंक्तियों में अनुप्रास अलंकार है (क)।

बोध प्रश्न

- तुलसीदास सृष्टि की किन विशेषताओं का वर्णन कर रहे हैं?
- "रविकर नीर बसै अति दारुन, मकर रुप तेहि माहीं" से कवि का क्या अभिप्राय है?
- यह चित्र अन्य चित्रों से भिन्न कैसे है?

113

माधव, अब न द्रवहु केहि लेखे।

प्रनतपाल पन तोर, मोर पन जिअहुँ कमलपद देखे॥1॥

जब लगि मैं न दीन, दयालु तैं, मैं न दास, तैं स्वामी।

तब लगि जो दुख सहेउँ कहेउँ नहिं, जद्यपि अंतरमाजी॥2॥

तैं उदार, मैं कृपन, पतित मैं, तैं पुनीत, श्रुति गावै।

बहुत नात रघुनाथ ! तोहि मोहि, अब न तजे बनि आवै॥3॥

जनक-जननि, गुरु-बंधु, सुहद-पति, सब प्रकार हितकारी।

द्वैतरुप तम-कूम परौं नहिं, अस कछु जतन बिचारी॥4॥

सुनु अदभ्र करुना बारिजलोचन मोचन भय भारी।

तुलसिदास प्रभु ! तव प्रकास बिनु, संसय टरै न टारी॥5॥

कठिन शब्दः द्रवहु- कृपा करना, दयालु- कृपालु, उदार- दानी, मुक्तहस्त, कृपण-लालची, कंजूस, पुनीत-पवित्र, अदभ्र-प्रचुर, संसय-संशय, संदेह, सहेउँ-सहना, कहेउँ-कहना

संदर्भः प्रस्तुत पद राम भक्तिकाव्यधारा के महान कवि तुलसीदास द्वारा रचित विनयपत्रिका से लिया गया है।

प्रसंगः कवि कहते है कि मुझसे ज्यादा दीन, हीन, गरीब इस दुनिया में कोई नहीं है। प्रभु से अपने कल्याण की अपेक्षा रखते हैं। मनुष्य जो कुछ भी सीखता है। वह अपने माता-पिता, गुरु, बन्धु और भाई से ही सीखता है और प्रभु सब प्रकार से हमारे हितकारी हैं।

व्याख्याः मनुष्य का अति आत्मविश्वास उसे प्रभु भक्ति से दूर ले जाता है। जब तक उसमें अहम होता है। वह प्रभु भक्ति से वंचित होता है लेकिन जब यह अहम नष्ट हो जाता है। तब मनुष्य के भीतर शुद्ध भक्ति का संचार होता है। वह प्रभु भक्ति में लीन हो जाता है। इसी अवस्था का वर्णन करते हुए तुलसीदास जी लिखते हैं- हे माधव! आप मुझ पर कृपा क्यों नहीं कर रहे हैं? आपने तो प्रतिज्ञा की है कि आप अपनी शरण में आने वालों की रक्षा करेंगे और उनका पालन पोषण करेंगे। मैंने भी आपके कमल के समान चरणों को देख-देखकर जीने की प्रतिज्ञा की है। यद्यपि आप अंतर्यामी हैं और अच्छी तरह से जानते हैं कि जब तक मैं दीन और आप इस दीन (मेरे) के लिए कृपालु, मैं सेवक और आप मेरे मालिक नहीं थे। तब तक जिन कष्टों को मैंने सहा उसे मैंने किसी के सामने व्यक्त नहीं किया। आप परम पवित्र है। श्रुतियाँ कहती हैं कि ब्रह्म के रूप में आप उदार है और जीव के रूप में मैं कृपण हूँ। आप परम पवित्र है और मैं मलाक्रांत होने के कारण पतित हूँ। हे रघुनाथ! जी मेरे और आपके बीच बहुत सारे संबंध है। इसलिए आपके द्वारा मेरा परित्याग उचित नहीं है। आप ही मेरे पिता, माता, गुरु, मित्र, भाई, पति और हर प्रकार से हितैषी है। हे नाथ! आप ही मेरे लिए कुछ उपाय सोचें, जिससे मैं नादान इस मायावी संसार के अंधे कुँए में न गिरूँ (यह संसार मिथ्या है। जो विभिन्न प्रलोभनों से मुझे अपनी ओर खींचने का प्रयास करता है। आप ही कुछ उपाय बताएँ ताकि मैं उनकी तरफ आकर्षित होने से बचूँ)। हे निर्मल कमल नयन श्री राम! आप सभी प्रकार के भय और संकटों को दूर करने वाले हैं। आपकी छाया संसार के सभी भयों को दूर करने वाली है। तुलसीदास कहते हैं कि हे प्रभु! आपके द्वारा दिए गए ज्ञान के प्रकाश के बिना इस संसार के मिथ्या जाल को किसी भी तरह टाला नहीं जा

सकता। आपके द्वारा दिए गए ज्ञान से ही अज्ञानता का नाश होता है और आत्मबोध तथा विवेक की जागृति होती है।

विशेषताएँ-

1. मनुष्य काम-क्रोध, मोह-माया, ईर्ष्या-द्वेष के वश में पड़ा रहता है इसलिए दीन, हीन और गरीब है।
2. तुलसीदास की भक्ति दास्यभाव की भक्ति है।
3. संसार रूपी अंध कूप से बाहर आने के लिए केवल राम नाम का ही आश्रय है।
4. अनुप्रास (दीन, दयालु) और रूपक (कमलपद) अलंकार का प्रयोग।

बोध प्रश्न -

- प्रस्तुत पद में श्री राम की महिमा का वर्णन कैसे किया गया है?
- तुलसीदास प्रभु से उपाय सोचने के लिए क्यों कहते हैं?
- भक्त और भगवान के किन संबंधों का वर्णन इस पद में किया गया है?

114

माधव! मो समान जग माहीं।
सबविधि हीन मलीन दीन अति लीन बिषय कोउ नाहीं॥1॥
तुम सभ हेतु रहित, कृपालु, आरतहित ईस न त्यागी।
मैं दुख सोक विकल, कृपालु केहि कारन दया न लागी॥2॥
नाहिन कछु औगुन तुम्हार, अपराध मोर मैं माना।
ग्यान भवन तन दियेहु नाथ सोउ पाय न प्रभु मैं जाना॥3॥
बेनु करील, श्रीखण्ड बसंतहि दूषन मृषा लगावै।
साररहित हतभाग्य सुरभि पल्लव सो कहुँ किमि पावै॥4॥
सब प्रकार मैं कठिन मृदुल हरि दृढ़ विचार जिय मोरे।
तुलसिदास प्रभु मोह श्रृंखला छुटहिं तुम्हारे छोरे॥5॥

<u>कठिन शब्दः</u> हेतुरहित- निष्काम, बेनु- बाँस, श्रीखण्ड- चन्दन, सुरभि-सुगन्ध, दूषण-दोष लगाना, मृषा- झूठ, मृदुल - कोमल, मुलायम, हतभाग्य -भाग्यहीन, जिय- चित मन, पल्लव- पत्ते, औगुन- अवगुण

<u>संदर्भः</u> प्रस्तुत पद राम भक्तिकाव्यधारा के महान कवि तुलसीदास द्वारा रचित विनयपत्रिका से लिया गया है।

<u>प्रसंगः</u> मनुष्य का मन अत्यंत चंचल होता है। अपने आरम्भिक जीवन में उसे इसका भान नहीं होता किन्तु जैसे जैसे उम्र होती है। अपनी असफलता और दूसरों की सफलता से वह दुखी होता

है। उनको दोष देता है। अन्तर मन की शक्ति से अपरिचित होने के कारण उसे प्रभु के आश्रय की जरूरत महसूस होती है।

व्याख्याः हे माधव! इस संसार में सब प्रकार के साधनहीन पापी, निर्धन एवं काम क्रोध आदि विकारों से संपन्न व्यक्ति मेरे अलावा कोई और नहीं है। हे प्रभु, आपके समान बिना कारण सब पर दया करने वाला, दुखियों के हितों का ध्यान रखते हुए त्याग करने वाला अन्य कोई नहीं है। प्रभु मैं इन सांसारिक दुख, तकलीफों और शोक से अत्यंत व्याकुल हूँ। आपको किस वजह से मुझ असहाय पर दया नहीं आ रही है। आगे कवि कहते हैं कि इसमें आपका कोई दोष नहीं है। मैं मानता हूँ कि पूरा दोष मेरा ही है। यह मानव शरीर बहुत कीमती है तथा हमें पशुओं से भिन्न एक अलग पहचान देता है। उसमें भी मानव मस्तिष्क की तुलना किसी से नहीं की जा सकती है। नाथ आपने ज्ञान भंडार के रूप में यह जो शरीर दिया है, उसे प्राप्त करके भी मैं आपको नहीं जान सका।

जिस प्रकार बाँस का पेड़ चंदन को और करील का वृक्ष वसंत ऋतु को बेकार में ही दोष देते हैं क्योंकि बाँस का पेड़ खोखला होता है और चंदन के विषय में कहा जाता है कि वह जिसके भी संपर्क में रहता है अपनी सुगंध और शीतलता उसे प्रदान करता है। दूसरी तरफ करील के वृक्ष में पत्ते नहीं होते हैं। वसंत ऋतु में सभी वृक्षों पर नए पत्ते आते हैं। भाग्यहीन बाँस खोखला होने के कारण चंदन का और पल्लवहीन करील वसंत का सानिध्य कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

हे स्वामी! मेरे हृदय में यह दृढ़ विचार है कि मैं सब प्रकार से कठोर हूँ और आप हर तरह से कोमल हैं। मैं जिस मोह संसार की जटिल श्रृंखला में बंधा हुआ हूँ उसे केवल आप ही तोड़ सकते हैं। अन्य कोई उपाय यहाँ काम नहीं आएगा। आपका सानिध्य और सचेष्ट भाव ही मुझे इससे मुक्ति दिला सकता है।

विशेषताएँ:

1. मोह संसार की भीति को केवल राम ही तोड़ सकते हैं।
2. करील और बाँस के पेड़ के माध्यम से मानवीय भाव का सुन्दर उदाहरण दिया है।
3. साधनहीन और परिश्रमहीन मनुष्य केवल परिस्थितियों को ही कोसता है।
4. किसी भी कार्य को करने के लिए मनुष्य के पास पर्याप्त समय होता है किन्तु वह उस कार्य को टालता रहता है (मोह माया)। अधिक देर होने पर वह प्रभु को याद करता है।

बोध प्रश्न -

- तुलसीदास प्रभु से किस प्रकार की कृपा दृष्टि चाहते हैं?
- “ग्यान भवन तन दियेहु नाथ सोउ पाय न प्रभु मैं जाना” से कवि का क्या तात्पर्य है?
- बाँस को चन्दन और करील को बसन्त क्यों पसन्द नहीं है?

माधव, मोह-फाँस क्यों टूटै।
बाहिर कोटि उपाय करिय अभ्यंतर ग्रन्थि न छूटै।।1।।
घृतपूरन कराह अंतरगत ससि प्रतिबिम्ब दुखावै।
ईंधन अनल लगाय कलषसत औंटत नास म पावै।।2।।
तरु कोटर महँ बसबिहंग तरु काटे मरै न जैसे।
साधन करिय बिचार हीन मन सुद्ध होइ नहिं तैसे।।3।।
अंतर मलिन बिषय मन अति तन पावन करिय पखारे।
मरइ न उरग अनेक जतन बलमीकि बिबिध बिधि मारे।।4।।
तुलसिदास हरि गुरु करुना बिनु बिमल बिबेक न होई।
बिनु बिबेक संसार घोर निधि पार नपावै कोई।।5।।

कठिन शब्दः फाँस-फंदा, सुद्ध-शुद्ध, अभ्यंतर-अंदर होनेवाला, मलिन–मैला, प्रतिबिंब–छाया, पखारे–पानी से मेल आदि साफ करना, कोटर–छेद, उराग – साँप, बलमीकि -बिल

संदर्भः प्रस्तुत पद राम भक्तिकाव्यधारा के महान कवि तुलसीदास द्वारा रचित विनयपत्रिका से लिया गया है।

प्रसंगः मनुष्य का मन हर क्षण पाप करता है। मनुष्य सशरीर यदि कोई गलत कार्य करता है तो लोग उसे देख सकते हैं परन्तु उसके मन के दुष्ट विचारों का साक्षी कोई नहीं है। समाज में सबसे अच्छा व्यवहार करता है लेकिन मन ही मन उनको कोसता (बुराई करना / अहित सोचना) रहता है। पापी मन को शुद्ध कैसे किया जाये। जप, तप, कीर्तन, यज्ञ, हवन और भजन से कुछ नहीं होता।

व्याख्याः हे माधव! मोह कि यह ग्रंथि कैसे छूटेगी। बाहर से करोड़ों उपाय क्यों ना किए जाए परंतु उनसे भीतर की गाँठ नहीं छुटती है। (मैंने करोड़ो धार्मिक अनुष्ठान, जप-तप, पूजा-पाठ के उपायों को अपना कर देखा परंतु मेरे भीतर संस्कार में माया की गाँठ नहीं छुटती है)। जैसे घी से भरे हुए कड़ाहें मैं चंद्रमा का प्रतिबिंब दिखाई देता है। उसे मिटाने के लिए पहले ईंधन लगाकर, अग्नि को सुलगाकर उसे औटाने की कोशिश की जाती है। इससे उसका नाश नहीं होता है। उसे कड़ाहे में हिलाने मिलाने से भी उसका नाश नहीं होता। उस कड़ाहे में घी को औटने से वह चन्द्र बिम्ब सैकड़ों कल्पों में भी नष्ट नहीं हो सकता है। जब तक कड़ाही में पूरा धी जलकर समाप्त नहीं हो जाता तब तक वह प्रतिबिंब वहाँ उपस्थित रहेगा। इसी प्रकार जब तक मोह रहेगा तब तक जन्म मृत्यु और इच्छा, आकांक्षाओं का चक्र चलता रहेगा। बाहरी कर्मकांड आंतरिक संस्कारों में विराजमान माया ग्रंथियों को हजारों वर्षों में भी समाप्त नहीं कर सकते। जैसे पेड़ के छेद में रहने वाले पक्षी को मारने के लिए पेड़ काटना सही नहीं है। अर्थात पक्षी को मारने के लिए पेड़ काटने की आवश्यकता नहीं है। धैर्य खोकर विविध प्रकार के साधनों और तरीकों को अपनाकर मन को वास्तविक शांति नहीं मिलती और न मन शुद्ध हो पाता है। कवि एक और

उदाहरण देते हैः हम अपने शरीर के स्वस्थ रखने के लिए नहाते हैं। नहाना शारीरिक शुद्धता का प्रतीक है। जिससे शरीर शुद्ध और पवित्र बना रहता है किन्तु कामवासना से ग्रस्त मन केवल नहाने से निर्मल नहीं हो सकता। मन में सदैव कुविचारों का डेरा लगा रहता है। उनसे आसानी से मुक्ति नहीं पायी जा सकती। जैसे साँप के बिल पर आप कितनी जोर से प्रहार क्यों ना करें या कितनी बार प्रहार क्यों ना करें उसके भीतर रहने वाले साँप पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता वह मारता नहीं है। इसी तरह सत्संग में बैठकर भी मन के भीतर गन्दे विचार, इर्ष्या आदि भाव आते रहते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि बिना श्री राम प्रभु और गुरु की करुणा के मन को निर्मल विवेक की प्राप्ति नहीं हो सकती। जब तक यह निर्मल विवेक मन में उत्पन्न नहीं होगा तब तक मायाग्रस्त संसार रूपी इस गहरे समुद्र से किसी का उद्धार संभव नहीं है।

विशेषताएँ:

1. सांसारिक मोह को फाँस कहा है क्योंकि मन मोह माया में इतना उलझ जाता है कि प्रभु भक्ति से दूर हो जाता है। ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य से भ्रमित हो जाता है।
2. साँप के बिल पर कितने ही प्रहार किए जाए उसे मारा नहीं जा सकता। इसी प्रकार बार बार नहाने से मन का मैल दूर नहीं होगा।
3. संसार रूपी भवसागर को पार करने के लिए विवेक चाहिए और विवेक प्रभु और गुरु की करुणा के बिना नहीं मिलता है।

बोध प्रश्न -

- प्रस्तुत पद्यांश की समीक्षा कीजिए।
- कवि ने मोह ग्रंथि को छुड़ाने के लिए कौन-कौन से उपाय बताएँ हैं?
- “घृतपूरन कराह अंतरगत ससि प्रतिबिम्ब दुखावै” पंक्तियों से कवि का क्या अभिप्राय है?

121

हे हरि यह भ्रम की अधिकाई।
देखत सुनत कहत समझुत संसय संदेह न जाई।।1।।
जो जग मृषा ताप त्रय अनुभव होइ कहहु केहिं लेखे।
कहि न जाइ मृगवारि सत्य भ्रम ते दुख होइ विसेखे।।2।।
सुभग सेज सोवत सपने बारिधि बूड़त भय लागै।
कोटिहुँ नाँव न पार पाव सो जब लागि आपु न जागै।।3।।
अब विचार रमनीय सदा संसार भयंकर भारी।
सम संतोष दया विवेक तें व्यवहारी सुखकारी।।4।।
तुलसिदास सब विधि प्रपंच जग जदपि झूठ स्त्रृति गावै।
रधुपति भक्ति संत संगति बिनु को भवत्रास नसावै।।5।।

कठिन शब्दः मृगवारि – मृगजल, आपु- स्वयं, संसय किसी वस्तु के न होने पर भी आशंका से भयभीत होना, सेज- सुंदर और कोमल बिछौना या बिस्तरा, शय्या, सुभग- समृद्ध और सुखी, भ्रम -मिथ्या परिकल्पना, बारिधि - समुद्र, जलपात्र, प्रपंच- छल–कपट से भरा कार्य, छलपूर्ण कार्य, संगति- संगत होने का भाव, मेल मिलाप। भवत्रास – सांसारिक दुख, जदपि –यद्यपि, नसावै- नष्ट होना,

संदर्भः प्रस्तुत पद राम भक्तिकाव्यधारा के महान कवि तुलसीदास द्वारा रचित विनयपत्रिका से लिया गया है।

प्रसंगः संसार विभिन्न वस्तुओं से भरा हुआ है। आकर्षक और आरामदायक यही वस्तुएँ मन को भ्रमित करती हैं। भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, शारीरिक इच्छाओं के पीछे भागते हुए मनुष्य जीवन की वास्तविकता को भूल जाता है। अपनी ही बनाई हुई गुत्थियों में उलझा रहता है। जब तक वह जागता है तब तक बहुत देर हो जाती है। इसलिए कवि कहते है कि

व्याख्याः हे श्री हरि! यह इस भ्रम की विशेषता नहीं तो और क्या है? इसमें जीव के द्वारा देखते, सुनते, समझते हुए भी संदेह और संशय समाप्त नहीं होते हैं। कवि कहते हैं कि यदि यह संसार असत्य है तो यह दैहिक, दैविक और भौतिक वस्तुएँ और भावनाएँ हमें यथार्थ की भांति क्यों प्रतीत होती है। इनमें वास्तविकता का अनुभव क्यों होता है। मृग मरीचिका असत्य है। वह केवल कल्पना है किंतु मृग उसे देखकर उसके पीछे भागता है और अंत में उसके हाथ कुछ नहीं आता है। वह प्यासा ही मर जाता है। उसी प्रकार यह संसार है। सुख सुविधाओं की लालसाओं में पूरा जीवन बिताने के पश्चात अंतिम घड़ी में मनुष्य को पछतावा होता है।

सुंदर सेज पर सोया हुआ व्यक्ति सपने में अपने आप को डूबता हुआ समझकर बुरी तरह से डर जाता है। सपने में ही उसके सामने बहुत सारी नौकाएं होते हुए भी जब तक वह खुद जागता नहीं है तब तक उसे डर लगता है। वह उस दुख से मुक्ति नहीं पाता है। अक्सर ऐसा होता है कि मनुष्य नींद में अपने आप को गिरते हुए या मरते हुए देखता है। उस परिस्थिति में (सपने में) उसके मित्र या परिजन उसके आसपास ही होते हैं। वह उसे बचाने का प्रयास करते हैं किंतु मनुष्य जब तक नींद से नहीं जागता है तब तक वह अपने गिरने या मरने के डर से आजाद नहीं हो पाता है।

व्यावहारिक रूप से यदि इस संसार को देखें तो यह बड़ा रमणीक लगता है क्योंकि हमारे मस्तिष्क को अज्ञानता ने ढक लिया है। दूसरी तरफ संतोष, समत्व भाव, दया और प्रेम को अपने आचरण में धारण करने वाले लोग सुखी रहते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि यद्यपि श्रुतियों में लिखा गया है कि संसार हर प्रकार से मायावी और असत्य है। मायावी चालों से भरा हुआ है। इस संसार में श्री राम की भक्ति और सत्संगति के बिना संसार के संत्रास से कोई मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। श्री राम की भक्ति और सत्संगति के माध्यम से ही सांसारिक संत्रास का नाश होगा। मनुष्य भवसागर के पार लगेगा।

विशेषताएँ:

1. "सुभग सेज सोवत सपने" में अनुप्रास अलंकार है।
2. संसय और संदेह दोनों शब्दों में अन्तर है संसय का अर्थ मिथ्या जगत को सत्य मानना है। संदेह का अर्थ इस जगत में केवल प्रभु की सत्ता है या कुछ और है।
3. मृत्यु सत्य है परन्तु मनुष्य उसका नाम लेने मात्र से निराश हो जाता है। जगत मायावी है परन्तु मन उसी में लगा रहता है।

बोध प्रश्न -

- प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कई क्या संदेश देना चाहते हैं?
- कवि के अनुसार मनुष्य किन भ्रमों में फंसा हुआ है?
- "कहि न जाइ मृगवारि सत्य भ्रम ते दुख होइ विसेखे" से कवि का क्या अभिप्राय है?

22.3.2 समीक्षात्मक अध्ययन

विनयपत्रिका असाधारण ग्रंथ है। इसमें कवि मानव जीवन में उत्पन्न भटकाव के निवारण का संदेश देते हैं। बड़े बड़े महात्माओं नें कई तरह के साधन और उपाय बताए है। तुलसीदास इस भटकाव से बचने के लिए राम का सहारा लेना चाहते हैं इसलिए वह राम से विनति करते हैं। पहले पद में इसकी गंभीरता को देखा जा सकता है।

यह संसार एक मिथ्या है। इसमें कभी भी कुछ भी हो सकता है। इस पद में संसार की इसी मिथ्या का वर्णन किया गया है। तुलसीदास कहते हैं हे केशव, मैं कुछ कह नहीं सकता क्योंकि मैं इस संसार की रचना को समझने में असमर्थ हूँ। हे प्रभु, आपकी इस रचना के सामने कुछ बोलते नहीं बनता है। यह सृष्टि एक आधाररहित दीवार पर लगे एक चित्र के समान है। एक ऐसा चित्र जिसमें कोई रंग नहीं है। इस चित्र के चित्रकार का कोई शरीर नहीं है। यह चित्र धोने से नष्ट नहीं होता है लेकिन इसमें मृत्यु का भय सदा व्याप्त रहता है। इसकी तरफ देखने से दुख होता है। रेगिस्तान में सूर्य की किरणों से मरीचिका उत्पन्न होती है। उसी संदर्भ में कवि लिखते हैं कि उसमें एक मगरमच्छ का वास है। जिसका मुँह नहीं है किंतु वह उन सभी को खो जाता है जो मरीचिका के पास जाते हैं। प्रभु आपके द्वारा रचित सृष्टि को कुछ लोग सत्य मानते हैं तो कुछ सत्य। कुछ विद्वानों के अनुसार यह सत्य असत्य दोनों से परिपूर्ण है। अंत में तुलसीदास कहते हैं कि जब इन तीनों मतों का परित्याग कर देते हैं तभी वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति होगी।

हे प्रभु! मैं अहंकार और माया में त्रस्त पड़ा था। तो मुझे कोई होश नहीं था किंतु आपकी शरण में आकर अपने कल्याण के लिए आपसे निवेदन कर रहा हूँ। मुझ जैसा दीन और पापी कोई नहीं है और आपके सामान दयालु और पवित्र कोई नहीं है। मैं दास हूँ और आप स्वामी हैं। आप ऐसे ही मेरा परित्याग नहीं कर सकते। आप ही मेरा उद्धार कर सकते हैं। आप पिता, माता, गुरु, मित्र, भाई और पति सब प्रकार से मेरे हितैषी हैं। मुझे इस मिथ्या संसार के आकर्षणों से बचने

के लिए आप ही कोई विचार बताएँ। संसार के सारे भय और संकटों को दूर करने वाले कमल नयन श्री राम! आपके द्वारा दिए गए ज्ञान के अभाव में सांसारिक मिथ्याजालों से बाहर आना संभव नहीं है।

तुलसीदास जी कहते हैं कि श्री राम ही मोह माया की श्रृंखला को तोड़ने वाले हैं। यदि ज्ञान की प्राप्ति करनी है तो मोह और शंकाओं की दुविधाओं को नष्ट करना आवश्यक है। यह बिना ईश्वर की कृपा के संभव नहीं है। व्यक्ति का मन बड़ा चंचल होता है वह अकेला इस मोहपाश से बाहर नहीं आ सकता। संसार में कई ऐसी वस्तुएँ है जो उसे उसके मार्ग से भ्रमित करती है। उन सबसे दूर होने के लिए उसे ईश्वर की करुणा दया ममता का सहारा लेना ही पड़ता है।

प्रस्तुत पद्यांश में कवि मोह माया से घिरे मनुष्य को विविध उदाहरणों द्वारा सच्ची प्रभु भक्ति के लिए प्रेरित करते हैं। अज्ञान के नाश के लिए ज्ञान के प्रकाश की आवश्यकता होती है। नाना प्रकार के धार्मिक अनुष्ठानों, पूजा -पाठ, जप तप आदि से अज्ञान का अंधेरा दूर नहीं होता है। अन्तर्मन की शुद्धि उसके लिए अधिक आवश्यक होती है। जैसे किसी पेड़ के कोडर में निवास करने वाले पक्षी से यदि छुटकारा पाना हो तो पेड़ को नहीं काटते। साँप के बिल पर वार करने से साँप को कोई नुकसान नहीं होता है। वह तो जमीन के भीतर भीतर से ही कहीं ओर निकल जाता है। इसी प्रकार धार्मिक अनुष्ठानों को करने से मन में पवित्रता उत्पन्न नहीं होती है।

कवि को यह संसार मिथ्या लगता है। यह माया से परिचालित है। पूर्ण रूप से भ्रमास्पद और माया शक्ति से परिपूर्ण है। इस सांसारिक जीवन को भोगने का अपना ही आनंद है। बिना तत्वज्ञान के यह संसार रमणीक है। जब तक वास्तविकता का ज्ञान नहीं होता है, आप सुखी रहते हैं किंतु वास्तविकता में यह संसार न तो सुखी है और न ही रमणीक। ईश्वर की कृपा के बिना इसका यथार्थ समझ में नहीं आता है। सांसारिक कष्टों से मुक्ति पाने के लिए ईश्वर की कृपा की आवश्यकता होती है।

22.4 :पाठ सार

तुलसीदास द्वारा रचित विनय पत्रिका में 279 स्तोत्र और गीत है। आरंभ में गणेश, शिव, पार्वती आदि कई देवताओं की स्तुति की गई है। तुलसीदास की भक्ति की यह विशेषता है कि वह अपने आप को अत्यंत दीन, मालिन और सब प्रकार से असमर्थ मानते हैं। इसलिए वे सबके मलिक, रक्षक और तारणहार श्री राम से सहायता मांगते हैं। इस संसार में श्री राम का ही सहारा है। उन्हीं के शरण में जाकर उनकी कृपा का पात्र बनकर ही संसार के चक्रव्यूह से बाहर आया जा सकता है। विनय पत्रिका में तुलसीदास जी केवल उपदेश नहीं देते हैं बल्कि वह प्रभु श्री राम से आत्म निवेदन करते हैं। उनके अनुसार यह संसार माया जालों से भरा हुआ है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्युशय्या तक मेरा मेरा करता रहता है। अंत समय में भी वह शांत हृदय से परलोक गमन नहीं कर पाता है। यही कारण है कि कवि मनुष्य को रामशरण में जाने का उपदेश देते है। पति- पत्नी, भाई, रिश्तेदार, मित्र, माता-पिता, गुरु सभी नश्वर है। अगर कुछ अमर है तो

वह प्रभु का नाम है। जो भी इसका सहारा लेता है, वह भवसागर के पार चला जाता है। विनय पत्रिका में प्रमुख रस शांत रस है और इसका स्थायी भाव निर्वेद है। विनय पत्रिका की रचना पद शैली में की गई है। तुलसीदास जी का अधिकांश साहित्य अवधी भाषा में लिखा गया है परंतु कुछ ग्रंथ ब्रज भाषा में भी लिखे गए हैं। कहा जाता है कि तुलसीदास जी ने अवधी भाषा को उसका प्रौढ़ रूप प्रदान किया है। वहीं विनयावली की बात करें तो यह ब्रजभाषा में लिखी गई है और यह ब्रजभाषा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें कई छंद पत्रात्मक शैली में विशेष संबोधनों के साथ लिखे गए हैं।

22.5 : उपलब्धियाँ

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

- विनय पत्रिका एक महान ग्रंथ है। प्रभु भक्ति का एक सच्चा पथ प्रदर्शक विनय पत्रिका है। मनुष्य जो सांसारिक मोहमाया के चक्कर में पड़कर अपने जीवन का वास्तविक उद्देश्य भूल जाता है। उसको सही राह दिखाने के लिए विनय पत्रिका एक सशक्त माध्यम है।
- इसमें तुलसीदास प्रभु की भक्ति पर विशेष ध्यान देते हैं। वह प्रभु को अपना स्वामी मानते हैं और उनकी भक्ति दास्य भाव की भक्ति है। मनुष्य कितने भी पाप करें किंतु जब वह सच्चे मन से प्रभु श्री राम से प्रार्थना करता है तो वें उसे क्षमा कर देते हैं।
- प्रस्तुत पदों में हम देखते हैं कि सांसारिक मोहपाश में बंधे हुए मनुष्य का अंतिम आश्रय केवल श्री राम ही है। तुलसीदास विनय करते हैं कि प्रभु उन्हें विभिन्न रूपों में स्वीकार करें और उन पर कृपा करें। प्रभु के देखने मात्र से ही जीवन सफल हो जाता है।
- मरीचिका की तलाश में मृग व्यर्थ ही यहाँ से वहाँ भागता रहता है। उसी प्रकार से मनुष्य भी अपने स्वार्थ और इच्छाओं के चक्कर में पूरा जीवन भागता रहता है और अपनी अंतिम घड़ी में उसे यह महसूस होता है कि उसने केवल जानवर की भांति अपना पेट भरा है। प्रभु भक्ति के नाम पर केवल स्वार्थ ही साधा है। धार्मिक अनुष्ठानों को करके वह अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहता है किंतु यह संभव नहीं है।
- राम तो इतने भोले हैं कि उन्हें एक बार पुकारने मात्र से ही वह भक्त के पास चले आते हैं।

22.6 : शब्द सम्पदा

1. भवसागर - भवसिन्धु, संसार रूपी समुद्र।
2. परलोक – दूसरा लोक, स्वर्ग
3. कल्प – युग, अनंत काल
4. गुत्थियाँ – मन की गाँठ, ग्रंथियाँ
5. परिचालित – जो दूसरों द्वारा चलाया गया हो।

6. अनुष्ठान – कोई धार्मिक कार्य

7. समत्व – सम या समान होने का भाव

8. श्रृतियाँ – हिन्दु धर्म के महान धार्मिक ग्रंथ (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद ओर अथर्ववेद और वेदों के सूक्त

9. परिकल्पना – तर्क के लिए किसी तर्क की कल्पना करना

10. मृत्युशय्या – वह बिस्तर जिस पर व्यक्ति अपने जीवन की आखिरी साँस ले रहा हो।

22.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

अ) दीर्ध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखिए।

1. 'केशव' कहि न जाइ का कहिए' पद का भाव अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'माधव मो समान जग माहि' पद का भाव अपने शब्दों में लिखिए।
3. तुलसी के अनुसार भगवान को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को किन वस्तुओं और भावनाओं का त्याग करना चाहिए, उदहारण सहित समझाइए।

खण्ड (ब)

(आ) लधु प्रश्नों के उत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखिए।

1. मनुष्य अपने दम पर मोह माया के जाल को क्यों नहीं तोड़ सकता? विनय पत्रिका के उदहारण सहित समझाइए।
2. तुलसी के पदों के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि मनुष्य अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए क्या क्या तरीके अपनाते हैं?
3. निम्नलिखित पक्तियों की स प्रसंग व्याख्या कीजिए।

(1) तुम सभ हेतु रहित, कृपालु, आरतहित ईस न त्यागी।
मैं दुख सोक विकल, कृपालु केहि कारन दया न लागी॥

(2) अंतर मलिन बिषय मन अति तन पावन करिय पखारे।
मरइ न उरग अनेक जतन बलमीकि बिबिध बिधि मारे।।

(3) सुभग सेज सोवत सपने बारिधि बूड़त भय लागै।
कोटिहुँ नाँव न पार पाव सो जब लागि आपु न जागै।।

खण्ड (स)

I. सही विकल्प चुनिए।

4. संसार में सब प्रकार के साधनहीन पापी, निर्धन एवं काम क्रोध आदि विकारों से संपन्न कौन है?

(अ) देवता (आ) राक्षस (इ) मनुष्य (ई) यक्ष

5. मनुष्य रूपी जीव को अपने जीवन में किस का भय सताता है?

(अ) मृत्यु (आ) दुख (इ) दुर्धटना (ई) अत्याचार

6. सूर्य की किरणों में कौन छुपा हुआ है?

(अ) साँप (आ) मगर (इ) शेर (ई) भूत

7. कवि ने साररहित और हतभाग्य किन्हें कहा है?

(अ) श्रीखण्ड, बसंत (आ) करील, श्रीखण्ड (इ) बेनु करील (ई) बेनु, बसंत

8. किस प्रकार के मनुष्य परिस्थितियों को कोसते है?

(अ) साधनहीन और परिश्रमहीन (इ) सम्पन्न और परिश्रमी

(आ) जवान और शिक्षित (ई) बुढ़े और सयाने

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. .... खोकर विविध प्रकार के साधनों और तरीकों को अपनाकर मन को वास्तविक शांति नहीं मिलती और न मन शुद्ध हो पाता है।
2. तुलसीदास की भक्ति .... भाव की है।
3. रामचरितमानस को अवधी भाषा में लिखने से .... वर्ग तुलसीदास से नाराज हो गया था।
4. संसार में श्री राम की .... और ....के बिना संसार के संत्रास से कोई मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता।
5. विनय पत्रिका में .... स्त्रोत हैं।

III. सुमेल कीजिए।

1. द्रवहु	(अ) भाग्यहीन
2. उदार	(आ) कंजूस
3. कृपण	(इ) प्रचुर
4. पुनीत	(ई) समुद्र
5. अदभ्र	(उ) दानी
6. हतभाग्य	(ऊ) झूठ
7. मृषा	(ए) नष्ट होना
8. बलमीकि	(ऐ) कृपा करना

9. बारिधि (ओ) बिल

10. नसावै (औ) पवित्र

22.8 : पठनीय पुस्तकें

1. आधुनिकता और तुलसीदास - श्री भगवान सिंह
2. कबीर एंव तुलसी की सामाजिक दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन- सरिता राय
3. गोस्वामी तुलसीदास कृत विनय पत्रिका (सटीक) - योगेन्द्र प्रताप
4. तुलसी के अध्ययन की नई दिशाएँ - रामप्रसाद मिश्र
5. विनय पत्रिका महाकवि गोस्वामी तुलसीदासकृत - देवनारायण द्विवेदी

इकाई 23 : विनय-पत्रिका – V : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

23.1 प्रस्तावना
23.2 उद्देश्य
23.3 मूल पाठ : विनय पत्रिका – V : व्याख्या
23.3.1 अध्येय पदों की व्याख्या
23.4 पाठ सार
23.5 पाठ की उपलब्धियाँ
23.6 शब्द संपदा
23.7 परीक्षार्थ प्रश्न
23.8 पठनीय पुस्तकें

23.1 : प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप जानते है कि तुलसीदास कवि के साथ-साथ परम भक्त भी रहे है। उनकी भक्ति 'सेवक-सेव्य' भाव की रही है। उन्होंने अपने आराध्य के रूप में दशरथ पुत्र सगुण राम को अपनाया है। उन्होंने अपने अराध्य के प्रति दासता के भाव में लीन भक्ति साहित्य लिखा है। इन्हीं साहित्य रचनाओं में से एक है 'विनय-पत्रिका'। इस अध्याय में हम तुलसीदास रचित 'विनय-पत्रिका' के पाँच निर्धारित पदों का अध्ययन करने वाले हैं। 'विनय-पत्रिका' इस नाम में ही विनय, अनुनय का बोध होता है।

23.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) तुलसीदासजी के भक्ति-भाव का स्वरूप समझ सकेंगे।
2) भक्ति की महत्ता को समझ सकेंगे।
3) हिंदी साहित्य के भक्तिकालीन प्रमुख संत कवि तुलसीदास जी के साहित्य लेखन की विशेष रचना 'विनय-पत्रिका' से परिचित होगें।
4) 'विनय पत्रिका' की भाषा-शैली से परिचित हो सकेंगे।

23.3 : मूल पाठ : विनय पत्रिका – V : व्याख्या

तुलसीदास कृत विनयपत्रिका

तुलसीदास जी ने अराध्य राम पर अनेक रचनाओं का निर्माण किया जिस में से एक 'विनयपत्रिका' एक है। यह ग्रंथ ब्रजभाषा में रचित है। विनय-पत्रिका को 'राम नाम विनयावली' के नाम से भी जाना जाता है। विनय-पत्रिका लिखने के पीछे का कारण कहा जाता है के तुलसीदास जी जब काशी के अस्सी घाट पर रहने लगे, तब एक रात कलि रूप धारण कर के उन्हें तकलीफ देने लगे तब गोस्वामी ने हनुमान जी का ध्यान किया क्योंकि वे असल में हनुमान भक्त थे, परंतु हनुमान जी के कहने पर राम की भक्ति आरंभ की। उन्होंने इस पीड़ा से मुक्त होने के लिए हनुमान के कहने पर ही अपनी याचना माने विनय 'विनय पत्रिका' के रूप में राम तक पहुँचायी।

'विनय-पत्रिका' तुलसीदास जी के 279 स्तोत्र गीतों का संग्रह है। इसमें 23 रागों का प्रयोग किया गया है। 'विनय-पत्रिका' का प्रमुख रस 'शांत' रस है। इसका स्थायी भाव निर्वेद है। यह ग्रंथ दोहा छंद में लिख गया है। विनय-पत्रिका में हिंदू देवी-देवताओं के संबंध के स्तोत्र और पद लिखे गए हैं। शुरुआत के 63 स्तोत्र और गीतों में गणेश, शिव, पार्वती, गंगा, यमुना, काशी, चित्रकूट, हनुमान, सीता और विष्णु के एक विग्रह बिंदु माधव के गुणगाण, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न की स्तुतियों के साथ राम की स्तुतियाँ हैं। इनमें जितने भी देवी-देवताओं के संबंध के स्तोत्र और पद आते है, सभी में उनका गुणगाण करके उनसे राम भक्ति की याचना की गयी है। तुलसीदास जी सभी देवी-देवताओं को मानते थे किंतु इन सभी की साह्यता अपने आराध्य राम को प्राप्त करना चाहते चाहते थे।

23.3.1 अध्येय पदों की व्याख्या

159

हे प्रभु! मेरोई सब दोसु
सीलसिंधु कृपालु नाथ अनाथ आरत-पोसु
बेष बचन बिराग मन अघ अवगुननिको कोसु।
राम प्रीति प्रतीति पोली, कपट- करतब ठोसु।।2।।

राग-रंग कुसंग ही सों, साधु-संगति रोसु।
चहत केहरि - जसहिं सेई सृगाल ज्यों खरगोसु।।3।।
संभु- सिखवन रसन हूँ नित राम-नामहिं घसु।
दंभहूँ कलि नाम कुंभज सोच-सागर-सोसु।।4।।

मोद-मंगल-मूल अति अनुकूल निज निरजोसु।
रामनाम प्रभाव सुनि तुलसिहुँ परम परितोसु।।5।।

संदर्भ:- प्रस्तुत पद तुलसीदासजी के विनय पत्रिका' इस ग्रंथ लिया गया है। इस पद में तुलसीदास अपने-आप को दोष देकर ईश्वर को मनाने की कोशिश करते है।

व्याख्या :- तुलसीदास जी अपने इस पद में अराध्य राम से विनंती करते है कि हे प्रभु सब मेरा ही दोष है। आप तो शील के समुद्र है। अनाथों के नाथ और दीन-दुखियारों के पालन हार है। प्रभू आप अपार कृपालु हैं।।1। मेरे वेश और वचनों से तो वैराग्य झलक रहा है, किंतु मेरा मन पाप और अवगुणों से भरा पड़ा है। मेरा मन अपने अराध्य राम की भक्ति, श्रद्धा और विश्वास से रिक्त है, खोखला है। किंतु छल और कपट के लिए मेरे मन में स्थान ही स्थान है।।2।।

अपने पद में तुलसीदास कहते हे की, हे प्रभु। जिस तरह खरगोश सियार की सेवा कर सिंह जैसी कीर्ति चाहता है ठीक उसी तरह मैं भी कुसंगतियों से प्रेम करता हूँ। और साधु-संतों की संगती से दूर रहता हूँ। (जिस तरह से खरगोश सियार की सेवा कर के सिंह के जैसी कीर्ति पाना चाहता है किंतु वह सियार का शिकार बन जाता है ठीक उसी तरह कुसंगतियों से कीर्ति पाने की अभिलाषा से कीर्ति तो प्राप्त नहीं होती इसके विपरीत उसके सद्गुणों का नाश होता है।।3॥ तुलसीदास आगे यह कहते है कि शिवजी का यह उपदेश है कि नित्य जीभ से राम नाम का उच्चारन करना चाहिए। कलयुग में दभ से लिया गया राम नाम अगस्त्य ऋषी की तरह दुःख सागरों को सोख लेता है।।4।। तुलसीदास कहते हैं राम नाम आनंद और कल्याण का मूल है। जड़ है इसलिए मेरा निश्चय है कि एक राम नाम ही मेरे लिए अनुकूल है। जिसकी किसीसे तुलना नही की जा सकती। वह सर्वोपरी है। राम नाम का ऐसा प्रभाव सूनकर तुलसी को परम संतोष की प्राप्ती होती है। यही उसका लौकिक जगत में उद्धार करेगा।

बोध प्रश्न -

- प्रस्तुत पद में कौन से अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

काव्यगत विशेषताएँ :

1) प्रस्तुत पद में तुलसीदासजी ने राम को शील, सदाचार, कृपालु अवगुणों को हरनेवाले के रूप में चित्रण किया है।
2) प्रस्तुत पद में उदाहरण अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
3) प्रस्तुत पद ब्रजभाषा में लिखा गया है
4) इस पद में पद मैत्री का भरपुर प्रयोग हुआ है। जैसे- सील - सिंधु, नाथ-अनाथ बेष-बचन, प्रीति-प्रतीति, कपट करतब, राग-रंग, साधु-संगति आदि
5) प्रस्तुत पद के लिए दोहा छंद और राग नट का प्रयोग हुआ है।

160

मैं हरि पतित-पावन सुने।
मैं पतित तुम पतित-पावन दोऊ बानक बने।।1।।
ब्याध गनिका गज अजामिल साखि निगमनि भने।
और अधम अनेक तारे जात कापै गने।।2।।
जानि नाम अजानि लीन्हें नरक सुरपुर मने।
दासतुलसी सरन आयो, राखिये आपने।।3।।

संदर्भ:- प्रस्तुत पद तुलसीदासजी के 'विनय पत्रिका' इस ग्रंथ से लिया गया है। इस पद में तुलसी के अराध्य राम ने जिन पतितों का उद्धार किया है उन लोगों का वर्णन किया गया है।

व्याख्या : तुलसीदासजी इस पद में कहते है कि हरि! मैंने तुम को पतितों को पावन करते हो ऐसा सुना है। मैं पवित हूँ अर्थात पापी हूँ और तुम पतित पावन अर्थात पापियों का उद्धार करनेवाले हो। तो फिर बस अब हम लोगों का मेल हो गया है।।1॥ हमारे वेद साक्ष दे रहे है कि तुमने व्याध अर्थात वाल्मिकि, गणिका अर्थात पिंगला नामक वेश्या को, गज माने हाथी और अजामिल को संसार सागर से पार कर दिया हैं। आपने और भी नीचो को तारा है। मतलब उनकी नैय्या पार लगायी है। उनकी गिनती किसीसे भी नही कि जा सकती है।।।2।। जिन्होंने जानबूझकर या अनजाने ही आप का नाम लिया है। उन्हें नरक में और सूरपुर माने स्वर्ग में जाने से मनाई कर दी गई है। अर्थात वह भवसागर से पार होकर मुक्त हो जाते है। यह सब समझते हुए यह दास तुलसी अब आपके शरण में आया है। नतमस्तक हुआ है। इसे भी अपना लिजिए।।3।।

- **बोध प्रश्न**
- तुलसी के राम ने किन-किन पतितों का उद्धार किया है स्पष्ट कीजिए।

काव्यगत विशेषताएँ:

1) प्रस्तुत पद में तुलसीदास ने राम के पतित-पावन, उद्धारक रूप का वर्णन किया है।
2) प्रस्तुत पद ब्रजभाषा में लिखा गया है।
3) प्रस्तुत पद के लिए दोहा छंद और राग नट का प्रयोग हुआ है।
4) गणिका, व्याध कथा प्रसंगों का उल्लेख प्रस्तुत पद में आया है।

164

जानत प्रीति-रीति रघुराई।
नाते सब हाते करि राखत, राम सनेह - सगाई।।1।।
नेह निबाहि देह तजि दसरथ, कीरति अचल चलाई।
ऐसेहु पितु तें अधिक गीधपर ममता गुन गरुआई।।2।।
तिय-बिरही सुग्रीव सखा लाख प्रानप्रिया बिसराई।

रन परयो बंधु बिभीषन ही को, सोच हृदय अधिकाई।।3।।

घर गुरुगृह प्रिय सदन सासूरे, भइ जब जहँ पहुनाई।
तब तहँ काहि सबरीके फलनिकी रुचि माधुरी न पाई।।4।।
सहज सरूप कथा मुनि बरनत रहत सकुचि सिर नाई।
केवट मीत कहे सुख मानत बानर बंधु बड़ाई।।5।।
प्रेम-कनौड़ो रामसो प्रभु त्रिभुवन तिहुँकाल न भाई।
तेरो रिनी हैं। कहयो कपि सों ऐसी मानिहि को सेवकाई।।6।।
तुलसी रामसनेह- सील लाख, जो न भगति उर आई।
तौ तोहिं जनमि जाय जननी जड़ तनु-तरूनता गवाँई।।7।।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद तुलसीदासजी के 'विनय पत्रिका' इस ग्रंथ से लिया गया है। इन पदों में प्रभु श्रीराम अपने भक्तो से अनन्यसाधारण प्रीति के बंधन से बंधे है। इस महिमा का गुणगाण किया गया है।

व्याख्या : तुलसीदास जी अपने पद में कहते है, प्रीति की रीति केवल एक रघुनाथ जी ही जानते है। सभी रिश्तें-नातों से वह केवल प्रेम के रिश्तें को ही सर्वोत्तम मानते है। वह प्रेम का ही नाता रखते है।।1।। महाराज दशरथ ने प्रेम निभाने के लिए देह त्याग कर अपनी अचल कीर्ति स्थापित कर दी, ऐसे प्रेमी पिता से भी अधिक आपने जटायू गिध पर ममता और गुणगौरवता दिखाई। (दशरथ की मृत्यू राम के वियोग में उनके वनगमन के पश्चात हुई किंतु प्यारे, जटायू के प्राण तो राम की गोद में निकले और उन्होंने अपने हाथों से पिण्डदान देकर उसका उद्धार किया)।।2।। मित्र सुग्रीव को स्त्री के विरह में देख अपनी प्राणाप्रिया सीताजी को भुला दिया। सीता जी का पता लगने पर पहले उन्होंने वानर राज सुग्रीव का दुःख दूर करने के लिए बलि का वध किया। रणभूमि में जब लक्ष्मण को शक्ति लगती है और वह मूर्छित होकर पड़े है ऐसे में वह उनका दुःख भूलकर भी विभिषन के लिए मन में चिंतित है। यदि लक्ष्मण ही न रहे तो मैं रावण के साथ युद्ध करके क्या करूँगा? यदि ऐसा हुआ तो वानर, भालु तो अपने अपने घर चलें जाएगें परंतु लंका से निष्कासित हुए विभिषण कहाँ जाएगें? रणभूमि में उन्हें विभिषण की ही चिंता खायी जा रही थी।।3॥ श्रीराम अपने भक्तों से अनन्य साधारण स्नेह रखते है। घर में, गुरु घर वशिष्ठ के आश्रम में, प्रिय मित्रों के घर अथवा ससुराल में, जहाँ-जहाँ पर भी आप की आव भगत या मेहमानी हुई तब वहाँ आपने यही कहाँ कि मुझे वन में जैसा शबरी के झूठे बेरों में स्वाद मिला और मिठास मिला था, वैसा अन्य कही नहीं मिला।।4।।

जब ऋषी-मुनि आपके सहज स्वरूप अर्थात् निर्गुण परमात्मा स्वरूप का बखान करने लगते है तब तो आप लज्जा के मारे सिर झुका लिया करते है। किंतु जब केवट आपको मित्र और वानर आपको बंधू कहते है तो वह आपको बड़ाई लगती हैं। उसमें आप अपना बड़प्पन समझते है

इस से यही प्रतित होता है की वह अपने से जुड़े मनुष्य और प्राणियों से अमिट स्नेह रखते हैं।।5।। हे भाई! प्रभु राम जैसा प्रेम के वश में रहनेवाला तीनों लोकों और तीनों कालों में दूसरा कोई नही है। जिन्होंने हनुमानजी से ये तक कह दिया कि 'मैं तेरा ऋणी हूँ' उनके समान सेवा के लिए कृतज्ञ होनेवाला और कौन है?॥6॥ हे तुलसी ! रघुवर जी का ऐसा अनन्य साधारण स्नेह और शील देखकर यदि उनके प्रति तेरे हृदय में भक्ति का उदय न हुआ, तो मुझे जन्म देकर तेरी माँ ने व्यर्थ ही अपनी जवानी गवाई है।।।7।।

इन पदों में तुलसीदास जी ने अपने अराध्य राम के अमीट स्नेह के उदाहरण देकर तीनों लोक और तीनों कालों में उनके जैसा स्नेह करनेवाला दूजा कोई और नहीं है। एक मेव प्रभु रामचंद्र ही है जो अपने हृदय में प्रेम के सागर को समाएँ है।

- **बोध प्रश्न**
- 'अमिट स्नेह के सागर प्रभु रामचंद्र हैं' स्पष्ट कीजिए।

काव्यगत विशेषताएँ :

1) प्रस्तुत पद में तुलसीदास जी ने प्रभु राम के अमीट स्नेह को दर्शाया है।
2) तो तोहिं जननि जाय ... इस पंक्ति में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है।
3) प्रस्तुत पद के लिए राग सोरठ और दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।

165

रघुबर ! रावरि यह बड़ाई।
निदरि गनी आदर गरीबपर, करत कृपा अधिकाई।।1।।
थके देव साधन करि सब, सपनेहु नहिं देत दिखाई।
केवट कुटिल भालू कवि कौनप, कियो सकल सँग भाई।2।।
मिलि मुनिबृंद फिरत दंडक बन, सो चरचौ न चलाई।
बारहि बार गीध सबरीकी बरनत प्रीति सुहाई।।3।।
स्वान कहे तें कियो पुर बाहिर, जती गयंद चढ़ाई।
तिय-निंदक मतिमंद प्रजा रज निज नय नगर बरसाई।।4।।
यहि दरबार दीनको आदर, रीति सदा चलि आई।
दीनदयालु दीन तुलसीकी काहु न सुरति कराई।।5।।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद तुलसीदास जी के 'विनय पत्रिका' इस ग्रंथ से लिए गये। है। प्रस्तुत पदों में रामराज्य में दीन-दुःखी, दुर्बलों का आदर किया गया है। यह बताया गया है।

व्याख्या : इन पदों में तुलसीदास जी कहते हैं, हे रघुवर आपका यही बड़प्पन है की धन, विद्या, या पद के अभिमानियों का धन के मद में मस्त लोगों का अनादर कर गरीबों का आदर करते है। उन पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखते है।।1।। देवता लोग अनेक उपाय कर के थक गए है, आप

उन्हें स्वप्न में भी दर्शन नहीं दिया, किंतु निषाद एवं कपटी रीछ, बंदर और राक्षस कुल के विभीषण के साथ भाईचारा कर लिया, क्योंकि यह सब दीन-निरभिमानी थे।।2।।

आप दण्डकारण्य में ऋषी-मुनियों के साथ हिलमिलकर घूमते रहे किंतु आपने इनकी चर्चा तक नही की। लेकीन जटायू गीध और शबरी के प्रेम का बारबार बखान करना सदा ही आपको अच्छा लगा।।3।। कुत्ते के कहने पर संन्यासी को तो हाथी पर चढ़कर नगर से बाहर निकाल दिया और सीताजी की झूठी निंदा करनेवाले मुर्ख धोबी को अपनी प्रजा समझकर नीति से अपने नगर अयोध्या में बसा लिया। क्योंकि वह दीन-गरीब थे।।4।। इन पदों के बखान से यह सिद्ध होता है कि रामराज्य में सदा ही दीन-दु:खी, गरीबों का आदर हुआ है। दुर्बलों के हित की चिंता की गई है। किंतु हे दयालु, करूनानिधि क्या आज तक आपको किसी ने तुलसी का ध्यान नहीं दिलाया।।5।। रघुवर ने हमेशा से ही अपने राज्य में किसी भी दीन-दुःखी का अनादर नही किया है। प्रजा हित दक्ष राजा रहे हैं। इसी लिए कलयुग में रामराज्य को याद किया जाता है।

बोध प्रश्न -

- राम के लोकमंगलकारी रूप का वर्णन कीजिए।

काव्यगत विशेषताएँ :

1) प्रस्तुत पदों में तुलसीदास ने प्रभु राम की छवि आदर्श और लोकमंगलकारी राजा की दर्शायी है।
2) 'रामराज्य' में पशु-पक्षी, मनुष्य प्राणी, निशीचर आदि सभी को समान रूप से प्रजा का दर्जा दिया हैं।
3) प्रस्तुत पद् ब्रभाषा में लिखा गया है।
4) प्रस्तुत पद के लिए राग सोरठ और दोहा छंद का प्रयोग किया गया है
5) प्रस्तुत पदों में अनुप्रास और उदाहरण अलंकार का प्रयोग किया गया है।

166

ऐसे राम-दीन हितकारी।
अतिकोमल करुना-निधान बिनु कारन पर-उपकारी।।1।।
साधन-हीन दीन निज अघ-बस, सिला भई मुनि-नारी।
गृहतें गवनि परसि पद पावन घोर सापतें तारी।।2।।
हिंसारत निषाद तामस बपु, पसू-समान बनचारी।।
भेट्यों हदय लगाइ प्रेमबस, नहिं कुल जाति बिचारी।।3।।
जद्यपि द्रोह कियो सुरपति-सुत, कहि न जाय अति भारी।
सकल लोक अवलोक सोकहत, सरन गये भय टारी।।4।।

बिहंग जोनि आमिष अहार पर, गीध कौन व्रतधारी।
जनक-समान क्रिया ताकी निज कर सब भाँति सँवारी।।5।।
अधम जाति सबरी जोषित जड़, लोक-बेद तें न्यारी
जानि प्रीति, दै दरस कृपानिधि, सोउ रघुनाथ उधारी।।6।।
कपि सुग्रीव बंधु-भय-ब्याकुल आयो सरन पुकारी।
सहि न सके दारून दु:ख जनके, हत्यो बालि, सहि गारी।।7।।
रिपुको अनुज बिभीषन निशिचर, कौन भजन अधिकारी।
सरन गये आगे है लीन्हों भेव्यो भुजा पसारी।।8।।
असुभ होइ जिन्हके सुमिरे ते बानर रीछ बिकारी।
बेद-बिदित पावन किये ते सब, महिमा नाथ! तुम्हारी।।9।।
कहँ लगि कहौं दीन अगनित जिन्हकी तुम बिपत्ति निवारी।
कलिमल-ग्रसित दासतुलसी पर, काहे कृपा बिसारी?।।10।।

संदर्भ:- प्रस्तुत पद तुलसीदासजी के 'विनय-पत्रिका' इस ग्रंथ से लिए गए है। इन पदों में दीन-दुःखीतों के आश्रयदाता, उनकें तारण-हार राम की छवि को उजागर किया गया है।

व्याख्या:- दोनों का हित करनेवाले श्रीरामचंद्रजी है। वे अति कोमल करुणा के भण्डार और बीना किसी कारण दूसरों का हित करने वाले, दु:खीतों का दुख दूर करने वाले हैं।।1।। साधनों से रहित, दीन गौतम ऋषी की पत्नी अहिल्या शापग्रस्त होने के कारण पत्थर की शिला हो गई थी। ऐसी दीन, दुःखीयारी नारी के लिए आप घर से चलकर, अपने पवित्र चरणों से उसे छू कर, घोर शाप से मुक्त कर दिया था।।2।। हिंसा में रत निषाद जिसका तामसी शरीर था, और जो पशुओं की तरह जंगल में फिरता रहता था, उसे अपने वंश और जाति का विचार किए बिना ही प्रेम से अपने हृदय से लगाया।।3।। जब की इंद्र के पुत्र जयंत ने काक रूप में सीता के चरण में चोंच मारकर इतना भारी अपराध किया था, कि कुछ कहा ही नहीं जा सकता। जब वह बाण के मारे से घबराता हुआ तीनों लोकों में अपनी रक्षा के लिए मारा-मारा फिर रहा था पर उसे शरण नहीं मिली। फिर वह शोक से व्याकूल होकर शरण में आया तब उसका सारा भय दूर कर दिया गया।।।4।। गीध जटायू पक्षी योनी का था। मांस भक्षण करनेवाला पक्षी था। उसने ऐसा कौन-सा व्रत किया था कि जिसकी आपने अपने हाथों से पिता के समान अन्त्येष्टी-क्रिया कर पिण्डदान कर सब बातें सुधार दी, अर्थात मुक्ति प्रदाने कर दी।।5।।

शबरी अधम जाति की मुर्ख स्त्री थी। जो लोक और वेद दोनों से ही बाहर थी। परंतु उसके सच्चे प्रेम को समझ कर कृपालु रघुनाथ जी ने उसे दर्शन देकर उसका भी उद्धार किया।।8।। सुग्रीव वानर जब अपने भाई बालि के भय से व्याकूल होकर आप को पुकारता हुआ आप की

शरण में आया तब आप अपने उस दास का दारुण दुःख न देख सके और गालिया सह कर भी बालि का वध कर दिया।।7।। शत्रु रावण का भाई विभिषण जो राक्षस जाति के थे। वह किस भजन का अधिकारी था? किंतु जब वह आपकी शरण में आया तब आपने उसे आगे बढ़कर भुजाओं को पसार कर हृदय से लगा लिया।।8।। बंदर और रीछ ऐसे अधर्मी है कि उनका नाम तक लेने से अंमगल होता है किंतु आप ने उन्हें भी पवित्र बना दिया। वेद इस बात के साक्षी है। हे नाथ! यह सब आपकी महिमा हैं।।।9।। मैं कहाँ तक कहूँ ऐसे असंख्य दीन है, जिनकी विपत्तियाँ आपने दूर कर दी है, परंतु न जाने इस तुलसीदास पर, जो कलियुग के पापों से जखड़ा हुआ है, आप कृपा करना क्यों भूल गए।।10।।

बोध प्रश्न -

- तारण हार राम की प्रतिमा उजागर कीजिए।

काव्यगत विशेषताएँ :

1) प्रस्तुत पद ब्रजभाषा में लिखा गया है।
2) प्रस्तुत पदों के लिए दोहा छंद और राग सोरठ का प्रयोग किया गया है।
3) उपरोक्त पदों मे आश्रयदाता प्रभु राम का गुणगाण किया गया है।
4) इन पदों में तारण- हार राम की छवि को उजागर किया गया है।

23.4 : पाठ सार

प्रिय छात्रों इन पदों दवारा आप यह समझ ही गए होंगे की गोस्वामी तुलसीदास के अराध्य राम हैं। उनकी अपने अराध्य के प्रति सेव्य-सेवक भाव की भक्ति रही हैं। उन्होंने 'विनय-पत्रिका' में अपने राम के चरणों में इस दास को स्वीकार करने के लिए अनुनय-विनय किया है।

अपने पदों द्वारा उन्होंने राम को लोक मंगलकारी, प्रजाहित दक्ष, दीन-दुःखीतों का पालन-हार, पशु-पक्षी, निषाद, नीच जाति, शापित, कुटिल, अधम, राक्षस आदियों का भी उद्धार किया है। जो भी उनके शरण में आया उसको उन्होंने भव सांगर से तर दिया। उनके समान कोई दूसरा कृपालु, तारणहार नही हैं। तुलसी के अराध्य राम केवल प्रीति करना ही जानते है। जिन पतित लोगों को समाज ने धुतकारा ऐसो ने जब केवल राम नाम की पुकार की तब रामचंद्र ने ऐसे पतितों को पवित्र कर उन्हें अपने हृदय से लगाकर प्रीति के बंधन में बांध लिया।

अत: हम यह कह सकते हैं कि तुलसीदास के राम के समान कोई दूसरा इन तीनों लोकों में दयालु कृपानिधि नहीं है।

23.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्न लिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए है -

1) हिंदी साहित्य के मध्ययुगीन काव्य के भक्तिकाल को स्वर्ण युग कहा जाता है।
2) सगुण भक्तिधारा की दो प्रमुख शाखाओं में से रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि के रूप में तुलसीदास को जाना जाता है।
3) तुलसीदास की भक्ति सेव्य-सेवक भाव की भक्ति है।
4) ‘विनय-पत्रिका' यह तुलसीदास की राम के भक्ति में लीन गेय पदों का संग्रह है।
5) विनय-पत्रिका में तुलसीदास ने लोकमंगलकारी, कृपानिधि, पतित-पावन मित्रों और दीन- दुःखीयारों पर अपार स्नेह करनेवाले राम की छवि को साकारा है।
6) विनय-पत्रिका कवि के अध्यात्मिक जीवन के एक बहुत बड़े भाग का परिचय कराती है।
7) आत्म-निवेदनपरक गीति- साहित्य में ‘विनयपत्रिका' के समान कोई दूसरी रचना नहीं है
8) तुलसीदास जी की दृष्टि से राम नाम का स्मरण ही मुक्ति का अंतिम मार्ग बताया गया है।

23.6 : शब्द संपदा

1) सिंधु - सागर
2) बिराग - वैराग्य
3) सृगाल - सियार
4) संभु - शिव
5) कुंभज - अगस्त्यि ऋषी
6) मोद - आनंद
7) व्याध - वाल्मीकि
8) गज - हाथि
9) सुरपुर - स्वर्ग
10) सरन - शरण, नतमस्तक
11) बिरही - विरह
12) गुरुगृह - गुरू का आश्रम
13) कपि - हनुमान, वानर
14) गनी - धनवान, संपन्न
15) गयंद - हाथी, गजेंद्र
16) तामस - अंधकार, जिस में तमोगुण की अधिकता हो
17) सुरपति - इंद्र
18) बिहँग - पक्षी
19) आमिष - मांस, शिकार

20) जोषित - स्त्री, नारी, स्त्रीलिंगी

21) रिपु - शत्रु, दुश्मन

22) निशिचर - असुर, निशाचर, दानव, दैत्य

23) बेद - वेद

24) कलिमल - ग्रासित -कलयुग के पापों से जखड़ा हुआ।

23.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'विनय-पत्रिका' के पठित पदों के माध्यम से तुलसी दास की भक्ति सेव्य-सेवक भाव की भक्ति है। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

2. 'विनय-पत्रिका' में तुलसी दास ने राम की महत्ता को वर्णित किया है, स्पष्ट कीजिए।

खण्ड ब

लघुश्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. पठित पदों के आधार पर राम के गुणों की चर्चा कीजिए।

2. विनय-पत्रिका का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

3. 'ऐसे राम दीन - हितकारी। अतिकोमल करुना निधान बिनु कारन पर-उपकारी' की **व्याख्या** कीजिए।

खण्ड (स)

I) सही विकल्प चुनिए।

1) विनय-पत्रिका में कुल कितने पद हैं।

अ) 279 ब) 179 क) 250 ड) 261

2) विभिषण किसके भाई थे ?

अ) राम ब) सुग्रीव क) रावण ड) जटायू

3) अहिल्या कौन से ऋषी की पत्नी थी?

अ) वशिष्ठ ब) अगस्त्य क) गौतम ड) विश्वामित्र

4) विनय-पत्रिका में कितने रागों का उल्लेख हुआ है?

अ) 50 ब) 10 क) 23 ड) 17

II) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1) विनय-पत्रिका ....भाषा में लिखी हुई है।

2) तुलसीदास जी .... भक्ति शाखा से संबंधित है।

3) 'विनय-पत्रिका' का प्रमुख रस............ है।

III) सुमेल कीजिए।

1) हनुमान	अ) भालू
2) जटायू	ब) कौआ
3) काक	क) इंद्र
4) सुरपति	ड) गीध
5) रीछ	इ) कपि

23.8 : पठनीय पुस्तकें

1) विनय-पत्रिका- तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर

2) हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चनसिंह

3) भक्ति काव्य यात्रा - रामस्वरूप चतुर्वेदी

4) हिंदी साहित्य का इतिहास - आ. रामचंद्र शुक्ल

5) प्राचीन कवि - विश्वम्भर मानव

6) भक्ति आंदोलन और भक्तिकाव्य - शिवकुमार शर्मा

7) भारतीय भक्ति साहित्य - राजमल बोर

इकाई 24 : विनय पत्रिका – VI : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

24.1 प्रस्तावना
24.2 उद्देश्य
24.3 मूल पाठ : विनय पत्रिका – VI : व्याख्या
24.3.1 अध्येय पदों की व्याख्या
24.4 पाठ सार
24.5 पाठ की उपलब्धियाँ
24.6 शब्द संपदा
24.7 परीक्षार्थ प्रश्न
24.8 पठनीय पुस्तकें

24.1 : प्रस्तावना

गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपनी रचना 'विनय-पत्रिका' में राम कथा के अनेक प्रसंगों को इकट्ठा कर उन प्रसंगों के माध्यम से राम की महिमा दर्शायी है। तुलसी ने भक्ति और धर्म के संदेश को अपनी लेखनी के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाने का कार्य किया है। राम की छवि को लोकमंगलकारी, प्रजाहितदक्ष, धर्मरक्षक, राक्षस-विनाशक, पतित-पावन, दीन- दुःखितोंका का कैवारी, आदर्श राजा तथा आज्ञाकारी पुत्र के रूप में समाज के समक्ष रखा है। मनुष्य में भगवान के दर्शन कराने का कार्य तुलसीदास ने अपनी रचना में किया है।

'रामराज्य' का आदर्श समाज में दर्शाया है। जहाँ मनुष्य, पशु-पक्षी, राक्षस सभी के साथ उन्होंने समानता का व्यवहार कर उच-नीच के भेदभाव को मिटाने का प्रयत्न किया है। विनय-पत्रिका के पदों में अराध्य की भक्ति एवम् धर्म की रक्षा का बिड़ा तुलसीदास जी ने उठाया है।

24.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

- तुलसीदासजी के साहित्य संवेदनाओं से परिचित होंगे
- विभिन्न राग-रागिनियों का परिचय होंगा।
- तुलसीदासजी की भक्ति-भावना से परिचित होंगे।
- लोकमंगलकारी, प्रजाहित दक्ष राम के स्वरूप से भलिभाँति परिचित हो सकेंगे।

- कलियुग में 'राम नाम' ही मुक्ति का मार्ग है। यह तुलसी की धारणा से अवगत होगें।

24.3 : मूल पाठ : विनय पत्रिका – VI : व्याख्या

इस इकाई में हम विनय पत्रिका के पद क्र.167, 182, 201, 269 और 272 का अध्ययन करनेवाले हैं। मध्यकाल में चहु ओर भक्ति का बोलबाला रहा है। सभी ने अपने-अपने अराध्य के प्रति अपने सेवा-भक्ति को दर्शाया है। सगुण राम भक्ति शाखा में तुलसीदास अग्र स्थान पर आते है। क्योंकि अन्य भक्तों की तुलना में उन्होंने अधिक श्रेष्ठ रचनाएँ की है।विनय-पत्रिका में उन्होंने धर्म, संस्कृति और भक्ति के मेल से उत्पन्न भावों को निरूपित किया है। विनय-पत्रिका के पद दास्य-भक्ति के आदर्श उदाहरण है।

24.3.1 अध्येय पदों की व्याख्या

167

रघुपति-भगति करत कठिनाई
कहत सुगम करनी अपार जानै साई जेहि बनि आई।।1।।
जो जेहि कला कुसल ताकहँ सोइ सुलभ सदा सुखकारी।
सफरी सनमुख जल-प्रवाह सुरसरी बहै गज भारी।।2।।
ज्यों सर्करा मिलै सिकता महँ, बलतें न कोउ बिलगावै।
अति रसग्य सूच्छम पिपीलिका, बिनु प्रयास ही पावै।।3।।
सकल दृश्य निज उदर मेलि, सोवै निद्रा तजि जोगी।
सोई हरिपद अनुभवै परम सुख, अतिसय द्वैत - बियोगी।4।।
सोक मोह भय हरष दिवस-निसि देस-काल तहँ नाहीं।
तुलसिदास यहि दसाहीन संसय निरमूल न जाहीं।।5।।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद तुलसीदासजी के 'विनय-पत्रिका' इस ग्रंथ से लिए गए हैं। इन पदों में तुलसीदासजी ने रघुपति भक्ति कठिन कार्य है। वह किसी ऐरे-गैरे के बस की बात नही है। उस के लिए भक्ति के महत्ता को पहचानता है वही इसे कर पाता है। यह स्पष्ट किया है।

व्याख्या : तुलसी अपने अराध्य के भक्ति का बखान करते हुए कहते है कि, रघुपति की भक्ति करना आसान कार्य नहीं है। उनकों अपनी भक्ति से उत्पन्न करना बहुत कठिन कार्य है। कहना सहज है पर करना कठिन है। इसे तो वही जानता है जिससे यह करते बन गई।।1।।

अपने अगले पद में वे कहते है। हर कोई अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार कोई ना कोई कला में कुशल होता है। जो जिस कला में कुशल होता है उस के लिए वह सरल और सुखदायी होती है। जैसे एक छोटी सी मछली गंगा नदी की धारा के सामने से जाती है क्योंकि वह तैरना जानती है किंतु उसी स्थान पर बहुत बड़ा भारी हाथी उस धारा के सामने टिक नहीं पाता वह

बह जाता हैं। क्योंकि वह तैरने की कला में कुशल नहीं है।।।2।। धूल में जब चीनी मिल जाती है तो उसे अलग करना मुश्कील है किंतु उसके रस को जाननेवाली छोटी-सी चींटी उसे सहज रूप से उस के रस का पान कर उसे प्राप्त करती है। कोई चाहे छोटा हो या बड़ा पर वह अपनी कला में चतुर होता है।।।3।।

अपनी तपस्या से बड़े-बड़े योगी दृश्यमात्र को अपने पेट में रख निद्रा को त्यागकर सोता है। वही द्वैत से अत्यान्तिक रूप से मुक्त हुआ पुरुष भगवान से परम पद के परमानंद की प्रत्यक्ष अनुभूति कर सकता है।।।4।। इस अवस्था में शोक, मोह, भय, हर्ष, दिन-रात और देश-काल नहीं रह जाते। केवल एक प्रभु ही रह जाते है किंतु हे तुलसीदास जब तक इस दशा को प्राप्ति नही होती, तब तक संशय का समूल नाश नहीं होता प्रभु को पाने के लिए खुद को खोना आवश्यक है।।।5।।

बोध प्रश्न

- तुलसीदासजी के दृष्टि से रघुपति की भक्ति कठिन कार्य है, स्पष्ट कीजिए।

काव्यगत विशेषताएँ :

1) उपरोक्त पदों में तुलसीदास ने रघुपति भक्ति की कठीन परीक्षा का बखन किया है।
2) आत्मा और परमात्मा के एकाकार रूप का वर्णन किया है।
3) प्रस्तुत पुद के लिए दोहा छंद और राग नट का प्रयोग हुआ है।
4) प्रस्तुत पद ब्रजभाषा में लिखा गया है।

182

नाथ! गुनगाथ सुनि होत चित चाउ सो।
राम रीझिबेको जानौं भगति न भाउ सो।।1।।
करम, सुभाउ, काल, ठाकुर न ठाउँ सो।
सुधन न, सुतन, सुमन, सुआउ सो।2।।
जाँचैं जब जाहि कहै अमिय पियाउ सो।
कासों कहौं काहू सों न बढ़त हियाउ सो।।3।।
बाप ! बलि जाउँ, आप करिये उपाउ सो।
तेरे ही निहारे परै हारेहू सुदाउ सो।।4।।
तेरे ही सुझाये सूझे असुझ सुझाउ सो।
तेरे ही बुझाये बूझै अबूझ बुझाउ सो।।।5।।
नाम-अवलंबु-अंबु दीन मीन- राउ सो।
प्रभुसों बनाइ कहैं जीह जरि जाउ खो।।6।।
सब भाँति बिगरी है एक सुबनाउ-सो।
तुलसी सुसाहिबहिं दियो है जनाउ सो।।7।।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद तुलसीदास ज़ी के 'विनय-पत्रिका' इस ग्रंथ से लिए गए है। इन पदों में तुलसी ने अपने नाथ! भगवान श्रीराम की अनुग्रह और कृपादृष्टी के लिए प्रार्थना की है। बिगड़ी को बनाने वाले अपने अराध्य का अनुनय किया गया है।

व्याख्या : तुलसीदास जी इन पदों में भगवान राम के अनुग्रह के लिए अनुनय करते हुए कहते है कि, हे नाथा आपके गुणों की गाथा सुनकर मेरे चित में भी चाव सा उत्पन्न हो रहा हैं किंतु हे रघुनाथ जी जिस भक्ति और भाव से आप प्रसन्न होते है वह मैं नही जानता।।1।। क्योंकि मेरे न तो करम अच्छे हैं, न स्वभाव अच्छा हैं, और न यह जो कलियुग का समय चल रहा है यह भी मेरे लिए अनुकूल नहीं हैं। न कोई मालिक है और न ही मेरा कोई और ठीकाना है। न उत्तम धन है और न ही सेवापरायण सुंदर शरीर है। इतना ही नही तो भक्ति से परिपूर्ण न उत्तम आयु है। ऐसे प्रतिकूल समय में भगवत प्राप्ति का कोई भी साधन नहीं दिखाई देता। हर तरह से में निराधार हूँ। ऐसे बिकट समय में में अपनी नय्या किस तरह पार लगाऊ।।2।।

मैं अभागा जिस से भी प्यास के मारे पानी माँगता हूँ वही उलटा मुझसे ही अमृत पिलाने के लिए कहता है। मेरा अपना कोई नहीं है जिससे मैं अपने मन की पीड़ा कह सकता हूँ। किसी से भी कहने की हिम्मत नहीं होती है।।3।। हे बापजी! बलिहारी! आप ही मेरे लिए कोई अच्छा उपाय कर दिजिए। आप की कृपादृष्टि यदि है तो हार ने पर भी अच्छा दाव हाथ लगता है। आप की कृपा से बड़े-बड़े पापी भी बैकुण्ठ के अधिकारी बन जाते हैं।।4।।

आप के सुरक्षा देने से अदृश्य वस्तु भी दीखने लगती है, और आप के समझा देने पर नहीं समझ में साम आनेवाला आपका स्वरूप भी समझ में आ जाता है। अब आप ही उसे सुझा और समजा दीजिये।।5।। आपके नाम का जो अवलंबन है, वही तो पानी है और इसमें रहनेवाला में दीन मछलीयों का राजा-सा हूँ। बहुत बड़े भारी मत्स्य के समान हूँ। यदि मैं प्रभु के सामने इसमें से कुछ भी झूठ बोलू तो मेरी जीभ जल जाए।।।6।। मेरी बात सभी तरह से बिगड़ चुकी है, केवल एक बात अच्छी हुई की तुलसीदास ने यह बात अपने परम दयालू स्वामी को बता दी है। अब स्वामी ही उसकी बिगडी बनाएंगे।।।7।।

बोध प्रश्न :

- क्या मन की पीड़ा को हरने वाले राम है ? स्पष्ट कीजिए।

काव्यगत विशेषताएँ :

1) प्रस्तुत पदों में तुलसीदास ने अनाथों के नाथ प्रभु राम के कृपादृष्टि सोदाहरण स्पष्ट किया है।
2) प्रस्तुत पद ब्रजभाषा में लिखित है।
3) प्रस्तूत पद के लिए दोहा छंद और राग बिलावल का प्रयोग हुआ है।

201

लाभ कहा मानुष-तनु पाये।
काय-बचन-मन सपनेहुँ कबहुँक घटत न काज पराये।।1।।
जो सुख सुरपूर-नरक, गेह-बन आवत बिनहिं बुलाये।
तेहि सुख कहँ बहु जतन करत मन, समुझत नहिं समुझाये।।2।।
पर-दारा, पर-द्रोह, मोहबस किये मूढ़ मन भाये।
गरभबास दुखरासि जातना तीव्र बिपति बिसराये।।।3।।
भय-निद्रा, मैथुन - अहार, सबके समान जग जाये।
सुर-दुरलभ तनु धरि न भजे हरि मद अभिमान गवाँये।।4।।
गई न निज-पर-बुद्धि, सुद्ध है रहे न राम-लय लायें।
तुलसीदास यह अवसर बीते का पुनि के पछिताये।।5।।

संदर्भ :- उपयर्युक्त पद तुलसीदासजी के 'विनय-पत्रिका' इस ग्रंथ से लिए गए है। प्रस्तुत पदों में मनुष्य जीवन में 'भक्ति ही मुक्ति का मार्ग है' यह बतलाया गया। अगर मनुष्य जन्म पाकर भी श्रीराम के चरणों में खुद को अर्पण नहीं किया तो मनुष्य जन्म व्यर्थ है ऐसा तुलसीदास ने कहा हैं।

व्याख्या :- तुलसीदास जी अपने पदों में कहते है कि मनुष्य शरीर पाने से क्या लाभ हुआ जब कभी आपने स्वप्न में भी मन, वाणी, शरीर से दूसरों के काम नहीं आया ऐसे मनुष्य जीवन से क्या फायदा मिलता है।।।1।। जो सुख स्वर्ग-नरक, घर और वन में बिना बुलाये अपने आप आ जाता है उस सुख के लिए मन में जाने कितने उपाय कर रहा है। वह समझाने पर भी समझ नही पा रहा है।।।2।। तुलसीदासजी अपने पद में कहते है हे मुरख तुने अज्ञान के वश होकर पर स्त्री के लिए दूसरों से वैर करने के लिए मनमाने आचरण किए है। गर्भ में बहुत ज्यादा दु:ख, दारूण कष्ट और न जाने कितनी विष्पत्ताीयाँ भोगी थी। उसे तु भूल गया इन मनमाने कुकर्मों के कारण फिर से तुझे वही जन्म-मरण के फेरे में फिर से गर्भवास में होनेवाली दु:खों की लंबी माला को पुन भोगना होगा। यातना का फेर खत्म होने वाला नही हैं।

डर, नींद, मैथून और भोजन आदि चीजें तो संसार में जन्म लेनेवाले सभी जीवों में एक-से हैं। परंतु तुने तो देवताओं को दुर्लभ मनुष्य शरीर को पाकर यदि भगवान का भजन नहीं किया और अहंकार, घमंड में उसे गँवा दिया। इस से ज्यादा और बुरा क्या हो सकता है?।।4।। जिन की तु-तु, मैं-मैं वाले भेद बुद्धि नष्ट नहीं हुई। शुद्ध अंतः करण से जिन्होंने श्रीराम के चरणों में अपने चित्त की लीन नहीं किया, उन्हें हे तुलसीदास ! मनुष्य जन्म पाकर भगवंत की भक्ति का जो

सुअवसर मीला है वह निकल जाने पर फिर पछताने से क्या मिलेगा? इसीलिए समय रहते ही भगवान के भजन में लग जाना चाहिए।'

बोध प्रश्न :

- तुलसीदास ने मोह, माया त्यागने का उपदेश क्यों दिया हैं?

काव्यगत विशेषताएँ :-

1) प्रस्तुत पदों में तुलसीदास ने 'भक्ति ही मुक्ति' है यह दर्शाया है।
2) प्रस्तुत पद ब्रजभाषा में लिखा गया है।
3) प्रस्तुत पद के लिए दोहा छंद और राग भैरवी का प्रयोग हुआ है।

269

राम कबहुँ प्रिय लागिहौ जैसे नीर मीनको?
सुख जीवन ज्यों जीवको, माने ज्यों फनिको हित, ज्यों धन लोभ-लीनको।।1।।
ज्यों सुभाय प्रिय लगति नागरी नागर नवीनको।
त्यों मेरे मन लालसा करिये करूनाकर! पावन प्रेम पीनको।।2।।
मनसाको दाता कहैं श्रुति प्रभु प्रबीन को।
तुलसीदास को भावतों, बलि जाऊँ दयानिधि! दीजैं दान दीनको।।3।।

संदर्भ : प्रस्तुत पद तुलसीदासजी के 'विनय-पत्रिका' इस ग्रंथ से लिए गये है। इन पदों में तुलसीदास अपने प्रभु राम से अनन्य प्रेम की लालसा उत्पन्न करनेवाला वरदान माँगते है।

व्याख्या: तुलसीदास जी अपने पद में कहते है कि, श्रीरामजी ! क्या कभी उस तरह आप कभी मुझे प्यारे लगेगे। जैसे मछली को जल प्यारा लगता है, जीव को सुखमय जीवन प्यारा लगता है, साँप को मणि प्रिय लगती है और अत्यन्त लोभी को धन प्यारा लगता है। जैसे नवयुवक नायक को स्वभावसे ही नवयुवती चतुरा नायिका प्यारी लगती है, वैसे ही हे करूणा की खान! आप मेरे मन में केवल आपके प्रति पवित्र और अनन्य प्रेम की ही एक लालसा उत्पन्न कर दीजिये।।2।। वेद कहते है की प्रभु मन की बात को जानते है। वह मनमानी वस्तु देने वाले है और बड़े ही चतुर हैं। तुलसीदास कहते है की हे दयानिधि ! मैं आप की बलैय्या लेता हूँ। इस दीन दास की भी आप मनचाही वस्तु का दान दीजिये।

बोध प्रश्न

- तुलसीदास मन चाही वस्तु का दान किस से माँग रहे हैं? और क्यों?

काव्यगत विशेषताएँ :

1) प्रस्तुत पदों में तुलसीदास अराध्य राम से मनचाही भक्ति का दान मांगा है।
2) प्रस्तुत पदों में पवित्र प्रेम की लालसा को दर्शाया है
3) प्रस्तुत पद ब्रजभाषा में लिखा गया है।

4) प्रस्तुत पद के लिए दोहा छंद और राग कल्याण का प्रयोग हुआ है।

272

तुम जनि मन मैलो कुरो, लोचन जनि फेरो।

सुनहु राम! बिनु रावरे लोंकहु परलोकहु कोउ न कहूँ हितु मेरो।।1।।

अगनु- अलायक - आलसी जानि अधम अनेरो।।

अधनु

स्वारथके साथिन्ह तज्यो तिजराको-सो टोटक, औचट उलटि न हेरो।।2।।

भगतिहीन, बेद-बाहिरो लखि कलिमल घेरो।

देवनिहू देव! परिहरयो, अन्याव न तिनको हैं। अपराधी सब केरो।।3।।

नामकी आट पेट भरत हैं, पै कहावत चेरो।

जगत-बिदित बात है परी, समुझिये धौं। अपने, लोक कि बेद बड़ेरो।।4।।

हैहै जब-तब तुम्हहिं तें तुलसीका भलेरो।

दिन-हू-दिन देव! बिगरि है, बलि जाउँ बिलंब किये, अपनाइये सेबेरो।।5।।

दीन

संदर्भ:- उपरोक्त पद तुलसीदास कृत 'विनय-पत्रिका' से लिए गए है। इन पदों में तुलसीदास ने भगवान राम से अनुनय की है की वह उनपर कृपादृष्टि बनाय रखे। उनका कल्याण करे।

व्याख्या : तुलसीदास अपने अराध्य राम की बिनंती करते कहते है, आप मुझ पर अपना मन मैला न कीजिए। आप अपनी कृपादृष्टि मेरी ओर से फेरीए मत। हे अनाथों के नाथ मेरी बिनती सुनिए! इस लोक और परलोक में आपको छोड़कर मेरा कल्याण करनेवाला कोई दूसरा नहीं है।।1।। आप मुझे गुणहीन, नालायक, आलसी, नीच अथवा दारिद्री और निकम्मा समझकर स्वार्थ के साथियों ने तिजारीके टोटके की तरह छोड़ दिया और फिर भूलकर भी पलटकर मुझे नहीं देखा।।2।।

मुझे भक्तिहीन, वेदोक्त मार्ग से बाहर एवं कलियुग के पापों से जखड़ा हुआ देख कर हे प्रभु! देवताओं ने भी मुझे छोड़ दिया है। इस में उनका अन्याय भी नहीं है क्योंकि मैं उन सबका अपराधी हूँ।।।3।। मैं तो बस आप के नाम की ओट लेकर अपना पेट भर रहा हूँ, मैं तो केवल आपका दास कहलाता हूँ और यह बात अब सारा संसार जान गया है। अब आप ही विचार कर बताईये कि संसार बड़ा है की बेद? वेदों की विधी के अनुसार तो मैं आपका दास नही हूँ पर अगर संसार मुझको आप का दास कहता है तो अब आपको भी यह स्वीकार कर लेना चाहिए।।4।। तुलसी का भला तो जब कभी होगा तब आपके ही द्वारा होगा। मैं आपकी बलैय्या

लेता हूँ, यदि आप देर करेंगे, तो यह गरीब दिन-पर दिन बिगड़ता ही जायेगा। अब 'आप मेरा अंत मत देखिए। इसलिए हे प्रभु! आप शीघ्र ही मुझे अपना लिजिए।।5।।

- **बोधप्रश्न :**
- तुलसीदास अपने अंत से पहले किससे कल्याण करने की याचना कर रहे हैं, स्पष्ट कीजिए।

काव्यगत विशेषताएँ:

1) उपरोक्त पदों में तुलसीदास ने प्रभु राम से कल्याण के लिए अनुनय किया है।
2) प्रस्तुत पद ब्रजभाषा में लिखित है।
3) प्रस्तुत पद के लिए दोहा छंद और राग कल्याण का प्रयोग हुआ है।

24.4 : पाठ सार

छात्रों को हमने इस अध्याय में तुलसीदास कृत विनय पत्रिका' के जिन पदों का अध्ययन किया। इन पांचों पदों में तुलसी अपने अराध्य प्रभु की भक्ति में लिन दिखते हैं, वे अपने आपको दास के रूप में स्वीकार कर उनका उद्धार करने की याचना करते हैं। वह अपने पदों में नाना विध पशु-पक्षि, मनुष्यों के उदाहरण देकर यह बतलाना चाहते हैं कि जिस प्रकार यह सब अपने कार्य में कुशल, चतुर है ठीक उसी तरह वह भी अपने अराध्य की भक्ति में डूबना चाहते हैं। मुक्ति का केवल एक ही मार्ग है वह हे प्रभु राम ! वह कहते है कि शिघ्र ही अब आप इस दीन तुलसी पर अपनी दया का हाथ रख दिजिए क्योंकि अब वह अपने अराध्य की कृपादृष्टि के लिए तड़प रहा है। उसे और न तडपाए। अब केवल उस पर कृपादृष्टि बनाए उसे अपने भक्त के रूप में स्वीकार कर लिजिए।

24.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1) हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में तुलसीकृत 'विनय पत्रिका' अपना अनन्य साधारण स्थान रखती है।
2) तुलसीदास अपनी भक्ति के कारण रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि के रूप में जाने जाते हैं। जो इस पदों के माध्यम से स्पष्ट होता हैं।
3) विनय पत्रिका में दास्य भाव की भक्ति की भावना प्रबल रही है ।
4) कलयुग में राम नाम ही मुक्ति का मार्ग है। यह तुलसीदास की धारणा हम तक पहुँचाई है।
5) तुलसीदास जी का विचार राम से बड़ा कोई दयालु, कृपानिधि नहीं हैं यह हम तक पहुँचता है।

6) राम मुक्ति के दाता और दीन-पतित के तारण हार है।

7) मनुष्य जीवन भक्ति के लिए ही मिला है।

8) मन के सभी भावों का दर्शन विनय-पत्रिका के पदों में देखने को मिलता है

24.6 : शब्द संपदा

1) सुरसरी	-	गंगा, देवों की नदी
2) पिपीलिका	-	चींटी
3) हरष	-	हर्ष, आनंद
4) अमिय	-	अमृत
5) अंबू	-	पानी, जल
6) मीने	-	मछली
7) तनु	-	देह, शरीर
8) दारा	-	स्त्री
9) फनिको	-	साँप, नाग
10) सुभाउ	-	स्वभाव

24.7 : परिक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए ।

1) भक्तिकालिन साहित्य में 'विनय-पत्रिका' अपना अलग महत्व रखती हैं स्पष्ट कीजिए।

2) ‘राम भक्ति ही मुक्ति है' यह पदों के आधार पर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए ।

1) ‘विनय-पत्रिका' के पदों में तुलसी ने अपने आराध्य से कौनसी याचना की है?

2) मनुष्य, जन्म में कौन से कर्म करने का उपदेश तुलसी ने दिया है। स्पष्ट कीजिए।

3) पठित पदों की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

खण्ड (स)

I) सही विकल्प चुनिए -

1) सुरसरी कौनसी नदी को कहाँ गया है।

अ) कावेरी ब) गंगा क) कृष्णा ड) गोदावरी

2) मीन का अर्थ क्या है?

अ) कछवा ब) घोड़ा क) मछली ड) हाथी

3) धूल मीली चीनी से रस को कौनसा जीव चूसता है।

अ) चींटी ब) मछली क) कौआ ड) वानर

4) तुलसी के प्रभु कौन हैं?

अ) कृष्ण ब) लक्ष्मण क) रावण ड) राम

II) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) विनय पत्रिका मे .... जीवन को परिलक्षित किया है।

2) विनय पत्रिका के प्रारंभ के .... स्तोत्रों में देवी-देवताओं का गुणगाण किया गया है?

3) विनय पत्रिका .... छंद में लिखा गया ग्रंथ है।

4) नाथ!...... सुनि होत चित चाउ सो।

III) सुमेल कीजिए।

1) अंबु - स्त्री

2) दारा - शरीर

3) सुरपुर - जल

4) तनु - अमृत

5) अमिय - स्वर्ग

24.8 : पठनीय पुस्तकें

1) विनय-पत्रिका- तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर

2) हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चनसिंह

3) भक्ति काव्य यात्रा - रामस्वरूप चतुर्वेदी

4) हिंदी साहित्य का इतिहास - आ. रामचंद्र शुक्ल

5) प्राचीन कवि - विश्वम्भर मानव

6) भक्ति आंदोलन और भक्तिकाव्य - शिवकुमार शर्मा

7) भारतीय भक्ति साहित्य - राजमल बोरा

परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना

MAULANA AZAD NATIONAL URDU UNIVERSITY

PROGRAMME: B.A – HINDI (Core)

V – SEMESTER EXAMINATION - 2022

TITLE & PAPER CODE : तुलसीदास (BAHN502CCT)

TIME: 3 HOURS | TOTAL MARKS: 70

यह प्रश्न पत्र तीन भागों में विभाजित हैं- भाग -1, भाग -2 और भाग - 3 प्रत्येक प्रश्न के उत्तर निर्धारित शब्दों में दीजिए।

भाग – 1

1. निम्न लिखित विकल्पों में सही विकल्प चुनिए। 10X1=10

i. तुलसीदास के माता का नाम क्या था ? ( )

(A) तुलसी (B) कमला (C) रत्नावली (D) हुलसी

ii. किसने कहा ? " मैं सुकुमारी नाथ बन जोगू" ( )

(A) सुमित्रा ने (B) सीता ने (C) कौशल्या ने (D) सुमंत्र ने

iii. श्रीराम, सीता और लक्ष्मण वनवास जाते समय सबसे पहले किसके आश्रम पहुँचे?( )

(A) वाल्मीकि (B) भरद्वाज (C) अत्रि (D)भृगु

v. राजा दशरथ की मृत्यु के बाद भरत-शत्रुघ्न को बुलाने के लिए किसने दूतों को भेजा। ( )

(A) कैकेयी (B) वसिष्ठ (C) कौसल्या (D) सुमित्रा

vi. रामचरित मानस भाषा में रचित है ? ( )

(A) संस्कृत (B) अवधि (C) अरबी (D) ब्रज

vii. गोस्वामी तुलसीदास का संबंध किस कालखंड से है ? ( )

(A) आदिकाल (B) रीतिकाल (C) आधुनिक काल (D) भक्तिकाल

viii. सुमित्रा की वाणी से कौन-सा भाव प्रकट होता है? ( )

(A) विनय का (B) क्रोध का (C) चिंता का (D) शांति का

ix. विनय-पत्रिका में सर्वप्रथम किस देवता की वंदना की गई है ? ( )

(A)शिव (B) गणेश (C) वरुण (D) हनुमान

x. मीन का अर्थ क्या है? ( )

(A) कछवा (B) घोड़ा (C) मछली (D) हाथी

भाग – 2

निम्न लिखित आठ प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना अनिवार्य है। 5X6 =30

2. भरत की चित्रकूट यात्रा का वर्णन कीजिए।

3. केकैयी ने ऐसा क्या किया जो उसे 'पापिनी' कहा गया है?

4. राम को केवल प्रेम प्रिय है' स्पष्ट करें|

5. भरत ने राजा बनने से क्यों इंकार कर दिया ?वे चित्रकूट क्यों गए ?

6. राम नाम के अवलम्ब के संदर्भ में तुलसी के क्या विचार है?

7. तुलसीदास ने माता कौशल्या के वात्सल्य को किस प्रकार चित्रित किया है ?

8. गीतावली का सामान्य परिचय दीजिए।

9. विनय पत्रिका के आधार पर तुलसीदास के दर्शन को स्पष्ट कीजिए|

भाग- 3

निम्न लिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों में देना अनिवार्य है। 3X10=30

10. तुलसीदास की प्रमुख कृतियों पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालिए।

11. निषाद राज कौन थे? उन्होंने राम की किस तरह आवभगत की?

12. तुलसीदास और 'रामचरितमानस' की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

13. राम और उनके भाईयों के साथ दुलार खण्ड में राजा दशरथ और माताओं का दिन कैसे बीत रहा है? विश्लेषण कीजिए।

14. 'विनय-पत्रिका' के पठित पदों के माध्यम से तुलसी दास की भक्ति सेव्य-सेवक भाव की भक्ति है। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

*****